वार्षिकी

2021

वार्षिकी 2021

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

भारत सरकार

वार्षिकी – 2021
भारतीय साहित्य सर्वेक्षण

अध्यक्ष, परामर्श एवं संपादन मंडल
प्रोफेसर नागेश्वर राव

परामर्श मंडल
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
सुश्री ममता कालिया
प्रो. सत्यकाम
प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय
प्रो. पूरनचंद टंडन
प्रो. शैलेंद्र शर्मा
श्री रविशंकर रवि
डॉ. एम. गोविंदराजन
डॉ. जे.एल.रेड्डी

संपादक
डॉ. किरण झा

सह–संपादक
श्रीमती सौरभ चौहान

प्रूफ रीडर
श्रीमती इंदु भंडारी

कार्यालयीन व्यवस्था
सेवा सिंह
संजीव कुमार

ISSN 0523–1418
वार्षिकी : 2021

संपादकीय कार्यालय
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड–7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110066
वेबसाइट : www.chdpublication.education.gov.in
www.chd.education.gov.in
ईमेल : bhashaunit@gmail.com
दूरभाषः 011–26105211 / 12

बिक्री केंद्र :
नियंत्रक,
प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस,
दिल्ली–110054
वेबसाइट : www.deptpub.gov.in
ई–मेलः acop-dep@nic.in
दूरभाषः 011-23817823/9689

बिक्री केंद्र :
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड–7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110066
वेबसाइटः www.chdpublication.education.gov.in
www.chd.education.gov.in
ईमेल : bhashaunit@gmail.com
दूरभाषः 011-26105211/12

शुल्क सीधे www.bharatkosh.gov.in → Quick Payment → Ministry (007 Higher Education)→ Purpose (Education receipt) में digital mode से जमा करवाई जा सकती है।

		मूल्य	
देश में	Inland	₹ 190/–	(डाक खर्च सहित)
विदेश	Foreign	$ 2.32	
		€ 2.25	

वार्षिकी : 2021

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
आपने लिखा
संपादकीय
आलेख

1. असमिया साहित्य	अनुशब्द	9
2. ओड़िया साहित्य	अरुण होता	17
3. उर्दू साहित्य	जुबेदा एच. मुल्लाँ	35
4. कन्नड साहित्य	टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'	42
5. कश्मीरी साहित्य	महाराज कृष्ण भरत 'मुसा'	50
6. कोंकणी साहित्य	चंद्रलेखा डिसौज़ा	58
7. गुजराती साहित्य	वर्षा सोलंकी	73
8. डोगरी साहित्य	ओम गोस्वामी	78
9. तमिल साहित्य	चिट्टि अन्नपूर्णा	86
10. तेलुगु साहित्य	गुर्रमकोंडा नीरजा	94
11. नेपाली साहित्य	ज्ञानबहादुर छेत्री	97
12. पंजाबी साहित्य	फूलचंद मानव	106
13. बांग्ला साहित्य	सुव्रत लाहिड़ी	118
14. मलयालम साहित्य	बी. अशोक	124
15. मैथिली साहित्य	वैद्यनाथ झा	129
16. संथाली साहित्य	रेखा	140
17. संस्कृत साहित्य	देवेश कुमार मिश्र	145
18. हिंदी आलोचना	आलोक रंजन पांडेय	153
19. हिंदी उपन्यास	तरसेम गुजराल	160
20. हिंदी कहानी	अवध किशोर प्रसाद	176
21. हिंदी कविता	कृष्ण कुमार 'कनक'	194
22. हिंदी ग़ज़ल	रोहिताश्व कुमार अस्थाना	210

23. हिंदी निबंध एवं लेख	विदुषी शर्मा	217
24. हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ	सुनील कुमार तिवारी	226
25. हिंदी बाल साहित्य	त्रिभुवननाथ शुक्ल	232

संपर्क सूत्र **237**

निदेशक की कलम से

सभी भारतीय भाषाओं के मध्य सामासिक संस्कृति और भाषिक समरसता स्थापित किए जाने हेतु हिंदी भाषा सभी भगिनी भाषाओं के साथ निरंतर संवाद स्थापित कर सांस्कृतिक आदान–प्रदान का मार्ग प्रशस्त करती है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भाषा का विस्तार सार्वभौमिक स्तर पर हो रहा है। देश–काल की सीमा को लाँघते हुए हिंदी आज विश्व में भारत की पहचान बन गई है। यू एन ओ की मान्य भाषा के पद पर आसीन होने की ओर यह निरंतर अग्रसर है। अनुवाद के माध्यम से किसी भी क्षेत्र और राष्ट्र की संस्कृति लंबी दूरी तय कर आमजन तक पहुँचती है। भारतवर्ष में वैदिक ज्ञान परंपरा के साथ–साथ बदलते परिवेश का साक्ष्य बनती संस्कृति, लिखित रूप में समय का दस्तावेज प्रस्तुत करती है। युगपुरुष की वाणी हो अथवा हमारे पौराणिक ग्रंथ, इन सबमें उल्लिखित साहित्य हमारे समक्ष युग का संदर्भ और समाज सापेक्ष परिस्थितियों के परिदृश्य को समझने का गवाह होता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में जहाँ समृद्ध सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत है वहीं प्रशस्त वर्तमान और अग्रगामी उज्ज्वल भविष्य है। तेजी से परिवर्तित परिदृश्य में तकनीक ने बहुत बदलाव किए हैं। संचार और सूचना क्रांति ने आज पूरे विश्व में विश्व बंधुत्व की परिकल्पना को साकार करने के द्वार उन्मुक्त किए हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय भारतीय भाषा साहित्य में समाहित ज्ञान को संपूर्ण भारतवर्ष के अन्य भाषा–भाषी तक एवं अन्य सभी भाषाओं में समाहित ज्ञान को संप्रेषित किए जाने हेतु संविधान स्वीकृत सभी भाषाओं के सर्वेक्षणपरक साहित्य को वार्षिकी पत्रिका में हिंदी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इस महत्वपूर्ण कार्य को संपन्न करने में देशभर के विद्वानों का सहयोग लिया जाता है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय सभी विद्वानों के प्रति आभारी है। भविष्य में भी लेखकों, रचनाकारों से सहयोग मिलने की अपेक्षा है। हिंदी समेत सभी भारतीय भाषाओं के वर्षभर की सर्वेक्षणपरक सामग्री को विद्वतजन के समक्ष वार्षिकी पत्रिका के रूप में प्रस्तुत कर हर्ष की अनुभूति हो रही है। इसकी उपयोगिता विभिन्न शोधार्थियों एवं अध्येताओं के लिए सहायक सामग्री प्रस्तुत करना है। जिससे उन्हें शोधकार्य में सहायता प्राप्त होती है। ज्ञान पिपासुओं की क्षुधा को तृप्त करती वार्षिकी की विषय वस्तु गहन शोध एवं सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप तैयार होती है।

वर्ष 2021 की वार्षिकी भारतीय भाषाओं में समाहित साहित्यिक, भाषाई एवं सांस्कृतिक मूल्यों की पड़ताल करती हुई आप सबके समक्ष प्रस्तुत है।

आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

नागेश्वर राव

प्रोफेसर नागेश्वर राव

आपने लिखा

वार्षिकी पत्रिका वर्तमान भारतीय साहित्य का आईना है। वह भारत के वर्तमान के विभिन्न भाषा साहित्य की दिग्दर्शिका है। भूमंडलीकरण के आज के दौर में समाज की परिस्थितियाँ अत्यंत तेजी से बदल रही हैं। बदलती परिस्थितियों की रफ़्तार को आज का साहित्यकार उतनी ही तेजी से आत्मसात् कर रहा है और साहित्य को नई दिशा देते हुए साहित्य को सुसंपन्न कर रहा है। भारत के साहित्यकार की यह विशेषता है कि वह भूमंडलीकरण से हो रहे परिवर्तनों को न केवल स्वीकार कर रहा है, अपितु उन परिवर्तनों के क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखते हुए प्रादेशिक संस्कृति के धरातल पर साहित्य सृजन कर रहा है। परंपरागत मूल्यों और आधुनिक मूल्यों में आपस में संबंध बिठाते हुए समाज का मार्गदर्शन कर रहा है और साहित्य को भी समुन्नत कर रहा है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका 'वार्षिकी' भारत के भिन्न भाषा क्षेत्रों में प्रतिवर्ष प्रकाशित साहित्य को समेटने के कार्य में तत्पर रही है। वार्षिकी पत्रिका के द्वारा हर भाषा के तत्समय के सामाजिक व साहित्यिक हाल–चाल को हिंदी भाषा–भाषियों के सामने ही नहीं अपितु हिंदीतर भाषा क्षेत्र और विदेशों में रह रहे समस्त हिंदी प्रेमियों और भाषा–साहित्य के विद्वत जन के सामने प्रस्तुत करने की महत्वपूर्ण साधना विगत कई वर्षों से करती आ रही है। भले ही भाषाएँ भिन्न हों, लेकिन उनकी आत्मा एक ही है। सबकी उम्मीदें एक ही हैं। इसका प्रमाण वार्षिकी पत्रिका है। वार्षिकी पत्रिका हर वर्ष की साहित्यिक गतिविधियों को प्रस्तुत करने के साथ–साथ पाठकों को विभिन्न भाषा साहित्य से जोड़ने का कार्य कर रही है। यह अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य है।

सन् 2020 भारत के लिए ही नहीं पूरे विश्व के लिए एक अभिशाप रहा। फिर भी साहित्यकार इस कराल काल में निष्क्रिय न बैठकर समाज के सच्चे हितैषी के रूप में अपनी रचनाओं के द्वारा पाठकों का हौसला बढ़ाते आए हैं। कोविड–19 के चलते मुद्रण और प्रकाशन का कार्य धीमा पड़ गया। ऐसी स्थिति में भी साहित्यकार यथा संभव मौलिक रचनाओं को प्रकाशित करने के प्रयत्न के साथ–साथ नए रास्तों को भी ढूँढ निकालते हुए आगे बढ़े हैं। ई पत्रिकाओं, यूट्यूब आदि कई इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में पुस्तकें प्रकाशित कराने लगे और पत्र–पत्रिकाओं को ऑनलाइन माध्यम में उपलब्ध कराने लगे हैं।

हाल के साहित्यिक जगत में यह प्रवृत्ति चल पड़ी है कि चंद रचनाओं का पुनः प्रकाशन किया जा रहा है। इनमें केवल प्रकाशन वर्ष दिए जाने के कारण आलेख के लेखकों को प्रथम प्रकाशन की तिथि की पहचान में दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। आलेख के लेखकों व समीक्षकों के सामने दुविधा की स्थिति उपस्थित हो रही है। फिर भी इस कष्ट साध्य कार्य को पूरा करने वाले लेखक प्रशंसा के पात्र हैं। वार्षिकी 2020 में प्रस्तुत आलेखों में लेखकों ने यथा संभव सन् 2020 की साहित्यिक रचनाओं की जानकारी दी है और विभिन्न भाषा क्षेत्रों में प्रकाशित साहित्य की गतिविधियों पर भी विचार कर अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। लेखकों और पत्रिका के प्रकाशन के कार्य में जुड़े सब कर्मियों को साधुवाद।

डॉ. चिट्टि अन्नपूर्णा

संपादकीय

सदानीरा भाषा अपने भीतर संस्कृति के निरूपक तत्वों को आत्मसात् करते हुए मानव के विकास की कथा कहती है। सभ्यताएँ पल्लवित पुष्पित होती रहीं, साम्राज्य बनते मिटते रहें। संस्कृति समय का दस्तावेज बनती हुई निरंतर अग्रगामी होती है। संस्कृति की सहचरी भाषा उसकी चिरंसगिनी बनी उन तत्वों को संजोती रहती है। युग के थपेड़े और काल के गाल में समाती सभ्यताएँ अपने पीछे महत्वपूर्ण चिह्न छोड़ जाती हैं। महत्वपूर्ण सामाजिक सांस्कृतिक धरोहर का साक्ष्य साहित्य में समाहित होता है। सवा सौ करोड़ की जनसंख्या वाले भारतदेश में विविध संस्कार और संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। ज्ञान की महत्वपूर्ण सामग्री भाषा के माध्यम से होती हुई साहित्य में लिपिबद्ध होकर अतीत के चलचित्र एवं वर्तमान के तथ्यों को समेटती भविष्य की संतति के लिए थाती का निर्माण करती चलती है। विशाल जन समुदाय वाले देश में अनेकता ही एकता के बिंब को मूर्त स्वरूप प्रदान करती है। भारत राष्ट्र महात्मा के पदचिह्नों पर चलने वाला राष्ट्र है जिसमें जन–जन से जुड़ने का मंत्र है। जब बापू अफ्रीका से स्वदेश आते हैं तो संपूर्ण देश का भ्रमण कर भारत की जनता को देखने, समझने और जानने का कार्य करते हैं। उनके सामने यहाँ की दीनःदुःखी जनता के रूप में साक्षात अपनी भूमि, अपनी माता रूदन करती दिखती है और वे विकल हो उठते हैं उन्हें गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कर उन्मुक्त आकाश में विचरण करते आजाद पंछी की तरह उड़ान भरते हुए देखने के लिए। ऐसे मनीषियों की धरा भारतभूमि में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें जीवन के विभिन्न रंगों का समावेश होता है। भारतीय दर्शन में समन्वयवादी विचारधारा को प्रमुखता प्रदान की गई है। जहाँ संपूर्ण सृष्टि को परिवार माना जाता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'जड़ चेतन गुण दोषमय' की समृद्ध परंपरा को क्षेत्र विशेष की रीति–नीति से समझा जा सकता है। उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक एक सूत्र में पिरोने वाली भारतीय संस्कृति की संवाहिका विभिन्न भाषाओं में सिमटे साहित्य के माध्यम से सभी तक पहुँचती है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय की प्रकाशन योजना के 'भाषा', 'वार्षिकी' एवं 'साहित्यमाला' के अंतर्गत संविधान स्वीकृत सभी 22 भारतीय भाषाओं में वर्षभर में सृजित साहित्य के सर्वेक्षणात्मक आलेख एवं हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं के वर्षभर के सर्वेक्षणात्मक आलेख को सम्मिलित किया जाता है। इन आलेखों के माध्यम से हिंदी जानने वाले सभी पाठक, अध्येता, शोधार्थी एवं विद्वतजन सभी भारतीय भाषाओं में सृजित ज्ञान के भंडार से अवगत होते हैं। इस प्रकार पूरे भारतवर्ष की विभिन्न भाषाओं के साहित्य को एक ही स्थान पर उपलब्ध किया जाता है। ज्ञान के इस विस्तृत संसार को 'वार्षिकी' पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत करने का कार्य महत्वपूर्ण और श्रमसाध्य होता है। सभी भारतीय भाषाओं में सृजित रचना संसार को हिंदी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करना सभी रचना और रचनाकारों के योगदान को रेखांकित करने का कार्य किया जाता है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय का यह प्रयास होता है कि सभी भाषाओं एवं हिंदी की विभिन्न विधाओं की विषयवस्तु और सामग्री को उपलब्ध कराया जाए परंतु कई बार सभी भाषाएँ सम्मिलित नहीं हो पातीं। इसमें लेखकों/रचनाकारों के व्यक्तिगत व्यस्तता के कारण समय पर आलेखों का उपलब्ध ना हो पाना होता है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय का भाषा परिवार इस कार्य हेतु निरंतर लेखकों से संपर्क साधकर सामग्री संग्रह कर इस कार्य को सर्वांगीण रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। लेखकीय सहयोग के लिए निदेशालय सभी रचनाकारों का धन्यवाद करता है एवं भविष्य में भी निरंतर इस सहयोग की अपेक्षा करता है।

वर्ष 2021 की वार्षिकी में सम्मिलित आलेख सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं ताकि सभी भारतीय भाषाएँ समृद्ध हों और भारतीय सामासिक संस्कृति का प्रसार हो। वार्षिकी 2021 सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

सुधीजन की प्रतिक्रिया एवं सुझावों का स्वागत है।

किरण

(किरण झा)

आपने लिखा

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली से प्रकाशित होने वाली लब्धप्रतिष्ठ वार्षिक पत्रिका 'वार्षिकी' का मैं तकरीबन दो दशकों से नियमित पाठक हूँ और इसके सारस्वत अनुष्ठान का भी सक्रिय सहभागी रहा हूँ।

साल 2020 की 'वार्षिकी' पत्रिका प्राप्त हुई। वैश्विक महामारी कोरोना के कारण पूरी दुनिया मानो कुछ समय के लिए थम सी गई थी। इस सबब से इस अंक के जल्दी हाथ न लगने की आशंका से मैं थोड़ा जरूर उदास था। लेकिन दूरभाष पर घर से सूचना प्राप्त हुई कि आपकी वार्षिकी पत्रिका आ गई है, तो बहुत ही अच्छा लगा क्योंकि 'देर आए, लेकिन दुरुस्त' आए। घर पहुँचने पर जब इस प्रतीक्षित अंक को निहारा तो मुझे ऐसा लगा कि कोरोना के कारण भारतीय साहित्य पर कोई अधिक प्रभाव नहीं डाल सकता। लेकिन इसके लिए पूरा 'वार्षिकी' परिवार अपने भगीरथ प्रयास के लिए हार्दिक धन्यवाद का पात्र है। अपने पूर्व अंकों की तरह ही विविध विधाओं से समृद्ध तथा अलंकृत छवि वाला ही इसका कलेवर है। विविध विधाओं वाली हिंदी भाषा की सामग्री भी हिंदी के बढ़ते कदम की सूचक है क्योंकि किसी भी साहित्य की विधा में इज़ाफ़ा उस भाषा के उन्नयन का सूचक है। अन्य भारतीय साहित्य के लेखन में भी नदीष्ण पाठ्य सामग्रियों को सम्यक् स्थान दिया गया है जो अन्य अंकों की तरह ही साहित्य प्रेमियों तथा शोधकर्ताओं के लिए संग्रहणीय हो सकता है। इसमें संस्कृत भाषा के अभिनव सृजनात्मक रुझान भी संस्कृत की जीवंतता का तस्दीक करते हैं। इस अंक में देश के लगभग सभी जगहों के नामचीन लेखकों से हिंदी माध्यम से आलेख लिखवाए गए हैं जो देश की भाषिक एकता में अनेकता का ही बोधक हैं अर्थात् सबका साथ सबका विश्वास। दक्षिण के आलेखों की हिंदुस्तानी हिंदी शैली और तेवर भी ललित हैं।

संपादक मंडल ने डॉ. सी. जय शंकर बाबु के आलेख के जरिए हिंदी पत्रकारिता तथा प्रौद्योगिकी साहित्य के इमर्जिंग ट्रेंड को लेकर एक नए लेखन की परिपाटी के वातायन को उन्मीलित किया है। जहाँ दुनिया की अनेक भाषाएँ अपनी पहचान के लिए संघर्षरत हैं, वहीं 'वार्षिकी' जैसी जीवनदायिनी पत्रिका कोंकणी तथा संताली भाषाओं को भी समुचित रूप से प्रकाश में लाकर भारतीय साहित्य के सहकारी साहित्य ध्वज को लहराने में अक्षुण्ण रूप से संलग्न है जिससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को भी एक नई आवाज मिलेगी क्योंकि इसमें भारतीय भाषाओं को फलने–फूलने का एक रचनात्मक अवसर मिला है।

लेकिन संपादक मंडल को अपनी हार्दिक बधाई के साथ इसके लिए भी आग्रह है कि इसमें बाल साहित्य लेखन को भी भरसक स्थान दिया जाए क्योंकि साहित्य के फसल का भविष्योन्मुखी बीज तो बाल साहित्य ही होता है।

डॉ. अजय कुमार मिश्रा

1

असमिया साहित्य

अनुशब्द

असमिया लिखित साहित्य का पहला उल्लेख चर्यापद में मिलता है। बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए चर्यापदों की रचना गीतों के रूप में की गई थी। इन गीतों को चर्यागीत, बौद्धगीत या दोहा भी कहा जाता है। चर्यापद आठवीं और बारहवीं शताब्दी के बीच लिखे गए माने जाते हैं। 14वीं शताब्दी में माधव कंदली ने वाल्मीकि रामायण का असमिया में अनुवाद किया। यह आधुनिक भारतीय भाषा में रचित पहला रामायण है। रुद्र कंदली ने महाभारत के द्रोण पर्व का अनुवाद किया। दुर्गाबर कायस्थ का 'गीति रामायण' 15वीं शताब्दी में लिखा गया जबकि पीतांबर और मनकर ने भी पुराणों का बड़ी संख्या में गीतों में अनुवाद किया। साहित्य की इस श्रेणी को पांचाली साहित्य कहा जाता है।

15वीं शताब्दी में जन्मे महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव ने संस्कृत से बहुत से साहित्य का लोकभाषा में अनुवाद किया और असम में नववैष्णववाद का प्रचार करने के लिए अपना अधिकांश साहित्य लिखा। इनमें कीर्तन–घोषा, भक्ति–प्रदीप, रुक्मिणी हरण, हरिश्चंद्र उपाख्यान आदि शामिल हैं। राम सरस्वती ने महाभारत के विभिन्न प्रसंगों, विभिन्न पुराणों और उप पुराणों से एकत्रित 'वध काव्य' का अनुवाद किया। इस अवधि के अन्य उल्लेखनीय कार्यों में माधव देव का राजसूर्य यज्ञ शामिल है। इस समय के दौरान भट्टदेव ने पहली बार गद्य को अपने साहित्यिक कार्यों में अभिव्यक्ति के एकमात्र माध्यम के रूप में अपनाया। उनकी 'कथा–गीता', 'कथा–भागवत' आदि उनमें से प्रमुख हैं। ऐतिहासिक साहित्य अहोम काल के दौरान रचा गया था। इसके अलावा, अहोम काल के कार्यों में से एक व्यावहारिक साहित्य था। ये पुस्तकें ज्योतिष, चिकित्सा, गणित और संगीत जैसे विभिन्न विषयों पर लिखी गई थीं। शंकर के बाद के काल में चरित साहित्य भी रचा गया था। 'कथा गुरु चरित' इस काल की प्रमुख कृतियों में से एक है।

आधुनिक असमिया साहित्य की शुरुआत ईसाई मिशनरियों नाथन ब्राउन और माइल्स ब्रोंसन द्वारा असमिया में प्रकाशित 'अरुणोदोई' (1846) पत्रिका के समय से हुई। इससे पहले, 1813 में, आत्माराम शर्मा ने मिशनरियों की पहल पर बाइबिल का असमिया में अनुवाद किया था। यह असमिया में पहली मुद्रित पुस्तक है। नाथन ब्राउन ने असमिया 'भाषा का व्याकरण' (1848), माइल्स ब्रोंसन ने 'असमिया–अंग्रेजी शब्दकोश' (1867) और 1839 में एक अन्य मिशनरी डब्ल्यू रॉबिन्सन ने अंग्रेजी में पहला असमिया व्याकरण लिखा। 19वीं सदी में असमिया साहित्य में एक नई प्रवृत्ति देखी गई। असमिया भाषा का पहला व्याकरण, 'असमिया व्याकरण' (1895) इस अवधि के दौरान हेमचंद्र

बरुआ द्वारा लिखा गया था। और इसी कालक्रम में असमिया भाषा का पहला शब्दकोश 'हेमकोश' (1900) भी लिखा गया। इस अवधि के दौरान 1885 का असमिया अखबार 'असम बंधु' प्रकाशित हुआ था। इसी दौरान साहित्य में कई तरह की कविताएँ, लघु कथाएँ और नाटक लिखे गए हैं, उपन्यास, निबंध, आत्मकथाएँ आदि रची गई हैं। इस अवधि के दौरान चंद्र कुमार अग्रवाल ने कविता की दो पुस्तकें, 'प्रतिमा' (1913) और 'बीन–बरागी' (1923) प्रकाशित कीं। बेजबरुआ ने 'कदमकली' (1913) और 'पदुमकली' प्रकाशित की। उन्होंने इस अवधि के दौरान साहित्य के अन्य पहलुओं में भी कई योगदान किए। इसके बाद कई कवियों और नाटककारों ने इसका अनुसरण किया। भोलानाथ दास (1858–1928), कमलकांत भट्टाचार्य (1853–1927), हितेश बरबरुआ (1876–1939), बेनुधर राजखोवा (1872–1935) और रघुनाथ चौधरी (1879–1966) द्वारा लिखी गई कविता की कई पुस्तकें उपलब्ध हैं। आधुनिक असमिया उपन्यासों की शैली का नेतृत्व रजनीकांत बरदोलोई (1867 –1939) ने किया था। उनकी उल्लेखनीय रचनाओं में 'मिरिजियरी' (1895), 'मनोमती' (1900), दंडुआ द्रोह (1909) और 'रहदई लिगिरी' (1930) शामिल हैं। दुर्गेशर शर्मा (1882–1961) और नलिनीबाला देवी (1898–1978) ने इस अवधि के दौरान असमिया पारलौकिक कविता को लोकप्रिय बनाया। जतिंद्रनाथ दुआरा (1892–1978) द्वारा उमर खय्याम का असमिया में अनुवाद किया गया था। इस अवधि के दौरान असमिया साहित्य में योगदान देने वाले अन्य कवि रत्नकांत बरकाकती (1897–1963), पार्वती प्रसाद बरुआ (1904–1964), पद्मधर चालिहा (1895–1968), ज्योति प्रसाद अग्रवाल (1903 –1951), प्रसन्नलाल चौधरी (1902), बिनंद चंद्र बरुआ (1903) और देवकांत बरुआ (1914) आदि थे।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, असमिया साहित्य में विचार, भाषा और संरचना के सभी पहलुओं में बदलाव आया। इस काल में लिखी गई कविताओं, लघु कथाओं, नाटकों और उपन्यासों में बहुत नवीनता थी। सैय्यद अब्दुल मलिक, योगेश दास, बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य, भबेंद्र नाथ शैकिया, महिम बोरा, हितेश डेका, होमेन बरगोहांई, निरुपमा बरगोहांई, मामोनी रायसम गोस्वामी, हिरेन भट्टाचार्य, अजीत बरुआ, हरेकृष्ण डेका आदि अनेक साहित्यकार इस कालक्रम में लिखने लगे थे। इस तरह अपनी प्रगतिशीलता एवं सापेक्षिकता के साथ असमिया साहित्य नए युग में निरंतर विकसित होता रहा है।

अनुराधा शर्मा पुजारी को 2021 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उनको उनकी पुस्तक 'इयात एखन अरण्य आछिल' के लिए साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया है। उन्हें 2013 में रेनेसॉ असम पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें असम साहित्य सभा द्वारा कुमार किशोर स्मृति साहित्य पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। अनुराधा शर्मा पुजारी की सबसे लोकप्रिय किताबों में से एक है 'साहेबपुरार बरखुन'। असम साहित्य सभा ने 2003 में इस उपन्यास के लिए सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार के पुरस्कार से भी उन्हें नवाज़ा है। 'इयात एखन अरण्य आछिल' में प्रकृति की अस्मिता को उज़ागर किया गया है। धूप और बारिश से बचने के लिए आश्रय की आवश्यकता होती है। लेकिन क्या अपनी सुरक्षा के लिए दूसरों को सुरक्षा से वंचित करना सही है? क्या प्रकृति के अनमोल उपहारों को नष्ट करने से मानव सभ्यता का उदय होगा? जब एक जंगल को खुद बनाना बहुत मुश्किल होता है, तो लोगों को इसे नष्ट करने का कोई अधिकार नहीं है। उपन्यास एक जंगल, एक पहाड़ पर आधारित है। उपन्यास उन लोगों के समूह के लिए सहानुभूति व्यक्त करता है, जो शहर के जंगल पर कब्जा करते हैं। पुस्तक में राजनीतिक बातचीत से लेकर सामाजिक कल्याण की अपीलों तक कई पहलुओं की कहानियाँ हैं। ऐसा लगता है कि हर वाक्य में अव्यक्त दर्द है। पुस्तक का मुख्य विषय 'आमचांग वन और निष्कासन' है। पुस्तक आमचांग जंगल से लोगों को बेदखल करने के समग्र वातावरण का खूबसूरती से वर्णन करती है। पुस्तक इस विषय को विस्तार से प्रस्तुत करती है कि कैसे आमचांग एक जंगल बन गया, कैसे जंगलों को नष्ट किया गया, और जंगलों तथा

मनुष्यों के बीच संघर्ष बढ़ते गए। अनुराधा शर्मा पुजारी के इस उपन्यास 'इयात एखन अरण्य आछिल' का शीर्षक अपने आप में ही इन सभी बातों का स्पष्टीकरण है। मनुष्य का प्रकृति के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध है, एक जंगल मानव जीवन की सभी जरूरतों को पूरा कर सकता है। पर्यावरण की रक्षा के अलावा, लोग जंगल में अपनी आजीविका से सब कुछ कमा सकते हैं। जंगल जानवरों का सुरक्षित ठिकाना है। लेकिन आजकल जंगल रेगिस्तान जैसा लगता है। प्राकृतिक आपदाओं, राजनीति, आर्थिक संकट, जातीय संघर्ष आदि ने धीरे–धीरे लोगों को विस्थापित किया है और उन्हें जंगलों और जलाशयों पर कब्जा करने के लिए मजबूर किया है। नतीजतन, जानवरों को आश्रय और भोजन के संकट का सामना करना पड़ रहा है। यह सब मानव सभ्यता के लिए एक अशुभ संकेत है। लेकिन ये सभी समस्याएँ मानव निर्मित हैं। पुस्तक मानव जीवन के एक वास्तविक अनुभव पर आधारित है कि आज के समय में लोग स्वच्छ हवा और पानी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। लेखक का मन चाहता है कि जंगल को बचाया जाए लेकिन वह विस्थापित लोगों के विचार से उदास है। लेखक ने ऐसे कई वास्तविक अनुभवों के आधार पर इस उपन्यास को लिखा है।

अनुराधा शर्मा पुजारी के पहले उपन्यास 'हृदय एक विज्ञापन' को बहुत लोकप्रियता मिली। उपन्यास पंद्रह संस्करणों में प्रकाशित हुआ है और इसकी एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक सफलता रही है। अनुराधा शर्मा पुजारी की अन्य प्रकाशित और लोकप्रिय पुस्तकों में कलिकतार चिठि, डायरी आदि शामिल हैं। लोकप्रिय उपन्यासों में सोन हरिनर चेकूर, बोरागी नदीर घाट और राग–अनुराग आदि हैं। 2021 का साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार विचारक दिगंता बिस्वा शर्मा को उनकी अनूदित पुस्तक 'दरेनेसॉ इन इंडिया एंड अदर एसेज ऑफ इंडियन कल्चर' के असमिया अनुवाद 'भारतीय संस्कृतिर भित्ति' के लिए प्रदान किया गया है। 'द रेनेसॉ इन इंडिया एंड अदर एसेज ऑफ इंडियन कल्चर' अरविंद जी की पुस्तक है। 2021 का साहित्य अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार मृणाल कलिता को मिला। उनकी पुस्तक 'बकुल फूलर दरे' के लिए यह पुरस्कार मिला है। अब तक मृणाल कलिता के इस उपन्यास के दस से अधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। यह डॉ. मृणाल कलिता द्वारा लिखित पहला ही उपन्यास है। 'बकुल फूलर दरे' एक साधारण अभिव्यक्ति वाला उपन्यास है लेकिन इसमें जीवन की गहरी भावना है, जो मुख्य रूप से किशोर चरित्र पर केंद्रित है और किशोरावस्था की दुनिया को उजागर करती है। उपन्यास सभी उम्र के पाठकों के लिए विशेष रूप से किशोर मनोविज्ञान के साथ विभिन्न अर्थों और महत्व को रेखांकित करने वाला है। बच्चों और किशोरों की दुनिया की सादगी, कृत्रिमता और मिलावट रहित धारणा वयस्कों की स्वार्थी दुनिया से मेल नहीं खाती। क्या हम हमेशा उस दुनिया को सही ढंग से समझ सकते हैं? उनकी भावनाएँ और दर्द? विभिन्न प्रकार के संघर्ष और मन की विभिन्न परतें? हम कितनी ईमानदारी और सरलता से उनकी दुनिया में दस्तक देते हैं? क्या हम हमेशा इतने संवेदनशील होते हैं कि उनकी चेतना को छू सकें? इस उपन्यास को पढ़ते समय हम सभी वास्तव में अपने आपसे और अपने परिवेश से पूछते हैं। यह जीवन की प्रतिकूलताओं के खिलाफ अटूट साहस और समर्पण की कहानी है। उपन्यास बच्चों, किशोरों, माता–पिता और प्रत्येक शिक्षक के लिए भी पढ़े जाने योग्य है। यह हमारी पारंपरिक शिक्षा–प्रणाली, शिक्षक–छात्र संबंधों में हजारों खामियों के बारे में एक सरल और मार्मिक कहानी है और इससे भी अधिक सादगी, ईमानदारी और सद्भावना के माध्यम से इनसान का निर्माण कैसे किया जा सकता है या लोग दुखों के बावजूद जीवन को कैसे महान बनाए रखते हैं, इसकी दास्तान है। उपन्यास नवंबर 2015 में बांधव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया था। मृणाल कलिता असम की बाल लेखिका, लघु कथाकार, उपन्यासकार और निबंधकार हैं। वे गुवाहाटी के पांडु कॉलेज में गणित की प्रोफेसर हैं।

कॉटन विश्वविद्यालय के शोध छात्र और गोलाघाट के युवा लेखक अभिजीत बोरा को उनकी लघु कहानी 'देउका कुबाई जा' के लिए साहित्य

अकादमी युवा पुरस्कार 2021 से सम्मानित किया गया है। 2021 का मुनिन बरकतकी साहित्य पुरस्कार प्रदुम्य कुमार गोगोई को 'चकी और अन्यान्य गल्प' पर मिला। इसमें 50,000 रुपए का नकद पुरस्कार, एक स्मारक और प्रशंसा पत्र शामिल है। 'चकी और अन्यान्य गल्प' का प्रकाशन जनवरी 2021 के बुक फेयर सीजन के दौरान पाँचजन्य बुक्स, गुवाहाटी द्वारा किया गया था। 2021 वर्ष में असमिया कवि और लेखक नीलमणि फूकन को भारत का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। नीलमणि फूकन को असमिया कविता की शैली में उनके प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के लिए जाना जाता है। फूकन को इस वर्ष 56वें ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए चुना गया है। नीलमणि फूकन का जन्म असम प्रदेश के गोलाघाट में हुआ था। विशेष रूप से, इस प्रारंभिक पृष्ठभूमि और भाषा के प्रति उनकी कलात्मक प्रतिक्रिया ने उन्हें समृद्ध लोक संस्कृति में गहरी रुचि विकसित करने के लिए प्रेरित किया। उन्हें असम के एक प्रमुख कला विशेषज्ञ और आदिवासी और लोक कला के एक जागरूक आलोचक के रूप में जाना जाता है।

कवि नीलमणि फूकन की रचनाओं में शामिल हैं सुर्य हेनु नामि आहे एई नदीएडी, गोलापी जामुर लग्न, निर्जनतार शब्द, जापानी कविता आदि। उन्हें उनके स्व–चयनित कविता संग्रह 'कविता' के लिए 1981 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। उन्हें 1991 में सगनलाल जैन पुरस्कार, 1997 में असम उपत्यका साहित्य पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ साहित्य के लिए साहित्य अकादमी फेलो से भी सम्मानित किया गया था। 2021 में, ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ने साहित्य में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार 2021 से सम्मानित किया। यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले वे तीसरे असमिया लेखक हैं। उन्होंने गुवाहाटी विश्वविद्यालय से इतिहास में मास्टर डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1950 के दशक में कविता लिखनी शुरू की थी। 1964 में, उन्होंने आर्य विद्यापीठ कॉलेज, गुवाहाटी में प्रोफेसर के रूप में ज्वॉइन किया था। वह 1992 में सेवानिवृत्त हुए।

2021 का असमिया बाल साहित्य पुरस्कार रथींद्र नाथ गोस्वामी को प्रदान किया गया। बच्चों और किशोरों के बीच बहुत लोकप्रिय रथींद्र नाथ गोस्वामी के लेख विभिन्न विषयों पर बुद्धिमान, साहसी और परोपकारी कथाएँ उपलब्ध कराते हैं। गोस्वामी एक भूविज्ञानी हैं। असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष, इमरान शाह को शिक्षा और साहित्य के लिए 2021 में पद्मश्री से नवाजा गया है। इमरान शाह का छद्म नाम ईशान दत्ता है। उनका जन्म 23 नवंबर, 1933 को शिवसागर में हुआ था। इमरान शाह एक प्रसिद्ध लेखक, विचारक और बरपेटा रोड में आयोजित असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष हैं। उन्हें 2009 में असम उपत्यका पुरस्कार और 2012 में 'अज़ानपीर' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इमरान शाह असमिया साहित्य की दुनिया में एक चमकते सितारे हैं। वे जयसागर कॉलेज से असमिया विभाग में व्याख्याता के पद से सेवानिवृत्त हैं। डॉ. मंगलसिंह हजवारी को इस वर्ष समाज सेवा के लिए पद्मश्री से नवाजा गया है। उनका जन्म 1949 में गोलाघाट जिले में हुआ था। भारत सरकार ने लखीम बरुआ को 2021 में पद्मश्री से सम्मानित किया है, जिन्होंने असम में आर्थिक रूप से पिछड़ी महिलाओं के लाभ के लिए 'कनकलता बैंक' नामक एक बैंक की स्थापना की है। मार्च 2016 में, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर, महिला और बाल कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने महिला सशक्तिकरण में उत्कृष्ट योगदान के लिए कनकलता महिला अरबन कॉपरेटिव बैंक को नारी शक्ति पुरस्कार प्रदान किया।

इसके अलावा, एक अन्य सामाजिक कार्यकर्ता बिरुबाला राभा को इस श्रेणी में पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। बिरुबाला राभा असम– मेघालय सीमा पर ठाकुर विला गाँव में रहती हैं। आर्किटेक्चर के क्षेत्र में नौकरी पाने के कई तरीके हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात आर्किटेक्चर के क्षेत्र में नौकरी पाना है। अपने बेटे के अंधविश्वास का शिकार होने की दुखद घटना के बाद, बिरुबाला राभा को तीन साल के लिए गाँव से निकाल दिया गया था।

उन्हें 2014 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया तथा 2010 में आईबीएन नेटवर्क और रिलायंस द्वारा 'रियल हीरो' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें सती जयमती पुरस्कार और सिग्नेचर अवार्ड भी मिला है।

कला और संस्कृति के क्षेत्र में योगदान के लिए दुलाल मांकी और गोपीराम बरगायन को पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किए गए। 97 वर्षीय गोपीराम बरगायन माजुली में उत्तरी कमलाबाड़ी सत्र के प्रसिद्ध कलाकार हैं। लेखिका नंदिता देवी को उनके उपन्यास 'बंगाल बहादुर' के लिए 2021 का प्रकाशन परिषद साहित्य पुरस्कार–2021 प्रदान किया गया है। इस पुस्तक का प्रकाशन ज्योति प्रकाशन के मालिक नगेन शर्मा ने किया है। पुरस्कार में दो लाख रुपए, एक प्रमाण पत्र और मूल्यवान पुस्तकों का एक पैकेज शामिल है। पुरस्कार चयनित लेखक और पुस्तक के प्रकाशक दोनों को समान सम्मान प्रदान किए गए हैं। पुरस्कार असम पुस्तक मेला के उद्घाटन समारोह में प्रदान किए गए।

2021 के इसी कोरोना काल में प्रख्यात लेखक डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा का निधन हो गया है। वह एक प्रसिद्ध कथाकार, 'गंगा चिलनी पाखी', 'पाताल भैरबी', 'सखा दामोदर' और कई अन्य अविस्मरणीय साहित्य के लेखक हैं। वह 'गरियसी' पत्रिका के संपादक थे। लक्ष्मीनंद बोरा का जन्म 1931 में नगाँव जिले के हैतीचोन क्षेत्र के कुजिदाह गाँव में हुआ था। उन्होंने 'रामधेनु' युग के दौरान एक कहानीकार के रूप में अपनी शुरुआत की और बाद में उपन्यास लिखे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'पाताल भैरवी' के लिए 1988 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त किया। वह 1996 में बोकाखाट अधिवेशन में असम साहित्य सभा के अध्यक्ष रहे। उन्हें 26 जनवरी को पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उन्हें 2004 में असम घाटी साहित्य पुरस्कार और 2008 में सरस्वती सम्मान मिला। उन्होंने अपनी हाई स्कूल की शिक्षा नगाँव गवर्नमेंट हाई स्कूल से प्राप्त की। उन्होंने 1948 में प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की और उसी वर्ष कॉटन कॉलेज में आईएससी कक्षा में दाखिला लिया। उन्होंने 1950 में कॉटन कॉलेज से आईएससी पास किया और कॉटन कॉलेज में भौतिकी विभाग में दाखिला लिया। 1952 में कॉटन कॉलेज से भौतिकी में ऑनर्स के साथ स्नातक किया। इसके बाद उन्होंने अपनी स्नातकोत्तर डिग्री के लिए प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता में दाखिला लिया। उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। 1955 में सेंट एंथोनी कॉलेज, शिलांग में एक व्याख्याता के रूप में ज्वॉइन किया। उन्होंने वहाँ दो महीने तक व्याख्याता के रूप में पढ़ाया। कुछ समय तक नगाँव कॉलेज में पढ़ाया। लक्ष्मीनंद बोरा ने आंध्र विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने 'द वाटर बैलेंस एंड ड्रॉट क्लाइमेटोलॉजी ऑफ असम एंड विन्सिटी' में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। 1956 में, उन्होंने कॉटन कॉलेज में एक वर्ष तक पढ़ाया और बीएन कॉलेज, धुबड़ी में शामिल हो गए। इसके बाद उन्होंने असम कृषि महाविद्यालय, जोरहाट में प्रवेश लिया। 1969 में उन्हें असम कृषि महाविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया था। जब इसे एक विश्वविद्यालय में अपग्रेड किया गया था। वह 1992 में असम कृषि विश्वविद्यालय के भौतिकी और मौसम विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर के रूप में अध्यापन से सेवानिवृत्त हुए। लक्ष्मीनंद बोरा ने भारत के बाहर के संस्थानों में भी काम किया। वह जर्मनी के गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय में मौसम विज्ञान के प्रोफेसर थे और इंडो–जर्मन रिसर्च प्रोजेक्ट और असम प्रदूषण बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने असम प्रदूषण नियंत्रण परिषद के निदेशक के रूप में कार्य किया। अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत 'रामधेनु' पत्रिका के पन्नों से की थी। 1954 में, लक्ष्मीनंद बोरा ने अपनी पहली कहानी, 'भौना' प्रकाशित की। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य थे। उन्होंने कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, यात्रा कहानियों, आत्मकथाओं, वैज्ञानिक लेखन और अनुवादों में योगदान किया है। वह कई समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के संपादन में भी शामिल थे। वे 1992 से साप्ताहिक समाचार पत्र 'रंगपुर' के तीन वर्षों तक संपादक रहे। 2004 में,

वह साप्ताहिक समाचार पत्र 'अभिमत' के संपादक थे। वे तब से साहित्यिक पत्रिका गरियासी के संपादक थे। लेखक ने अपनी मृत्यु तक पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में कहानियाँ और लेख लिखना जारी रखा। उनकी कहानियाँ 'दृष्टिरूपा' (1958), 'सेई सुरे उटाला' (1960), 'कांचिओलिर कुंवाली' (1961), 'गोपन गधुली' (1961), 'गौरी रूपक' (1961), 'मोन मती मेघ' (1962), 'अचिन कैना' (1963), 'ई रूप ए चंद', 'दहन दुलारी' (1965) आदि प्रमुख हैं।

इसी साल असम की लोकप्रिय गीतकार और बच्चों की लेखिका मनोरमा बरगोहांई का निधन हुआ है। डॉ. मनोरमा बरगोहांई असम की लोकप्रिय गायिका थीं और एक साधारण महिला के रूप में जानी जाती थीं। उन्होंने डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय से 'असमिया पोएट्री एंड लिटरेचर में महिलाओं का योगदानः कुछ प्रमुख कवियों के उल्लेख के साथ एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। डॉ. मनोरमा बरगोहांई ने डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय की पुस्तक प्रकाशन और उत्पादन विभाग में अपना करियर शुरू किया और डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के असमिया विभाग से शोध सहायक के रूप में सेवानिवृत्त हुईं। 'मदर टेरेसा' बच्चों के लिए लिखी गई कहानियों, कविताओं, उपन्यासों और आत्मकथाओं का संग्रह है। डॉ. मनोरमा बरगोहांई बचपन से ही अपनी रचनात्मक रचनाओं के माध्यम से साहित्य के सभी क्षेत्रों में एक लोकप्रिय लेखिका थीं। उन्होंने डिब्रूगढ़ गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी मल्टीपर्पज गर्ल्स स्कूल, गुवाहाटी कॉटन कॉलेज, डिब्रूगढ़ कनाई कॉलेज, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की और पीएचडी की डिग्री और बीएड की डिग्री प्राप्त की। उन्हें 'ऑल असम राइटर्स एसोसिएशन' द्वारा आयोजित साहित्यिक प्रतियोगिता में उनकी पांडुलिपि 'रोडली' के लिए बानी पाठक मेमोरियल अवार्ड और 1957 में ऑल असम राइटर्स कॉन्फ्रेंस के गोल्डन अवार्ड से उनकी पुस्तक 'हिस्टोरिकल रिव्यू ऑफ असमिया पोएट्री : वूमेन पोएट्स' के लिए सम्मानित किया गया था। उन्होंने डिब्रूगढ़ दूरदर्शन, गुवाहाटी दूरदर्शन के लिए कई संगीत कार्यक्रम तैयार और प्रसारित किए हैं और लोकप्रियता हासिल की है। इस साहित्यकार की मृत्यु ने असम और डिब्रूगढ़ में शोक की छाया छोड़ दी है। साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में यह एक अपूरणीय क्षति हुई है।

इसी साल देवेंद्र चरण बरबरुआ का उनके घर पर निधन हो गया। मृत्यु के समय उनकी आयु 78 वर्ष थी। बरबरुआ लंबे समय से बीमार चल रहे थे और घर पर उनका इलाज चल रहा था। अपने चाचा नीलमणि फूकन के निजी सचिव के रूप में सेवा करते हुए, वह बिष्णु प्रसाद राभा, हेमंगा विश्वास, कहानीकार सैय्यद अब्दुल मलिक, डॉ. भूपेन हजारिका, सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति बीएल हंचरिया और असम के कई अन्य प्रमुख कलाकारों और लेखकों से मिले। उन्होंने विभिन्न विषयों पर 100 से अधिक पुस्तकें और बिहू पर 1500 से अधिक शोध लेख लिखे। वह प्रांतिक और असम के कई दैनिक समाचार पत्रों के नियमित स्तंभकार थे। वे पिछले 40 वर्षों से टिट्टाबॉर्न से प्रकाशित, अब विलुप्त हो चुकी पत्रिका 'चेनेही असम' के प्रकाशक और संपादक थे। वह असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा शर्मा पर एक किताब प्रकाशित करने के कगार पर थे। 1990 का दशक देश के लिए महान परिवर्तन का समय था। उन्हें टिट्टाबॉर्न एएसयू द्वारा लोक कलाकार पुरस्कार और भूपेन हजारिका पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रमुख कलाकार और लेखक के निधन पर शोक जताने के लिए शहर के व्यापारियों ने उस दिन शहर की सभी दुकानें और बाजार बंद कर दिए। असम धूलिया शिल्पी सम्मेलन जोरहाट जिला समिति ने दिवंगत कलाकार को उनके घर पर श्रद्धांजलि दी।

इसी वर्ष प्रजा गोस्वामी को लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में एक छात्र सलाहकार के रूप में नामित किया गया था, जो दुनिया भर में उच्च शिक्षा का गौरवपूर्ण क्षण है। कुलेश गोस्वामी और गुवाहाटी के गोपा गोस्वामी की बेटी प्रजा गोस्वामी को थीसिस की तैयारी में छात्रों की सहायता के लिए लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में एक

छात्र सलाहकार के रूप में नामित किया गया। इस साल शिक्षा के क्षेत्र में यह सफलता सबसे उल्लेखनीय है।

प्रख्यात कहानीकार और उपन्यासकार येशे दार्जे थांगची द्वारा असमिया उपन्यास 'शव कटा मानुह' पर आधारित फिल्म 'बटर वारियल' ने सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण संरक्षण फिल्म का पुरस्कार इसी साल जीता है।

कई लोगों को इसी साल पद्म पुरस्कार से नवाजा गया है। मरणोपरांत राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री तरुण गोगोई को पद्म भूषण प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में नर्तक इंदिरा पी.पी. बोरा, इतिहासकार योगेंद्र नाथ फुकन, नेपाली लेखक लाल बहादुर छेत्री, डॉक्टर रबी कन्नन आर, डॉ. कुशल कोंवर शर्मा, गोपीराम बरगयान बुद्धभक्त, इमरान शाह, विजया चक्रवर्ती, मंगलसिंह हजवारी, बिरुबली बरुआ और लखीला बरुआ, दुलाल मानकी और रोमन शर्मा को पद्म श्री से सम्मानित किए जाने की खबर भी इस साल के लिए सकारात्मक खबर है।

असम में एकमात्र धर्मार्थ सार्वजनिक ट्रस्ट ध्रुवज्योति बोरा मित्र मंडली ने इस वर्ष से ध्रुवज्योति बोरा साहित्य पुरस्कार की शुरुआत की है। पिछले पाँच वर्षों के भीतर प्रकाशित एक पुस्तक के लिए एक लेखक को सालाना पुरस्कार दिया गया, जिसने असमिया साहित्य के विभिन्न पहलुओं में रचनात्मक, विश्लेषणात्मक, शोध–उन्मुख और आलोचनात्मक लेखन के साथ राष्ट्रीय जीवन, भाषा और साहित्य को समृद्ध किया है। पुरस्कार में एक प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न और 50,000 रुपए का नकद पुरस्कार शामिल है।

इस वर्ष प्रसिद्ध कथाकार इमरान शाह को 'बर असम समन्वय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार लखीमपुर जिला जातीयतावादी युवा परिषद द्वारा लखीमपुर जिला साहित्य सभा के सहयोग से आयोजित एक समारोह में प्रदान किया गया। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष असम दिवस पर एक विशिष्ट व्यक्ति को दिया जाता है, जिसने समाज के उन्नयन में योगदान दिया हो। पुरस्कार में 25,000 रुपए का चेक, फूल गोमोचा, अंग वस्त्र, दो स्मृति चिह्न, फूलों की जापी, शराई, टाई ड्रेस, हेन्डांग और प्रशंसा पत्र शामिल हैं। उन्होंने कहा कि मिसिंग भाषा लिखित रूप में मजबूत नहीं है, लेकिन बोली जाने वाली भाषा समृद्ध और अभ्यास वाली होनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन शिवसागर जिला साहित्य सभा के सचिव संतोष दत्ता ने किया था। इमरान शाह, जिनका जन्म 1933 में हुआ था, उन्हें पहले भारत सरकार से पद्मश्री पुरस्कार, असम उपत्यका साहित्य पुरस्कार, अज़ानपीर पुरस्कार और रंगपुर गौरव पुरस्कार मिल चुका है।

2021 में गुवाहाटी के चानमारी इंजीनियरिंग ग्राउंड में असम पुस्तक मेले का आधिकारिक उद्घाटन किया गया। असम पुस्तक मेले का औपचारिक उद्घाटन राज्य के शिक्षा मंत्री डॉ. रोनोज पेगु ने किया। उद्घाटन समारोह में डॉ. कुलधर शाकिया, अध्यक्ष, असम साहित्य सभा, लीलाधर मंडल, लेखक और प्रकाशक और डॉ. ननिगोपाल मोहंता, सलाहकार, शिक्षा विभाग, असम सरकार ने भाग लिया। पुस्तक मेले का आयोजन असम प्रकाशन परिषद और ऑल असम बुक पब्लिशर्स एंड सेलर्स एसोसिएशन द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। दो थिएटर स्वर्गीय होमेन बरगोहांई और लक्ष्मीनंद बोरा को समर्पित थे। किताबों की दुकानों की कतारों के नाम राज्य की सात प्रसिद्ध हस्तियों के नाम पर रखे गए थे। 2021 का असम प्रकाशन परिषद पुरस्कार प्रमुख उपन्यासकार नंदिता देवी को प्रदान किया गया है। उनके उपन्यास 'बंगल बहुदुर' के लिए यह पुरस्कार उन्हें प्रदान किया गया। सर्वश्रेष्ठ प्रकाशक का पुरस्कार ज्योति प्रकाशन के मालिक नगेन शर्मा को प्रदान किया गया। पुरस्कार में दो लाख रुपए का नकद पुरस्कार, एक प्रमाण पत्र और पुस्तकों का एक पैकेट शामिल है।

डॉ. अनामिका रॉय द्वारा बांग्ला में अनूदित दो लोकप्रिय पुस्तकों (कंचन बरुआ के क्लासिक उपन्यास 'असिमत जार हेराल सीमा' और मृणाल तालुकदार का युद्ध आधारित उपन्यास '1962') का असम पुस्तक मेला 2021 में विमोचन किया

गया। दशकों से पाठकों के बीच लोकप्रिय और सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक 'असीमत जार हेराल सीमा' अपने पहले प्रकाशन के 75 वर्ष पार कर चुकी है। दोनों पुस्तकों के प्रकाशक डॉ. अनामिका रॉय मेमोरियल फाउंडेशन को उम्मीद है कि अब तक के सबसे महान असमिया उपन्यासों में से एक का बांग्ला संस्करण भी इस विशेष अवसर पर पाठकों के बीच लोकप्रियता हासिल करेगा।

कुल मिलाकर यह वर्ष असमिया साहित्य के लिए कई दृष्टियों से काफी उपलब्धिपूर्ण रहा। एक तरफ साहित्य की विभिन्न विधाओं के अंतर्गत कई महत्वपूर्ण रचनाओं का सृजन हुआ तो दूसरी तरफ उनके सर्जकों का विभिन्न पुरस्कारों से यथोचित सम्मान भी हुआ। हालाँकि इस वर्ष असमिया साहित्य के कुछ ख्यातिलब्ध शब्द–शिल्पियों का अवसान समूचे असमिया बौद्धिक जगत के लिए अपूरणीय क्षति भी है।

❑❑❑

2

ओड़िया साहित्य

अरुण होता

भारत का राजपत्र, नई दिल्ली, मंगलवार, मार्च 11, 2014 में संस्कृति मंत्रालय की अधिसूचना दिनांक 11 मार्च, 2014 के अनुसार ओड़िया को 'प्राचीन भाषा' के रूप में घोषित किया गया है। उल्लेख किया जाना चाहिए कि भारत की बहुत कम भाषाओं को प्राचीन भाषा (क्लासिकल लैंग्वेज) का दर्जा मिला है। ओड़िया भी क्लासिकल लैंग्वेज के रूप में मान्यता प्राप्त तथा प्रतिष्ठित भाषा है। वर्ष 2021 में ओड़िया साहित्य की विविध विधाओं में कई हजार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। किसी एक आलेख में उन तमाम पुस्तकों की चर्चा संभव और अपेक्षित नहीं हैं। इसलिए विधा के अनुसार ओड़िया में प्रकाशित, चर्चित और प्रशंसित पुस्तकों की संक्षिप्त चर्चा प्रस्तुत की जा रही है ताकि अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य प्रेमियों को सामान्य जानकारी मिल सके, तथा इस वर्ष की प्रकाशित पुस्तकों के आधार पर ओड़िया साहित्य की गति और प्रकृति, दशा और दिशा के बारे में सम्यक् अवबोध प्राप्त हो सके।

कविता

ओड़िया साहित्य में कविता विधा सर्वाधिक उर्वर है। आज की तारीख़ में ओड़िया कविता में चार पीढ़ियाँ सक्रिय हैं। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त सीताकांत महापात्र, रमाकांत रथ, राजेंद्र पांडा, हरप्रसाद दास, प्रतिभा शतपथी आदि की पीढ़ी के बाद नव्यतर पीढ़ी ओड़िया कविता को समृद्ध करती आ रही हैं। वर्ष 2021 में प्रकाशित, चर्चित और प्रशंसित ओड़िया के उल्लेखनीय कविता संग्रहों पर अत्यंत संक्षेप में चर्चा करना अपेक्षित है।

शत्रुघ्न पांडव के कविता संग्रह 'सुनयना और अन्यान्य स्तवक' ने इस वर्ष पाठकों का ध्यान आकर्षण किया। इस कविता संग्रह की सुनयना अंत तक पाठक को विह्वल करती है। काव्य नायक को उसे न पाने का द्वंद्व अथवा उसे और भी अधिक पाने का नशा कवि को विभोर किए रहता है। कौन है यह सुनयना? इसके बारे में कवि का कहना है– "हालाँकि एक नाम भर है सुनयना आप उसे सुलग्ना, मग्ना, सुतपा, सुचरिता, कल्पना, आल्पना अपनी पसंद के मुताबिक पुकार सकते हैं। वह है एक भवभूति अथवा आधार।" 'मगरमच्छ कथा' के अंतर्गत कई कविताएँ हैं। यहाँ लोक कथा के माध्यम से तमाम अनछुए पहलुओं को कवि ने उद्भासित किया है। कवि के सृजन संसार का नया मोड़ निम्नलिखित पंक्तियों में परिलक्षित किया जा सकता है–

असल बात है कि बेर की मिठास से/मोहित
हो चुकी मादा मगरमच्छ बंदर के सामने
ही/अपने प्रतीक्षित हृदय को उन्मुक्त कर
देने का।।

उभरता दृश्य कथा का क्लाइमेक्स है। काव्य–कला की विविधता से परिपूर्ण इस कविता पुस्तक में कवि ने मिथक, प्रतीक, बिंब आदि का काव्यात्मक प्रयोग किया है।

'निआँधरा' (आग सुलगाना) जयद्रथ सुना द्वारा रचित पुस्तक है। इस पुस्तक में कवि का माटी और माँ से प्रेम व्यंजित हुआ है। आम जन की ज़िंदगी और जीवन–यंत्रणा को कवि ने अत्यंत संवेदनात्मक धरातल पर चित्रित किया है–

मेरी जिंदगी गुजर रही है बाबा/जैसे गुजरते हैं रिक्शे के चक्के (रिक्शावाला) जीवन असहनीय हो सकता है लेकिन जीने का आकर्षण प्रबल है हाथ कटाकर खून बहाना मत सीखो। बंजर जमीन में पसीना बहाना सीखो, हवा में फाँस बनाना मत सीखो। ताड़ के पत्रों से हवा लाना सीखो।

कवि माटी का जयगान करता है। क्योंकि यह लाज ढँकने को कपड़ा देती है। सिर टिकाने के लिए झोपड़ी देती है। भूखे पेट के लिए आहार देती है। यह अमृत देती है। इसमें जहर नहीं होता है।

कवयित्री शुभश्री लेंका ओड़िया कविता का एक परिचित नाम है। उनका सद्यः प्रकाशित 'समय की उपकथा' (समयर उपकथा) संग्रह इधर चर्चित रहा है। इसकी कविताओं से गुजरकर पता चलता है कि पास होकर भी दूर और दूर होकर भी पास हुआ जाता है। कहीं प्रेम घी के दिए की तरह जल रहा है तो कहीं वेदना की प्रार्थना प्रेम की प्रतीक्षा में। 'प्रेम जैसा कुछ' कविता की कुछ पंक्तियों में संग्रह का केंद्रीय भाव है–

जानती हूँ मैं/अरुंधती के उपास में एक दिन/खोजते–ढूँढ़ते ठिकाना मेरा/तू आएगा फिर एक बार साथ लिए/प्रेम जैसा अंजुरी में भरकर।

इस शृंखला की ग्यारह कविताओं में द्वंद्व, उद्वेलन आदि के भाव मौजूद हैं। जीवन के क्षणिक सुख का, सुख के सपनों का इन कविताओं में साक्षात्कार किया जा सकता है। सामाजिक सरोकार और राजनीतिक चेतना से संपन्न हैं यह कविताएँ। कवयित्री युद्ध फतह करने वाली समर्थ स्त्री का चित्र आँकने में विश्वास रखती है। स्त्री के अंतर्चित्र को बड़े साहस के साथ प्रतिकूल समय को पार करने में विश्वास। संग्रह में संकलित कुल 24 कविताओं में भाव –वैविध्य है।

'मुट्ठीभर स्वर्ग' (मुठाए स्वर्ग) प्रसन्न कुमार मोहंती का नया कविता–संग्रह है। तलाशने में जितना असहायता बोध– पाने में उतना आकर्षण इस संग्रह की कविताओं में परिलक्षित किया जा सकता है। अकेलापन, मोहभंग, स्वप्न भंग में भी कोई स्वप्न कवि को जीवनोन्मुखी बनाता है जो उसकी कवि–दृष्टि और रचना–दृष्टि का परिचायक है। जिस सत्ता की खोज में हैं उनका आत्मविश्वास ध्यानस्थ हो जाता है। मनोज्ञ बिंब सम्मोहित करता है। यथार्थ से मोहभंग होता है। समय हो या जीवन, स्वप्न हो या दर्शन प्रसन्न कुमार मोहंती के शब्द इस कविता संग्रह में जीवन्यास प्राप्त करते परिलक्षित होते हैं।

'रेस का आख़िरी घोड़ा' (रेसर अंतिम घोडा) सुशील कुमार पाणिग्राही का ख्यात कविता–संग्रह है। कुछ भी न बन पाने या हो पाने के अफसोस में भी अपने को ढूँढ़ पाने का रास्ता ढूँढ़ लेने में सुशील की कविताएँ समर्थ हैं। इसलिए जीवन का जयगान सुनाती हैं–

जीवन चाहे जैसा भी हो/मृत्यु उससे/सुंदर नहीं/जीवन की नीरवता में/जैसे होती है एक खिड़की/किचमिच मचाने के लिए

मृत्यु की खामोशी में होता क्या है? जीवन की सुगंध के लिए तमाम कष्ट सहने के लिए काव्य नायक तैयार रहता है। कवि संघर्ष की क्लांति से मुक्ति पाने के लिए मार्ग ढूँढ़ लेता है।

प्रवासिनी महाकूड ओड़िया साहित्य की प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। अब तक उनके कई कविता–संग्रह प्रकाशित और प्रशंसित हो चुके हैं। अभी हाल में 'काँच–नारी' प्रकाशित हुई है। इसे ओड़िया के कविता प्रेमियों ने खूब सराहा है। स्त्री जीवन और स्वप्न, क्षणभंगुरता के साथ अन्य संवेदनाओं को कवयित्री ने बड़ी शिद्दत के साथ कविता के साँचे में ढालकर अपनी कवि–प्रतिभा से

चमत्कृत किया है। गति और दुर्गति में से स्थिरता को चुनकर स्त्री जीवन के विविध आयामों को अंकित किया है। उनकी कविताओं में स्मृति और जीवनानुभव का सुंदर तालमेल देखा जा सकता है। 'आजकल' कविता की कुछ पंक्तियों का अनुवाद पढ़ा जा सकता है–

रात भर कामिनी फूल की सुगंध से/सुगंधित हो रही है मेरे आस–पास की पृथ्वी और बिछौना के पास एक शुभ्र मोमबत्ती की शिखा/जल रही है मेरे संग– संग।

'दृश्यहीन दरज' श्रीहरि धल की 56 कविताओं से संपन्न नया कविता–संग्रह है। ताकतवरों के हाथ आम आदमी कैसा बेचारा हो जाता है। असहायता का शिकार होता है। इस भावबोध को व्यक्त करने के लिए कवि ने लिखा है–

कल रात ईश्वर ने/प्रसाद समझकर/चट कर खा लिया स्त्री देह को/क्या करता बेचारा प्रेमी?/सारे अस्त्र, सभी विचार/ईश्वर के हाथों में हैं।

संग्रह की खूबी यह है कि कवि ने सुरंग के अंधेरे को भी चित्रित किया है।

'पुनश्च सालवेग' कविता संग्रह हुसैन रवि गांधी की काव्य–कृति है। भक्तकवि सालवेग को केंद्रित करते हुए इस संकलन को प्रस्तुत किया गया है। सालवेग के चरित्र और व्यक्तित्व को नए आयाम प्रदान किए गए हैं। सालवेग के विद्रोह को रूपायित किया है। सालवेग भक्तकवि हैं। फिर उसमें विद्रोह कैसा? ईश्वर और उसके बीच में खड़ी दीवारों को वह तोड़ डालना चाहता है। सालवेग में संप्रीति और सौहार्द्र का स्वर सुनाई पड़ता है– "संप्रीति ही केवल शाश्वत, सिंहासन नहीं।" यह सालवेग बार–बार जन्म लेता है हर युग में सभी बड़े मंदिरों के सामने। सालवेग सीरीज की चौदह कविताओं में समकालीन समय और समाज के चित्र उकेरे गए हैं। यहाँ सामाजिक परिवर्तन और क्रांतिकारी चिंतन की कलात्मक अभिव्यक्ति हुई है। अकेलेपन को ढोने के लिए कलकी की पगध्वनि भी सुनाई पड़ती है– "कोई आ रहा है चुपचाप/क्रमशः पदध्वनि सुनाई पड़ रही है निकट से निकटतर।"

सरोजिनी षडंगी ओड़िया साहित्य में एक प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं– 'सूर्यस्नान', 'आँख कहती है', 'श्वेताम्बरी', 'आत्मजा', 'असवर्ण', 'मानविकी', 'तन्मय तथास्तु', 'माँ नहीं पतिता', 'शब्दों की वर्षा'। नवां दशक से ओड़िशा साहित्य अकादमी सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं। उन्हें अब तक कवि मानुजी राव सम्मान, सुचरिता श्रेष्ठ कवि पुरस्कार, गंगाधर मेहेर कविता सम्मान, सच्ची राउतराय कविता सम्मान, गोकर्णिका कवि सम्मान आदि से सम्मानित किया जा चुका है। जीवन, हँसी, रोना, आनंद, विषाद, आँसू, लहू, अंतर्दाह, स्वप्न, कल्पना आदि भावों से सावलित सरोजिनी का नव्यतम कविता संग्रह है 'शब्दों की वर्षा'। इसमें न केवल आसिफा और सलमा बल्कि तमाम पीड़िताओं का चित्रण मिलता है। सुजाता की देह में आग तो कुंदुली पर एसिड की असह्य ज्वाला को इन कविताओं में अनुभूत किया जा सकता है। सामाजिक अन्याय और स्त्री विरोधी मनोभाव के विरुद्ध स्वर सुना जा सकता है। एक ओर विद्रोह तो दूसरी ओर कविता की कमनीय कान्ति सरोजिनी की कविताओं का जीव–द्रव्य है। 'इंद्रधनुष' शीर्षक कविताओं की अनूदित चंद पंक्तियाँ पढ़ी जा सकती हैं–

अंग–अंग से सुनाई पड़ता है/कोमल गांधार संगीत का/अंग–अंग से झरता है/फल्गु और अबीर का विचित्र संभार।

स्त्री जीवन संघर्ष के विविध चित्र अंकित करने में कवयित्री को विशेष सफलता प्राप्त है।

प्रख्यात वरिष्ठ कवि हरप्रसाद दास की भूमिका के साथ 'ओड़िया कविता की नई पीढ़ी' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसके संपादक हैं सूर्यस्नात त्रिपाठी। इसमें चालीस युवा कवियों की कविताएँ संकलित हैं। संघमित्रा भूतिया, यीशुख्रिस्ट दास, सोनाली पांडा, पवित्र ब्रह्मपुत्र नायक, निखिलेश मिश्र, शुभश्री तनिमा नायक, विकास साहू, राजेश पुजारी, परमा नायक आदि 35 वर्ष से कम कवियों की काव्य–संवेदना से परिचित हुआ जा सकता

है। इस संग्रह के माध्यम से ओड़िया कविता के युवा–स्वर का सुंदर ढंग से साक्षात्कार किया जा सकता है।

शुभश्री शुभस्मिता मिश्र की लगभग साठ कविताओं का संग्रह है 'गर्भाग्नि'। प्रेम को सर्वस्व मानने वाली काव्य नायिका की भेंट होती है बार–बार प्रेम विहीन और उदासी दुनिया से। इससे विद्रोही हो उठता है उसका मन प्राण। इसलिए कवयित्री का हृदय स्थितावस्था के विरोध में विद्रोह करता है। यह विद्रोह अभिमान के रूप में भी प्रकट होता है। इस संग्रह में शब्दों का खेल नहीं, अनुभूति की सांद्रता है। कवयित्री के भाव–संसार से परिचित होने के लिए निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़ी जा सकती हैं–

यकीन करोगे मुझे गंगा बनना न था/तब भी मैं और मैं ही केवल मजबूर थी मंदाकिनी बनने/किसी के पाप का विष पान कर भी/पवित्रता की महान नदी बनना था/आओ ,देखो/अपनी चरम असहायता में भी/मैं महान बनने को कैसे मजबूर हूँ।

'शब्दबीज' शीर्षक कविता पुस्तक विरजा बल की और नरेश मंडल की 'बीच असमान की धूप' ने भी अपेक्षित प्रशंसा अर्जित की है। लेकिन 'जड़' (चेर) के माध्यम से कवि अभय नायक अधिक प्रशंसित रहे। अभय माटी के कवि हैं। उनकी कविताओं में आम आदमी का स्वर मुखर हुआ है। तालाबंदी में नंदमाझी जैसे साधारण मनुष्य के जीवन का स्वर और समर्पण चित्रित हुआ है। इस कवि की कविता पाठक को निराश नहीं करती, उम्मीद जगाती है–

हम आश्वस्त हैं कि तुम हो/अपनी असीम आशा की सरहद सुरक्षित है।

इसी तरह 'खेत पुराण' में अखिल नायक ने भी आम आदमी की आवाज से कविता के नायक को कान लगाकर सुनने का आग्रह किया है। काव्य–नायक इसे सुनता ही नहीं, अपना विरोध भी करता है। प्रतिवाद करता है। आमजन का दुख–दर्द, जीवन यंत्रणा, उनसे की गई धोखाधड़ी के चित्र अंकित करता है। अ से क्ष वर्णों तक कवि ने आम आदमी पर हो रहे शोषण और विद्रोह की तस्वीर उतारी है। आदिवासी शोषण का भी चित्रण करना कवि नहीं भुलाता है–

नुकसान में चल रहा देश/उसे नीलाम करो/खेती में घाटा, घर में घाटा/जहर पीओ, गोली खाओ, मरो।

'खेतपुराण' में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के छल–छद्म को उजागर भी किया गया है–

जूझकर जंगल से/काट कर खूंटे। जहाँ बसाया था गाँव/वहाँ यह मंदिर, यह होटल, यह फार्म हाउस है किसका।

मौजूदा हालात के विरोध में माटी के मनुष्य के साथ गहरी आत्मीयता अखिल नायक की कविताओं का जीवद्रव्य है।

'जययात्रा' सेनापति प्रद्युम्न केशरी का महत्वपूर्ण कविता संग्रह है। यह भी इस वर्ष प्रकाशित हुआ है। मामूली लगने वाले कंकड़–पत्थरों में भी कवि प्रेम का संधान कर लेता है। प्रकाशोन्मुखी मनुष्य में अँधेरे को पारकर जाने का सामर्थ्य होता है। प्रेम, आनंद और मुक्ति का स्वर इस पुस्तक में प्रमुखता के साथ उभारा है। इसकी कई कविताओं में दुःख में भी सुख को सँजोने का आह्वान है। दुःख से बढ़कर अपना कोई नहीं होता। दुःख सबसे उत्तम सखा होता है। समकालीन समाज की तमाम घटनाओं–दुर्घटनाओं के साथ मिथकों के प्रयोग से कविताएं अधिक रोचक बन पड़ी हैं।

समकालीन ओड़िया कविता में गीति कविता भी पर्याप्त मात्रा में लिखी जाती रही है। इस दृष्टि से किशोर मोहंती की 'जह्नरातिर गीति' का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। इस गीति कविता पुस्तक में 122 गीति कविताएँ संकलित हैं। ये गीत जीवन के अंधेरे और उजाले दोनों को व्यक्त करते हैं।

'यशोधारा' कवयित्री सुषमा दास की काव्य–रचना है। कवयित्री का मानना है कि टूटकर भी गढ़ने का सपना यशोधारा को मालूम था। सभी प्रकार के वैभव के बीच रहकर भी तपस्विनी का जीवन बितानेवाली यशोधारा का जीवन चित्रण सुंदर ढंग से उकेरा गया है। गौतम के गृहत्याग के बाद उसके ज्ञान चक्षु खुले। उसने यथार्थ को

सँजो लिया अपने हृदय में। अपने जीवन में विरह की व्यथा और निःसंगता के बावजूद आत्मज्ञान के ऊँचे शिखर पर पहुँच सकी थी। इसे कवि ने अत्यंत मनोज्ञ ढंग से प्रस्तुत किया।

'अनेक उनींदी परछाइयाँ' सुपरिचित कवि सूर्य मिश्र का नवीन कविता संग्रह है। सब कुछ ख़त्म हो जाने के पल में भी कवि ने प्राचुर्य की बात को अनदेखा नहीं किया है। उसने असफलता और असहायता को भी कविता में स्थान दिया है लेकिन सत्य की स्वीकारोक्ति और यथार्थ को महत्व दिया है। यह सत्य आँखों देखा नहीं, अंगों से निभाया गया सत्य है। सत्य की खोज परछाइयों की थकावट को भी दूर कर देती है। कवि की सूक्ष्म अंतर्दृष्टि का सुंदर परिचय इस काव्य–कृति के माध्यम से परिलक्षित किया जा सकता है।

महामारी के दौर में तमाम रचनाकारों ने कोरोनाकालीन अनुभवों को साझा किया है। धनंजय स्वाइँ ने 'करोना सतक' कविता की पुस्तक लिखी है। इसमें कोरोना में आम आदमी, प्रवासी मजदूर, उनके परिवार की स्थितियों को सौ कविताओं में अभिव्यक्त किया गया है। प्रसंगतया उल्लेख किया जा सकता है कि विभीषिकामय कोरोना से संबंधित बारह निबंध मौसुमी परिड़ा के भी प्रकाशित हुए हैं। बहरहाल, धनंजय स्वाइँ की पुस्तक में प्रवासी मजदूरों से खाए–पिए अघाए वर्ग की उपेक्षा और घृणा का भी चित्रण है। लेकिन बुरे दिनों में भी फिर से आगे बढ़ने का स्वप्न अंकित हुआ है–

सिखाया है इस कोरोना ने कैसे/थोड़े में भी जिया जा सकता है/सिखाया है फिर धीरज रखें/वो मुसीबत टल जाती है। बीत जाएगा यह वक्त भी।

पौराणिक कथा को आज के संदर्भ में जाँच–परख कर दीपक मिश्र ने 'राधेय ऊवाच' शीर्षक से कविता संग्रह प्रस्तुत किया है। कवि ने कर्ण के चरित्र के विभिन्न पहलुओं का काव्यिक चित्रण किया है। कर्ण के आत्मदहन का मर्मस्पर्शी वर्णन हुआ है। इस कविता पुस्तक में कर्ण और अश्वत्थामा के मिथकीय संदर्भों को युग संदर्भ में परत–दर–परत खोलने में कवि सफल रहा है। कवि ने इन कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद भी इस पुस्तक में शामिल कर इसकी व्यापक उपयोगिता को साबित किया है।

अध्यापक श्री देव की कविता पुस्तक 'आलोकिता' का मुख्य आधार है प्रेम। 'सुविधा', 'भास्वती मोहंती', 'माधुरी', 'अंतिमा' आदि कविताओं में प्रेम का भिन्न स्पर्श है। भिन्न इसलिए कि कवि ने प्रेम को नारी में ही नहीं नक्षत्र, नदी अथवा ललित शब्दों में भी ढूँढ़ा है। प्रेम नहीं समझता है कि देवी है या मानवी, प्रेम को नहीं चाहिए आशीर्वाद या अभिशाप। प्रेम साधन नहीं साध्य है। प्रेम हमारी आत्मा को आलोकित करता है। कहना न होगा कि इस पुस्तक के बहाने कवि की प्रेम–दृष्टि और जीवन–दृष्टि का सुंदर परिचय प्राप्त होता है। 'चास बास' (खेती बाड़ी) श्री देव का दूसरा कविता संग्रह है जो इस वर्ष प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक की कुछ काव्य–पंक्तियाँ पढ़ी जानी चाहिए–

फिर विदर्भ जाना नहीं पड़ेगा किसान को/महाराष्ट्र का विदर्भ/अब चलो अपने–अपने खेत/मेड़ पर बैठेंगे पगड़ी बाँधकर/माथे पर एक हाथ रखे/दूसरे से आसमान पर ऊँगली की टीप रखना।

किसान का दुःख भला कौन समझता है? किसान अपने दुख से मुक्ति के लिए उपाय ढूँढ़ता है कुछ बूँदें जहर की। इससे उसके परिवार की केवल खेती नहीं उसका बसेरा भी उजड़ जाता है। किसान के असीम दुख, यंत्रणा और संघर्ष असीम हैं। इस पुस्तक में संवेदना के साथ–साथ कलात्मकता भी मौजूद है।

'कालजयी ओड़िया कविता' शीर्षक पुस्तक युवा आलोचक श्रीकांत कुमार बारिक द्वारा संपादित और ब्लैक इगल बुक्स, डबलिन, अमेरिका द्वारा प्रकाशित है। प्रसंगतया उल्लेख किया जा सकता है कि पिछले दो वर्षों से ब्लैक इगल ने ओड़िया में बहुत उल्लेखनीय पुस्तकों का प्रकाशन किया है। 1843–1950 के बीच जन्में कवियों की कालजयी कविताओं से यह पुस्तक समृद्ध है। इसमें फकीरमोहन, राधानाथ से लेकर समकालीन विपिन नायक तक के सौ कवियों की महत्वपूर्ण रचनाएँ

संकलित हैं। भीमा भाई 'मो जीवन पछे....' कांतकवि लक्ष्मीकांत महापात्र की 'वंदे उत्कल जननी', गोदावरीश महापात्र की 'उठो 'कंकाल' सच्ची राउतराय की 'छोटा मेरा गाँव', रमाकांत की 'चंद्रमा का कंगन', सीताकांत की 'दूसरा दृश्य', राजेंद्र किशोर पांडा की 'बेटी के लिए एक कविता', हरप्रसाद दास की 'वंश कविता–60'

प्रतिमा शतपथी– 'साहाडा सुंदरी' जैसी बहुपठित चर्चित लोकप्रिय कविताएँ संकलित हुई हैं। पुस्तक के अंत में कवियों का संक्षिप्त परिचय भी प्रदान किया गया है।

'ईश्वर होना चाहता हूँ' कुलमणि जेना की काव्य–कृति है। इस पुस्तक की कविताओं के माध्यम से स्वस्थ चेतना के साथ एक सुंदर समाज की कल्पना उकेरी गई है। भयरहित सहज सरल जीवन धर्म और राजनीति को लेकर अनेक प्रतिक्रियाएँ समावेशित हैं। असली मनुष्य और मानवीयता की खोज करती इन कविताओं में कवि के सामर्थ्य का परिचय मिलता है। कवि का मानना है कि बिना संघर्ष के स्वप्न अधूरा रह जाता है।

अबूझ पक्षी का गीत चर्चित कवि रवि शतपथी की कविता पुस्तक 'अबूझ पक्षी का गीत' को पाठकों ने खूब सराहा है। समकालीन समाज का चित्रांकन करते हुए काव्य नायक दु:समय का साक्षात्कार करता है और गिर पड़ने का डर होते हुए भी अपना साहस नहीं खोता। वह खूब भरोसा रखता है अपने ऊपर। अंधकार और प्रकाश का चित्रांकन करते हुए जीवन की गहराई को स्पर्श करना इन कविताओं की बड़ी खूबी है। कई कविताएँ कवि के जीवन दर्शन को अभिव्यक्त करती हैं। 'प्रकृति की उपासना', 'समय की शंख ध्वनि', 'गीत कविता', 'भक्ति', 'प्रेम', 'प्रकृति के चित्र' आदि कविताएँ इस भावबोध की हैं।

प्रतिष्ठित कवयित्री ममता दाश की कविता पुस्तक 'शून्य चित्तायन' की काव्य नायिका अकेलेपन की शिकार है। लेकिन क्या वह अकेली रह पाती है? बीते दिनों की तमाम स्मृतियाँ उसके साथ हैं। ममता दाश की कविताओं में अक्सर पारकर जाने की एक तैयारी परिलक्षित होती है। मृत्यु चेतना में भी जीवन को स्पर्श करने के चमत्कार को भी पार कर जाने का प्रयास है। अंधकार और पश्चाताप में से अपने को मुक्त करने का निरालापन कई कविताओं में प्रस्तुत है। इस पुस्तक में संगृहीत कुल चालीस कविताओं में कवयित्री के विविध भावबोधों और संवेदनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।

कहानी

ओड़िया के प्रसिद्ध कथाकार विभूति पट्टनायक की दस कहानियों का चयन करते हुए पीतवास राउतराय ने 'कथा दशक' का संपादन किया है। 'भारतवर्ष', 'महात्मा मैजिक', 'समांतर सरलरेखा', 'बइ दास का बैल', 'काली–गोरी', 'अपराह्न का आँसू', 'धुलिया', 'आबकारी मंत्री' आदि कहानियाँ हैं। इन कहानियों को उत्कृष्ट कहानियाँ क्यों माना जाना चाहिए, इस पर विचार–विमर्श करते हुए आलोचक– असित मोहंती, दाश बेनहूर, गौरिहरि दास, कृपासागर साहू, हिरणमयी मिश्र, अरविंद राय, रवि पांडा, क्षीरोद दास, सदानंद त्रिपाठी, सीतेश त्रिपाठी ने लेख लिखे हैं। इसके साथ–साथ अपनी सारस्वत साधना और रचना–दृष्टि के बारे में विभूति पट्टनायक का अभिमत भी प्रकाशित हुआ है। कुछ साक्षात्कार इस पुस्तक में समावेशित हैं। हमारे समय की श्रेष्ठ कहानियाँ सीरीज में प्रकाशित ये कहानियाँ, कहानी संबंधी आलोचना से ओड़िया कथा–प्रेमी लाभान्वित होंगे।

'देही और अन्यान्य गल्प' के कथाकार अमूल्यमणि मिश्र हैं। यह ब्लैक इगल बुक्स, अमेरिका द्वारा प्रकाशित है। "जब तक एक बड़ा धक्का नहीं लगता, तब तक कहानी खत्म नहीं होनी चाहिए" कहानीकार का यह विचार उनकी कहानियों के माध्यम से प्रतिफलित हुआ है उनकी कहानियों में गहरा घाव है। 'घाव' शीर्षक कहानी में नाना जी नाती को अपने शरीर के सारे घावों को बड़े गर्व के साथ दिखा रहे होते हैं मानो विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्राप्त चाँदी और सोने के मैडल हों। लेकिन जब नाती ने नाना से उनके एक घाव के बारे में पूछा कि आपने इसके बारे में तो कुछ नहीं बताया कि यह इतना गहरा कैसे हुआ तो नाना को कोई

उत्तर नहीं सूझता। कथा कहने का ढंग इतना रोचक है कि पाठक कहानी का सहयात्री बन जाता है। इन कहानियों के माध्यम से समकालीन जीवन के सुंदर चित्र उकेरे गए हैं।

रजनी रंजन का कहानी–संग्रह 'मुहुर्तर मानचित्र' (पलभर का नक्शा) में कैनवास पर अपने इर्द–गिर्द चलते–फिरते पात्रों, घटनाओं, दुर्घटनाओं के कुछ रंग मिलाकर कहानियाँ रची गई हैं। एक स्वप्नदर्शी कहानीकार के रूप में रजनी रंजन को जाना जा सकता है। यहाँ स्वप्न अपूर्ण रह जाते हैं। आधे–अधूरे रह जाते हैं। 'टाइम पास' शीर्षक कहानी में छात्र जीवन की स्मृतियों को उकेरा गया है। यह कहानीकार केवल स्वप्नदर्शी नहीं बल्कि प्रेम कंगाल भी है।' टिमिनानी' अपनी दीदी न होते हुए भी कभी न भुलाए जानेवाले स्नेह का स्पर्श प्रदान करती है तो कथा नायक भावुकता से परिपूर्ण हो जाता है। प्रेम, विरह, अतीत प्रेम, आवेगधर्मिता आदि भावों से इस संग्रह की कहानियों ने पाठकों के मन में प्रभाव अंकित किया है।

'जीवन एक नदी' के कहानीकार विजयानानद सिंह हैं। इसमें कुल 14 कहानियाँ हैं। जीवन एक नदी है। कितने ही मोड़ हैं इसके, बहना इसका धर्म है। नदी में पानी का बढ़ना या घटना जीवन में पूर्णता अथवा शून्यता के समान है जिसे रूपेंद्र और उनकी पत्नी कुमुदिनी ने महसूस किया। धारा में बहती डाली बचाना, अपनी बेटी का पालन–पोषण करना आदि से दंपत्ति को पूर्णता का अहसास हुआ लेकिन, उसे फूफा और फूफी को सौंपते समय शून्यता से भर जाने की स्थिति को कहानीकार ने अत्यंत संवेदना के साथ वर्णित किया है– "जिस प्रकार नदी पूर्णगर्भा हो तो सुंदर दिखती है उसी प्रकार जीवन परिपूर्ण हो तो सौंदर्य से भर उठता है।" समाज–जीवन के चित्र 'संभावना की सुबह' सरस्वती ओझा के दुःखद जीवन में भी गहरा आत्मविश्वास मानवीय मूल्यबोध है तो सामाजिक यथार्थ के चित्र भी अंकित हुए हैं।

'सुखी झिअ' (सुखी लड़की) प्रसिद्ध साहित्यकार यशोधरा मिश्र का नवीनतम कहानी संग्रह है। इनकी कहानी 'स्त्री जीवन' में इलिमा के सुख की तलाश है। लेकिन स्त्री जीवन में भला सुख कहाँ है? बाहर जो दिखाई पड़ता है क्या असलियत में अंदर भी वही है। इलिमा लंबे अरसे के बाद अपनी सहेली से मिलती है। कथाकार ने उसकी अव्यक्त यंत्रणा को व्यक्त किया है। कॉलेज जीवन से हमेशा सुखी और खुश लगने वाली इलिमा विवाहोपरांत किन हालातों से गुजरती है, उसका अंकन किया गया है। आर्थिक सुविधाएँ क्या सुख का मानक बन सकती हैं? इलिमा के माध्यम से इसका विवेचन किया गया है। 'खली घर' की सुधेष्णा अपनी आँखों के सामने बेटे की दुनिया नष्ट होते देखकर टूट जाती है लेकिन बेटा और बहू नहीं, नतनी को दिलासा देती हैं तो बेटा ढाँढ़स बँधाता है– "परेशान न हो माँ, मिठी अपनी माँ के साथ अच्छी तरह रहेगी। मैं भी बीच–बीच में उससे मिल आऊँगा, तू भी।" आधुनिक जीवन की नई–नई यंत्रणाएँ, स्वप्न, स्वप्नभंग आदि को कथा–सूत्र में सुंदर ढंग से पिरोया गया है।

अनिल कुमार दास के 'मंत्रारूढ़' में एक ओर ललिता तो दूसरी ओर उसके बचपन की सहेली सौदामिनी का चरित्रांकन किया गया है। सौदामिनी के लिए देह सीढ़ी है। 'ललिता की सोच और उसके सवाल' कहानी में कथा के बहाने चित्रित किए गए हैं। 'अदृश्य निवास' में कहा गया है."अरे पागल, देह से निकलने का मतलब क्या उसे जलाकर राख कर देना? देह से निकलने का आशय एक दूसरी चेतना है। वहाँ पहुँचने का मतलब आनंद ही आनंद है। वहाँ कुछ और नहीं होता। जीवन और दर्शन को कहानी के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

'जीवनर बाटेघाटे' भुवनेश्वरी पांडा की छोटी–छोटी लगभग पचास कहानियों से समृद्ध कहानी पुस्तक है। दैनंदिन जीवन की घटनाओं और पात्रों के माध्यम से कथा का विन्यास हुआ है। 'बहुरूपी' में दूसरों की कमियाँ निकालकर जनक माई अपनी बहू के बारे में ठीक उल्टा आचरण करती है। 'ऑफर' शीर्षक कहानी में बिना काम किए ठगनेवाला चंदन डींगें हाँकता है तो कथा नायिका को दुख होता है। उसे कहीं से

ऑफर नहीं आता। लेकिन कहानी के अंत में चंदन को नहीं कथा नायिका को ऑफर मिलता है। 'संपत्ति अधिकार' में स्त्री का पीहर की संपत्ति पर अधिकार के बारे में पति बार–बार चेतनशील करता है, लेकिन बेटी के कर्तव्य के बारे में खामोश रहता है। नायिका के मन में गहरी पीड़ा को कथाकार ने संवेदनशील दृष्टि के साथ प्रस्तुत किया है।

'पेड गर्लफ्रेंड' में रंजन प्रधान ने प्रेम, धोखा, अवसाद, अस्वाभाविक संपर्क, गहरा विषाद, आत्मपीड़ा का चित्रण किया है। उच्चशिक्षित युवती नौकरी की तलाश में 'देहबाजार' में अपने को 'ब्लू रोज' के रूप में पाती है। सिनेमा की दुनिया में आधुनिक युवती की कहानी को 'स्क्रीन टेस्ट' कथा के माध्यम से व्यक्त किया गया है। 'सी बीच में खुबसूरत लड़की', 'कालगर्ल' 'मैट्रिमोनियल' जैसी कहानियों में बाजारवादी अर्थव्यवस्था की चालाकियों और षड्यंत्रों को उद्घाटित किया गया है।

रवि स्वाईं की नवीनतम कहानी पुस्तक 'निदाघ' है। इसमें सोलह कहानियाँ संगृहीत हैं। मनुष्य सफलता के पीछे दौड़ता है। लोगों की दृष्टि में सफल भी होता है। लेकिन जब वह अपने को ढूँढ़ता है तो क्या पाता है? अपना चित्रपट पहली कहानी में चित्रकार आकुली महाराणा दूसरों के इतने अधिक चित्र अंकित करके भी अपना चित्र न अंकित कर पाने की पीड़ा, सफलता भी कितना व्यर्थ होती है, सफलता के पीछे दौड़ना सब कुछ नहीं होता है, न जाने कितने मूल्यवान मुहूर्त और जीवन के पल अनदेखे रह जाते हैं। 'निदाघ' से गुजरते हुए पाठक कहानी के बड़े बाबूजी धरणी की अंतर्वेदना को महसूस करता है और आँख नम कर लेता है। विदेश के बड़े डॉक्टर अक्षय को याद करते दादाजी की मानसिक स्थिति अत्यंत दुखदायी होती है। 'बया पक्षी का बसेरा' में बया को प्रदर्शनी से लाकर छत पर बाँध दिया जाता है लेकिन उसका मन उसके बहाने अपनी मिट्टी, पेड़–पौधों, नहर–नाले, अपने गाँव में लगा रहता है। ताड़ खजूर के पेड़ों में बसेरा बनाने वाले नए पक्षियों की किचिर–मिचिर की उसे खूब याद आती है।

'शून्य उपत्यका' शीर्षक कहानी क्षीरोद दास की है। इसमें बार–बार खाँचे में फँसने वाले और अंत में जहरीला खाद्य खाकर मरने वाले चूहे को देखकर चंद्रकांत और उनकी पत्नी कैसे प्रभावित होते हैं, इसका चित्रण हुआ है। 'रंगमंच' में मनमथ बाबू अपनी बेटी वर्षा से डरते हैं। उसे लेकर असुरक्षित भी महसूस करते हैं। 'पलभर का मोह' कहानी में प्रधान बाबू की दुर्घटना से मृत्यु के बाद उनकी बहन मिलने आती है तो पत्नी सरिता की मनःस्थिति से परिचित होती हैं। उसके तथा उसके बच्चों के मनोविज्ञान के साथ–साथ समाज के अनेक पहलुओं को भी कथाकार ने प्रस्तुत किया है।

'प्रेमिका की छोटी बहन' अमरेश विश्वाल का कहानी संग्रह है। अक्सर ऐसा होता है कि जहाँ प्रेम को ढूँढ़ा जाता है वहाँ नहीं होता, वह कहीं और खामोश बैठा होता है। 'प्रेमिका की छोटी बहन' में दीपा से प्रेम करने वाले अमरज्योति के बारे में वह अंत तक जान न सकी थी कि उसकी छोटी बहन लोपा के हृदय में उसका प्रेमी प्रियतम के आसन पर बैठा हुआ है। अचानक कई वर्षो बाद लोपा से मिलने के बाद उसे पता चलता है कि उसने दीपा को लिखे प्रेमपत्र में दीपा के स्थान पर लोपा ने अपना नाम लिखा था। प्रेम का कोई निश्चित सूत्र अपना मार्ग नहीं है। दूसरी कहानी 'घृणा मित्र का फोटो' में देवोलीना दे का आभासी दुनिया के प्रेम का चित्रण हुआ है। यह प्रेम फ़ेसबुक के माध्यम से दिखाया गया है। जो फ़ोटो था वह व्यक्ति गुजर चुका था। लेकिन देवोलीना की जिद्द फोटो देखने की थी। प्रेम में नश्वरता को पार कर जाने की शक्ति होती है, 'फेसबुक फ्रेंड' तरुणी आवेग इमार से कथा नायक का प्रेम वात्सल्य में बदल जाता है।

'कितने लोग कितने दुःख' कथा–संग्रह में रविनारायण दाश ने दुःख में सुख तथा सुख में दुःख के साक्षात्कार करने वाली कहानियाँ लिखी

हैं। इन कहानियों से कहानीकार की चिंतन दृष्टि का परिचय मिलता है। नारायण, नरेंद्र भाई, सुबोध जैसे पात्रों का चरित्रांकन अत्यंत प्रभावी ढंग से हुआ है।

राज्यवर्धन धल महापात्र की सोलह कहानियाँ 'सब कुछ माया है' शीर्षक संग्रह में संगृहीत हैं। गाँव में खेले गए नाटक में एक छोटी–सी भूमिका अदा करने का अवसर मिला था गणेश को एक तपस्वी की भूमिका में उसका एक ही डायलॉग था– "सब कुछ माया है। लेकिन इस छोटे से संवाद ने गणेश के जीवन को कितना परिवर्तित कर दिया, इसे कथा–सूत्रों में पिरोया गया है। इस कहानी की नाटकीयता और पाठकीय उत्कंठा इसे विशेष बनाती हैं। संग्रह की कहानियों में ग्राम्य जीवन, टूटते दरकते समाज जीवन और राजनीतिक स्थितियों का अँकन हुआ है। आमजन की पीड़ा का चित्रण करने वाला एक उदाहरण पठनीय है– "भला गाँव में अब कौन–सा काम रह गया है? न खेती, न व्यापार, न? हम इंतजार करेंगे कि यह एक रूपये किलो वाला चावल कब बंद होगा और कोई हमें बंदर की तरह भगाते हुए कहीं और पहुंचा देगा"

देवप्रिय प्रियदर्शी चक्र का नया कहानी संग्रह है 'तापमात्रा' (तापमान)। संग्रह की कुल बारह कहानियों में प्रेम, विरह, जीवन के विविध संघर्ष, संदेह, सामाजिक लांछन, मानसिक विकलांगता, रहस्य रोमांच, विस्थापन का दर्द अंकित हुआ है।

'तैलचित्र' सच्चिदानंद की नयी कथा–कृति है, जिसमें पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं। हमारे दैनंदिन जीवन की मामूली घटना में भी कहानी छिपी रह सकती हैं। इसे 'तैलचित्र' राधानाथ बाबू के कर्मव्यस्त जीवन में शांति देवी अपने मन की बात कर नहीं पाती हैं, जब मौका मिलता है तो जीवन का मोड़ बदल जाता है। फिर से उन्हें खामोश रहना पड़ता है। 'कोलाहल' में अंधारुआ पात्र का सुंदर चित्रण हुआ है। साथ ही आम आदमी के दुःख–यंत्रणा के चित्र भी सुंदर ढंग से उकेरे गए हैं।

अक्षय मोहंती ओड़िशा के सर्वाधिक लोकप्रिय संगीतकार और गायक हैं। उनकी संपूर्ण कहानियाँ लगभग सौ की संख्या में हैं। इन कहानियों में अक्षय जी के जीवनानुभवों का वर्णन है।

रामचंद्र बेहेरा ओड़िया के बहुचर्चित कथाकार हैं। पिछले चार–पाँच दशकों से उनका कथा–कर्म निरंतर सक्रिय रहा है। उनका नवीन कहानी–संग्रह 'सजुब छद्मवेश' है। उनकी कहानी मानवता की खोज करती है। यह खोज बाहर से मनुष्य का अन्वेषण नहीं है। कहानीकार उसे ढूँढ़ता है बहुत गहरे में जाकर। उनके पात्र अपनापन से अलंकृत हैं। कहानी की भावभूमि संवेदनशीलता से ओतप्रोत है।

'आँचल में घर' गायत्री सराफ की 14 कहानियों का अद्यतन संग्रह है। आदमी से आदमीयत दूर सरकती जा रही है। मुखौटाधारी बिना मुखौटा वाले सीधे–सादे लोंगों का शोषण किए जा रहे हैं। शीर्षक कहानी में मौसी छल का शिकार बनती है अपने भतीजे, भतीजा बहू और नाती से। दामाद के सामने मौसी अपने शोषण को ढँककर रखना चाहती है। संघर्षमय जीवन को भी सुंदर ढंग से चित्रित करने में 'यही तो उड़ान है' की नायिका अधुना के माध्यम से कथाकार ने कहलवाया है . "अब वह जिंदा रहेगी सम्मान के साथ, स्वाभिमान के साथ।" सुख–दुःख, मानवीय संवेदना के साथ समकालीन जीवन संदर्भ को भी शिद्दत के साथ प्रस्तुत किया गया है। इसी तरह 'मरूमेघ' में चिन्मयी पांडा ने खुशी की उन्मुक्त हँसी बनी न रहने का मार्मिक चित्रण किया है। लांछित रूढ़वादी मानसिकता, परिवार या समाज के लिए स्त्री के त्याग आदि का वर्णन है। 'गाँव की लड़की' संग्रह में बीस कहानियाँ हैं। सामाजिक रीति–नीति, सांप्रतिक समाज की विडंबना, जीवन, समाज और संबंध के विपर्यय के साथ–साथ पात्रों का मनोविज्ञान, उनके जीवन दर्शन आदि को विभिन्न कथा–सूत्रों में पिरोने का सफल प्रयास किया गया है।

'मुक्ति और अन्याय गल्प' क्षीरोद दास का कथा–संग्रह है। इसे कथाप्रेमियों ने पसंद किया

है। सपने कितने पास बुलाते हैं, लुभाते हैं लेकिन बहुधा बिखर जाते हैं, अधूरे रह जाते हैं। क्षीरोद की कहानियाँ तमाम सपनों से बाँधे रखती हैं लेकिन यथार्थ के ठोस जीवन से टकराकर चूर–चूर भी कर देती है। उन सपनों को 'मुक्ति' शीर्षक कहानी में मणिमाला के प्रेम में अमित डूबा रहता है लेकिन दूसरे के साथ घर बसाते हुए भी मणिमाला के प्रेम से मुक्त न होकर छटपटाना उसकी नियति है। मुक्ति पाने के लिए निकलता है तो बंध जाना नाटकीयता है। यथार्थ को क्लाइमेक्स के रूप में चित्रित करना क्षीरोद दास का कथा वैशिष्ट्य है। 'लोगो की आँखों में प्रेम जो दिखाई पड़ता है' कहानी की कथा नायिका वनलता की ओर अजू खिंचा चला आता है। प्रेम पाकर भी न पाने की आग में दग्ध होते हैं दोनों। 'मूकर राजपुत्री' (गूँगे की राजपुत्री) में भाग्य की विडंबना की तुलना में सामाजिक प्रताड़ना का भयानक चित्र अंकित किया गया है।

पारमिता शतपथी की 13 हृदयस्पर्शी कहानियाँ हैं 'चित्रा माछरंका' में। शीर्षक कहानी में समाज के निम्न वर्ग की एक लड़की, कथा वाचिका डॉक्टराइन रीना की सहपाठिनी टुनी है। उसकी दीदी मनीदेई बड़ी जाति वाले कृष्ण से प्रेम करती है। परिवार से स्वीकृति नहीं मिलती। दोनों घर से भागकर रहने लगे थे। बाद में समाचार मिला कि स्टोव के फटने से मनीदेई की मृत्यु हो गई। जातिवाद की आग समाप्त नहीं होगी तो संबंध टूटते बिखरते रहेंगे। स्त्री जीवन की विविध समस्याएँ 'याद आना', 'प्रत्यय', 'क्षयमान' आदि कहानियों में सफ़लता पूर्वक प्रस्तुत की गई हैं।

'श्रेष्ठ गल्प' शीर्षक से चर्चित कहानीकार आर्य यज्ञदत्त का नवीनतम कहानी–संग्रह प्रकाशित हुआ है। इसमें मानवीयता, आदर्शवाद तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का परोक्ष चित्रण हुआ है। नकारात्मक पात्रों को सही मार्ग प्रदर्शित करना अथवा इस मनोभाव के भयानक परिणाम को चित्रित करना लेखक का आभिमुख्य रहा है। पहली कहानी 'दूत' में एक कबूतर मानो समाज के लिए सुंदर संदेश लेकर आता है। इसके माध्यम से जिलापाल ने शांति कमेटी को सचेतन कराया है। सही रास्ते पर लाने का प्रयास किया है। 'अंधार विजय' में युवक का सुलभ सुख अस्थायी रहता है। उसे बेवजह दंडित करने का प्रयास होता है। जब प्रकाश का आगमन हो रहा होता है उस समय सघन अंधकार ढँक जाता है। कहानी की व्यंजना और सूक्ष्म भावभूमि मन को आंदोलित करती है। शोषण, पीड़न, कटाक्ष, शठता आदि उसकी कहानियों को नया मोड़ देते हैं।

'मोक्षपथ' देवव्रत मदन राय की पिछले साल प्रकाशित हुई कहानी पुस्तक है। इसमें कुल 18 कहानियाँ हैं। अब कहाँ मिलेंगे गाँधी जी? 'महात्मा' के मुख्य पात्र प्रशांत में उन्हें ढूँढ़ा जा सकता है– "आँखों पर गाँधी जी का चश्मा नहीं पहना है, लेकिन बिलकुल साफ़–साफ़ पढ़ सकता हूँ गांधी दर्शन।" आई ए एस की नौकरी से स्वेच्छया अवसर लेनेवाला प्रशांत कहता है– "दस्तखत करने को राजी नहीं हुआ सरकार की योजना प्रस्तुति में। पता चला उसमें दरिद्रतम व्यक्ति का उपकार या भला नहीं होगा बल्कि अनेक धनकुबेर वैभव के स्वप्नों को साकार करेंगे।" गहरी मानववादी चेतना और आवेगधर्मिता पात्र बाहर से साधारण प्रतीत होते हुए भी अंदर से असाधारण हुआ करते हैं। जीवन और मृत्यु के सरहदों में वे ठहरे हुए नहीं रहते हैं। मोक्ष पथ पर आगे बढ़ते हैं। अटूट विश्वास और हृदय भरा प्रेम उनके अमोघ अस्त्र हैं। पात्रों के बहुविध वैचित्र्य से भरपूर हैं इस संग्रह की कहानियाँ।

तरुणकांति मिश्र की पुस्तक 'नीड़, नदी और तमाल' ठहरकर पढ़ने की माँग करती है। क्यों? पात्रों के विक्षोभ और आँसू में पाठक बिना शामिल हुए आगे नहीं बढ़ पाता। पहली कहानी 'अहल्या' में पति की हत्या के आरोप में गिरफ्तार होने के पहले अपने तीन साल के शिशु को अंतिम बार के लिए दूध पिलाती है तो दूध नहीं झरता, आँखों से आँसू की धाराएँ बहती हैं। वह सरपंच को प्रणाम करती है। कांस्टेबल से कहती है– "मुझे मार डालो। कहना कि मैं भाग रही थी। तुम्हें इनाम मिलेगा।" जादुई यथार्थ का सुंदर प्रयोग कहानी में

हुआ है। 'वासु' में वासु अपने पिता को डंसनेवाले साँप सुलतान को मार डालने के पहले रुक जाता है। साँप भी तो रो सकता है। संवेदना की व्याप्ति लेखक की अनन्यता है। पाठकों की उत्सुकता को बनाए रखने में रचनाकार को कामयाबी हासिल हुई है।

'मिट्टी का घोड़ा' प्रदीप्त महापात्र का नया कहानी–संग्रह है। अधूरी इच्छाओं का प्रतीक है माटी घोड़ा जिन्हें पूरा करने का विश्वास कथा नायक को है। इस कहानी के माध्यम से ग्रामीण जीवन और मिट्टी की सुगंध का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया गया है। केवल गाँव के लोग ही नहीं बल्कि बूढ़ी ठकुराइन भी बात करती है। ममता के आँचल पसार देती है। जीवन के अंतर्द्वंद्व का मनोज्ञ चित्रण मिलता है। 'असंलग्न पृथ्वी' शीर्षक कहानी में अपना घर बार छोड़कर नानी बेटा बहू के पास रहकर नाती की देख–रेख में जुट जाती है लेकिन इधर उसका अपना घर उजड़ने लगता है। इस कथा के माध्यम से जीवन का वैचित्र्य रूपायित किया गया है। नानी यहाँ आती है तो वह पृथ्वी फिर से असंलग्न, अव्यवस्थित हो जाएगी। हो सकता है कि वह तो होगी लेकिन वे न हों। कभी उसका केवल प्यार ही होगा और बाकी लोग न हों। उसे आँसुओं में देखते रहेंगे। पात्रों की दृष्टि में जीवन को ढूँढ़ने का सुंदर प्रयास लगभग सभी कहानियों में मौजूद है।

उपन्यास

'न जा न जा नचिकेता' (न जाओ, मत जाओ नचिकेता) उपन्यासकार विभूति पांडा की कृति है। "मंटू तुम्हें तो मालूम है कि आजादी के बाद मैं रेवेन्शा महाविद्यालय में पढ़ते समय ओड़िया भाषा–भाषियों के एकीकरण और षडेइकला खरसुआ की माँग को लेकर अपने उस छात्र आंदोलन में ओड़िया का राजनैतिक 'सीमा आंदोलन' का अंग था।" अशोक मामा के इस कथन में अतीत के छात्र आंदोलन का स्वरूप स्पष्ट होता है जो सामूहिक स्वार्थ के लिए समर्पित था। लेकिन चंद नेताओं की अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति ने कथा–नायक को व्यथित किया है। शिक्षण संस्थाओं में राजनीति की दख़लंदाज़ी और शिक्षा व्यवस्था की पृष्ठभूमि में लिखे गए इस उपन्यास में रचनाकार की व्यथा समझी जा सकती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के कई दशकों के बाद भी राजनीतिक घटनाएँ हमारे सपनों को कुचलती चली जा रही हैं। छात्रों के अंधकारमय वर्तमान और भविष्य को कथा के बहाने व्यक्त किया गया है। आज समाज में नचिकेता और आरुणी के साथ कर्ण और जारा नेताओं के पिछलग्गू बनकर पार्टी में शामिल होकर नशे का शिकार बन रहे हैं। तात्कालिक लाभ के लिए दुःशासन बनकर घूम रहे हैं। समाज में फैली अराजकता का मनोज्ञ चित्रण उपन्यास में मिलता है।

आजादी नया सबेरा, संध्या वंदन, मध्याह्न का मंत्रपाठ लेकर आएगी। लेकिन हुआ क्या ? चारों ओर सुनाई पड़ा– मारो, मारो, पकड़ो, पकड़ो, मार–काट। स्वप्न भंग निष्ठुर यथार्थ के अनेक चित्र कथा के बहाने सुलोचना दास ने अपने 'रागिनी' उपन्यास में प्रस्तुत किया है। धर्म–संप्रदाय के आधार पर देश विभाजन की करुण गाथा, खूनी संघर्ष और इनसे कवलित मानव समाज की मर्मस्पर्शी कहानी सुनाई गई है। इन संघर्षो में भी जीवनोन्मुखी चरित्र और उनके आत्म विकास को लेकर उपन्यास गतिशील हुआ। रूपा और उसकी पुत्री शतरूपा के जीवन संघर्ष चित्र पाठकों को शुरू से अंत तक बांधे रखते है। पात्रों के सुख–दुःख, मिलन–विरह, अश्रु–उल्लास के बीच विकसित चेतना और सुखांत को उपन्यास में चित्रित करते हुए कथाकार ने अपने कथा–कौशल का परिचय दिया है।

कर्मसूत्र की महागाथा (महागाथा कर्मसूत्रर) स्नेह सुधा मिश्र का उपन्यास है। इसमें देवदत्त, विधान, धनुष आदि पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि लेखक कभी नहीं हारता। कोई भी बाधा उसे कर्म के मार्ग से अलग नहीं कर सकती। जीवन में आँधी–तूफान जिसके हाथ से कलम हटा देते हैं वह कभी लेखक नहीं हो सकता। ज्यादा से ज्यादा लेखकीय मनोवृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिए शक्तिसंपन्न मानवीय संकल्प को अनुपम सामर्थ्य को स्थापित करने के

उद्देश्य से इस उपन्यास की रचना की गई। दुःख, कष्ट, द्वंद्व आदि से जूझने के बाद साहित्य में उस जीवनानुभाव की अभिव्यक्ति ही विषय होगी। यथार्थ और जादुई यथार्थ के चित्रण से पाठक मोहित होता जाता है। यह उपन्यास पढ़ते समय ऐतिहासिक उपन्यास प्रतीत होता है। उपन्यास में अनेकानेक पात्रों का संयोजन हुआ है। मंजुषा राजपरिवार के सभी पात्र और घटनाएँ यथार्थ प्रतीत होते हैं।

स्वर्णलता महापात्र की अपनी औपन्यासिक कृति 'अहल्या' की मिथकीय पात्र अहल्या आज के संदर्भ में पत्थर बनकर जीना नहीं चाहती। वह हर पल अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती दिखाई देती है। छूत–अछूत, छलना–प्रताड़ना की यंत्रणा से मुक्त होने की जद्दोजहद को उपन्यास में अधिक महत्व दिया गया है। यथार्थ और नाटकीयता के समावेश से उपन्यास को नए आयाम मिलते हैं।

'सारांश' गौरहरी दास का नया उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रदर्शित किया गया है कि पाटपुर गाँव कंपनी के चक्रव्यूह में फँसा हुआ है। कंपनी का विरोध सनातन दास की बेटी मालती और मालती का भाई करते दिखाई देते हैं। एक ओर कंपनी का शोषण है तो दूसरी ओर मालती का संघर्ष। असहाय हैं सनातन और रमाकांत। उद्धव मोहंती, इंद्रमणि, करुणाकर, जैसे पानी गंदा कर मछली पकड़ने में लगे हैं। अर्जुन, अहल्या पर गाँव भरोसा करता है। निशिगंधा आम नारी से देवी बनकर उपन्यास में उभरती है। पर अचानक गायब हो जाती है या गायब कर दी जाती है। अदृश्य रहती है। लेकिन फिर लौटकर गाँव को चौंका देती है। विस्थापन समस्या को उपन्यास में केंद्रित किया गया है।

निहार रंजन परिडा का उपन्यास 'रेनकोट' भी पिछले साल चर्चा में रहा। अनन्या एक प्रेमिका है अथवा रहस्य? कथानायक सिद्धार्थ बार–बार इस द्वंद्व या उधेड़बुन में रहता है। अनन्या का मुखौटा खोलने के लिए खुद मुखौटा धारण कर लेता है। अपने आपसे सवाल करता है कि मैं कौन हूँ? अनन्या का प्रेमी या उसका पर्दाफाश करने वाला घातक? कभी उसे अनन्या ईश्वरी लगती है तो कभी छलनामयी और कभी रहस्यमयी। रहस्य के उद्घाटन के प्रयास में स्वयं रहस्यों से घिरा पाता है। अनन्या के साथ पल्लवी और दीपक भी रहस्यमय हो जाते हैं। सिद्धार्थ का सहयात्री बन पाठक भी अनन्या की खोज करता है। आँसू भरे पल सिद्धार्थ को अंतरंग प्रतीत होते हैं।

सहदेव साहू द्वारा रचित 'हेड ऑफिस' में एक सवाल उठाया गया है "क्या बिना किसी से समझौता किए कोई सरकारी अधिकारी अपनी जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभा सकता है? कथानायक गौरांग को ऐसे दायित्व पूरा करने में किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसका चित्रण उपन्यास में है। सवाल यह है कि ऐसा साहस उसे मिलता क़हाँ से है? उसके बड़े पापा ने कहा था– तुम्हें सोचना चाहिए कि तुम ताकतवर हो। सभी तुम्हारे शत्रु और तुम उन सभी से जूझ रहे हो। तू डरपोक नहीं, सभी तुझसे डरते हैं, तेरी मौजूदगी उन्हें डराती है।" गौरांग के अंदर ऐसा एक जज्बा है कि कहीं कोई बाधा उत्पन्न होती, आशंका होती है तो उसी काम को पूरा करने के लिए आगे बढ़ जाता है। वह दूसरे अधिकारियों और उच्च अधिकारियों के षड्यंत्र का शिकार होता है। कई–कई बार तबादला होता है कटक से, कोरापुट से जयपुर, राउरकेला से कहीं और। कटक शहर के विविध चित्रों के साथ गौरांग के दांपत्य जीवन की तस्वीर उपन्यास में सुंदर ढंग से उकेरी गई है।

दीप्ति पट्टनायक के 'विस्तृत आकाश' में वर्णित है कि बनारस ने अपनी गोद में तमाम असहायों को स्थान दिया है। लेकिन सवाल यह है कि क्या सचमुच उनके दुःख को दूर किया है? बनारस की पृष्ठभूमि में रचित इस उपन्यास में तीन असाधारण स्त्रियों की जीवन कथा है। उनके जीवन की व्यर्थता और अकेलेपन को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। उत्थान–पतन, सुख–दुःख को कथा के बहाने बड़ी खूबसूरती से

अंकित किया गया है। निराशा से उबरी कलासार विपाशा के परिवर्तित जीवन चित्रण से उपन्यासकार की जीवन दृष्टि का परिचय मिलता है। आकाश का चरित्र भी अच्छा बन पड़ा है। प्रतीक्षा जेना का 'पूरा रास्ता' स्त्री जीवन की यंत्रणा और उससे मुक्ति के स्वर को बुलंद करने वाला उपन्यास है। यह उपन्यास का सामर्थ्य है तो सीमा भी।

'बिंदु वलय' मानसी दास का आत्मकथात्मक उपन्यास है। समय क्रम के अनुसार घटनाएँ न होने पर भी घटनाओं की प्रासंगिकता है। मुख्य पात्र निःसंकोच सब कुछ कह पाता है। पिता का स्नेह, शैशव की अनभूली स्मृतियों से लेकर शादी के बाद का जीवन, नाना प्रकार के अनुभव, सांसारिक आँधी–तूफ़ान, गाँव से लेकर स्विटजरलैंड तक की मीठी–कड़वी स्मृतियाँ, जाने–अनजाने लोगों की कहानी आदि से उपन्यास में वैविध्य परिलक्षित होता है। मेडिकल और इंजीनियरिंग छात्रों के बीच संघर्ष को भी उपन्यास में संजोया गया है। संबलपुर ज़िले के बुर्ला में घटित इस सत्य घटना में छात्रों की पावर चैनल में मौत को भी कथा के परिसर में लाया गया है।

कृपासागर साहू ओड़िया के महत्वपूर्ण कवि, कहानीकार और उपन्यासकार हैं। इधर उनका उपन्यास 'नानी' काफ़ी चर्चित रहा। सती नानी कथा–नायिका है। उसके विवाह में राजजोटक लगन था, पर उसे पति परित्यक्ता होकर परिवार से उपेक्षित जीवन बिताना पड़ा। उसे समाज से लांछित होकर जीवन व्यतीत करना पड़ा। पिछली शताब्दी में देसी रजवाड़े की कहानी के आधार पर यह उपन्यास लिखा गया है। अंधविश्वास और अशिक्षा से घिरे समाज के यथार्थ को उपन्यासकार ने कथा के बहाने असरदार तरीक़े से पेश किया है।

राजेंद्र राउल ने 'मरुमाया' शीर्षक उपन्यास में यंत्रणा की शरशय्या पर लेटी आभा जीवन का स्वप्न देखती है। वह स्वप्नभंग की दुनिया में जी रही थी किसी तरह। अगर उसका शरीर थोड़ा सा भी साथ देता तो वह स्वस्तिका के गाल पर थप्पड़ मारती। पति निखिल, डॉक्टर स्वस्तिका और आभा का त्रिकोण प्रेम उपन्यास में वर्णित है। आभा स्वस्तिका के चेहरे पर थूक देती है। मनोविज्ञान को आधार बनाने वाले हेतुवाद के साथ जादुई यथार्थ को कथा के बहाने संजोकर उपन्यासकार ने अपने रचना–सामर्थ्य का परिचय दिया है।

'राजनंदिनी' संयुक्ता महापात्र का उपन्यास है। पिछले साल इसके प्रकाशन के बाद अच्छी चर्चा हुई। अतीत काल से आज तक नारी का जीवन तमाम संघर्षों से गुजरता आया है। पौराणिक पात्र द्रौपदी के प्रेम और संघर्ष को आज भी नारी में ढूँढ़ा जाए तो वह जगमगाता हुआ दिखेगा। यह उपन्यास भी द्रौपदी की जीवन कहानी के बहाने अधुनातन नारी के चित्र को उद्घाटित करता है। द्रौपदी के माध्यम से मानवीय संवेदना, नारी का मनोविज्ञान, पुरुषतांत्रिक समाज व्यवस्था से स्त्री प्रश्नों को पाठकों के सामने उद्घाटित किया गया है। उपन्यास का संकल्प युगीन संदर्भ में प्रासंगिक प्रतीत होता है– "मैं एक बार नहीं, बार–बार धरती पर आऊँगी, नियति के हाथों की मशीन बनकर इतिहास को बदलूँगी।"

'खलील जिब्रान की श्रेष्ठ कृति' बहुचर्चित अनुवादक विलासिनी मोहंती द्वारा अनूदित है। जिस आँख से अंतरतम को देखा जा सकता है, वैसे आँखों देखे दृश्य को रूपायित करते हैं जिब्रान। उनकी रचनाओं में आध्यात्मिक अन्वेषण भरपूर हैं। तमाम परंपराओं, धर्म, संस्कार, समाज और अनुशासन से परे उन्होंने मुक्त चेतना की वार्ता प्रस्तुत की है। जीवन को तीर्थ स्थल में बदलने का स्वप्न प्रदर्शित किया है। व्यक्ति जीवन में विश्व जीवन के छंद को सुनाने का प्रयास किया है। प्रेम, विरह, दुख, मृत्यु आदि में भी मनुष्य की चिरंतन मुक्ति आकांक्षा को प्रतिफलित किया है। जिब्रान की कहानी पढ़ते ही पाठक अपने को अन्वेषित करने में जुट जाता है। 'दो पिंजड़े' कहानी में पढ़ सकते हैं– "मेरे पिताजी के बगीचे में दो पिंजड़े हैं। मेरे पिताजी के .....क्रीतदासों ने तिनावाँ मरुभूमि से पकड़कर लाए गए शेर को एक पिंजड़े में बाँध रखा है तो दूसरे

में गीत न गानेवाली चिड़िया को। रोज सुबह चिड़िया शेर को बुलाकर कहती है– कैदी भाई, आज का दिन तुम्हारे लिए शुभमय हो।" दो सौ से अधिक रचनाओं का संकलन और प्रामाणिक अनुवाद करने में अनुवादक सफल हुई हैं।

आचार्य चतुरसेन के उपन्यास 'सोमनाथ का ओड़िया अनुवाद भी पिछले वर्ष अनूदित होकर आया है। लगभग 1000 वर्ष पूर्व के भारतीय इतिहास को मूल उपन्यासकार ने अपने ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। भारत आक्रमण में महमूद की बर्बरता के साथ उसकी हार और प्रेम प्रसंगों को भी वर्णित किया है। शोभना का चरित्र अत्यंत प्रभावशाली बन पड़ा है। महाराज गुर्जरेश्वर, चोलों के प्रेम और त्याग के प्रसंगों की प्रस्तुति अच्छी हुई है। अनुवाद सुंदर और प्रभावशाली है। मूल रचना का स्वाद मिलता है। भाषा में प्रवाहधर्मिता है।

सरलादेवी चौधुराइन की मूल कृति 'जीवन के पीले पत्ते' का ओड़िया में अनुवाद अजित पात्र ने किया है। आत्मकथा विरल कृति है। इसका प्रारंभ होता है सरला देवी की माँ के वैवाहिक जीवन से। सरला देवी के विवाह के बाद लाहौर में रहने तक की घटनाओं का भी वर्णन है। यह किसी साधारण स्त्री की आत्मकथा नहीं है। इसमें स्त्री शिक्षा और स्वाधीनता, औपनिवेशिक शासकों के विरुद्ध आंदोलन, राष्ट्रवाद और नवजागरण के दौर में बदलते समाज चित्र आदि का जीवनानुभव के आधार पर अंकन हुआ है। इस पुस्तक में सरलादेवी की बाल्यावस्था, पिता–माता, उनकी शिक्षा, साहित्य, कला, संगीत, ब्रह्मधर्म, स्वाधीनता और सृजनशीलता इत्यादि के बारे में प्रामाणिक तथ्य मिलते हैं। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से शुरू होकर बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशकों का सामाजिक इतिहास असरदार तरीक़े से अंकित हुआ है। रविमामा अर्थात् रवींद्रनाथ ठाकुर से जुड़ी स्मृतियों का वर्णन भी मिलता है। नाना के घर बड़ा होना स्वाधीनता आंदोलन में शामिल होकर कई संगठनों का नेतृत्व, पत्रिका संपादन आदि के बारे में भी आत्मकथा से बहुत कुछ जाना और समझा जा सकता है।

'अर्धनारीश्वर' (उपन्यास) के मूल लेखक हैं पेरूमल गुरूजन। प्रसिद्ध कवि सूर्य मिश्र ने इसका ओड़िया अनुवाद किया है। काली और पोन्ना के दांपत्य जीवन में एक–दूसरे के लिए प्रेम, दया, सौहार्द्र आदि भाव भरे हुए थे। संतान–प्राप्ति का अभाव उन्हें परेशान किए जा रहा था। समाज में उपेक्षा और ताने सुनने पड़ते थे। विवाह, तीज–त्योहारों आदि में उन्हें आमंत्रित तक नहीं किया जाता था। उनकी जायदाद हथियाने के लिए लोग लालच भरी नजर से तकते रहते थे। बावजूद इसके काली का पति–प्रेम कम नहीं हुआ था। उनके सीधे–सादे जीवन में भयानक तूफ़ान आ धमकता है। मंदिर में आयोजित उत्सव में काली अचानक विस्फोट करती है– "साले, सभी मिलकर तुम लोगों ने मुझे धोखा दिया है।" पत्नी पोन्ना से भी कहता है– "तू ने भी मुझे धोखा दिया है, तू चैन से नहीं रह सकेगी।" क्या था वह भयानक तूफ़ान? उपन्यास उसकी खोज करता है। ग्रामीण जीवन में अनेक यथार्थ चित्र उकेरे गए हैं। अनुवाद अत्यंत प्रभावशाली और पठनीय है।

यात्रा वृत्तांत

'अन्य देश' अखिल मोहन पट्टनायक का यात्रा–वृत्तांत है। विदेश भ्रमण के आकर्षक अनुभवों को फ्रेंड्स ऑफ फ्रांस के सहयोग से अखिल मोहन का मित्रों के साथ पेरिस भ्रमण वर्णित है। वहाँ से लंदन होते हुए लौटे थे। इसमें लेखक का ही नहीं उसके मित्रों के मनोभावों का चित्रण मिलता है। प्रसंगतया पात्र, इतिहास, गवेषणा आदि पर केंद्रित तथ्यों, संदर्भों और घटनाओं का उल्लेख भी किया गया है।

निबंध और आलोचना

जगदीश चंद्र भोई की शोधपरक आलोचना पुस्तक 'गोंड जनजाति का समाज और संस्कृति' (गोंड जनजातिर समाज ओ संस्कृति) ने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। आबादी की दृष्टि से भारत में संताल के बाद गोंड आदिवासियों का

स्थान है। गोंड जाति की उत्पत्ति से लेकर संस्कृति तक की यात्रा इस पुस्तक में तय की गई है। गोंड जाति की विभिन्न दिशाओं का भी सुंदर चित्रण परिलक्षित होता है। पुस्तक में चार परिच्छेद निम्नवत हैं–

1. गोंड शब्द की उत्पत्ति और व्याख्या, उपजातियों, गोत्र, अर्थनैतिक स्थिति

2. निवास, खान–पान, देवी–देवता

3. भाषा संबंधी चर्चा, भाषिक स्वरूप, लिपि, ध्वनि, भाषिक वैशिष्ट्य

4. गोंड लोकगीत का स्वरूप, वर्गीकरण, बालगीत, लोकगीत, नृत्य आदि।

'वाणी के वरपुत्र पंडित उपेंद्र त्रिपाठी' महेश्वर मोहंती की पुस्तक है जो ओड़िशा साहित्य अकादमी, भुवनेश्वर द्वारा प्रकाशित है। ओड़िया बाल साहित्य को समृद्ध करनेवालों में पंडित उपेंद्र त्रिपाठी ने महत्वपूर्ण काम किया है। लेकिन उनके अवदान को लगभग भुला दिया गया है। उन्हें अलक्षित कर दिया गया है। इस परिदृश्य में पुस्तक प्रकाशित होकर आई है। इसके लिए लेखक महेश्वर मोहंती धन्यवाद के पात्र हैं। पंडित उपेंद्र त्रिपाठी के व्यक्तित्व, कृतित्व, रोमांटिक कविता, व्यंग्य कविता, काव्य नाटक, गीतिनाट्य, रहस्य–रोमांच उपन्यास, प्रकृति–पर्यावरण, परिवार, समाज, चाल–चलन, जातीय चेतना, संस्कृति, परंपरा, पशु–पक्षी, पुराण–कथा आदि को तथ्यात्मक और प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत करने में लेखक को सफलता प्राप्त हुई है। मुकुर, सहकार, जन्हमामु (चाँदमामा), मीनाबजार जैसी मूर्धन्य पत्रिकाओं से त्रिपाठी जी के संबंध और सहभागिता का भी उल्लेख किया गया है। छात्र जीवन, अध्यापन, दांपत्य, गाँव में विद्यालय की स्थापना के साथ–साथ उनके सृजन–संसार के विभिन्न पहलुओं और संदर्भों को प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में स्थापित किया गया है कि गाँव–देहात से प्रत्यक्षतः जुड़े रहने के कारण उनकी कहानियों में वर्णित पात्र और घटनाएँ जितना यथार्थ हैं उतना जीवंत भी।

'उत्कल प्रदीप' का संकलन प्रस्तुत करते हुए वीरेंद्र कुमार सामंतराय ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया है। उल्लेख किया जा सकता है कि यह पत्रिका बीसवीं शताब्दी के प्रथमार्द्ध में ओड़िया जाति, भाषा और साहित्य की लाइफ़ लाइन जैसी सिद्ध होती है। इसे यदि ओड़िया जाति का अभिधान ग्रंथ कहा जाए तो अतिकथन नहीं होगा। विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिष्ठित ओड़िया व्यक्तित्वों का संक्षिप्त परिचय पाँच खंडों में प्रकाशित है। इसमें साहित्यकार, राजनेता, प्रशासक, वैज्ञानिक कलाकार, खिलाड़ी, चिकित्सक, इंजीनियर, अधिवक्ता आदि विभिन्न पेशों से जुड़े हुए महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों को स्थानित किया गया है। समकालीन ही नहीं अतीत के सैकड़ों प्रतिभावानों को शामिल कर विस्मृत अध्यायों को फिर से जीवित करने का बड़ा और गंभीर प्रयास किया गया है।

अमरेंद्र मोहंती की पुस्तक का शीर्षक है 'राजनीति का नक्शा'(राजनीतिर मानचित्र)। इस पुस्तक में आज की तारीख में राजनीति के बदलते परिदृश्य को उजागर किया गया है। राजनीति ही व्यक्ति जीवन को नियंत्रित करने में लगी है। राजनीतिशास्त्र के अतीत और वर्तमान दौर में भूमिका का अध्ययन किया गया है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक दर्शन में राजधर्म की चर्चा भी की गई है। कारागार संस्कार को लेकर गांधी जी की दृष्टि, धर्म निरपेक्षिता के बारे में नेहरू का दृष्टिकोण, व्यक्तिवाद के बारे में अंबेडकर की विचारधारा आदि तात्विक और सैद्धांतिक पक्षों की भी विवेचना लेखक द्वारा प्रस्तुत की गई है। 'स्मार्ट प्रशासन' के बारे में अपने विचार प्रकट किए गए हैं। प्रशासन को कैसे कारगर किया जा सकता है, इस मुद्दे पर भी गंभीर विमर्श मौजूद है। छोटे–छोटे निबंधों में गूढ़ विचार को सहज शब्दों में व्यक्त करना लेखक की बड़ी खूबी है।

प्रदीप कुमार चौधरी की 'श्री जगन्नाथ तत्व और तथ्य' पुस्तक को सामान्य पाठकों ने भी खूब पसंद किया है। श्री क्षेत्र, श्री मंदिर और श्री जगन्नाथ पूरी दुनिया के लिए आकर्षण के केंद्र रहे हैं। इस आकर्षण की विभिन्न दिशाओं को अन्वेषित करते हुए लेखक ने अपने विचार तत्त्व और तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया है। श्री मंदिर में प्रचलित

रीति–नीति, देवी–देवताओं, श्री मंदिर की छत्तीस नियोग सेवा, महाप्रसाद, रसोईघर, स्वर्णाभूषण, देवदासी परंपरा मठ–संस्कृति आदि का आमजन के लिए सहज ओड़िया भाषा में उल्लेख किया गया है। देश तथा विदेशों में अवस्थित जगन्नाथ मंदिरों के बारे में भी सूचना इस पुस्तक के माध्यम से प्राप्त हो जाती है।

आलोचक चित्तरंजन पांडा ने 'ओड़िया कहानीकारों की चिंता–चेतना का वैचित्र्य' शीर्षक आलोचनात्मक पुस्तक के माध्यम से ओड़िया कथाकारों की रचनादृष्टि और उनके कथाशिल्प में निहित वैविध्य को उजागर किया है। ओड़िया कहानी की यात्रा पर विचार करते हुए आलोचक की मान्यता है कि इसने लोककथा की अलौकिकता से मुक्त होकर यथार्थपरक यात्रा की है। स्त्री, स्त्रीवाद, 'दलित और स्वाधीनता पूर्व ओड़िया कहानीकार' आदिवासी जीवन, आजीविका, दु:ख आदि को केंद्रित करते हुए ओड़िया कहानी का विश्लेषण किया गया है। लेखक की स्थापना है कि पाश्चात्य नारीवादी चेतना के विविध रूप ओड़िशा में परिलक्षित नहीं होते क्योंकि पश्चिम की समाज व्यवस्था ओड़िशा से अलग है।

पिछले वर्ष नारायण पृषेठ का निबंध संग्रह प्रकाशित हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में विषमता, लोकतंत्र का अपहरण, बढ़ती महंगाई की समस्या जैसे कई मुद्दों को लेकर इस निबंध संग्रह का प्रकाशन हुआ है। पश्चिम ओड़िशा की तमाम समस्याओं पर केंद्रित इस पुस्तक में लेखक की चिंता और उसके सरोकार का पता चलता है। 'बोलाँगिर सिंड्रोम' निबंध में लेखक ने कहा है– "वही बंधुआ मजदूर, दरिद्रता, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में पिछड़ापन, बेरोजगार आदि की जड़ तक पहुँचने का प्रयास है।" आत्म–विश्लेषण को अधिक महत्व दिया गया है। तथ्यों का उचित प्रयोग किया गया है। पचास से अधिक निबंधों में लेखक की रचनात्मक प्रतिभा का साक्षात्कार होता है।

विशिष्ट साहित्यिक पत्रिकाएँ

ओड़िया साहित्य के विकास में पत्र–पत्रिकाओं का योगदान अविस्मरणीय है। यहाँ संक्षेप में कुछ विशिष्ट साहित्यिक पत्रिकाओं के विशेषांकों का सामान्य परिचय प्रदान किया जा रहा है। उल्लेख किया जा सकता है कि बांग्ला की तरह ओड़िया में भी दुर्गा पूजा के अवसर पर साहित्य की विविध विधाओं को समेटते हुए पूजा विशेषांक प्रकाशित और चर्चित होते हैं।

'पश्चिमा'– (संपादक : अशोक मोहंती) में तीस से अधिक कहानियाँ, सत्तर से भी अधिक कविताएँ, दस निबंध और आलोचना से समृद्ध यह पूजा विशेषांक 344 पृष्ठों का है।

'काहाणी' (कहानी) संपादक : विजय नायक, 580 पृष्ठ; 'तीरतरंग' संपादक : वंदना मिश्र –186 पृष्ठ, 'सृजन सलिता नवनीता' (सं) क्षेत्रवासी नायक, 252 पृष्ठ। 'शतद्रू' (सं) उपेंद्र प्रसाद नायक, 336 पृष्ठ; 'युगश्री युगनारी' (सं) ममता महापात्र, 258 पृष्ठ, 'चाहाणी' (सं) चंद्रकांत मोहंती, 220 पृष्ठ, 'कथाकलिका' (सं) जयाशीष राय, 218 पृष्ठ, 'गंगशिउली' (सं) 'मनोरंजन मोहंती'176 पृष्ठ, 'संवाद वार्षिक विशेषांक' (संपादक) सौम्यरंजन पट्टनायक, 334 पृष्ठ।

भाषा, साहित्य, संस्कृति, दर्शन पर आधारित 39 कहानियों में विभूति पट्टनायक, प्रतिभा राय, रामचंद्र बेहेरा, तरुणकांति मिश्र, हरिहर मिश्र, गायत्री सरफ, पारमिता शतपथी आदि; साठ कवियों में सीताकांत महापात्र, हरप्रसाद दास, प्रसन्न पाटशानी, वंशीधर षडंगी, श्रीदेव, सौभाग्यवंत महाराणा, अमरेंद्र खटुआ, शुभश्री लेंका, विजय नायक, अनिल कुमार पाढ़ी, विरजा राउत राय, विभूति पांडा, प्रभात महापात्र, गौरिहरि दास, विपिन विहारी मिश्र,परेश पट्टनायक, जयंती रथ, हृषिकेश मल्लिक, सदाशिव दाश, अर्चना नायक, राजेंद्र किशोर पांडा, अमरेंद्र खटुआ, शुभश्री लेंका आदि प्रसिद्ध कवियों की रचनाएँ उपलब्ध हैं। कविता, कहानी, निबंध, पुस्तक समीक्षा, अनुवाद, फीचर आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं से समृद्ध इस विशेषांक का खास महत्व है।

'कथा' (नव प्रतिभा विशेषांक) के संपादक गौरहरि दास हैं। नई पीढ़ी के दस कथाकारों के कथा–संसार से गुजरकर ओड़िया के समकालीन

कथा–स्वर से परिचित हुआ जा सकता है। इनमें से शुभश्री तनिमा नायक, प्रमिउमिता जाना, स्थितप्रज्ञा पाणिग्रही, एकता पांडा, स्वागतिका मिश्र, शुभदर्शिनी नायक, विकास जेना, सत्यरंजन मिश्र, सौम्यरंजन खेवी, अंतर्यामी मिश्र आदि हैं। शशांक प्रियासखा का संपूर्ण उपन्यास 'वंशीवादक' भी इसमें शामिल है। 'इस महीने के कथाकार' स्तंभ में प्रसिद्ध कहानी लेखक चंद्रशेखर रथ की कहानी प्रस्तुत की गई है। 'कथाकार को पहचानिए' स्तंभ के अंतर्गत मनोज दास के कथा–संसार का सम्यक् परिचय प्रदान किया गया है।

गांधी साहित्य

मार्च 22, 1921 को गांधी जी पहली बार ओड़िशा आए थे दस दिन के लिए। उनके प्रथम आगमन के सौ वर्ष पूरे हो गए हैं। कुल आठ बार आए थे। उत्कलमणि गोपबंधु दास, मधुबाबू के साथ उनका घनिष्ठ संबंध था। 'विशिष्ट व्यक्तियों पर गांधी जी का प्रभाव' में दलाईलामा ,विनोबा भावे, लियो तोल्स्टॉय, रोमां रोला पर प्रभाव की चर्चा की गई है। सुभाष, जिन्ना, अंबेडकर से गांधी जी के संबंध पर विचार किया गया है। गांधी जी की संक्षिप्त जीवनी भी प्रस्तुत की गई है।

'श्री साहित्य' गाँधी विशेषांक– गांधी जी को आधार बनाकर कविता, कहानी, नाटक, निबंध, गांधी के जीवन, दर्शन, चेतना आदि पर विमर्श हुआ है। मायाधर मानसिंह से लेकर गिरिजा कुमार वलियार सिंह, हृषिकेश मल्लिक आदि बीस कवियों की गांधी संबंधी कविताएँ इस विशेषांक में प्रकाशित हैं।

शशिभूषण दास की पुस्तक 'गांधी पुराण' शीर्षक पुस्तक भी चर्चित रही। गांधी जी के जन्म से लेकर स्कूल तक, बाल–विवाह, पितृत्व, कॉलेज शिक्षा विलायत यात्रा की घटनाएँ कविता संग्रह में स्थानित हैं। बापू जी के आद्य जीवन पर केंद्रित इस पुस्तक का अपना महत्व है।

'महात्मा गांधी : सांवादिक और संपादक' पुस्तक में निबंध और आलोचना सम्मिलित हैं। इनसे गुजरकर गांधी जी की उच्चतर जीवन–दृष्टि से सुंदर परिचय स्थापित होता है।

शैलज रवि ने सीरीज में 'गांधी विचार : गांधी की भाषा में' का संपादन किया है। आध्यात्मिक विचार, विविध विचार के अंतर्गत सत्य, ईश्वर, अवतार, नैतिक धर्म, प्रार्थना आदि पर गांधी की दृष्टि का खुलासा होता है। अवतारवाद के बारे में भी स्पष्ट अवधारणा मिलती है। गांधी जी की पुस्तकों में निहित नैतिक धर्म, मंगल प्रभात, गीताबोध आदि का सारांश भी प्रस्तुत किया गया है। 'विविध विचार' में रचनात्मक कार्य, प्राकृतिक चिकित्सा, कुष्ठ रोगियों की सेवा आदि के संबंध में विचार प्रकट किया गया है। गांधी जी को लेकर कुछ भ्रांतियां जैसे भगत सिंह की फाँसी और गांधी जी आदि का तथ्यात्मक चित्रण हुआ है।

'महात्मा गांधी लौट आए' आशीष सेनापति का उपन्यास है। गांधी जी के भारत भ्रमण करने के बहाने लेखक ने समकाल के यथार्थ को उजागर किया है। आज गांधीवाद को विकृत करने का प्रयास हो रहा है। मानववाद दरकता जा रहा है। गांधी, कस्तूरबा, व्यक्तिगत सहायक महादेव देसाई और उनके पुत्र नारायण देसाई को स्वर्ग से अवतरित कर भारत के विभिन्न स्थलों का भ्रमण कराया है। भ्रष्टाचार और दुर्नीति को अपनी आँखों से देखकर वे मर्माहत हैं।

'गांधी विचार : गांधी की भाषा में' के अंतर्गत 'अहिंसक आयुध' खंड में संपादक गौरांगचरण दास ने अहिंसा अस्त्र को लेकर गांधी की विचारधारा को स्पष्ट किया है। सत्याग्रह, असहयोग, भूख–उपवास और कानून तोड़ो अध्यायों में अहिंसा अस्त्र की विभिन्न दिशाओं पर विचार प्रकट किया गया है।

'सांस्कृतिक विचार' ओड़िशा के प्रसिद्ध इतिहासकार और साहित्यकार प्रीतीश आचार्य ने संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा और साहित्य, संगीत, पत्रकारिता पर विचार किया है। उन्होंने गांधी जी के इस विचार का विश्लेषण भी किया है कि "मैं नहीं चाहता कि मेरा घर कभी भी चारों ओर से बंद रहे और घर की खिड़कियाँ बंद रहें। मैं चाहता हूँ चारों ओर से संस्कृति का पवन मुक्त रूप से मेरे घर से होकर प्रवाहित हो। लेकिन वह मुझे कदापि उड़ा न ले जाए।"

'सामाजिक विचार' के संपादक प्रहल्लाद सिंह ने समाज को लेकर गांधी के स्वप्न, नारी जागरण, सुधार मूलक कार्य, नशा निवारण, अछूतोद्धार, बाल विवाह आदि के मुद्दे उठाए हैं। गांधी के तत्कालीन विचार की समकाल में प्रासंगिकता का भी सुंदर विश्लेषण हुआ है।

'महात्मा गांधी : सांवादिक ओ संपादक' का संपादन मृणाल चटर्जी और स्नेहाशीष सुर ने किया है। इन संपादकों ने कई पुस्तकें लिखी हैं। इसमें गांधी जी के पत्रकारिता जीवन की दिशाओं को सामने लाने का सुंदर प्रयास किया गया है। उल्लेख करना अनुचित न होगा कि गांधी जी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अति सक्रिय होने के पहले बीस वर्ष तक पत्रकार थे। वह इंडियन ओपीनियन, यंग इंडिया नव जीवन, हरिजन जैसे पत्र –पत्रिकाओं से जुड़े रहे। तुषार अरुण गांधी, निखिल चक्रवर्ती, शैलेन बनर्जी, रामचंद्र गुहा सरीखे 25 से अधिक लेखकों ने गांधी जी के पत्रकार जीवन और पत्र–पत्रिकाओं में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला है। गांधी जी के व्यक्तित्व के विकास में उनकी पत्रकारिता की भूमिका को समझने में यह किताब सहायक होगी। यह पुस्तक उत्तम संपादन का नमूना है। गांधी प्रेमी और पत्रकारिता के छात्रों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

अतः कहा जा सकता है कि ओड़िया साहित्य के लिए वर्ष 2021 अत्यंत समृद्ध रहा। साहित्य की विविध विधाओं में इसके उत्कर्ष के निदर्शन प्राप्त होते हैं। इस वर्ष रचे गए साहित्य में परंपरा और आधुनिकताबोध का सुंदर समन्वय हुआ है। उम्मीद है कि आने वाले समय में भी ओड़िया साहित्य अपना गौरव बचाए रखने में समर्थ होगा।

❑❑❑

3

उर्दू साहित्य

जुबेदा एच. मुल्लाँ

सन् 2019 और 2020 पूरी तरह से संक्रमण रोग 'कोरोना' की जद में जकड़े रहे। लोगों में दूरियाँ इतनी हद तक बढ़ गई थीं कि सभी प्रकार की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा व्यापारिक गतिविधियाँ थम–सी गई थीं। इन गतिविधियों के कारण ही साहित्यकार की लेखनी सक्रिय रहती है। अतः गत दो वर्षों में इन गतिविधियों के अभाव में विश्वभर में लेखन कार्य थम–सा गया था। जिस प्रकार माता–पिता अपनी बिगड़ी संतान से दीर्घ समय तक नाराज़ नहीं रह पाते, उसी प्रकार ईश्वर भी अपने बंदों से दीर्घ समय तक नाराज नहीं रहता। उस करूणानिधि को अपने बंदों का कष्ट सहन नहीं होता और वह उन पर मंडराने वाली विपदा के बादलों को छाँट देता है। ईश्वर की बड़ी कृपा हुई कि सन् 2021 में नई स्फूर्ति के साथ सभी गतिविधियाँ प्रारंभ हुई हैं। फिर से लोगों में नई ताज़गी, नई प्रेरणा, नया उत्साह और नई उमंगों का जागरण हुआ।

परिवर्तन का प्रभाव बड़ा गहरा होता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। विश्वभर में 'कोरोना' रोग के कारण जो भयंकर परिवर्तन आया, उसका प्रभाव सन् 2021 में विश्वभर में प्रकट हुआ है। साहित्यकारों के लिए नई सामग्री का जुगाड़ हुआ है। अतः इस वर्ष पाठकों के लिए नए उत्साह से परिपूर्ण साहित्य पठन के लिए उपलब्ध है। पाठकों को इस बात का गहरा दुख भी है कि गत दो वर्षो में भारत की प्रत्येक भाषा के कई नामवर साहित्यकारों का 'कोरोना' के कारण निधन हुआ है, जिनके जाने से शून्य तो बना है, परंतु उनका साहित्य भावी साहित्यकारों के लिए एक प्रेरणास्रोत है।

हर सुबह का आरंभ एक नई सोच एवं उत्साह के साथ होता है। आज भी साहित्यकारों की लेखनी में विद्युत गति विद्यमान है। वास्तव में साहित्यकार समाज के दिशा–निर्देशक होते हैं जो अपने लेखन के माध्यम से समाज की दिशा निर्धारित करते हैं। हमारा भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और गुजरात से लेकर नागालैंड तक कई भाषाएँ देश के प्रत्येक प्रांत की राजभाषाओं का पद ग्रहण कर चुकी हैं। इनमें उर्दू भी भारत में जन्मी एक विख्यात भाषा है, जो हिंदी भाषा की जुड़वा बहन मानी जाती है। उर्दू भाषा का साहित्य भारत में ही नहीं संपूर्ण विश्व में अपना एक महत्वपूर्ण अस्तित्व सिद्ध कर चुका है, जिसके कारण उर्दू का भी विश्वव्यापी रूप बिखर रहा है।

भारत की राजधानी दिल्ली में 'राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद, नई दिल्ली' एक ऐसी महत्वपूर्ण संस्था है, जहाँ संस्था की ओर से सरकारी वित्तीय सहायता से प्रति वर्ष उर्दू की असंख्य महत्वपूर्ण विषयों पर साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन सतत

होता है। सन् 2021 में इस संस्था की ओर से कमाल अहमद सिद्दीखी की ज्ञानवर्धक पुस्तक 'उर्दू रेडियो और टेलीविज़न में तरसिल व अबलाग़ की ज़ुबान', गोपीचंद नारंग की अभ्यास पुस्तिका 'उर्दू कैसे लिखें?' (हिंदी में), नाज़क़ादरी की 'उर्दू हिंदी फ़िक्शन में असातीर', मुर्गासुद्दीन की समीक्षात्मक पुस्तक 'उर्दू शायरी में क़ौमीयत का तस्सवर', फ़ारुक अरगली की पत्रकारिता पर पुस्तक 'उर्दू सहाफ़त 1858 से 1900 तक का राक मुक़्तसर जायज़ा', अहमद जावीद की पुस्तक 'मबादियात व सहाफ़ात,' नरेंद्रनाथ ला की पुस्तक मुस्लिम हुकूमत के दौरान हिंदूस्तान में इल्म का फ़रूग', हिंदी–उर्दू के विख्यात साहित्यकार प्रेमचंद पर क़मर रईस की लिखी पुस्तक 'प्रेमचंद', ख़्वाजा मुहम्मद इक्रामुद्दीन की यात्रावृत्तांत 'उर्दू सफ़रनामों में हिंदुस्तानी तहज़ीब व सक़ाफत, रारसूल इस्लाम फ़ारूखी की बच्चों के लिए लिखी गई पुस्तक 'अनोखे शिकारी', हनीफ़ कैफी की समीक्षात्मक पुस्तक 'उर्दू में नज़्म मेअरा और आज़ाद नज़्म' (इब्तदा से 1947 तक)

इस फ़रूगे उर्दू संस्था से प्रति वर्ष स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं क्योंकि सेहत है तो जहाँ है। तंदरूस्ती हज़ार नेअमत है। इस वर्ष फ़ैरोज़ बख़्त अहमद की पुस्तक 'अच्छी सिहत का राज़', हुसेन–फ़ारूख़ी की पुस्तक 'तीमारदारी', तिब्बुल क़ानून, 'इल्मुल–समूम' प्रकाशित हुई हैं। तनवीर अहमद अलवी के संपादन में संपादित 'कुलयात ज़ोक़', असग़र वजाहत की पुस्तक 'इस्क्रिप्ट राइटिंग', 'अमली हिंदायतनामा', देवेंद्र अस्र की हिंदी पुस्तक का उर्दू अनुवाद शाहिद परवीज़ ने 'अवामी ज़राय अब्लग़ तरसील व तामीर और तरक़्की' शीर्षक के साथ किया है। इस वर्ष इस संस्था से डॉ. रूप कृष्ण भट के निरीक्षण में उर्दू–हिंदी शब्दकोष भी बना है।

उर्दू काव्य

उर्दू शायरी (काव्य) विश्व प्रसिद्ध है। उर्दू काव्य में जो सूक्ष्मता, भावनाओं का उद्गार, इश्क की तड़प का बहाव होता है वह अत्यंत दुर्लभ है। इस वर्ष डॉ. सैय्यद फ़ैज़ान हसन द्वारा संपादित पुस्तक 'इंतक़ाब कलाम' उर्दू साहित्य में उपलब्ध है, जो उर्दू के विख्यात कवि दाग़ और इक़बाल के दौर से संबंधित दिल्ली के कवि और ग़ज़लकार नासिर नज़ीर फ़िराक़ के काव्य पर लिखी गई है। आज के दौर में नासिर नज़ीर फिराक ने उर्दू शायरी में खूब नाम कमाया है। इनके काव्य में नई–पुरानी दोनों प्रकार की शायरी का मिला–जुला रूप देखने को मिलता है। संपादक ने इस पुस्तक में शायरी के इसी नयेपन पर प्रकाश डाला है। कवि की रूबाई कला को भी ख़ूब सराहा है–

दिन गुज़रता है, रात जाती है, रायगाँ यों ही हयात जाती है। जल्द कर ले, जो तुझको करना है, जिंदगानी का कोई एतबार नहीं।।

इस वर्ष देवबंद के शिक्षक व शायर शमीम कर्तपूरी का काव्य संकलन 'महक' पाठकों की प्रशंसा बटोर रहा है। इस संकलन में हम्द, नात, गीत, ग़ज़ल, कसीदे, नज़्में, रूबाई, पद आदि काव्य की सभी विधाएँ संकलित हैं, जो पाठकों को नई सोच एवं नई स्फूर्ति की ओर प्रेरित करती हैं। सुल्तानपुर में डॉ. वजल क़मर का काव्य संकलन 'दिल' का रहमत फ़ाउंडेशन अमेठी की ओर से लोकार्पण संपन्न हुआ, जिसमें 'दिल' पर शायर ने कुल 786 पद संकलित किए हैं। शमीम कर्तपुरी देवबंद के विख्यात शायर हैं। इनके सुपुत्र काशफ अख़्तर भी देवबंद के उभरते शायरों में गिने जाते हैं। इस वर्ष अमेठी में इनके काव्य संकलन 'बेख़्याली' का भी लोकार्पण हुआ।

भारतीय भाषाओं के साहित्य में उर्दू काव्य का अपना एक विशेष महत्व है। उर्दू शायरी मन–मस्तिष्क को ही नहीं आत्मा को भी आत्मसात करती है। सन् 2021 में बंगाल के विख्यात कवि ख़ैसर शमीम का काव्य संग्रह 'ज़मीन चीखती है' अत्यंत उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय है, जिसमें खैसर शमीम ने अपनी ग़ज़लों, नज़्मों, रूबायात और अनूदित कविताओं को संगृहित किया है। ख़ैसर–शमीम की शायरी में आत्मा को भी झिंझोड़ने वाला दर्द पाया जाता है–

आँसूओं की बूंदों में क्या तलाश करते हो?
दिल की एक दुनिया है, और क्या है आँखों में,

न पूछ कैसे सफ़र में है ज़िंदगी मेरी,
कि रंग कर्ब ही शाम व सहर में रहता है

इस वर्ष मुहम्मद इब्राहीम ज़ौक़ की कविताओं का तनवीर अहमद अलवी ने संपादन करके राष्ट्रीय परिषद उर्दू, नई दिल्ली से 'कुलयाते ज़ौक' नाम से प्रकाशित किया है। इस वर्ष यह पुस्तक पाठकों में लोकप्रिय सिद्ध हुई है। इस वर्ष डॉ. मुहम्मद शरफूद्दीन साहल का उर्दू काव्य संकलन 'मौज गुब्बार' पाठकों में अपनी लोकप्रियता के साथ उपलब्ध है। इसमें कवि ने अपनी ग़ज़लों, नज़्मों, रूबाइयात, तलमीहात और ख़तआत आदि को संकलित किया है। सीधी–सरल, प्रभावपूर्ण शैली में कवि ने आत्मा को छूने वाली शायरी को अपने इस संकलन में प्रस्तुत किया है–

इंकलाब वक़्त है इसकी दलील,
है क़लम बेहतर कहीं तलवार से।।

इस वर्ष अब्दुल वहाब कासनी ने ज़फ़र कमाली की 'ग्यारह–तनज़िया नज़्में' नामक काव्य संकलन को प्रस्तुत किया है, जो पाठकों में एक समीक्षात्मक पुस्तक के रूप में उपलब्ध है। अब्दुल वहाब कासनी ने इस पुस्तक में ज़फ़र कमाली की ज़िंदगी, उनके व्यक्तित्व और उनकी ग्यारह व्यंग्यात्मक कविताओं के अतिरिक्त पुस्तक के प्रारंभ और अंत के उद्देश्य पर भी विशेष ध्यान आकर्षित किया है।

पत्रकारिता

आधुनिक काल में जब गद्य साहित्य के लेखन कार्य का प्रारंभ हुआ तो साहित्य की विभिन्न विधाओं के प्रकाशन हेतु पत्रकारिता का उदय हुआ। पत्रकारिता जनसंचार माध्यम है, जिसमें समाचारों के अतिरिक्त साहित्यिक विधाओं को भी प्रचारित किया जाता है। उर्दू में सहाफ़ात (पत्रकारिता) का भी अपना एक विशेष एवं अद्वितीय महत्व है। इस क्षेत्र में प्रति वर्ष वृद्धि हो रही है और प्रति वर्ष नई–नई उर्दू पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। कोविड–19 के बाद उर्दू की साहित्यिक गतिविधियों में और अधिक तीव्रता आ गई है। इस वर्ष वाराणसी में हिंदू विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग से 'दस्तक' नामक एक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ है, जिसके संपादक प्रो. आफ़ताब अहमद आफ़ाक़ी हैं। इसका प्रथम अंक 'कबीर नंबर' है, जिसमें कबीरदास के जीवन से संबंधित लगभग 24 नए–पुराने, छोटे और बड़े आलेख संगृहीत किए गए हैं। संपादक महोदय भविष्य में इस 'दस्तक' की सहायता से 'तलाश कबीर' नामक पुस्तक प्रकाशित करने का इरादा रखते हैं।

भारत के वन प्रदेश झारखंड में भी उर्दू साहित्यिक एवं सांस्कृतिक वातावरण प्रारंभ से बना हुआ है। यहाँ उर्दू के कई पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित होते रहते हैं। 'आलमी फ़लक' झारखंड से इस वर्ष प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका है। इसके संपादक अहमद निसार हैं, जिनका उद्देश्य इस पत्रिका के माध्यम से उर्दू साहित्य की ताज़गी को सतत तरोताजा व शादाब रखना है। अतः इस पत्रिका में ऐसे महत्वपूर्ण विषयों पर लेख संपादित हैं, जो मस्तिष्क के बंद दरवाज़े खोल देते हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में उर्दू भाषा ने शुरू से अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। इस वर्ष मालेगाँव के वरिष्ठ पत्रकार अन्सारी अहसान रहीम की पत्रकारिता पर आधारित पुस्तक 'आइना सहाफ़त' का भव्य लोकार्पण हुआ, जो मालेगाँव की पत्रकारिता के चालीस वर्षों का दस्तावेज है। अन्सारी अहसान रहीम ने अपनी इस पुस्तक 'आईना सहाफ़त' में बड़ी लगन व रुचि के साथ नई पीढ़ी के लिए सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों को संकलित किया है।

किसी भी भाषा में पत्रकारिता कोई सरल कार्य नहीं है। इस वर्ष मक़सूद बस्तवी के संपादन में 'रसाइल व जराइद' नामक पत्रिका झाँसी से प्रकाशित हो रही है। इसकी 14वीं कड़ी इस वर्ष पाठकों में उपलब्ध है, जिसके विषय अत्यंत रोचक एवं महत्वपूर्ण हैं, जो चिंतन–मनन के नए दरीचे पाठकों में खोलते हैं। वैसे यह पत्रिका पिछले वर्ष से ही प्रकाशित हो रही है, परंतु इस वर्ष यह बहुत चर्चित है। शुरू से ही उर्दू साहित्यकारों के राष्ट्रीयता, देशप्रेम व भाईचारा प्रिय विषय रहे हैं। संपादक मक़सूद बस्तवी देश की एकता एवं शांति बनाए रखने के उद्देश्य से ऐसे ही विषयों को अपनी पत्रिका में प्राथमिकता देते हैं। इस पत्रिका द्वारा उर्दू भाषा की भी ख्याति बढ़ रही है। इस वर्ष डॉ.

सैफ़ी सरोंजी के संपादन में त्रैमासिक पत्रिका 'सहमाही इंतसाब आलमी' पाठकों में उपलब्ध है, जो अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा प्रभावपूर्ण है। इस पत्रिका के मुख पृष्ठ पर 12 विदेशी साहित्यकारों के चित्र अंकित हैं, जिन्होंने दुनिया को नया उत्साह एवं नया संदेश दिया है। डॉ. इक़बाल हुसैन के संपादन में निर्मित त्रैमासिक पत्रिका 'रंग धनबाद' इस वर्ष की उल्लेखनीय पत्रिका है, जिसको ज्ञान भारती ने सन् 1995 में प्रारंभ किया था। अब तक इस पत्रिका के 93 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। ज्ञान भारती के देहांत के उपरांत डॉ. इक़बाल हुसैन ने पुनः इसका प्रकाशन सन् 2021 से प्रारंभ किया है। इस पत्रिका में समाचारों के अतिरिक्त कहानियाँ, नज़्में, गीत, ग़ज़लें, वारदात, साक्षात्कार तथा पत्राचार का प्रकाशन भी होता है।

गद्य साहित्य

आधुनिक उर्दू साहित्य में गद्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। साहित्य की भाषा में निबंध को गद्य की कसौटी कहा जाता है। सन् 2021 में लेखक ज़बीहअल्लाह ज़बीह का 14 निबंधों का संग्रह 'बसीरत तनक़ीद' का प्रकाशन हुआ है, जो विभिन्न सामाजिक विषयों पर लिखा गया है। वर्तमान उर्दू साहित्य में उभरते हुए लेखक ज़बीह अल्लाह ज़बीह ने इस पुस्तक में नामवर लेखकों की समीक्षाओं को भी प्रकाशित किया है। नसीम सईद का विज्ञान के विषयों पर लिखा गया निबंध संग्रह 'आलमी हरारत और मौजूदा आब व हवा में तबदिली' इस शीर्षक से सन् 2021 में प्रकाशित एक उल्लेखनीय देन है। आलमी हरारत को ऋतु परिवर्तन के नाम से हिंदी में जाना जाता है, जिसके कारण सृष्टि में होने वाले परिवर्तन और प्रभाव पर इस संग्रह में नौ महत्वपूर्ण आलेख संगृहीत हैं।

सन् 2021 में उर्दू साहित्य की गतिविधियाँ पूरे जोश व ख़ुरोश के साथ उभरकर पाठकों के सामने आई हैं। कई साहित्यकारों ने प्राचीन उर्दू साहित्य का नवीनीकरण किया है। इस वर्ष ताशक़ंद में डॉ. चंद्रशेखर के अनथक प्रयासों के कारण उन्नीसवीं सदी के विख्यात शायर मिर्ज़ा गालिब प्रो. चंद्रशेखर और यहया अब्दरहमानो उस्ताद द्वारा लिखी गई पुस्तक का लोकार्पण समारोह ताशकंद में लाल बहादुर शास्त्री सेंटर फॉर इंडियन कल्चर हॉल में संपन्न हुआ। शुरु में उर्दू शायरी ने पाठकों का मन मोह लिया है। हैदराबाद में इस वर्ष डॉ. असकरी सिक़दर की मिर्ज़ा ग़ालिब पर उनकी शायरी पर आधारित पुस्तक 'ग़ालिब एक जायज़ा का लोकार्पण हुआ, जो एक समीक्षात्मक पुस्तक है।

सन् 2021 में उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकार इश्तियाख़ सईद का 'रीज़ाकारी' नामक 24 निबंधों का संग्रह प्रकाशित हुआ है, जो पाठकों में चर्चित है। 'दाम हर मौज में' यह मुहम्मद अबूल क़ासिम फ़ारूक़ी का 30 निबंधों वाला इस वर्ष का उल्लेखनीय निबंध संग्रह है। इस संग्रह का प्रत्येक निंबध गंभीर विषयों का भंडार है, जो पाठकों के ज्ञान में वृद्धि करता है और पाठकों को सोच–विचार की ओर प्रेरित भी करता है। इस वर्ष सिराज नक़वी के साहित्यिक विषयों पर आधारित मार्मिक निबंध संग्रह पाठकों में चर्चित है, जिसका शीर्षक है– 'अज़कार अदव' इस संग्रह में गद्य–पद्य के गंभीर विषयों पर चर्चा की गई है। 'खंदा हाय गुल' डॉ. ज़ाकिर हुसैन का अत्यंत सुंदर एवं प्रभावपूर्ण निबंध संग्रह है। जिसमें डॉ. जाकि़र हुसैन के अत्यंत आधुनिक एवं प्रभावपूर्ण निबंध संगृहीत हैं। इस संग्रह का शीर्षक जाकिर हुसैन ने मिर्ज़ा गालिब के एक पद से लिया है। स्वयं लेखक ने भी मिर्ज़ा ग़ालिब पर एक सुंदर तथा प्रभावपूर्ण 'ग़ालिब' लेख लिखा है।

उपन्यास

उर्दू में उपन्यास साहित्य का एक महत्वपूर्ण योगदान प्रारंभ से रहा है। उर्दू में उपन्यास को नावेल कहा जाता है। उर्दू भाषा के कारण उर्दू नावेलों के पाठकों की संख्या भी अधिक है। विशेषकर महिलाएँ उर्दू रूमानी नावेलों को पढ़ना बहुत पसंद करती हैं। सन् 2021 में डॉ. ज़ेबा फ़ारूख़ी ने उर्दू और अंग्रेज़ी उपन्यासों के हवाले से भारत के विभाजन की पीड़ा पर उर्दू में 'बर सगीर की तक़सीम का अलिमा' नामक उल्लेखनीय उपन्यास लिखकर आज की पीढ़ी को भारत की स्वतंत्रता के उपरांत देश में जन्मी भयंकर परिस्थितियों से परिचित

कराया है। उपन्यास में मानव जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया जाता है। तीन अध्यायों में विभक्त यह उपन्यास एक यादगार दर्द सिद्ध हुआ है, जो कभी भुलाया नहीं जाता। इस वर्ष नई दिल्ली में 'कोरोना' रोग पर लिखा गया उपन्यास 'एक खंजर पानी' पाठकों में बहुत चर्चित है। इस उपन्यास के लेखक प्रो. क़ालिद अहमद जावेद हैं, जिन्होंने एक नए अनुभव के साथ इस रोग को जागृति का लक्षण बताकर प्रस्तुत किया है।

विकार क़ादरी का लिखा 'संस्मरण दर्शन' सन् 2021 का एक उल्लेखनीय संस्मरण संग्रह है, जिसमें 15 संस्मरण संगृहीत हैं, जो मानव जीवन के सुख–दुख, हर्ष व उल्लास और उतार–चढ़ाव को सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं। उर्दू में 'जीवनी' विधा का भी बहुत महत्व है। अक्सर जीवनी भी उपन्यास शैली में ही लिखी जाती है।

संस्मरण और जीवनी उर्दू साहित्य की उपन्यास के समान दो महत्वपूर्ण विधाएँ हैं, जिनके माध्यम से असाधारण लोगों के जीवन से जुड़ी स्मृतियों एवं घटनाओं को सुरक्षित रखा जाता है। जीवनी धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक या साहित्यिक किसी भी क्षेत्र से संबंधित व्यक्ति की हो सकती है, जिसमें जनहित की भावना निहित होती है। सन् 2021 में उत्तर भारत में स्थित दौरे शाहजहानी के यादगार मदरसा 'अरबिया–क़ादमुल इस्लाम' के संस्थापक मौलाना नज़ीर हुसेन क़ासमी के जीवन और उनकी सेवाओं की स्मृति में मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अय्यूब क़ासमी ने 'नक़ूशे नाज़िर' नामक पुस्तक का संपादन किया है जो इस वर्ष की एक उत्तम जीवनी है। इस वर्ष स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षाविद् शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद पर डॉ. अब्दुल अज़ीज़ इरफ़ान द्वारा लिखी जीवनी 'गुलदस्ता आज़ाद' का प्रकाशन हुआ है, जिसमें मौलाना आज़ाद के सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक और व्यक्तिगत जीवन से संबंधित 16 विषयों पर लेख संगृहीत हैं। इस वर्ष साहित्य अकादेमी नई दिल्ली से भारत के विख्यात उर्दू शायर 'क़ाज़ी सलीम' की जीवनी ग़ज़नकर इक़बाल ने प्रकाशित की है, जो सन् 2021 की उल्लेखनीय जीवनी सिद्ध हुई है। केवल दो अध्यायों में लिखी गई इस जीवनी के प्रथम अध्याय में लेखक ने क़ाज़ी सलीम के पारिवारिक जीवन का उल्लेख किया है और दूसरे अध्याय में उनके लेखन कार्य का उल्लेख किया है। इस वर्ष डॉ. अजेय मालवी द्वारा लिखी गई जीवनी 'जदियित के अलमदार शमसुररहमान फ़ारूख़ी' अत्यंत प्रभावपूर्ण पुस्तक है, जिसका प्रारंभ एक मुख़दमें के साथ हुआ है और अंत उर्दू के विख्यात साहित्यकार शमसुररहमान के साक्षात्कारों के उल्लेख के साथ हुआ है। डॉ. अजेय मालवी ने मार्मिक ढंग से फ़ारूख़ी साहब के जन्म, जीवन, शिक्षा, लेखन तथा मरण आदि पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। वस्तुतः यह एक यादगार जीवनी है।

कथा साहित्य

उर्दू साहित्य में कहानी लेखन की परंपरा काफ़ी पुरानी है। इस वर्ष डॉ. जमील अख़्तर ने ख़ुररतुल हैदर के कथा साहित्य पर पीएच.डी. की उपधि प्राप्त की और 'आइना जहाँ कुलयात ख़ुररतुल ऐन हैदर' (जिल्द–दुवम) नामक एक पुस्तक का संपादन किया है। इसमें उन्होंने विख्यात उर्दू साहित्यकार ख़ुररतुल ऐन हैदर की नई कहानियों को संगृहीत किया है, जो लेखिका की नई कहानियों के संकलन 'खंदील चीन' से चुनी गई कहानियाँ हैं। इस पुस्तक में संपादक ने सन् 1960 से लेकर अब तक की कुल 33 कहानियों को संकलित किया है। इन कहानियों में देश–विदेश की संस्कृति, सभ्यता और परंपराओं का संगम नज़र आता है। मुहम्मद अलीम इस्माईल के संपादन में निर्मित समीक्षात्मक पुस्तक 'अफसांचे का फ़न' सन् 2021 की एक उत्तम पुस्तक है, जिसमें नए कहानीकारों के लिए लघु कहानियाँ लिखने की कला बताई गई है।

नाटक

सन् 2021 में डॉ. शमीम अहमद के संपादन में निर्मित उर्दू नाटक संग्रह 'इश्तियाक़ हुसेन के डरामें' नामक पुस्तक पाठकों में उपलब्ध है। उर्दू आधुनिक साहित्य में नाटकों का बहुत महत्व है। डॉ. शमीम अहमद की नाटकों में रुचि होने के कारण उन्होंने इस पुस्तक का संपादन किया है। इस पुस्तक का प्रत्येक नाटक सीधी सरल मधुर

मीठी उर्दू भाषा में वर्तमान युगीन परिस्थितियों की अक्कासी करता है।

'दो बुदू' अनवर आफ़ाकी का वार्तालाप शैली में एक उत्तम साक्षात्कार है, जिसमें दो लोगों के मध्य प्रश्नोत्तर रूप में वार्तालाप चलता है। साक्षात्कार में एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्पष्टीकरण होता है और दूसरे की बुद्धिमत्ता का पता चलता है। उर्दू साहित्य में मुकालिमा (साक्षात्कार) का प्रयोग अंग्रेजी साहित्य की देन है। इस पुस्तक में अनवर आफ़ाकी ने कुल नौ साक्षात्कार संगृहीत किए हैं।

समीक्षात्मक पुस्तकें

प्रत्येक साहित्य में समीक्षा का अपना एक अलग महत्व होता है। इस वर्ष क़ाज़ी मुश्ताख़ अहमद की पुस्तक 'पूने की जदीद तारीक़ उर्दू अदब' नामक ऐतिहासिक पुस्तक पाठकों में चर्चित है, जिसमें महाराष्ट्र के मराठी केंद्र पूने शहर का वर्णन हुआ है। उस शहर में वर्तमान युग में उर्दू के महत्व का उल्लेख किया गया है। पूना एक सभ्य एवं सुसंस्कृत शहर है, जहाँ हर प्रकार की उच्च शिक्षा को प्रधानता दी जाती है। अतः यह महाराष्ट्र का शिक्षा प्रधान शहर माना जाता है। इस शहर को भारत के पूरब का ऑक्सफ़ोर्ड और दक्षिण का अलीगढ़ कहा जाता है। पूना शहर फ़िल्मों और दूरदर्शन तथा आधुनिक टेक्नॉलाजी के कारण भी विश्व में प्रसिद्ध है। क़ाज़ी मुश्ताक अहमद ने अपनी इस ज्ञानवर्धक पुस्तक में पूना शहर के आग़ाज व आबाद पर भी ऐतिहासिक उल्लेख प्रस्तुत किया है। सन् 1912 में पूना में मौलवी रफ़ीउद्दीन ने उर्दू शिक्षा का प्रारंभ किया और सन् 1934 में उन्होंने इस भाषा को पूना की दूसरी भाषा का पद प्रदान किया था। वस्तुतः यह एक उल्लेखनीय ऐतिहासिक समीक्षात्मक पुस्तक है, जिसमें लेखक ने उर्दू भाषा की मधुरता एवं आकर्षण का भी वर्णन किया है।

वर्तमान युग में डॉ. महमूद शेख उर्दू साहित्य में विख्यात समीक्षक हैं। इस वर्ष आपकी चौथी समीक्षात्मक तथा प्रतीकात्मक लेखों की पुस्तक 'अमेजरी का ज़वाल' पाठकों में उपलब्ध है, जिसमें 17 राजनीति, प्रजाप्रभुत्व, साहित्य एवं मानव जीवन से संबंधित नीति–नियमों वाले लेख संगृहीत हैं। इस वर्ष मुहम्मद ज़ाहिदुलहक़ का शोध प्रबंध 'अठारहवीं सदी में उर्दू ग़ज़ल का फ़िक्री निज़ाम' पुस्तकाकार में प्रकाशित है, जो पाँच अध्यायों में विभक्त है। यह पुस्तक ग़ज़ल का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

अनुवाद

विश्व में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारा देश एक बहुभाषी देश है, जहाँ कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और गुजरात से लेकर नागालैंड तक कई प्रादेशिक मानक भाषाएँ प्रचलित हैं। अनुवाद के माध्यम से हमारे देश में भाषाई एकता सुरक्षित है। इस वर्ष नागपुर में 'राष्ट्र संत तकड़ो जी नागपुर विश्वविद्यालय' के पूर्व कुलपति डॉ. एस.एन.पठान की मराठी में लिखी पुस्तक 'हिंदुत्वमंज भारतीय एकतामना, मुस्लिम विद्वेश नाहि' का उर्दू अनुवाद डॉ. मुहम्मद अज़हर हयात ने 'हिंदुत्व का मतलब भारतीय एकजहती, मुस्लिम मुनाफ़रत नहीं' शीर्षक से किया है, जो बहुत लाभदायक उर्दू अनुवाद है। उरून और भारत के संबंध सदैव अच्छे रहे हैं क्योंकि उरून एक शांति प्रिय देश है। विश्व में उरून को अमन व शांति का गहवारा माना जाता है। तीन साल पहले उरून के राष्ट्रपति भारत आए थे। वे अपने साथ अरबी भाषा में लिखी पुस्तक 'इस्लाम और अमन' लाए थे, जिसका उर्दू अनुवाद भारत के अरबी भाषा व साहित्य के ज्ञाता और विद्वान फ़ैसल नज़ार ने सन् 2021 में प्रकाशित किया है। इस पुस्तक में उरून देश के विख्यात शायरों, निबंधकारों एवं साहित्यकारों के लेख संगृहीत हैं, जो भाईचारे का संदेश देते हैं। गुलबदन बेगम की फ़ारसी भाषा में लिखित पुस्तक 'हुमायूँ' का उर्दू भाषा में अनुवाद इस वर्ष उस्मान हैदर मिर्ज़ा ने प्रस्तुत किया है। गुलबदन बेगम सम्राट बाबर की सुपुत्री और हुमायूँ की बड़ी बहन थीं। मूल फ़ारसी पुस्तक का नाम 'हुमायूँनामा' है, जिसमें लेखिका ने सुंदर प्रभावपूर्ण शैली में हुमायूँ की जीवनी, मुग़ल शासन का वर्णन तथा तत्कालीन परिस्थितियों का उल्लेख किया है। इस ऐतिहासिक पुस्तक का अनुवाद भी सुंदर एवं प्रभावपूर्ण सिद्ध हुआ है। इस वर्ष जे.एस.राजपूत द्वारा हिंदी में

लिखित पुस्तक का उर्दू अनुवाद मुहम्मद अतरीफ़ शहबाज़ंदवी ने 'हिंदूस्तान में मुसलमानों की तालीम' नाम से किया है। फ़ारसी भाषा में लिखित पुस्तक 'दारा शिकोह' का उर्दू अनुवाद 2021 में शाहिद नौख़ेज आज़मी ने प्रस्तुत किया है। 'मग़रीबी तालीम और मुसलमान' नामक अपनी अंग्रेज़ी में लिखित पुस्तक का अनुवाद उर्दू में भी लेखक मसरूर अली अख़्तर हाशमी ने किया है। देवेंद्र अस्र की हिंदी में लिखित पुस्तक का उर्दू अनुवाद आज के उभरते हुए लेखक शाहिद परवीज़ ने 'अवामी ज़राअ अब्लाग़ तरसील और तामीर व तरक़्की' शीर्षक से किया है। फ़ारसी में लिखित 'मसनवी मौलाना रूम' पुस्तक का उर्दू अनुवाद इस वर्ष सैय्यद अहमद ईसार ने पेश किया है, जो सन् 2021 की एक श्रेष्ठ अनूदित पुस्तक है।

सन् 2021 का प्रारंभ निस्संदेह दुविधापूर्ण रहा, परंतु फिर भी नए सपनों, नए उत्साह एवं नई सोच के साथ साहित्यकारों ने उर्दू साहित्य की बग़िया को अपने लेखन पुष्प के माध्यम से ख़ूब महकाया है। गंभीर भीषण परिस्थितियो में भी लेखकों ने अपनी लेखनी को क्रियाशील बनाए रखा और उर्दू साहित्य की प्रत्येक विधा को अपनी कृतियों से संपन्न बनाया है।

❑❑❑

4

कन्नड साहित्य

टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'

2021 में प्रकाशित कन्नड साहित्य की विविध आयामी कृतियाँ विशेषकर भारतीय तथा विदेशी भाषाओं का कन्नडानुवाद पाठकों को आकर्षित करती हैं। कोरोना काल में लेखकों ने घर में कैद होकर उस संदर्भ का, समयावकाश का सदुपयोग कर विशिष्ट रचनाएँ दी हैं। अंतर्जाल वेब–पुस्तकों के युवा आकर्षण में भी पाठकों की संख्या कम नहीं हुई है।

2021 में कन्नड साहित्यकार राज्य और राष्ट्र स्तर पर विशिष्ट प्रशस्ति–पुरस्कारों से नवाजे गए। इसी वर्ष 2021 नवंबर को डॉ. चंद्रशेखर कंबार जी ने पद्म भूषण प्रशस्ति भारत के राष्ट्रपति के कर कमलों से प्राप्त की। 2021 का केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार श्री डी. एस. नागभूषण जी को उनकी कृति 'गांधी कथन' के लिए दिया गया तथा बाल साहित्य पुरस्कार वसु बेविनगिडद को प्राप्त हुआ।

विशेष बात यह है कि 'नई धारा' पत्रिका ने 2021 का उदयराज सिंह स्मृति सम्मान कन्नड के श्रेष्ठ नाटककार, ज्ञानपीठ से पुरस्कृत डॉ. चंद्रशेखर कंबार को दिया। पहली बार वे एक हिंदीतर भाषी भारतीय साहित्यकार को पुरस्कार दे रहे हैं, यह भाषाई सद्भावना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसी संदर्भ में डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी' को 'रचना सम्मान' से नवाजा गया।

कर्नाटक सरकार की ओर से कुवेंपु भाषा भारती प्राधिकार से 2021 की गौरव प्रशस्ति डॉ. प्रभाशंकर 'प्रेमी', प्रो.टी.आर. अनंतराम, डॉ. गीता शणै, ईश्वरचंद्र, डॉ. राजाराम हेगडे तथा डॉ. के. एम. श्री निवास गौड़ा को प्राप्त हुई।

कर्नाटक साहित्य अकादमी ने 2021 की गौरव प्रशस्ति श्री जिनदत्त देसाई, डॉ. ना मोगसाले, डॉ. सरस्वती चिम्मलगि, प्रो. बसवराज कल्गुडी और मल्लप्पा के. के. पुर को दी।

2021 का प्रतिष्ठित नृपतुंग पुरस्कार प्रो. मल्लेपुरम बेंकटेश को प्राप्त हुआ।

कविता

'भावगीते' डॉ. का. वें. श्रीनिवास मूर्ति की समग्र गीत रचना है। इसमें अब तक के गीत तथा ध्वनि–संद्रिके मिलाकर 247 भावगीत हैं। इसके पाँच भाग हैं भावगीते, नाडगीते, जनपदगीते और ओदुगविते (पढ़ने वाले गीत)। ये विषाद, दर्द, विरोध, प्रगति, प्रेम आदि के बारे में है। भाषा वस्तु के अनुवाद सरल, सरस और सुललित भी हैं।

'कवि जोडिय आत्मगीत' नटराज हुलियार जी का कथा–काव्य है। यहाँ हृदयंगम कविता गुच्छ बुद्धि–भावों का संतुलित मिश्रण है। यह कथा काव्य नायिका सिल्विया (अमरीकी कवयित्री) पर केंद्रित है और उसके पति इंग्लैंड के कवि

टेड्ह्यूस (1930–1998) के लिए महत्व का पात्र हैं। उन दिनों की कविता की पंक्तियाँ कन्नडीकृत हुईं हैं। इन कवि द्वय (दंपति) की जिंदगी पर आधारित कथा काव्य है।

'होगी बन्नी ऋतुगळे' (फिर आइए हे ऋतु) एच. एस. शिवप्रकाश की काव्य कृति है इसमें दृष्टि की विशालता, प्रश्न करने की बात देखी जाती है। शिवप्रकाश के काव्य में वैविध्य, वस्तु भाषा, शैली और शब्द विन्यास में नयापन देखा जाता है।

'कडे मातु' (अंतिम बात) सविता नागभूषण का किसान गीत संकलन है। यहाँ किसानों का कठिन श्रम, आतंक, हताशा, आँसू और दर्द का अनुभव लयबद्ध भाषा में अभिव्यक्त है। यहाँ कृषक जीवन के अनुभव ही कविता के अनुभव होकर, गीत बने हैं। किसान समस्याएँ ही यहाँ काव्य–वस्तु बनी हैं। कविताएँ गेय हैं। इन्हें गाकर ही आनंद ले सकते हैं।

'एदे हालिन पाळि' (स्तन दूध की बारी) काव्यध्यान में रहने वाले आरिफ राजा का कविता–संकलन है। यह उनका पाँचवाँ संकलन होने पर भी सहृदय पाठकों में काव्य के प्रति रुचि पैदा करने में समर्थ हैं।

'ओंदु मुत्तिन भाषे' (एक मोति की भाषा) की पंक्तियाँ देखिए–

ननगे गोत्तिरुवुदिष्टे/ ओंदु मुत्तिन भाषे/ओंदु तुत्तिन भाषे/ओंदु होत्तिन भाषे।

मुझे इतना ही मालूम है कि/एक मोती की भाषा/एक कौर की भाषा/ और एक समय की भाषा।

इसके साथ ही कहते हैं– *काव्य मेरा बाहर का शोर नहीं/ मेरे अंदर का शोर भी है।*

'चळवळिय हाडुगळु' (आंदोलन के गीत) बरगुरु रामचंद्रप्पा जी की 42 कविताओं का गुच्छ है। इन कविताओं में अंतरंग की भावनाएँ भी हैं और समुदाय गान भी। यहाँ समानता और न्याय ही रचनाओं में सार रूप में है। आक्रोश और भावुकता आंदोलन गीतों में आम बात है। मगर बरगूरु जी के गीतों में भावुकता है, भावावेश नहीं। इस संकलन में भी पसीना, जालीवृक्ष, श्रमजीवी, सूर्य आदि प्रतिमाएँ हैं।

'बिडुसाकु ई केडुगालक्किष्टु' (छोड़ो, बुरे दिन के लिए) रमेश अरोलि जी का तीसरा संकलन है। यह कवि इस पीढ़ी के कवियों से भिन्न हैं। क्योंकि लोकगीतकार, तत्वपदकार, वचनकार के काव्य रूपों को ही अपनी अभिव्यक्ति के लिए अपनाने का प्रयास करते हैं।

प्रकृति का दारुण चित्र देखिए – कैसे प्रकृति अपना रंग खो रही है–

ऊर म्यारिगेल्ल उक्किन गिडवागि
गाळिय अलेयेल्ल कंपनी अडवागि
चिलिपिली सद्धडगि गिळिराम
चीरोदु रद्दायितो गिळिराम।

(गाँव के मुँह पर इस्पात का पौधा बन हवा की लहरे सब कंपनी को गिरवी। चहक की ध्वनि बंद हो गई है तोताराम। चीखना रद्द हो गया देखो तोताराम।)

अंत में आशावादी होकर कवि कहता है–

मगु एसेद चेंडनु आकाशवादरु मरळिको–
ट्टितल्ला बिडु साकु इष्टु ई केडुगालक्के।

(बच्चे की फेंके की गेंद को आकाश ने तो पुनः दे दिया, छोड़ो, बस इतना, इस बुरे समय के लिए।)

'रतिय कंबनी' (रति के आँसु) नंदिनी हेद्दुगी की 54 कविताओं का संकलन है और 'हनि–इब्बनि' (बूँद–ओस) शीर्षक में 34 छोटी कविताएँ हैं। यहाँ की कविताएँ अधिकतर रति के आँसू ही हैं। पूरे संकलन की प्रधान वस्तु स्त्री की कामेच्छा ही है, जो प्रामाणिकता से अभिव्यक्त है।

मूरने कण्णु मुच्चि/सुम्मने मलगो शिवने
निनगेनु गोत्तु राजारोष प्रेमद बग्गे।
नानादरो जोडि हेज्जे गुरुतुगळ बेजानु
बिटु बंदिरुवे रेवेयल्लि..... (राजारोष)

(तीसरी आँख बंद कर चुपचाप सो जा रहे हे शिव,

तुम्हें क्या मालूम है खुल्लमखुल्ला प्रेम के बारे में।

मैं तो जोड कदंम के निशान बहुत सारे छोड़कर आई हूँ.....)

(राजारोष / खुल्लमखुल्ला)

नाटक

'मैसूर इतिहास मत्तु नाल्कु ऐतिहासिक नाटक चक्र' (मैसूर इतिहास और चार ऐतिहासिक नाटक चक्र) कवि, नाटककार डॉ. ए. शंकर जी द्वारा रचित चार नाटक हैं। इसमें 'कळले कराचुरि', 'हैदरालि', 'टीपू सूल्तान' और 'कळेदुहोदवरु' जो खो जये शीर्षक के नाटक हैं, जिसमें राज घराने की, सैन्याधिकारियों की, सुल्तानों की कथाएँ हैं। मैसूर राजाओं के प्रसंग, संघर्ष, आदि का चित्रण आकर्षक और कुतूहलकारी है।

'वारसुदार' जयराम रामपुर द्वारा रचित नाटक है। नाटक ऐतिहासिक है और उसकी कथावस्तु मुगल साम्राज्य में शाहजहाँ के चार पुत्र और तीन पुत्रियों के बीच झगड़े का चित्रण है। भाई सिंहासन के लिए लड़ते हैं, यहाँ धर्म जिज्ञासा, सर्वधर्म चिंतन, राजनीति में व्यावहारिकता की चर्चा होती है।

कहानी

'ओंदु मत्तु नूरु कथेगळु' (एक और सौ कहानियाँ) प्रो. के. ई. राधाकृष्ण द्वारा रचित कहानियों का संकलन है। यहाँ किसी भी कहानी के लिए शीर्षक नहीं कथा–संख्या ही शीर्षक है। कहानियाँ बच्चों के लिए भी हैं। कहानियों में कौतूहल, वैचारिकता और सामाजिकता भी है।

'हरिद टावेल' (हरा टवल) कालीमिट्टी के खेत में श्रम करने वाले मिट्टी में मिल जानेवाले के जीवन की कहानियाँ हैं। मैदानी प्रदेश के कृषि जीवन का अनुभव यहाँ मिलता है। कथाकार हैं टी. एस. गोरवर। कृषक प्रतिनिधि कोड्लप्पा के जीवन की गाथा, काव्यात्मक भाषा में खुलती जाती है।

'केंपुदीपद मनेयल्लि' (लाल दीप के घर में) कुमार बेंद्रे जी द्वारा रचित 44 कहानियों में 12 कथाओं का गुच्छ यह है। यहाँ की कहानियाँ वैशिष्ट्यपूर्ण कथा संरचना से और अनन्य पात्रों से युक्त हैं। उनमें 'आ लोक' (वह लोक), 'मादप्पन सावु' (मादप्पा की मौत) और 'अदृश्य लोकद माये' (अदृश्य लोक की माया) विशिष्ट हैं।

'कते डब्बि' (कथा डिब्बा) धारावाहिक टी.वी. में परिचित अभिनेत्री रंजनी राघवन का कथा–संकलन है। इसमें 14 कहानियाँ हैं। सभी में मनुष्य की अच्छाई–बुराई के बारे में जिज्ञासा है। 'क्याब वी मेट', चुच्चु मद्दिन साइड–एफेक्ट' (इंजक्शन का साइड एफेक्ट) और 'नंजनगूड न्यूजेर्सी' उल्लेखनीय हैं।

'बेत्तले संत' (नंगा फकीर) इस्मायिल इळकल जी का पहला कथा संकलन है। मुस्लिम समुदाय की युव ध्वनि प्रमुख रूप से सुनाई पड़ती है। आज जो मुसलमान समुदाय संकट अनुभव कर रहा है उसका चित्रण है। यहाँ के पात्रों में दर्द और असहायकता सह्रदयों को बेहाल करती है। इसमें 'रोगग्रस्त', 'गुलाबी फूल का फ्राक' और 'चाकोलेट' कहानियाँ ध्यान देने योग्य हैं।

उपन्यास

'उरिव केंडद मेले' (जलते अंगारे पर) बसवराज होणूर जी का उपन्यास है। 'क्यांपास उपन्यास' धोष वाक्य से प्रकट होनेवाला यह उपन्यास 'क्यांपास' को केंद्र में रखकर रचा गया है। इस उपन्यास में यह दिखाने का प्रयत्न है कि सभी क्षेत्र भ्रष्ट हो गए हैं और राजनीति हर क्षेत्र में घुसी है जिससे वातावरण भ्रष्ट हुआ है। कथा नायक प्रकाश की महत्वाकांक्षा, प्रतिभा प्रकट होती है। अंत में प्रकाश पापप्रज्ञा में डूब जाता है।

'परवश' लेखिका दवन सोरब जी का मलेनाड संस्कृति को उजागर करनेवाला विशिष्ट उपन्यास है। इसमें वहाँ के जीवन के वास्तविक बिंब उभरे हैं। इस वृहत् उपन्यास में लगभग 60 से अधिक पात्र हैं। परंतु केंद्र प्रतिभा जुमकि जल प्रपात ही है। यहाँ तीन पीढ़ियों के चित्र सागर पार भी विस्तृत हैं।

'वैष्णव जनतो' लोकेश अगसन कट्टे जी का अद्यतन उपन्यास है और महत्व का उपन्यास भी है। इसमें जो लोक है, वह बहुत और बहुमुखी जीवन के आशय से युक्त है। स्वातंत्र्योत्तर काल में ग्रामीण जीवन में जो परिवर्तन की हवा बहती है और उसमें गांधी, अंबेडकर की विचारधाराएँ प्रवाहित होती हैं उसका जीता जागता चित्रण है।

'चांदबी सरकार' डॉ. चंद्रशेखर कंबर का उपन्यास है। इसमें 'कृष्ण पारिजात' नाटक समूह के कलाकार के जीवन की यशोगाथा है। चांदबी देवदासी की बेटी होकर भी श्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में लोक–सम्मान पाती है। बाद में वह गायक से शादी कर लेती हैं। परंतु यह विवाह बंधन टूट जाता है। आगे बलदेव नायक नामक जमींदार से शादी करके 'चांदबी सरकार' बन जाती है। वह शिवापुर के विकास में योगदान देती हैं। वास्तव का अनुभव और विशिष्ट भाषा शैली के कारण यह उपन्यास लोकप्रिय बना है।

'प्रस्थान' डॉ. श्रीधर एच. जी. मुंदिगे हळ्ळ का उपन्यास है। यह आग्रहपूर्वक घरबार से निकालकर बाहर करने के संकट को चित्रित करने वाला उपन्यास है। विकास के नाम पर बाँध के पानी में सदा के लिए डूब गई संस्कृति का चित्रण है। शरावती नदी के लिए मडेनूर और लिंगनमक्कि बाँध बनाते समय उस प्रदेश के जन मानस का दर्द और आंतक का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। इसमें मलेनाडु (पश्चिम घाट का पहाड़ीय प्रदेश) की संस्कृति का चित्रण हुआ है। 'नेलद नुडिय कंपु' (ज़मीन की भाषा की खुशबू) यह एक विशेष उपन्यास है। यह ईरण्णा बडिगेर जी का उपन्यास है जिसमें अंग्रेजी प्राबल्य के बीच, कन्नड भाषा का अस्तित्व, मातृभाषा में शिक्षा सरकारी स्कूलों की रक्षा हमेशा चर्चा में रहने वाले प्रस्तुत विषय हैं। इन सभी विषयों को मिलाकर, परिवार की कथा के आधार पर रचा उपन्यास है 'ज़मीन की भाषा की खुशबू'। इस उपन्यास का लक्ष्य कन्नड भाषा को बचाना, उसका विकास करना है। सरकारी स्कूलों की न्यूनता और कान्वेंट स्कूलों को इससे लाभ। कन्नड की समस्या को लेकर हुए आंदोलन का इस उपन्यास में विस्तृत विवरण है।

'भूम्तायी' (भूमाता) श्री जाणगेरे वेंकटरामय्या का लिखा उपन्यास है। यह उनका दसवाँ उपन्यास है। इसमें 'जगदीश' नामक मुख्य पात्र और उस पात्र के आधार पर विकसित जीवन को सविस्तार चित्रित किया है। जगदीश भी बड़े वेतन श्रेणी का था और कोविड के कारण नौकरी खोकर अपनी कार को ही टैक्सी के रूप में चलाकर जीवन बिताता है। इस उपन्यास में जीवन के विविध आयाम खुलते जाते हैं। उपन्यास में वर्णित विषय वास्तविक जीवन के समीप हैं।

गद्य लेखन

'दलित चळुवळिय हेज्जे गुरुतुगळु', (दलित आंदोलन के कदम के निशान) शिवाजी गणेशन् की गद्य कृति है जिसमें लेखक ने दलित आंदोलन के स्वरूप का चित्रण किया है। यह अध्ययन योग्य कृति है। दलित आंदोलन के अग्र नायकों के गुणावगुण के बारे में बताया है। उस समय के नायकों, घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शियों के स्मरण का भंडार ही इस कृति को महत्वपूर्ण बनाता है।

विमर्श लेखन

'रंगांतरंग' (नाटक विमर्श) वै. के. संदया शर्मा के 57 नाटकों के लिए लिखी आलोचनाओं का संकलन हैं। संद्या जी ने कन्नड नाटक प्रयोगों की आलोचना का विश्लेषण किया है। हर नाटक के सन्निवेश का उल्लेख कर पात्र धारियों का नाटक लेकर अपना अभिप्राय रखा है। यह रंग अभ्यासी के लिए मार्गदर्शन के रूप में है।

'मानव हक्कुगळु' कृति के लेखक हैं न्यायमूर्ति एच. एन. नागमोहन राव। लेखक न्यायमूर्ति रहे हैं। उन्होंने अपने वृत्ति जीवन के अनुभव, अध्ययन और प्रचलित वातावरण के प्रति स्पंदन के रूप में कृति रची हैं। 22 छोटे–छोटे अध्यायों में विस्तृत विषय का विवरण है। कृति में बसवादि शरणों के शरण चिंतनों का उल्लेख है। अंध आचरणों के विरुद्ध वैज्ञानिक अध्ययन पर एक अध्याय है।

'शतमानदंचिनल्लि' (शताब्दी क अंतिम चरणों में) इसके संपादक हैं प्रसिद्ध सिनेमा निर्देशक नागतीहळ्ळी चंद्रशेखर। पिछली शताब्दी में जगत् में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। वैज्ञानिक प्रगति,

सांस्कृतिक परिवर्तित चेहरे और भारत में भी सांस्कृतिक जगत में महत्वपूर्ण परिवर्तन जो हुए उसी से संबंधित लेखों का संपादन है। इसमें 18 चिंतकों के लेख हैं। साहित्य, सिनेमा, रंगमंच, कला और पर्यावरण संबंधी लेख इसमें हैं। जी. एस. शिवरुद्रप्पा, बरगूर रामचंद्रप्पा, गिरीश कर्नाड, ए. एन. मूर्तिराव, बी.सी. रामचंद्र शर्मा आदि के लेख विद्वतापूर्ण और ज्ञानवर्धक हैं।

आत्मकथा

'हरिवनदी' आत्मकथा मीनाक्षी की है और इसका निरूपण भारती हेगडे ने किया है। सामान्यतः महिला आत्मकथा कुटुंब केंद्रित होती है। अनुभव से कथन रचना महिला का विशेष गुण है। यह केवल लेखिका का आत्म कथन नहीं है, लेखिका के जन्मस्थान शरावती और अघनाशिनी काई के जनजीवन की कथा भी है। इस कृति की भूमिका में नागेश हेगडे जी लिखते हैं कि माईका कहने के लिए महिला नहीं, ससुराल कहने पर घर ही नहीं ऐसे इनके जीवन के विवरण पढ़ते, कांबाड़िया के 'बहते गाँव' का चित्रण मन में उभरता है। अपनी माँ की आत्मकथा का निरूपण पत्रकार भारती हेगडे ने सुंदर और मनोज्ञ रीति से किया है।

'नीवू देवरागी' (आप भी भगवान बनिए) यह अरविंद मालगत्ति जी की आत्मकथा का दूसरा भाग है। पहला भाग था 'गौर्वमेंट ब्राह्मण'। पढ़ते–पढ़ते, लेखक के जीवन, व्यक्तित्व खुलते जाते हैं। इसमें लेखक के अनुभव का दैनिक विवरण है। नास्तिक बेटा आस्तिक माता के बीच के प्रसंग इस कृति में नए वैचारिक आयाम में प्रवेश करते हैं।

संस्मरण

'संजे मल्लिगे' (संद्या मोगरा) यह शांतादेवी कणवि संस्मरण ग्रंथ है। इसके संपादक हैं वीणा शांतेश्वर और शांता इम्रापुर। शांतादेवी कणवि जी के लेखों का संग्रह है। प्रसिद्ध कथाकार शांतादेवी कणवि जी कर्नाटक के ख्यात कवि चेन्नवीर कणवि की पत्नी हैं। शांतादेवी जी की कहानियों में स्त्री का दर्द, पीड़ा, संवेदना प्रगाढ़ रीति से अभिव्यक्त हैं।

संस्मरण ग्रंथ के तीन भाग हैं। पहले में शांतादेवी जी के प्रकाशित और अप्रकाशित लेख संगृहीत हैं। दूसरे भाग में उनके कवित्व पर उनके साहित्य–आत्मीयों के लेख हैं। अंतिम भाग में उनके परिवार के लोगों की दृष्टि में उनके व्यक्तित्व पर लिखे लेख हैं। शांतादेवी जी के मोगरा के समान कोमल मन के परिमलित होने का आभास सर्वत्र लिता है।

'देवुडु लोक कथन' देवुडु के समग्र लेखों का महा–संकलन ग्रंथ है। देवुडु के उपन्यास, महाब्राह्मण, महाक्षत्रिय और महादर्शन प्रख्यात हैं। प्रो. मल्लेपुरम वेंकटेश जी ने इनके समग्र लेखों का संपादन किया हैं। देवुडु के लेख ही उनकी प्रतिभा और पांडित्य के लिए साक्षी हैं।

भारतीय साहित्य निर्मापक

'भारतीय साहित्य निर्मापक' माला में केंद्र साहित्य अकादमी ने 'बी. सी. रामचंद्र शर्मा' कृति शूद्र श्रीनिवास से लिखवाकर प्रकाशित किया है। बी. सी. रामचंद्र शर्मा जी 23 वर्षों तक विदेश में रहने पर भी कन्नड साहित्य लोक में कवि नाटककार और कहानीकार के रूप में अपनी छाप छोड़ गए हैं। श्रीनिवास जी ने ऐसे साहित्यकार के जीवन और लेखन को परिचय कराने का स्तुत्य प्रयास किया है।

यह कृति छह अध्यायों में बँट गई है। पहले अध्याय में शर्मा जी के जन्म, बाल्य और व्यक्तित्व का परिचय है। दूसरे और आगे के अध्यायों में उनकी काव्य रचना पर, आगे नाटक, सॉनेट और अनुवाद का शोधपरक परिचय दिया गया है। यह एक कालावधि में कन्नड साहित्य जगत के चेहरों को चित्रित करनेवाली कृति भी है।

'मनसु मागिद सुस्वर' (मन का परिपक्व सुस्वर) ज्योति गुरुप्रसाद द्वारा रचित इस कृति में चुने हुए 73 कन्नड चित्रगीतों के अर्थ, अंतरार्थ और कविता के पीछे की कथा आदि का विश्लेषण किया गया है। यह पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों का गुच्छ है। इसमें उन गीतों के चित्र, साहित्यकार और गायकों का परिचय भी दिया गया है।

अभिनंदन ग्रंथ

'बी. ए. विवेक रै ओडनाटद नेनपुगळु' (बी. ए. विवेक रै के साथ की स्मृतियाँ) सी. एन. रामचंद्रन् जी द्वारा संपादित संस्मरण ग्रंथ है। अपार विद्वत्ता संपन्न विवेक रै सरल, सौजन्य व्यक्तित्व के हैं। प्रस्तुत संस्मरण ग्रंथ उनके मित्रों द्वारा समर्पित अभिनंदन ग्रंथ है। सी. एन. रामचंद्रन के अलावा चन्नप्पगोड़, पुरुषोत्तम बिळिमलै, हि. ची. बोरलिंगय्या और हैड्रन ब्रूखनर के सुदीर्घ लेखनों से यह ग्रंथ शैक्षणिक महत्व की कृति बनी है।

'जगत्तिन महा् नागरिकतेगळु' (विश्व की महान सभ्यताएँ) यह लिंगाराजु जी का लिखा महान विश्व सभ्यताओं का विशिष्ट कथन है। मनुष्य का मूल स्वभाव ही ढूँढ़ते हुए जीते रहना है। नए दिगंत को ढूँढ़ने का यह प्रयास रोचक है। 'अट्रांटिस कथानक' से यह सभ्यता कथन प्रारंभ होता है। मेसपोटेमिया विश्व की अत्यंत पुरातन सभ्यता है। 'ईजिप्ट नामक मायलोक' कथा की भाँति आरंभ होता है। नैल नदी और वहाँ के पिरामिडों की विशिष्टता और रहस्यों को खोलकर यहाँ रखा है। आस्ट्रेलियन बुशमन् कथन भी यहाँ हैं।

अनुवाद

'गुंतेरन शिशिर ऋतु' (गुंतेर की शिशिर ऋतु) मूलतः स्पेनिश उपन्यास का हिंदी के माध्यम से कन्नड रूपांतर है। मूल स्पेनिश उपन्यासकार हैं ख्वान मेन्युयल मार्कोस जो अर्जेंटिना के प्रभावी लेखक हैं। इसका हिंदी रूपांतर प्रभाती नौटियाल जी ने केंद्र साहित्य अकादमी, दिल्ली के लिए 'गुंतेर की सर्दियाँ' शीर्षक से किया था। डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी' ने इसका कन्नड अनुवाद 'गुंतेरन शिशिर ऋतु' शीर्षक से किया है और आइ. बी. एच. प्रकाशन बेंगलूरु ने इसका प्रकाशन किया है। यह परग्वे की स्वतंत्रता की लड़ाई से संबंधित है। तानाशाही सरकार छात्रों को किस तरह हिंसात्मक यातनाएँ देती है उसका जीता जागता चित्र इस उपन्यास में है।

'सिमोन द बोवा– मातु कथन' (सिमोन द बोवा– बात और कथन) यह सिमोन द बोवा के करीब सत्तर वर्ष पहले के कथन का अनुवाद हैं। अनुवादक हैं विक्रम विसाजी। इसमें सिमोन–द–बोवा द्वारा रचित चार आत्मकथा के भाग, संस्मरण, साक्षात्कार, पत्र, यात्रा कथन भाषण और लेखों के कुल संग्रह का अनुवाद है। मूल लेखिका सिमोन स्त्रीवादी चिंतक ही नहीं, महा मानवतावादी भी हैं। वे 1908 – 1986 तक रहीं। पाश्चात्य देश के चिंतकों में सिमोन जी का बड़ा नाम है। बोवा ने जीवन को जीकर दिखाया। कैथोलिक परिवार में पैदा होकर अर्थहीन विश्वासों का चाहे वे राजनीतिक हो या धार्मिक या सामाजिक उनका तीव्र विरोध किया। फ्रेंच जन जीवन का यहाँ वर्णन रोचक है।

'कर्नाटक इतिहासद आकरगळु 'संपुट–1' (कर्नाटक इतिहास के मूल आधार भाग–1) एस. श्रीकंठशास्त्री जी के अंग्रेजी शोध प्रबंध 'सोर्सस ऑफ कर्नाटक हिस्टरी' का कन्नड अनुवाद है। श्रीकंठशास्त्री जी देश के श्रेष्ठ इतिहासकारों में प्रमुख हैं। मूल कृति 1940 में प्रकाशित थी। अब इस कृति का लिप्यंतरण और अनुवाद एच. एस. गोपालराव जी ने किया है। सभी आधार ग्रंथों का संग्रह, विशेषतः शोध छात्रों के लिए यह ग्रंथ अत्यंत उपयोगी है।

'अपरिचित' मूलतः आल्बर्ट कमू (फ्रेंच लेखक) का उपन्यास है। यह 'स्ट्रेंजर' और 'औट सैडर' नामों से अंग्रेजी अनुवाद का कन्नड अनुवाद है। कन्नडानुवाद प्रकाश नायक ने किया है। यह औपन्यासिक कृति एक सागर तट में आत्मरक्षा के लिए किसी अरब की हत्या की प्याट्टिस मार्सो की कथा बताती है। उपन्यास का केंद्र बिंदु उस हत्यारे की चर्चा है। प्रकाश नायक जी ने सुंदर अनुवाद किया है और यह अनुवाद पाठकों को आकर्षित करता है। 'स्त्रीवाद–अंचिनिंद केंद्र देडेगे' (स्त्रीवाद – मार्जिन् से केंद्र की ओर) मूलतः बेल हुक्स की कृति 'फेमिनिस्ट थिरी फ्रम मार्जिन टु सेंटर' का अनुवाद है। अनुवादक डॉ. एच. एस श्रीमती जी हैं, जो कन्नड में स्त्रीवादी लेखिका हैं। मार्जिन के बिना समग्रता संभव नहीं। वैसे समग्र का भाग होने पर भी चौकट से सहकर बाहर ही खड़े रहने की स्थिति मार्जिन की है। इसे कई

तात्विक, सामाजिक और सीधे अनुवाद के उदाहरणों द्वारा बेल हुक्स अपने सिद्धांत का प्रतिपादन करती है। यह कृति स्त्रीवाद की व्याख्या अश्वेत समुदाय की दृष्टि से करती है। अनुवादक ने इस कृति को अनुवाद न कहकर, 'कन्नड पाठ' कहा है।

'जीव कोडले? चहा कुडियले?' (जिव दे दूँ? चाय पी लूँ?) यह दामोदर मावजो का उपन्यास है। वे ज्ञानपीठ से पुरस्कृत कोंकणी लेखक हैं। इसमें युवा दृष्टिकोण से जीवन का अवलोकन किया गया है।

'चाय पीने की इच्छा हुई' ऐसा आरंभ होकर कथा 'मरुँ? या चाय पी लूँ' कहते विषाद के प्रश्न के साथ समाप्त होती है। माँ–बाप के तिरस्कार अनुभव करते बालक का और जगत को देखने के विनूतन दृष्टिकोण का मावजो हृदयपूर्वक चित्रण करते हैं। इसका कन्नड अनुवाद किशोर बार्कूर ने किया है। अनुवादक ने गोवा के कोंकणी जन–मन का चित्रण अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से किया है।

'मोटार सैकल डैरीस, यह लैटिन अमरीका यात्रा की टिप्पणियाँ हैं। मूल लेखक अर्नेस्टो गेवार हैं। 500 सी.सी. सामर्थ्य के नोट्रिन मोटार सैकल 'ला पोदेरोसा' में अपने मित्र के साथ 1952 में जो अर्नेस्टो गोवर ने यात्रा की थी, उससे संबंधित उन्हीं की टिप्पणियाँ हैं। यहाँ पहाड़, वादियाँ, सरोवर सब अक्षर रूप में हमारा दिल भर देते हैं। इसका अनुवाद अत्यंत मनोज्ञ रीति से किया है।

'मिदुळिन आघात–वास्तवांशगकु' (मस्तिष्क पर आघात–वास्तवांश) यह मूलतः डॉ. के. वेंकटरमण की कृति है। एक अध्ययन के अनुसार हर एक लाख लोगों में 180 लोग मस्तिष्क के आघात से पीड़ित होते हैं। इस समस्या को लेकर डॉ. वेंकटरमण जी ने अंग्रेजी में जो लिखा है, उसका कन्नडानुवाद अत्यंद सरल, सुबोध शैली में पत्रकार वेंकटेश प्रसाद जी ने किया है। मस्तिष्क पर आघात की रीति, रक्त–संचलन व्यवस्था, मस्तिष्क की कार्य वैखरी, चिकित्सा क्रम आदि का छाया चित्र सहित विवरण भी दिया गया है। इस अनूदित कृति का संपादन डॉ. के. आर. कमलेश ने किया है।

'सावित्रीबाई फूले मत्तु–नानु' (सावित्री बाई फुले और मैं) यह दीनोद्धारक सावित्री बाई फुले की जीवन गाथा का विशिष्ट रूप में निरूपण करने वाली कृति है। इसकी मूल लेखिका संगीता मूळे कहती हैं कि ज्योतिबा और सावित्री कबा दंपत्ति का ऋण समाज पर बहुत बड़ा है। उसे चुकाने का यह छोटा–सा प्रयत्न मात्र है।

'प्रेमपत्र' वैकं मुहम्मद बषीर की कहानियों का संकलन है। बषीर जी मलयालम के ख्यात कहानीकार हैं। इसमें उनकी 23 कहानियाँ हैं। इसका कन्नड अनुवाद मोहन कुंठार जी ने किया है। कुंठार जी कासर गोडु के हैं जो कर्नाटक केरल सीमा प्रदेश में है। यहाँ जिंदगी के संघर्ष की कहानियाँ हैं। अपने ही दर्द संतोष के लिए अक्षर रूप देने के द्वारा बषीर जी ने अपनी जिंदगी का भी दाखलात किया है।

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा 2021 में डॉ. प्रभाशंकर 'प्रेमी' के कई महत्वपूर्ण अनुवाद कन्नड में निकले हैं। 'परमानंद माधवम्' सुनील किरवयी द्वारा हिंदी में रचित है। कोढ़े से पीड़ित सदाशिव गोविंद कात्रे जी के जीवनानुभव का कथन है। कात्रे जी स्वयं कोढ़े से पीड़ित होकर रोग मुक्त होने पर कोढ़े से पीड़ितों की सेवा में अपने जीवन को ही अर्पित करते हैं। आश्रम की स्थापना कर सेवा कार्य में लग जाते हैं। धैर्य, साहस और वीरता से लड़कर अपने को कुरबान करनेवाले परमवीर चक्र विजेता 1. मेजर सोमनाथ शर्मा, 2. क्याष्टन मनोज कुमार पांडे, सेकेंड लेफ्टिनेट अरुण खेत्रपाल, मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद और मेजर शैतान सिंह– इन पर चित्रकथा द्वारा साहसिक परिचय पुस्तकें, एन.बी.टी. ने आलेख लेखक से कन्नड में अनूदित करवाकर छापी हैं।

'हिमालयदल्लि विवेकानंद' कृति स्वामी विवेकानंद पर हिंदी में लिखा 'हिमालय में विवेकानंद' का कन्नड अनुवाद है। मूल लेखक हैं प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार तथा पूर्व शिक्षा मंत्री, केंद्र सरकार, रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी। इसमें विवेकानंद जी की कई बार की हिमालय यात्रा का विशद वर्णन है, जहाँ उन्होंने ध्यान, तपस्या की थी और

'आध्यात्मिक चिंतन में एकांत पाया था। इसका कन्नड अनुवाद भी आलेख लेखक ने सुबोध शैली में किया है।

कुवेंपु भाषा भारती प्राधिकार ने 2021 प्रकाशनों में प्रधानतः दो पुस्तकें हिंदी से अनुवाद कराई हैं। उसमें पहली है रूपसिह चंदेल द्वारा रचित 'कानपुर टु कालापानी'। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसका कन्नड अनुवाद उसी मूल शीर्षक से डॉ. एच. एस. कुमारस्वामी ने किया है। दूसरी पुस्तक भी रूपसिंह चंदेल की है। 'खुदीराम बोस' जिसने देश के लिए अपने को कुरबान किया था। इसके भी कन्नड अनुवादक डॉ. एच. एम. कुमारस्वामी जी हैं।

❑❑❑

5

कश्मीरी साहित्य

महाराज कृष्ण भरत 'मुसा'

केंद्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर ऐसा बहुभाषी क्षेत्र है, जहाँ प्रमुख रूप से जम्मू में डोगरी, कश्मीर में कश्मीरी तथा लद्दाख में लद्दाखी बोली जाती है। यहाँ कुछ क्षेत्रीय बोलियाँ भी प्रचलन में हैं जैसे सिराजी, पहाड़ी, भद्रवाही, पोगली, गोजरी आदि। लद्दाख के कुछ क्षेत्रों में बाल्ती भी बोली जाती है। यहाँ पर पंजाबी और अर्जित की गई उर्दू भाषा के भी बोलने वाले हैं। हिंदी को यहाँ की संपर्क भाषा कहा जाता रहा है, जो अब अन्य भाषाओं के साथ यहाँ की राजभाषा बनी। यह विडंबना ही है कि जम्मू कश्मीर के किसी भी क्षेत्र की मातृभाषा न होने के कारण भी वर्षों तक उर्दू यहाँ की राजभाषा बनी रही और अंग्रेजी भी उसके साथ–साथ विद्यमान रही। जब पाँच–छह अगस्त 2019 को जम्मू कश्मीर में एक नई संवैधानिक व्यवस्था उभरकर आई तो इसके साथ ही केंद्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर में नई राजभाषा के संबंध में पुनर्विचार प्रारंभ हुआ।

'जम्मू कश्मीर आधिकारिक भाषा विधेयक 2020' का ही यह प्रतिफलन है कि संसद में उक्त विधेयक पारित होते ही पहली बार कश्मीरी, डोगरी तथा हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। यह अपने आप में एक ऐतिहासिक निर्णय था जिसके लिए प्रदेश की जनता प्रतीक्षातुर थी। यह ऐसा सुअवसर था जब दो क्षेत्रीय भाषाओं को प्राथमिकता दी गई और साथ ही संपर्क के रूप में कार्य करने वाली हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। पहले से उर्दू और अंग्रेजी के प्रचलन को यथावत् रखा गया। साथ ही गोजरी, पंजाबी तथा पहाड़ी भाषाओं के प्रचार–प्रसार एवं विकास के लिए भाषा प्रेमियों को प्रोत्साहित करने की बात भी सामने आई।

भारत की क्षेत्रीय भाषाओं को राजभाषा का दर्जा दिए जाने की चर्चा यहाँ इसलिए भी अप्रासंगिक नहीं है, क्योंकि हम जिस भाषा साहित्य की समीक्षा करने जा रहे हैं, उस कश्मीरी भाषा को आज दशकों बाद उच्च स्थान प्राप्त हुआ है, जिसकी यह बहुत पहले अधिकारिणी थी। कश्मीरी भाषा साहित्य की पुस्तकें वर्तमान में दो लिपियों में प्रकाशित हो रही है – नस्तालीख और देवनागरी। सरकारी स्तर पर नस्तालीख लिपि को मान्यता मिली है जबकि कश्मीरी भाषा को देवनागरी लिपि में लिखे जाने की अनुमति नहीं दी गई है। ऐसा भी नहीं है कि कोई लेखक या कवि अपनी पुस्तक को देवनागरी लिपि में नहीं छाप सकता, अंतर केवल इतना है कि नस्तालीख लिपि में पुस्तक प्रकाशन पर रचनाकार को कोई सरकारी सहायता या फिर मान्यता मिल सकती है, जबकि देवनागरी लिपि में छप रहे कश्मीरी साहित्य को कोई भी सरकारी सहयोग या फिर सम्मान/पुरस्कार प्राप्त नहीं हो सकता। इसी कारण सरकारी एवं गैर

सरकारी स्तर पर ऐसे प्रयास किए जा रहे है, जिसके फलस्वरूप नस्तालीख लिपि के साथ–साथ देवनागरी लिपि में भी कश्मीरी भाषा के लेखन एवं प्रकाशन को मान्यता मिल सके।

जब हम कश्मीरी साहित्य–2021 में प्रकाशित एवं चर्चित पुस्तकों पर विचार करना प्रारंभ करते हैं, तो हम पाते हैं कि यह वर्ष काव्य संग्रहों एवं समीक्षात्मक पुस्तकों के नाम रहा, साथ ही कथा संग्रहों, रंगमंचीय नाटकों, बाल साहित्य, उपन्यास एवं कुछ अनुवाद के कार्य भी हुए। कोरोनाकाल से कुछ राहत पाते रचनाकारों ने वर्षभर या फिर अगले वर्ष में भी कदम रखते हुए 2021 की पुस्तकों का प्रकाशन किया। कश्मीरी साहित्य–2021 के संदर्भ में हमें जो भी पुस्तकें उपलब्ध हो सकी, या फिर जिनके बारे में हम जानकारी जुटा पाएं, उनके संबंध में संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

कविता संग्रह : वर्ष 2021 में जिन काव्य संग्रहों की जानकारी उपलब्ध हो पाई, उनकी संख्या चौदह हैं। इनका ब्योरा निम्न दिया जा रहा है –

1. वथ पोतॅ हरदुन्व– (पथ बीते शरद की) यूसुफ जहाँगीर

2. वारयाह चांगि छि जालिन्य (असंख्य दीये हैं प्रदीप्त करने) –सतीश विमल

3. रुद् हारन्ड (इंद्रधनुष) गुलाम नबी हलीम

4. अहसासन हंदि शीशु खानु (एहसासों के शीश महल) डॉ. दरखशां अंदराबी

5. रूदु सर–वरख (रहेंगे मुखपृष्ठ)– ओ. अमर मालमोही

6. मे दोंप आव नु शायद (मैंने बताया आया न शायद) –एजाज़ जी एम लालू

7.सहरावन सब्जारच कल (मुरूभूमि को हरियाली की आश) – डॉ. शैदा हुसैन शैदा

8. मोछि मंज नभ (मुट्ठी में आकाश) नादिर अहसान

9. ललि निलवठ च़लि न ज़ांह (मुक्त नहीं होगी अंतस्ताप में नल्लेश्वरी) निगहत नसरीन

10. सदा–ए–सहर– पीरज़ादा अब्दुल खालिक सामिल

11. सोंतुच शेछ (वसंत का संदेश) – नूर मुहम्मद रोशन

12. गुलिश्यूठ (उपहार) – मोहन कृष्ण कौल

13. बाज़ार–ए–शाम – सैय्यद अब्बास जौहर

14. खून खंजर (रक्त के खंजर) – सैय्यद अब्बास जौहर

सोंतुचशेछ (वसंत का संदेश)

'सोंतुच शेछ' कश्मीर के नामवर शायिर नूर मुहम्मद 'रोशन' के रचना संसार का ऐसा विरल संग्रह है जिसमें रचनाकार की उन रचनाओं को प्रकाशित किया गया जो कवि जीवनपर्यंत प्रकाश में नहीं लाया। इनके बारे में कश्मीर के ख्यात नाम कवि आमिन कामिल और रहमान राही लिखते हैं कि नूर मुहम्मद रोशन के उल्लेख के बिना कश्मीरी साहित्य, सभ्यता एवं परंपराओं का इतिहास अधूरा रहेगा। इनका संबंध कश्मीरी साहित्य में ड्रामा, शायरी, ओपेरा स्टेज तथा अन्य विधाओं से रहा है। इस पुस्तक के अंत में 'मुलाकात' (भेंट) शीर्षक के अंतर्गत वह साक्षात्कार संकलित किया गया है, जो नूर मुहम्मद रोशन की जीवन यात्रा के विविध आयामों को रेखांकित करते हुए हमें रचनाकार के भीतर छिपी अंतःसलिला से परिचित कराता है, कवि जो बातें अब उद्घाटित नहीं करना चाह रहा था, उनको उजागर किया गया है। इस साक्षात्कार में लिखा गया है कि रचनाकार नूर मुहम्मद इन दिनों गुमनामी की ज़िंदगी जी रहे हैं। वह किसी से मिलना नहीं चाह रहे थे, पर साक्षात्कारकर्ता द्वारा अनुनय–विनय करने के बाद ही वह भेंटवार्ता के लिए तत्पर हो गए। इस भेंटवार्ता की सफलता का यह भी कारण रहा है कि आमिन कामिल और रहमान राही की रचनाकार नूर मुहम्मद के साथ घनिष्ठता थी। यदि यह साक्षात्कार संभव नहीं होता, तो शायद बहुत कुछ अनकहा ही रह जाता।

नूर मुहम्मद रोशन के काव्य संग्रह 'सोंतुच शेछ' को संकलित एवं संपादित किया है– हसरत गड्डा ने, जो स्वयं भी कश्मीरी भाषा साहित्य के सिद्धहस्त रचनाकार हैं। इसे फनकार कल्चरल ऑर्गनाइज़ेशन श्रीनगर ने प्रकाशित किया है। 346

पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य 500 रु. है। रचनाकार नूर मुहम्मद 21 मई 1919 में श्रीनगर के खानयार मोहल्ले में जन्में। लेखन की शुरुआत के साथ ही वह एक प्रगतिशील संगठन से जुड़े, जहाँ उनकी भेंट वीर अब्दुल आहद, गुलाम रसूल रेंजू तथा पी. एन. परदेसी से हुई। समकालीन रचनाकार दीनानाथ नादिम इनके घनिष्ठ मित्र थे। प्रारंभ में इन्होंने रेडियो कश्मीर श्रीनगर (अब आकाशवाणी केंद्र श्रीनगर) में ब्रॉडकास्टर के रूप में कार्य किया। लल्रूख योजना के अंतर्गत इन्होंने कई पुस्तकों का संपादन किया जब वह जम्मू कश्मीर के सूचना विभाग के प्रकाशन प्रभाग में कार्यरत थे। यह 1956 की बात है। इन्होंने न केवल साहित्यकार, तत्वज्ञानी रवींद्रनाथ टैगोर के नाटकों का अनुवाद किया वरन् स्वयं भी नाटक लिखे।

1947 से लेकर 1956 तक नूर मुहम्मद द्वारा रचित नाटक तत्कालीन रेडियो कश्मीर श्रीनगर के केंद्र से प्रसारित भी होते रहे। यह इनके लेखन का प्रभाव ही था कि जब कश्मीर में सूदखोरी पर रचित इनके नाटक का जगह–जगह मंचन होता था, और उसमें जब यह दर्शाया जा रहा था कि किस प्रकार से सूदखोर आम जनता का शोषण कर रहे हैं। इसी नाटक के एक मंचित दृश्य में पात्रों द्वारा राशन डिपो को तितर–बितर कर पूंजीपतियों के ललकारने के दृश्य का दर्शकों पर इतना प्रभाव पड़ा कि जनता ने वास्तविकता में नाटक के दृश्य को जीवंत कर पूंजीपतियों को ललकारा। नाटक के दृश्यों में बढ़ते जन आक्रोश को देखते हुए सरकार को नूर मुहम्मद द्वारा रचित नाटकों पर प्रतिबंध लगाना पड़ा।

अनुवाद के क्षेत्र में भी इनका अतुलनीय कार्य रहा, जिसका उल्लेख पुस्तक में किया गया। नूर मुहम्मद ने प्रेमचंद के बहुचर्चित उपन्यास गोदान का कश्मीरी में अनुवाद किया तथा मास्टर जिंद कौल की भक्तिपरक कविताओं, प्रेमनाथ परदेसी की कहानियों को संपादित किया। नूर मुहम्मद छह मार्च 2006 को श्रीनगर, कश्मीर में चल बसे।

नूर मुहम्मद की कविताओं का रूप सौदंर्य यहाँ द्रष्टव्य है –

म्य ॲश्क आराम त्रावुन छुम, जंगुग मॉदनि
बावुन छुम पनुन दुश्मन मिटावुन छुम नोव कश्मीर
बनावुन छुम

(मुझे प्रेम का आराम त्यागना है, जंग का मैदान व्यक्त करना है

अपने दुश्मन को मिटाना है, नया कश्मीर बनाना है)

करन दुश्मन ज़लील–ओ–ख़्वार, करान पामाल
जॉगीरदार

ज़हर म्वतुन सु चावुन छुम, नोव कश्मीर
बनावुन छुम

(करूँगा दुश्मन को रूसवा व अपमानित, करूँगा जागीरदार को पददलित

विष मौत का उसको पिलाना है, नया कश्मीर बनाना है)

वनान छुय हाल–ए–दिल रोशन
वनान बुलबुल सुरख पोशन
यि गुलशन पनुन छाबुन छुम
नोव कश्मीर बनावुन छुम

(कह रहा है दिल की बात 'रोशन'
कह रहा है बुलबुल लाल पुष्पों को
यह गुलशन अपना वरण करना है
नया कश्मीर बनाना है।)

उक्त नज़्म रचनाकार द्वारा जनवरी 1948 में लिखी गई है। यह वह कालखंड था जब भारत के अभिन्न अंग जम्मू कश्मीर पर पाकिस्तान ने सशस्त्र सैनिक आक्रमण किया था। ऐसे असुरक्षा एवं भय के वातावरण में कवि की ललकार घाटी में गूँज उठी थी। एक अन्य कविता 'कौमी तराना' में कवि ने अपनी जन्मभूमि का यशोगान किया है।

'बाज़ार–ए–शाम' तथा 'खून खंजर' कविता संग्रह सैय्यद अब्बास जौहर द्वारा रचित है, जिनका केंद्रीय भाव मरसिया काव्य पर आधारित है। यहाँ पर सभी कविता संग्रहों का ब्यौरा देना संभव नहीं है, इसी कारण संक्षेप में उनका उल्लेख किया गया है। यहाँ केवल 'गुलिक्यूठ' संग्रह के कुछ कवितांश उदाहरण स्वरूप दिए जा रहे हैं–

अछरस माने युस रॅछ़रावी
वछि मंज़लिस मंज़ थावी जाय

सुय पज़रस मंज़ पोज़ पॅज़रावी
च्यत् करनावी ल्वलुमतु लाय

–अछरूक माने, 57

(अक्षर का अर्थ रखे सुरक्षित जो नर
वक्ष हिंडोले में सादर बिठला कर
मर्मज्ञ बन सत्य संविद कहलाए
उल्लसित चिन्त से झूला झुलवाए)–

–अक्षर का अर्थ, 57

ग्वड़ुकर श्रोचि़ श्रानि पूर गरनावय
बालयारस शेर शेरि प्यठ जाय
पत सोज़ सालुनामु बावनायि बाबय
अद यियि लाल साल बॅर्यतोस माय

– बालयार साल अनुन, 35

(पहले घर का कर लो स्वच्छ लेप से शोधन
और सजा दो शीर्ष पर तुम प्रिय यार का आसन
फिर भेजो श्रद्धा स्नेह से अति शुभ भाव–निमंत्रण
भोज पर आएगा वह मीत करो सप्रतीत समर्पण

– मीत को भाव निमंत्रण, 35)

'गुलिम्यूठ' अर्थात् उपहार नामक कविता संग्रह 216 वाखों (चतुष्पदी रचना) पर आधारित है। मोहन कृष्ण कौल द्वारा रचित यह संग्रह दोनों लिपियों (नस्तालीख और देवनागरी) में है। रचनाकार ने अथक परिश्रम करके चार पंक्तियों वाले पद का हिंदी में भी अनुवाद किया है। पुस्तक की पृष्ठ संख्या 193 है जिसमें नस्तालीख में 66 पृष्ठ हैं। पुस्तक का प्रकाशन लेखक ने स्वयं किया है। कवि ने संग्रह की भूमिका हिंदी भाषा में भी लिखी है। इस पुस्तक का स्वरूप निस्संदेह प्रेरणादायक है, जो भाषा की जटिलता को दूर करता है। पाठक और कवि के मध्य सहज सरल ढंग से संप्रेषण हो पा रहा है। इस पुस्तक को देवनागरी जानने वाले कश्मीरी भाषी भी पढ़ सकते हैं और हिंदी भाषी भी।

'गुलिम्यूठ' वैसे भी कश्मीर की सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ा हुआ ऐसा शब्द है जिसका हिंदू घरानों में मांगलिक पर्वों में प्रयोग किया जाता रहा है। प्रायः वैवाहिक व अन्य समारोहों में जो उपहार स्वरूप धनराशि दिए जाने की परंपरा रही है उसे ही 'गुलिम्यूठ' कहा जाता है। यह नामकरण इस संग्रह के लए उपयुक्त है।

कवि ने जो शब्द चित्र इस संग्रह में खींचे हैं, जीवन दर्शन के जो भाव अपने जीवन के अनुभवों द्वारा अभिव्यक्त किए हैं, चार पंक्तियों वाली लघु कविता को पढ़ने के बाद उस गूढ़ रहस्य को समझा जा सकता है। कवि ने शून्य, प्रेम, मन, अक्षर, क्रोध, अंतर्मन जैसे बिंदुओं पर काव्यमय शैली द्वारा अपने भाव व्यक्त किए हैं, कहीं योग की कुंडलनियों पर ध्यान केंद्रित किया गया है तो कहीं क्रोध के दुष्परिणामों पर।

उक्त संग्रह का अध्ययन करने पर यही भाव मन में घुमड़ते हैं कि रचनाकार को जीवन का तिक्त अनुभव हुआ है, संग्रह के 'समर्पण' पृष्ठ पर कवि के भाव पढ़कर ऐसा लगता है कि उसने जीवन में बहुत खोया है जिसका सारांश कविता बन उद्घाटित हुआ है। कुछ कवितांश यहाँ पर उद्धृत किए जा रहे हैं –

द्वन नावर्न मंज़ मा थाव खोर
द्वन हुंद न्याय छुय त्रावान बोर
अक्यसुय सन रोज़ अक्यसुय लोर
अकिकुय ज़्वय अद् नेरि सोर

–157

(राज़ को रखो हृदय के कोष्ठ कि आगार में
एक सुसज्जित मन अटारी की भट्ठी के गार में
फूल सुंदर भेंट कर लो चंद्र के दरबार में
प्रीत को कर लो उल्लसित नामधारी यार में

–157)

कहानी संग्रह

इस वर्ष उपलब्ध जानकारी के अनुसार चार कहानी संग्रह प्रकाश में आए हैं जो इस प्रकार हैं– यूसुफ जहांगीर का 'अफसानु रूदुग बावनय' (अफसाना कह न सका), जाहिर बानिहाली का 'रूह छुनु मरान' (आत्मा का हनन नहीं होता), शाइस्ता खान का ब्रांदु बरस प्येठ (आगंन के किवाड़ पर) तथा डॉ. गौरी शंकर रैणा का 'यू टर्न'। ये अफसाने जीवन की पीड़ा, गहरे अनुभवों,

सामाजिक सरोकारों, जीवन की वास्तविकता को अभिव्यक्ति देते हैं। इसके अतिरिक्त बाल साहित्य पर केंद्रित इज़हार मुबशिर की कहानियां 'शुरि तु चुरिटयुश' (बाल तथा बालपन) उल्लेखनीय हैं। इस संग्रह में बाल मन को रंजन देने वाली तथा प्रेरणास्पद कहानियाँ संकलित हैं। बहुत समय के बाद बाल साहित्य को संपुष्ट किया जा रहा है।

डॉ. गौरी शंकर रैणा के कथा संग्रह 'यू टर्न' में नौ कहानियां संकलित हैं, 'ग्वनह' (पाप), यू टॅरन्, सवाब (पुण्य), बोर्डिंग पास, त्रुवाह नं सीट (तेरह नं. सीट) 'म्यॉन्य किन्य' (मेरे कारण), 'म्वहलथ' (ढील) तथा हायवाय।

'यूटर्न' संग्रह के प्राक्कथन में डॉ. गौरी शंकर रैणा अपने लेखन की शुरूआत के बारे में लिखते हैं कि मैंने पहला अफसाना 1973 में तब लिखा जब मैं श्रीनगर स्थित अमर सिह कॉलेज में पढ़ता था। प्रतिष्ठित कश्मीरी भाषा के कथाकार हरि कृष्ण कौल उनके अध्यापक थे। उन्हीं की प्रेरणा से डा. रैणा ने पहली बार महाविद्यालय की पत्रिका के लिए उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की एक रचना का अनुवाद कश्मीरी भाषा में कराया। उसके बाद उन्होंने एक अफसाना हिंदी में लिखा। डॉ. रैणा आकाशवाणी केंद्र श्रीनगर से भी जुड़े रहे जहाँ वे युवा कार्यक्रमों में भाग लेते रहे और अपने अफसानों का भी वाचन करते रहे।

डॉ. रैणा कश्मीरी के हिंदी भाषा में भी सृजनरत हैं। उन्होंने कश्मीरी भाषा के ख्यातनाम कवियों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया है।

नाटक संग्रह

कश्मीरी भाषा साहित्य में नाटकों का अभाव ही रहा है, पर कुछ समय से रचनाकारों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है। इस वर्ष हमें चार नाटकों के प्रकाशन की जानकारी मिली है जिनके नाम इस प्रकार हैं – राशिद कानिसपुरी का 'येलि आश सोरेनय' (जब आश ढल जाएगी), डॉ. भूषण बेताब का 'मायि मंज छाय' (प्रेम में परछाई) तथा राकेश रोशन भट्ट का 'च्वपॉर्य यियि गाश' त 'गाड बत' (चहूं ओर उजाला होगा तथा मछली भात) 'च्वपॉर्य यियि गाश' त 'गाड बत' कश्मीरी भाषा में रचित दो नाटक हैं, जिनके रचनाकार हैं राकेश रोशन भट्ट। नस्तालीख और देवनागरी लिपि में प्रकाशित ये दोनों नाटक मंचीय हैं। पुस्तक 218 पृष्ठों में प्रकाशित है। नाटक का प्राक्कथन जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के पूर्व सचिव बलवंत ठाकुर, अभिनेता निर्देशक नाटककार ललित पारिभू ने लिखा है। थियेटर अभिनेता एम. के. रैणा, मुश्ताक काक मंजूर अहमद मीर तथा समीक्षक रवींद्र कौल, थियेटर कार्यकर्ता डॉ. सुधीर महाजन ने भी अपनी–अपनी प्रतिक्रियाएँ दी हैं।

कश्मीर से विपरीत परिस्थितियों में निर्वासित कश्मीरी पंडितों की व्यथा कथा को 'च्वपॉर्य यियि गाश' नाटक में उकेरा गया है। इस नाटक के अनुसार कश्मीर से विस्थापित हुए 26 वर्ष हो गए हैं। यह नाटक तीन पीढ़ियों के वैचारिक परिवर्तन की कहानी है। नाटक में कुल छह दृश्य है। विस्थापन की त्रासदी से ही नाटक का प्रारंभ होता है। नाटक को यमराज के चरित्र के माध्यम से हास्य व्यंग्य की तरफ मोड़ा गया है। नाटक के प्रारंभ में ही पात्रों का परिचय दिया गया है साथ ही पात्रों का पाठकों के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए पात्रों के मध्य संबंधों को भी रेखांकित किया गया है। नाटक का अंत आशावादी है। यम जो एक पात्र को लेने आता है, उसे साधु यह समझाता है कि उसे एक पात्र वीर जी को लेने के लिए नहीं भेजा गया है वरन् कश्मीर से उजड़े विस्थापितों के दुख दर्द को कम करने के लिए भेजा गया है।

नाटक के अंतिम 'दृश्य–छह' का एक मार्मिक संवाद द्रष्टव्य है, जो यम और साधु के मध्य हो रहा है–

''यम : बु आयोस ॲकिस नफरस ज़ुव कडनि तु पानस सत्य निनि ..... मगर

साधु : मगर क्या राज़ु .... मगर क्या

यम : मगर तिहुंद गम, तकलीफ तु परेशॉनी वुछिथ गोस बुति गमगीन .... यूता तकलीफ छुन मे गोभुत कॉसि ति जुव कडनस मंज यूत में अज़ गव यि वुछिथ।

साधु : हे राज च ति प्योख हंगु त मंगु ब्रमस – चे तोहय ना फिकरि ... महा देवुन्य लीला ... तैम्य सूजुख न च यिहुंद जुव कडनु खातुर

यम : अदुतेलि कमि खॉतुर

साधु : (तॅम्य सूजुख च यिहुद्य गम, तकलीफ तु परेशाँनयि कॅडिथ पानय् सुत्य निनु खॉतुर .... अलख निरंजन....''

अर्थात् यम : मैं आया था एक व्यक्ति के प्राण हरने और अपने साथ ले जाने के लिए .... मगर

साधु : मगर क्या राजन..... मगर क्या

यम : पर उनका गम, कष्ट और परेशानी देखकर मैं भी दुखी हो गया .... इतना कष्ट मुझे किसी के भी प्राण हरने में नहीं हुआ है, जितना आज यह देखकर हुआ है।

साधु : हे राजन, तुम भी व्यर्थ में ही भ्रम में पड़े हो... तुम्हें समझ नहीं आया .... महादेव की लीला ..... उन्होंने तुम्हें उनके प्राण हरने के लिए नहीं भेजा

यम : तो फिर किस लिए

साधु : उन्होंने तुम्हें भेजा है इसके गम, तकलीफ और परेशानियों को हरने के लिए, अपने साथ ले जाने के लिए ..... अलख निरंजन)

नाटक का समापन आशावादी है जब साधु एक प्रेत आत्मा को मारता है और चहुँ ओर अंधकार के हटने की संभावना व्यक्त करते हुए शीघ्र ही चारों ओर उजाला होने की बात करता है। इसी प्रसंग पर नाटक का नामकरण भी हुआ है।

रचनाकार के दूसरे नाटक का नाम 'गाडु बतु' है जिसका अर्थ है मछली भात। नाटककार ने कश्मीरी पंडितों के वार्षिक पारंपरिक त्योहार 'गाडु बतु' की कथा को तन्मयता के साथ व्यक्त किया है। इस नाटक के तीन दृश्य हैं। कथा सात चरित्रों पर आधारित है और गृह देवता के लिए ध्वनि का प्रयोग किया गया है। यह त्योहार घर के देवता को समर्पित है, जो घर की, परिवार की रक्षा करता है। प्रत्येक वर्ष शीतकाल में प्रत्येक कश्मीरी पंडित परिवार द्वारा इस परंपरा को निभाकर रात्रि को रसोई घर में एक भोजन से भरी हुई थाली के साथ में जल से भरा लोटा तथा छोटी–छोटी, बारीक तीलियां रखी जाती थीं। जाने से पहले गृहदेवता को 'मछली भात' अर्पित करते हुए पूजा अर्चना भी की जाती थी। सुबह–सवेरे जब उस भरी थाली को देखा जाता था तो ऐसे भी घर परिवारों में यह चर्चा चलती रहती थी कि गृह देवता ने किसका भोज चखा है। नाटककार अभिनेता श्री ललित पारिभू इस पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं – "ये नाटक भी एक प्रकार से सोयी हुई आँखों को जगाने जैसा है और एक शुभ संदेश है पंडित बिरादरी के लिए कि घर की एकता और आपसी प्रेम बनाए रखना ही 'गाडु बतु' त्योहार का असली मकसद है।"

'गाडु बतु' नाटक में हिंदी भाषा का भी कहीं कहीं प्रयोग किया गया है।

अनुवाद कार्य

इस क्षेत्र में हमें दो पुस्तकें प्राप्त हुई हैं एक डॉ. अग्निशेखर द्वारा रचित पुस्तक 'हम जलावतन' तथा दूसरी बेपछ पज़र (अविश्वसनीय सच)। कश्मीरी भाषा साहित्य के प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री प्यारे हताश ने नूरशाह की उर्दू कहानियों का कश्मीरी भाषा में 'बेपछ पजर' शीर्षक से अनुवाद किया है।

डॉ. अग्निशेखर हिंदी के प्रतिष्ठित कवि हैं, जिन्होंने 49 विस्थापित कश्मीरी भाषा के कवियों की कविताओं का अनुवाद हिंदी में किया है। इन्हीं कविताओं को 'हम जलावतन' पुस्तक में संकलित किया गया है।

संग्रह की कविताओं की विवेचना करते हुए कृपा शंकर चौबे लिखते हैं 'हम जलावतन' संकलन में शामिल निर्वासन चेतना की कश्मीरी कविताओं को पढ़ते हुए मन में यह टीस उभरती है कि साहित्य में जिस तरह स्त्री विमर्श है दलित विमर्श है, आदिवासी विमर्श है, वृद्धावस्था विमर्श है, उसी तरह निर्वासन विमर्श क्यों नहीं, जबकि निर्वासन विमर्श की बुनियाद रखने वाली विपुल कविताएँ और गद्य साहित्य उपलब्ध है।

डॉ. अग्निशेखर पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि अपनी भूमि से बिछोह, जनसंहार की दारुण स्मृतियों, घृणा की राजनीति, कैंपों में पशुओं जैसी

जिंदगी, अस्तित्व और अस्मिता के प्रश्न, अनदेखी, एक जीती जागती संस्कृति के विलोपन की आशंका जैसी विचलनकारी चिंता इस समकालीन कश्मीरी कवियों का वर्ण्य–विषय है।

'हम जलावतन' संग्रह में जिन कवियों की कविताएँ संकलित हैं उनमें उल्लेखनीय हैं– काशीनाथ बागदान, वासुदेव रेह, शंमुनाथ भट्ट हलीम, राधेनाथ मसरत, जगन्नाथ सागर, मोती लाल नाज़, चमन लाल चमन, मखन लाल बेकस, पृथ्वीनाथ कौल सायिल/संतोश शाह नादान, मोतीलाल मसरूफ, ब्रजनाथ बेताब, शांतिवीर कौल, रतन लाल जौदर, कुमार अशोक सर्राफ 'घायल', कल्हण कौल, सतीश विमल, सुनीता रैणा पंडित आदि। प्रलेख प्रकाशन मुंबई द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में 176 पृष्ठ हैं। पुस्तक का मूल्य 298 है तथा यह पेपर बैक में भी उपलब्ध है।

एक अनुवाद की बानगी देखिए, बालकृष्ण संन्यासी एक कविता में कह उठते हैं–

किसने जल स्रोतों को कर दिया विषाक्त
किसने खारा कर दिया
अमृत भरा कलश
किसकी गोलियों से
छलनी हो गया अमृत का घड़ा

'बेपछ पज़र' कश्मीर के नामवर शायर नूरशाह की उर्दू कहानियों का कश्मीरी भाषा में अनुवाद किया गया है। अनुवादक श्री प्यारे हताश ने संग्रह की 22 कहानियों का श्रमसाध्य कार्य किया है। अनुवाद कर्म सहज, सरल नहीं है, जिस भी भाषा से जिस भी भाषा में किया गया है, पर इस दुष्कर कार्य में भाषाएँ आपस में जुड़ती हैं, उनके मध्य निकट का संबंध स्थापित होता है। पुस्तक का अनुक्रम इस प्रकार से है। पहले अनुवादक ने 'नूरशाह' म्यानि नज़रि' (नूरशाह मेरी नज़र में) शीर्षक से प्रारंभ में अपनी बात कही है। 22 कहानियों के शीर्षकों में ये कुछ उल्ल्खनीय हैं– 'छांडव' (खोजेंगे), 'छायि हंज लाश' (छाया की लाश), 'गर बेगर' (घर–बेघर), 'गाश मंज अनिगट' (प्रकाश में अंधकार), 'सुगंदी हुंद सफर' (सुगंधी का सफर) 'ज़मीन मुचरावि ज़्यव पनन्य' (धरती अपना मुँह खोलेगी) आदि।

कहानी संग्रह के शीर्षक पर भी एक कहानी संकलित है– 'बेपछ पज़र' (अविश्वसनीय सच) श्री प्यारे हताश कश्मीरी तथा हिंदी भाषा में अनवरत रूप से अपना योगदान दे रहे हैं। 'बेपछ पजर' का उर्दू में शीर्षक है 'बेसमर सच'। 142 पृष्ठों पर आधारित इस पुस्तक में विस्थापन पर भी 'हीलिंग टच' शीर्षक से एक कहानी संकलित है। नूरशाह ने इस पुस्तक को अपने तीन दिवंगत मित्रों के नाम समर्पित किया है जिनमें उल्लेखनीय हैं– मदन मोहन शर्मा (डोगरी), अलि मुहम्मद लोन तथा पुष्कर नाथ शर्मा। गुलशन पब्लिशर्स श्रीनगर द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य 400 रु. है।

उपन्यास

एक अंतराल के बाद कश्मीरी भाषा साहित्य को उपन्यासों से समृद्ध कर रहे हैं डॉ. सोहन लाल कौल। गत दिनों उनका 'तलाश रोज़ि जॉरी' (तलाश जारी रहेगी) शीर्षक से उपन्यास प्रकाशित हुआ है।

आलोचनात्मक पुस्तकें

1. जालिडब (झालारदार बारादरी) फारूक फय्याज़

2. अहसनुन आसुन (अहसन का होना) – मुहम्मद अहसन अहसन

3. ध्रुव चरेथ (ध्रुव चरित्र) नारायण जू खार (संपादक – जी.एन. आतिश)

4. कॅ शिरिस अदबस मंज तंज़ त मिज़ाह (कश्मीरी साहित्य में व्यंग्य और हास्य)

5. यिय मे वनेयाव (जो मैंने कहा था) – अज़ीज हाजिनी

6. शार त शारुत (काव्य और शैली) अब्दुल खालिक शम्स

7. कॉशिरि ज़बॉनि – हिंद्य लिसॉनी इज़हार (कश्मीरी भाषा संबंधी लिसॉनी इज़हार) अब्दुल खालिक शम्स

8. नुक्त–ए–निगाह – अ. खालिक शम्स।

वर्षभर में प्रत्येक भाषा में कहीं कम और कहीं प्रचुर मात्रा में साहित्य प्रकाशित होता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस सद्य : प्रकाशित साहित्य में जहाँ साहित्य समृद्ध हो रहा है वहीं कहीं ऐसा भी साहित्य प्रकाश में आ रहा है, जो आलोचकों

या फिर प्रकाशकों की पहुँच से भी दूर होता है। ऐसे छिपे हुए साहित्य को भी खंगालने तथा साथ ही नए उभरे हुए रचनाकारों को राह दिखाने की आवश्यकता है। एक कश्मीरी भाषा के प्रतिष्ठित कवि अशोक सर्राफ घायल का कहना है कि रचनाकार भी कई समस्याओं से जूझ रहा है यह आर्थिक भी है और कहीं–कहीं पर प्रकाशक तक पहुँचना भी कठिन–सा हो जाता है। पुस्तकों को प्रकाशित करने के बाद पाठकों का भी अभाव दिख रहा हैं। आज का पाठक सोशल मीडिया की ओर मुड़ गया है। पाठक की प्राथमिकता समय के अनुसार बदल गई है। फिर भी रचनाकार आशावान है।

कश्मीरी भाषा इतनी समृद्ध है कि प्रत्येक भाव के लिए शब्द उपलब्ध हैं। केवल कश्मीरी भाषा की आदि कवयित्री ललद्यद के वाखों में झाँकने की आवश्यकता है। यह प्रसंग इसलिए भी आया कि इसी आलेख में गुलाम नबी हलीम द्वारा रचित एक काव्य संग्रह 'रुद हारंड' है। यह शब्द अपने में इतना जटिल और नया है कि इसका अर्थ खोजना कठिन–सा लग रहा था। जब मैंने कश्मीरी और हिंदी रचनाकार सतीश विमल से इस बारे में बात की तो उन्होंने कहा कि पहले इंद्रधनुष के लिए कश्मीरी भाषा में 'सोंजल' शब्द को सृजित किया गया था, जो 'इंद्रधनुष' शब्द के अर्थ को पूर्णतया चरितार्थ नहीं करता। बाद में इस पर हमने खोज प्रारंभ की और इस शब्द का समरूप ललद्यद के वाखों में पाया। इस प्रकार से शब्द साधना की खोज संपन्न हुई।

आज कश्मीरी भाषा को अपने मूल कलेवर में लाने की अनिवार्यता है। इस भाषा साहित्य से जो शब्द कहीं खो गए हैं या जिन्हें समय की प्रतिकूल परिस्थितियों ने भाषा से ही निकाल दिया, आज उस कलेवर को पाने के लिए भाषा छटपटा रही है। भाषा सार्थक शब्दों से ही समृद्ध होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रोशन, नूर मुहम्मद– 'सोंतुच शेछ', संकलन एवं संपादन– जी आर हसरत गड्डा, प्रकाशन ताज कंपनी दिल्ली, मूल्य : 500 रु., संस्करण 2021

2. कौल, मोहन कृष्ण – गुलिम्यूठ, प्रकाशन भारे कैंप चठा, जम्मू, मूल्य : 300 रु., संस्करण 2021

3. विमल, सतीश, वारयाह चांगि छि जालिन्य, संस्करण – 2021

4. रैणा, गौरी शंकर, यू–टर्न (कथा संग्रह), प्रकाशन : स्वयं लेखक द्वारा, प्रथम संस्करण : 2021, मूल्य : 300 रु.

5. हताश, प्यारे– 'बेपछ़ पज़र' (अनुवाद कार्य), प्रकाशक– गुलशन पब्लिशर्स, श्रीनगर, मूल्य : 400, प्रथम संस्करण– 2021

6. भट्ट, राकेश रोशन 'च़्वपॉट्य यियि गाश तु गाड़ु बुत' प्रकाशक : स्वयं लेखक द्वारा, मूल्य : 350 रु. प्रथम संरस्करण 2021

7. अग्निशेखर – 'हम जलावतन' प्रकाशक : प्रलेक प्रकाशन मुंबई, मूल्य : 298, प्रथम संस्करण– 2021

8. सोशल मीडिया के विभिन्न स्रोत

❑❑❑

6

कोंकणी साहित्य

चंद्रलेखा डिसौज़ा

कोंकणी साहित्य के लिए सन् 2021 का साल एक बहुत बड़ी उपलब्धि लेकर आया। इस साल सन् 2022 का 57वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार कोंकणी कथाकार दामोदर मावजो तथा 56वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार 2021 का है वह असमिया साहित्यकार नीलमणी फूकन को जाहिर किया गया है। असमिया साहित्यकार के अब तक तेरह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं तो दामोदर मावजो के पाँच उपन्यास और पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इस कथाकार ने अपने साहित्य द्वारा समाज को जगाने का कार्य किया है। इन्हें कोंकणी भाषा मंडल, साहित्य अकादमी के पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं। कोंकणी फिल्म 'अलीशा' के लिए इन्होंने पटकथा लेखन भी किया है। कोंकणी साहित्य को यह सम्मान दूसरी बार मिला है। पहली बार यह सम्मान रवींद्र केकेकार को वर्ष 2006 में दिया था। दामोदर मावजो अंग्रेजी अखबार नवहिंद टाइम्स में भी लेख लिखते रहे हैं। कोंकणी भाषा के लिए और साहित्य के लिए युवा लेखक युगांक नायक ने 09 दिसंबर को 'भांगरभूंय'– कोंकणी अखबार में दामोदर मावजो के बारे में लेख लिखते हुए उन्हें, 'प्रतिवाद, प्रतिशोध और प्रतिरोध' के अंतर्गत चिंतनशील लेखक कहा है। जिन्होंने अपनी भूमिका सामाजिक सरोकारों की चिंतनशील प्रक्रिया के अंतर्गत रखने की कोशिश की है। युगांक आगे अपने लेख में नरेंद्र दाभोलकर, कॉम्रेड, गोविंद पानसरे, कलबुर्गी, गौरी लंकेश तथा तमिल लेखक पेरुमल मुरुगन जैसे चिंतनशील समाज के पहरेदारों का उल्लेख करते हुए, दामोदर मावजो के लेखन को भी उसी कक्षा में रखने की बात कही है। अपनी भूमिका को स्पष्ट करते हुए वे लोगों की टीका जिनके बावजूद भी अपने मंतव्यों पर डटे रहने वाले बताया है। दामोदर मावजो के लेखन को समझने का प्रयास जो युवा युगांक नायक द्वारा हुआ है उसके लिए उनका अभिनंदन और कोंकणी साहित्य के ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए दामोदर मावजो को भी सलाम।

कोंकणी साहित्य 2021 में साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने वाले साहित्यकार इस प्रकार हैं–

1. 'रक्तचंदन' काव्य संग्रह के लिए कवि संजीव वेरेंकार को, अपने साहित्यिक योगदान के लिए यह पुरस्कार मिला है।

2. साहित्य अकादमी का युवा पुरस्कार पाने वाली श्रद्धा गरड, पिछले तीन सालों से दिव्यांग स्थिति में जी रही हैं। उससे पहले के पाँच साल श्रद्धा ने व्हीलचेयर पर बिताए हैं। चलना–फिरना बिलकुल बंद है। हाथ में पेन उठाना भी संभव नहीं, ऐसी अवस्था में भी, हिम्मत न हारने वाली इस युवा जान को सलाम। सिर्फ अपनी एक उंगली से कविता टाइप करने वाली श्रद्धा को,

सही मायनों में, अपनी जीत के लिए मिला यह पुरस्कार, निश्चित रूप से, उसके हौसले बुलंद करेगा। उन्हें, अपने काव्य संग्रह 'काव्य परमल' अर्थात् काव्य सुगंध के लिए ढेर सारी बधाइयाँ।

3. सुमेधा कामत देसाय को इस साल का बाल साहित्य पुरस्कार, उनके लघु उपन्यास 'सुमीची कोटांग्री' अर्थात् सुमी की कोठडी को प्राप्त हुआ है। पिछले 45 सालों से वे कोंकणी, मराठी भाषा में अपना लेखन कार्य कर रही हैं।

दिल्ली के मुख्यमंत्री ने दिल्ली में कोंकणी अकादमी स्थापित करने का निर्णय लिया है। कोंकणी भाषा के लिए काम करनेवाले दिल्ली में भी हैं। कोंकणी अकादमी के कारण कोंकणी भाषा का विकास ही होगा।

कोंकणी साहित्य 2021 के लेख को इस प्रकार बाँटा गया है–

I. कोंकणी काव्य
II. कोंकणी कहानी
III. कोंकणी रंगमंच (नाटक और तियात्र)
IV. उपन्यास
V. कोंकणी लोककला–लोकसाहित्य
VI. आत्मकथा / जीवनी
VII. अनुवाद, लिप्यंतरण
VIII. वैचारिक लेख
IX. कोंकणी सिनेमा
X. कोंकणी बाल साहित्य
XI. कोंकणी डिजिटल साहित्य
XII. कोंकणी व्याकरण
XIII. उल्हास प्रभुदेसाय

I कोंकणी काव्य 2021

कोंकणी काव्य जगत में निलबा अ.खांडेकार एक जाना माना नाम है। साहित्य अकादमी पुरस्कार पानेवाले इस कवि ने 'नोकोरयो' शीर्षक से इस वर्ष अपना काव्य संग्रह प्रकाशित करवाया। इसी शीर्षक से पृ.81 पर कविता भी लिखी है–

भावार्थ– हमारा वर्तमान, चलती घटनाएँ, राजकारण बहते रक्त की संवेदना, गोधरा की वास्तविकता, देश से भागनेवाले लुटेरे जिसके बारे में कवि ने अभी लिखा ही नहीं।

अनुवाद– *अपने जीव की भिक्षा माँगनेवाले*
असाहय कुतुबद्दिन अन्सारी का
नोटबंधी
जीएसटी के
आश्वासनों के फल पर
एक के ऊपर
एक
रचा गया
खेल नौकरियों का.....

सामान्य के नसीब में सिर्फ आश्वासन ही बचता है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में कुल मिलाकर 62 कविताएँ रची गई हैं।

प्रकाश पाडगांवकार एक और प्रसिद्ध कवि हैं। इस साल 'दाण्या येदी धर्तरी' अर्थात् दाने जितनी धरती काव्य संग्रह लेकर आए हैं। मनुष्य और समाज के प्रति जागरूकता रखनेवाले इस कवि ने इस बार सूक्ष्म संवेदनों को विस्तृत आशय से व्यक्त किया है। स्वतंत्रता सेनानी नागेश करमली जी के विचार से इस कवि की रचना यात्रा को लेकर अध्ययन परक प्रपत्र प्रस्तुतिकरण की आवश्यकता है। अदृश्य शक्ति के बारे में चिंतन करनेवाले ये कवि महर्षि अरविंद के उत्क्रांतिवाद के सिद्धांत में विश्वास करते हैं। इस प्रकार की कविताएँ भी प्रस्तुत काव्य संग्रह में पाई जाती हैं। इस काव्य संग्रह के साथ–साथ इस कवि का 'ब्रह्मांड योगी चिरंतनाचो' काव्य संग्रह हिंदी में अनूदित हुआ है।

संस्कृत काव्य में गद्य–पद्य मिश्रित काव्य प्रकार को चंपू काव्य माना गया है। इस साल कोंकणी काव्य में इस काव्य प्रकार को अपनाकर कवि सु.म.तडकोड ने 'कोंकणी चंपू काव्य–गायत्रीदेवी' की रचना की है। कोंकणी काव्य में इस प्रकार का यह प्रथम काव्य है। इस पुस्तक का आस्वादन करते हुए महाविद्यालय में पढ़ाने वाली लेक्चरर आशा मणगूतकार ने 05 सितंबर, 2021 के 'भांगरभूंय' में लिखा है। कोंकणी से हिंदी में भावार्थ ही लिख रही हूँ। उनके मत से "कोंकणी चंपू काव्य–गायत्री देवी में एक निर्दोष, अपौरुषेय जीवन की करुणरम्य गाथा है। चौदहवीं शताब्दी

की पृष्ठभूमि में यह रचना साकार होती है। उसे गोवा की धरती की, कदंब साम्राज्य की और तत्कालीन जीवन की परिधि प्राप्त हुई है। एक देवयोनी के व्यक्ति को मनुष्य कुल में जन्म लेना पड़ता है। उसके अच्छे गुण तो बहुत हैं फिर भी उसे समकालीन जीवन के तूफान और चक्रवात के सामने जूझना पड़ता है। बिना किसी अपराध के उसे दंड भुगतना पड़ता है। उसकी हत्या कर दी जाती है। मनुष्य के अहंकार के कारण उपजती ईर्ष्या और संघर्ष, लड़ाई, रक्तपात और षडयंत्र, बदला इन सबके कारण यह शोकांतिका अपना रूप धारण करती है।"

कोंकणी काव्य जगत में एच.मनोज अपना पहला काव्य संग्रह 'मनोभाव' लेकर आए हैं। प्रस्तुत काव्य संग्रह में कुल मिलाकर 56 कविताएँ हैं, इनमें प्रकृति, पर्यावरण, विज्ञान, मानवीय सरोकार और उसकी सकारात्मकता इनकी ताकत है।

कोंकणी साहित्य में, संजना पब्लिकेशंस नई पुस्तकों का प्रकाशन करता रहता है। 'करुणायन' काव्य का लोकार्पण करते हुए कवि तुकाराम शेट ने कहा कि 'करुणायन' काव्य कोरोना और करुणा की कहानी है। डॉ. हनुमंत चोपडेकार ने इसे "एक विषय का काव्य, पर विविध आशयों में व्यक्त काव्य कहा है।" डॉ. राजय पवार ने कहा, "करुण रस में अभिव्यक्त यह काव्य, इसमें महाकाव्य की शक्ति है।"

कोंकणी काव्य में अशोक भोंसलो एक जाना–माना नाम है। इस साल वे 'सुनीलवन' काव्य संग्रह के साथ अपना अस्तित्व दिखा रहे हैं। आज तक इन्होंने 'रातराणी' (नवलिका), 'खुटावणी' अर्थात् घेरा डालना (कहानी संग्रह), 'भीमा तुजो खांबो चुकलो' (एकांकी) अर्थात् भीम, 'तेरा खंभा चुक गया है।' 'सुरबन'(काव्य संग्रह), 'कुरू कुरू काना' (बाल कविता संग्रह), 'श्रीसत्यनारायण कथा' (पुराण) जैसी रचनाएँ कोंकणी साहित्य को प्रदान की हैं। इनके आनेवाले प्रकाशन–

– 'एक चली पाँच मवाली'–(नाटक)

– 'बेकार जांवय लाखा धनी' अर्थात् बेकार जमाई लाखों मालिक (नाटक)

– 'झांशीची राणी लक्ष्मीबाय'– अर्थात् झांसी की रानी लक्ष्मीबाई (ऐतिहासिक उपन्यास)

– 'मोगाचीं कवनां' अर्थात् प्रेम कविता।

'सुनीलवन' काव्य संग्रह में कवि की कुल मिलाकर 46 कविताएँ हैं। 'भांगरभूंय' कोंकणी अखबार में इस काव्य संग्रह पर 09 दिसंबर, 2021 को अभयकुमार वेलिंगकार ने काव्य आस्वादन करते हुए लेख लिखा है। इस कवि का पहला काव्य संग्रह 'सुरबन' नाम से 2000 में प्रकाशित हुआ था और दूसरा 'सुनीलवन' जो 2021 में प्रकाशित हुआ।

उदय भेंब्रे द्वारा रचित गीतों का संग्रह 'चान्नें' अर्थात् चाँदनी प्रकाशित किया गया है। इनके गीत कैसेट, सी.डी. पर तो हैं पर लिखित स्वरूप में इस का प्रकाशन अब किया गया।

II कोंकणी कहानी 2021

डॉ. जयंती नायक द्वारा रचित कोंकणी कहानी संग्रह 'तिची काणी' अर्थात् उसकी कहानी का लोकार्पण ऑनलाइन आशावादी प्रकाशन द्वारा किया गया। प्रस्तुत कहानी में दीर्घ कहानियों को रचा गया है। इसमें कुल मिलाकर तीन कहानियों को रखा गया है। लेखिका अपने विचारों को व्यक्त करते हुए लिखती हैं कि कभी संस्कृति के नाम से तो कभी पारिवारिक और सामाजिक नियमों की आड़ में उसका शोषण ही किया गया है। आज भी उसे इंद्रिय के रूप में ही देखा जाता है। स्त्री के दुख–कष्ट समाज के सामने रखने में इन्होंने सफलता पाई है।

'वावझड' अर्थात् बौछार ले.अरुण सालकार का लिखा हुआ दूसरा कहानी संग्रह है। अपने जीवन की यादों को इन्होंने कहानी रूप में रखने का प्रयास किया है। कुल मिलाकर 35 कहानियों को बयाँ किया गया है। कहीं पुराने खेलों का जिक्र तो कहीं गोरख वचन तो कहीं भाषा के कारण बनती परिस्थितियाँ, उनके प्रसंग लेखक ने सफलता से चित्रित किए हैं।

'बेंझल आनी बालकृष्ण' अर्थात् बेंझल और बालकृष्ण– कहानी संग्रह मूल कन्नड भाषा में महेश आर नायक ने लिखा है जिसे वेंकटेंश नायक

ने कोंकणी भाषा में अनूदित किया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में लघु कहानियाँ हैं। गोवा में लिखे गए कहानी संग्रहों में लघु कहानी का यह स्वरूप यदा कदा द्रष्टव्य होता है। विषय और निरूपण तो अलग है ही पर मेंगलूर की कोंकणी शैली का भी यह एक अच्छा उदाहरण ही है।

'मँकी कॅप', 'सेलफी की कहानी', 'एक्सक्लूसीव डॉलर' जैसी कहानियाँ वाकई अच्छी बन पड़ी हैं।

वर्ष 2021 में कोविड–19 और लॉकडाउन की वजह से जो 2020 में प्रकाशित होनेवाली थीं वैसी बहुत सारी पुस्तकें फरवरी 2021 तक प्रकाशित न हो पाईं और जो प्रकाशित हो पाईं, उसकी जानकारी भी लंबे समय तक मिल नहीं पाई। उनमें से एक कहानी संग्रह 'मासां' अर्थात् लाक्षणिक अर्थ में आत्मचिंतन कह सकते हैं। और कहानियों को पढ़ने के बाद लगता है कि कहानीकार मनुष्य की जो शारीरिक लालसा है, भोगने की चाह है उससे ऊपर उठकर सोचने की सलाह देते नज़र आते हैं। कोंकणी मासिक 'बिंब' में कवयित्री ग्वादालूप डायस ने और 'भांगरभूंय'– कोंकणी अखबार में सोनाली फड्टे चोडणकार ने भी प्रस्तुत पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। 'बिंब' मासिक (फरवरी 2021) में ग्वादालूप जी ने बड़ी गहराई से इस कहानी संग्रह पर अपना चिंतन रखा है। उनके मत से इस कहानी संग्रह में कुल तेरह कहानियाँ हैं और उन सब में आशय, शैली की विविधता पाई जाती है। सृजनात्मकता की दृष्टि से भी सोचा जाए तो कहानीकार एंटनी बारकूर नई ऊँचाईयों को छूते नज़र आते हैं।

सोनाली जी भी (भांगरभूंय, 24 जनवरी, 2021) इस कहानी संग्रह को आधुनिकता और मनुष्यता के बारे में चिंतनशील बताती हैं। शब्दों को भी नए रूप में चित्रित किया गया है।

मॉनिका द'सा मार्था इनके द्वारा लिखित कहानी संग्रह को 'नवी दिशा' अर्थात् नई दिशा शीर्षक दिया गया है। लेखिका इन कहानियों में सामाजिक बदलावों की नई दिशा का संदेश देती नज़र आती हैं। हमारा बदलता जीवन, दीनार, रियाझ, डॉलर कमाने के सपनों के कारण विदेशों में रहते हुए हम जीवन के बदलावों का अनुभव करते हैं, ये बदलाव सामाजिक, नैतिक, मूल्यों के टकराव से उत्पन्न होते हैं। इसी टकराहट से नया चिंतन सामने आता है। जिसे अपनाना ज़रूरी हो जाता है।

कोंकणी की रोमी लिपी में 'शिम आनी मेर' अर्थात् सीमा और घेरा नाम से कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ है। जिसमें अपने समाज के साथ–साथ व्यक्ति के घेरे का भी लेखा–जोखा लेने का काम कहानीकार करते नज़र आते हैं। मनुष्य के जीवन की सरहद, उसकी सीमा पर चिंतन करते हुए कहानीकार अपना मंतव्य देते हुए सामाजिक सरोकारों को भी चित्रित करते नज़र आते हैं।

'वर्सल' अर्थात् सालाना। इस कहानी संग्रह में ले. प्रकाश पर्येंकार ने अपने गाँव के आस–पास जो समाज रचा–बसा है, उसके जीवन की समस्याओं को रेखांकित करते हुए, कहानीकार अपना सामाजिक दायित्व निभाते हुए, उनकी समस्याओं को आज के संदर्भ में विश्लेषित करते नज़र आते हैं। कड़ी मेहनत के बाद भी इन लोगों के जीवन में सुख के क्षण बहुत ही कम होते हैं। हर साल जिस सामाजिक या धार्मिक विधि को किया जाता है। इस विधि को घर का पुरुष ही कर सकता है। प्रस्तुत कहानी संग्रह ग्रामीण समस्याओं को उजागर करता है। यह समाज जिस संक्रमणशील अवस्था से गुज़र रहा है.....वहाँ सामाजिक मूल्य संक्रमण भी उतना ही महत्वपूर्ण बनता है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की, एक कहानी का शीर्षक है 'वर्सल' अर्थात् हर साल होली का त्योहार आता है' उस समय की एक विधि में घर–घर जाकर ढोलक बजानी होती है। हर घर का व्यक्ति उस ढोलक बजानेवाले को कुछ रुपए पैसे देता है, तो कोई नारियल या फिर चावल देता है। एक तरह से वह माँगना ही हुआ। हर साल हरिजन के एक घर से, एक लड़का यह ढोलक बजाकर अपनी विधि पूरी करता है। पर वर्सल कहानी का लड़का मधु, अपनी माँ से कहता है कि वह घर–घर में ढोल बजाने नहीं जाएगा, पर

मेहनत मजदूरी करके रुपए कमाएगा। घर–घर जाकर ढोलक बजाना उसे मंजूर नहीं। समाज में उच्च वर्ग के लोग उन्हें वैसे तो दुत्कारते हैं, तो फिर उनके घर ढोलक बजाने क्यों जाना? मानवीय रूप में मान–सम्मान पाने की चाह लेकर इस कहानी में लेखक उनके प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं।

स्व.नॅवील मास्कारेन्हस द्वारा लिखित 'शिरपुटां' अर्थात् सूखी लकड़ियाँ कहानी संग्रह को प्रकाशित किया गया। नॅवील जब जिंदा थे तब यह प्रकाशन होना चाहिए था, पर ईश्वर ने शायद कुछ और सोचा था। नॅवील का देहांत हो गया। इसके बाद परिवारवालों ने मिलकर इस कहानी संग्रह का लोकार्पण करवाया। प्रस्तुत पुस्तक कोंकणी की रोमी लिपि में लिखी गई है। इसे कोंकणी की देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण करने की प्रक्रिया भी चल रही है। सामाजिक संदर्भों में इन कहानियों को देखते हैं तब इनका मूल्य समझने में तथा इनके दूरगामी परिणाम इन्हीं कहानियों से दिखाई देते हैं। लेखक सिर्फ समस्या ही नहीं अपितु उनका निराकरण देने में भी सफल हुए हैं।

कोंकणी कहानी के क्षेत्र में इस साल एक कहानीकार ऐसे हैं जो गोवा से दूर रहकर भी कोंकणी साहित्य में योगदान देते रहते हैं। उनका नाम पद्मनाभ नायक है। उनके कहानी संग्रह का नाम 'चैत्रपुनव' है। प्रस्तुत कहानीकार का आज तक 'मधुमालती' कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। उन्होंने नाटिकाएँ भी लिखी हैं। मूलतः यह रचनाकार उत्तर कन्नड जिले के भटकल गाँव के रहनेवाले हैं। व्यवसाय हेतु मुंबई में रहते हैं। उनकी भाषा शैली उत्तर कन्नड की कोंकणी शैली है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में उनकी इस शैली का साक्षात्कार कहानी के माध्यम से हो ही जाता है। उनकी कहानी में आशय की विविधता देखी जा सकती है।

III कोंकणी रंगमंच 2021

मिलिंद म्हाडगूत 'तूंच म्हजो राजा' अर्थात् तूं ही मेरा राजा नाटक लेकर आए हैं। लेखक हमेशा से अपने साहित्य द्वारा समाज में सुधार लाने की कोशिश में रहते हैं। लेखक का कहना है कि उन्होंने कभी नाटकों में काम नहीं किया पर वे नाटक के चाहनेवाले हैं। समाज को जाग्रत करने के लिए नाटक एक सशक्त माध्यम होने के कारण प्रस्तुत नाटक में भी समाज के सामने आईना दिखाने का ही संदेश दिया गया है।

महेश चंद्रकांत नायक रचित नाटक निराले तुम, अलग मैं अर्थात् 'आगळें तूं, वेगळें हांव' यह नाटक नाटककार की 27वीं कृति है। खास स्त्रियों के लिए इस नाटक की रचना की गई है। नाटककार महेश जी का कहना है कि नाटक में भूत है पर यह नाटक भूतों का नहीं है। रहस्य है पर नाटक रहस्यमय नहीं है। पुनर्जन्म है पर नाटक पुनर्जन्म के बारे में नहीं है। नाटक को चाहनेवाले जब इस नाटक को पढ़ेंगे तभी समझ पाएँगे।

कोंकणी रंगमंच के क्षेत्र में नाट्य स्पर्धा का आयोजन, कला अकादमी, गोवा संस्था द्वारा किया जाता है। इस साल अर्थात् 2021 में 45वीं नाट्य स्पर्धा का आयोजन हुआ। कुल मिलाकर 22 कोंकणी संस्थाओं ने स्पर्धा में हिस्सा लिया था पर 19 संस्थाओं ने अपने नाटकों को प्रस्तुत किया। रुद्रेश्वर, पणजी की नाट्य संस्था द्वारा रचित 'मित्राची काणी' अर्थात् मित्र की कहानी को प्रथम पुरस्कार मिला। मूलतः यह नाटक वरिष्ठ और श्रेष्ठ नाटककार विजय तेंडुलकर की कलम से साकार हुआ तथा सन् 1974 में, पर 1981 में मराठी रंगमंच पर प्रस्तुत हुआ। समलैंगिकता पर आधारित इस नाटक में सुमित्रा की कहानी नहीं पर सु–मित्र की कहानी है जो सरल स्वभाव का है। इसी नाटक का कोंकणी अनुवाद कल्पना कुडतरकर वालके द्वारा किया गया है और कोंकणी रंगमंच पर यह नाटक 2021 में प्रस्तुत किया गया है।

दूसरा नाटक जिसे पुरस्कार मिला उसका शीर्षक है 'आमोरी' अर्थात् गोधुलि बेला। इरफान मुजावर द्वारा लिखित 'अजूनही चांदरात आहे' अर्थात् अभी भी चाँदरात है का कोंकणी अनुवाद शांताराम प्रभु द्वारा किया गया है। इसे दूसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ।

विनायक गोवेकार ने 'पांडू कोलापुरा वता' अर्थात् पांडू कोल्हापुर चला नाम से एकांकी संग्रह प्रकाशित किया। विविध विषयों पर रचित इस एकांकी संग्रह में सरल, सहज शैली में अपनी बात कहने की कोशिश की गई है। कोंकणी नाट्य संहिता में आशयपूर्ण नाटकों के साथ इज़ाबेल वाझ का नाम जुड़ा है। इनकी संस्था 'मस्टर्ड सीड आर्ट कंपनी' नाम से प्रसिद्ध है।

डॉ. सर्वानंद सावंत देसाय द्वारा लिखित नाटक 'सात पावलां विज्ञानाकडेन' अर्थात् सात कदम विज्ञान की ओर का प्रकाशन हुआ। प्रस्तुत पुस्तक में विज्ञान की महत्ता दर्शाते हुए, अपने दृष्टिकोण से वैज्ञानिक चिंतन कितना आवश्यक है, उस पर नाट्यकार अपना नाटक साकार करते हैं। कोंकणी रंगमंच पर अपना वैज्ञानिक चिंतन लाकर नाट्यकार ने अपना अलग स्थान बनाने की कोशिश की है।

कोंकणी रंगमंच में 'तियात्र' नाट्य विधा सालों से चल रही है। तियात्र अकादमी गोवा इस क्षेत्र में तियात्र की स्थिति पर चिंतन करती रहती है। पिछले दो सालों से कोविड–19 की महामारी के कारण इसका मंचन नहीं हो पाया है। व्यावसायिक रंगभूमि के रूप में तथा समाज में जागृति फैलाने का कार्य तियात्र सालों से कर रहा है। इस साल तियात्र के पितामह, तियात्रिस्ट अर्थात् तियात्र में काम करनेवाले, जुवांव आगुस्तिन फर्नांडिस की 50वीं जयंती के उपलक्ष्य में, मडगाँव के रवींद्र भवन में उनकी जयंती को मनाया गया।

IV कोंकणी उपन्यास 2021

'व्हडलें घर' अर्थात् बड़ा घर जो कि सही मायनों में धर्मांतरण का यातना घर है। गोवा का इतिहास साक्षी है कि यहाँ पर बड़े पैमाने पर धर्मांतरण हुआ था। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है जिसे उठाकर ले.उदय भेंब्रे अपना पहला कोंकणी उपन्यास लिखते हैं। गोवा मुक्ति के बाद के हर आंदोलन में इन्होंने हिस्सा लिया है। पेशे से ये वकील हैं। पर कोंकणी साहित्य में इन्होंने कवि, गीतकार, निबंधकार, नाटककार, स्तंभलेखक के रूप में भी अपना नाम कमाया है।

इतना कुछ होते हुए भी एक उपन्यास रूप में वे ऐतिहासिक तथ्य को एकांगी रूप में ही बयाँ कर पाते हैं। प्रस्तावना में ही कहा है कि इस उपन्यास का उद्देश्य धर्मांतरण चित्रण नहीं पर उससे जो दहशत फैली उसी का चित्रण है। प्रस्तुत रचना सिर्फ ऐतिहासिक तथ्यों का निरूपण है और वह भी एकांगी चित्रण है। इसे उपन्यास कहना गलत होगा।

ज्योती कुंकलकार द्वारा लिखित उपन्यास 'ख्यास्त' अर्थात् सज़ा इस साल प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में राजकीय क्षेत्र में एक स्त्री के संघर्ष की कहानी को चित्रित किया गया है। आज तक इनकी लिखित, अनूदित कुल 33 पुस्तकें हैं। इस लेखिका की 'ज्योतीपर्व' नाम से एक और पुस्तक प्रकाशित हुई है। कवि, पत्रकार, उपन्यासकार उदय भेंब्रे के उपन्यास 'व्हडले' घर की दूसरी आवृत्ति प्रकाशित हुई है। इनकी रचित एक और पुस्तक इस साल प्रकाशित हुई है 'मिथक और सत्य' शीर्षक से, विषय की गंभीरता का अंदाजा लग जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक मिथक का विवरण देकर, उसकी सत्यता परखते नज़र आते हैं। कोंकणी साहित्य में इस तरह का चिंतन पहली बार दिखाई देता है। इसी लेखक के गीतों का संग्रह भी प्रकाशित हुआ है, जिसका ज़िक्र, कोंकणी काव्य के अंतर्गत किया गया है।

V कोंकणी लोककला– लोकसाहित्य

इस साल डॉ.जयंती नायक ने 'लोकवेद विमर्श' पुस्तक लिखकर विश्लेषणात्मक रूप में अपने विचार प्रकट करने का कार्य सफलतापूर्वक किया है। कोंकणी समाज, अन्य समाज से उसके संबंध, सांस्कृतिक जड़ें इन्हें समाज शास्त्रीय रूप से जाँचने का प्रयास किया है। प्रस्तुत पुस्तक में कुल ग्यारह निबंधों को शामिल किया गया है। हरेक निबंध में एकेक विशेषता पर ध्यान दिया गया है जैसे लोककथा में भाषा की समृद्धता, लोक परंपरा, मिथक और स्त्री, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, लोकगीत और लोकनृत्य से संबंधित लोकवाद्य आदि विशेषताओं से विश्लेषण करके अध्ययन करने का प्रयास दिखाई देता है।

लोककला क्षेत्र में डॉ. पांडुरंग फलदेसाय का नाम बहुचर्चित है। इस साल उन्होंने कोंकणी साहित्य को तीन पुस्तकें देकर इस क्षेत्र को और समृद्ध किया है।

1. 'पुर्तुगेज अमला सकयल्या गोंयच्यो लोककाण्यो' अर्थात् पुर्तगाली सत्ता के समय की लोक कहानियों का डॉ. पांडुरंग फलदेसाय ने अंग्रेजी से कोंकणी में अनुवाद किया है 'कोंकणी अनुवाद' में इस पर और लिखा जाएगा।

2. टायपोलॉजीकल इनसायट्स इन टू फोकलोर ऑफ गोवा' प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. फलदेसाय नई शास्त्रीय प्रणाली से विश्लेषण करते हैं और गोवा की लोक अभिव्यक्ति का वर्गीकरण तथा जानकारी को संगृहीत करते हैं।

3. 'गोवा फोकलोर स्टडीज–ए रेडी रेकनर' पुस्तक में वे बारहवीं शताब्दी से लेकर आज तक लोककला की विधा में जो भी उपलब्ध है उसे संक्षिप्त में लिखते हैं।

लोककला के क्षेत्र में सन् 2021 में 'गोंयचीं धालो गितां' अर्थात् गोवा के धालो गीत कहा जा सकता है। 'धालो' लोकनृत्य का एक प्रकार है जो मार्गशीर्ष और पूस के महीने में खेला जाता है। इस नृत्य में सिर्फ स्त्रियाँ हिस्सा लेती हैं। इस पुस्तक का संकलन गोपीनाथ गावस, नम्रता वायंगणकार, काशीनाथ अ. नायक और दिलीप पालसरकार ने किया है।

VI कोंकणी आत्मकथा / जीवनी

वर्ष 2021 में अब तक आत्मकथा तो प्रकाशित नहीं हुई पर आत्म चरित्रात्मक दो पुस्तकें आई हैं। ले.दीपक सीताराम शिरोडकर द्वारा लिखित– 'म्हालगडे' अर्थात् महान चरित्र, जिनका परिचय लेखक करवाते हैं। कुल मिलाकर 68 महान विभूतियों का परिचय प्रस्तुत पुस्तक में दिया गया है। लेखक की यह पहली पुस्तक है। महान लोगों को सलाम करते हुए लेखक उनके महान गुणों को आत्मसात् करने का संदेश देते हैं।

गोवा विधानसभा के पूर्व सभापति, तियात्र अकादमी के अध्यक्ष, दालगादो कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष, तियात्रों में भी काम किया है। संस्कृति, कला, साहित्य, भाषा तथा अलग–अलग संस्थाओं में भी इनका योगदान है। तोमाझीन कार्दोझ के संपूर्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए, प्रस्तुत पुस्तक में तोमाझीन कार्दोझ के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई है। पुस्तक के लेखक वॉल्टर मिनेझीस हैं और शीर्षक– 'स्पिकींग आऊट द लायफ एंड टायम्स ऑफ तोमाझीन कार्दोझ' है।

प्राध्यापक एल. श्रीधर द्वारा लिखित 'भटकंती' अर्थात् भटकन आत्मकथनात्मक पुस्तक है। लेखक ने पंद्रह वर्ष की आयु में गोवा से कर्नाटक में स्थलांतर किया, उस समय उन्होंने जो तकलीफें उठाईं, सामाजिक और व्यक्तिगत तौर पर जो संघर्ष किया, उन अनुभवों को बयाँ किया गया है।

कोंकणी साहित्य के आत्मकथा दालान में 'जाग' प्रकाशन ने सुमंत केलेकार द्वारा लिखित 'नंदालो पोर'– नंद का बेटा– प्रकाशित किया। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक अपने बालपन के गाँव प्रियोल की यादों को समेटते हुए जीवन की झाँकियों को बहुत ही रसप्रद रूप में चित्रित करते हैं।

आत्मकथा / जीवनी के अंतर्गत मिलिंद म्हामल ने इस साल गोवा के डॉ. रघुनाथ माशेलकार के जीवन और कार्य पर पुस्तक लिखी है। प्रशांत फडते के साथ मिलकर इसे लिखा गया है। डॉ. रघुनाथ माशेलकर का जन्म गोवा राज्य के माशेल गाँव में हुआ। पेशे से वे केमीकल इंजिनियर रहे हैं। वे कॉउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सी एस आई आर) के महा निदेशक रह चुके हैं। बहुत सारे वैज्ञानिक संस्थानों से जुड़े हुए रहे। पद्म विभूषण, पद्म भूषण, पद्मश्री, जी–फाईल्स पुरस्कार से नवाज़े गए! इनकी जीवनी और कृतित्व पर पुस्तक लिखकर मिलिंद म्हामल और प्रशांत फडते ने कोंकणी साहित्य को समृद्ध किया है। भविष्य की पीढ़ी के लिए डॉ. रघुनाथ माशेलकर जी का जीवन प्रेरणादायी बनेगा, इसमें कोई दो राय नहीं।

VII अनुवाद, लिप्यंतरण 2021

कोंकणी कवि प्रकाश पाडगांवकार का काव्य संग्रह 'ब्रह्मांड योगी चिरंतनाचो' का हिंदी अनुवाद

'चिरंतन ब्रह्मांड मोगी' नाम से हुआ है। 'मोगी' शब्द का अर्थ है प्यार करनेवाला, चिंतन करनेवाला। प्रस्तुत काव्य संग्रह का अनुवाद स्वर्गीय प्रो. एल. सुनिताबाय ने किया है। कोंकणी कविताओं का हिंदी अनुवाद करने का सफल प्रयास किया गया है। अनुवादक की मेहनत रंग लाई है।

'बेंझल आनी बालकृष्णु' (कथा संग्रह) मूल कन्नड भाषा में है जिसके रचनाकार महेश आर नायक हैं। कोंकणी में इसका अनुवाद वेंकटेश नायक के द्वारा किया गया है।

अनुराधा प्रभुदेसाई मूल मराठी पुस्तक 'सैनिक' का अनुवाद कोंकणी में सुनेत्रा जोग ने किया है जिसका शीर्षक भी सैनिक ही है। सही मायनों में इस पुस्तक में हमारे आनेवाले कल के लिए हमारे जवान अपना आज न्योछावर करते रहे हैं....और आगे भी यही चलता ही रहेगा। हमारे देश को और हमें शांति की जिंदगी देनेवाले हमारे सैनिकों को, उनके हौंसलों को तथा उन्हें वहाँ अपना कर्तव्य निभाने में सहयोग देनेवाले परिवारजनों को भी सलाम!

अनुवाद के क्षेत्र में, सन् 2021 में एक नया प्रयोग दिखाई दिया। मूलतः यह रचना डोगरी भाषा की है, जिसके लेखक ओ.पी.शर्मा 'सारथी' हैं। हिंदी में इसका अनुवाद 'नंगा रूख' नाम से, सन् 2017 में प्रकाशित हुआ। अंग्रेजी में 'चर्निंग ऑफ द सिटी' नाम से इसका प्रकाशन हुआ। कोंकणी भाषा में, शकुंतला भरणे ने इसका अनुवाद किया, जिसका शीर्षक 'एक शाराचें मंथन' अर्थात् एक शहर का मंथन नाम से इसे प्रकाशित किया गया। सही मायनों में अमूर्त होते हुए भी साकार अर्थात् मूर्त। प्रतीकात्मक होते हुए भी वास्तविक। नंगी वास्तविकताएँ। इस शहर में चोरी होती है तो मनुष्य, पेड़, कागज़, प्रकृति, मनुष्य देह के अवयवों की! अपनी ही चोरी करनेवाला वह मनुष्य, सबका होते हुए भी किसी का नहीं। नए–नए मुखौटे ओढ़े हुए....फिर भी नग्न। सब चेहरे मुखौटों में। किसको पहचानें? कैसे? इस तरह का कोई उपन्यास, नाटक, कहानी मौलिक रूप में कोंकणी भाषा के साहित्य में नज़र नहीं आता। खैर, भविष्य के प्रति आशावादी रहना ही बेहतर है।

कोंकणी लोककला के अंतर्गत डॉ. पांडुरंग फलदेसाई की पुस्तक उल्लेखनीय है। मूलतः यह पुस्तक अंग्रजी से कोंकणी में अनूदित है।

लोककला विषय के विशेषज्ञ, साहित्यिक और पद्मश्री विनायक खेडेकर के विचार से, कोंकणी लोककला में प्रस्तुत पुस्तक से, उस समय की सामाजिक स्थिति का चित्रण मिलता है। लोककहानी होने के कारण उस समय की बोली का भी अध्ययन किया जा सकता है। इतना ही नहीं इसके द्वारा संस्कृति अध्ययन पर भी सोचा जा सकता है।

कोंकणी साहित्य में वर्ष 2020–2021 में वरिष्ठ नागरिक, अनुवादक माणिकराव गावणेकार ने अपने जीवन के 82वें वर्ष में वाल्मीकि रामायण का कोंकणी अनुवाद करने का निश्चय किया और परिश्रम से तीन चार सालों में उसे पूरा भी किया। इस महान अनुवाद कार्य को संपन्न करके कोंकणी साहित्य को समृद्ध किया है। वह भी तीन भागों में, जिसमें कुल पृष्ठ 2500 हैं।

जयश्री शानबाग ने 'स्वप्न सारस्वत' मूल कन्नड से कोंकणी में अनूदित किया है। इसे इस साल साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। मूलतः कन्नड भाषा में इसे ले. गोपालकृष्ण पै ने लिखा है। इस रचना में 16 से 18वीं शताब्दी के इतिहास को चुना गया है। सन् 1560 में धर्मांतरण से बचने के लिए गोवा से लोगों ने कर्नाटक और केरल राज्य में स्थलांतरण किया था। जिसकी तीन पीढ़ी का इतिहास इस अनूदित उपन्यास में समाया हुआ है।

'कर्माचो सिद्धांत' अर्थात् कर्म का सिद्धांत यह पुस्तक मूलतः गुजराती भाषा में 'कर्मनो सिद्धांत' ले.हरिभाई ठक्कर द्वारा लिखी गई है। जिसका कोंकणी अनुवाद संपदा कुंकलकार ने किया है। प्रस्तुत पुस्तक में मनुष्य को संदेश दिया गया है कि जैसे कर्म करोगे वैसे ही फल पाओगे। यह नियम सबके लिए समानरूप में कार्य करता है। अलग–अलग उदाहरणों द्वारा इसी बात को सिद्ध

किया गया है। मनुष्य का नसीब भी उसके कर्म द्वारा ही आकार पाता है।

अनुवाद के क्षेत्र में, कोंकणी भाषा में एक और अनुवादक अपनी कृति लेकर आए हैं। अनंत अग्नी ने 'महात्मा' पुस्तक का अनुवाद किया है। जो यही दर्शाता है कि आज भी महात्मा उतने ही प्रासंगिक हैं। हमारे विश्व को आज के संदर्भों में देखते हैं।

इस साल अनुवाद के क्षेत्र में एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई। डॉ.राम मनोहर लोहिया ने सन् 1947 में, 'एक्शन इन गोवा' को लिखा था, जिसका कोंकणी अनुवाद इस साल प्रकाशित हुआ है। कोंकणी के साथ–साथ मराठी और हिंदी में भी इसका प्रकाशन हुआ। कोंकणी अनुवाद करनेवाले दामोदर घाणेकार हैं। गोवा स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में डॉ. राम मनोहर लोहिया का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। 18 जून, 1946 के दिन गोवा के मडगाँव शहर में इनका ऐतिहासिक भाषण हुआ था। प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. लोहिया और उनके मित्र डॉ. जुलियाव मिनेझीस के पराक्रम का उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक में गोवा के बारे में गांधी जी के विचारों को भी स्थान दिया गया है। गोवा मुक्ति को 19 दिसंबर 2021 में 60 साल हो गए हैं। डॉ. लोहिया के ऐतिहासिक भाषण को 75 साल पूरे हो गए हैं। पुस्तक के लोकार्पण के समय गोवा के वरिष्ठ पत्रकार संदेश प्रभूदेसाय ने कहा कि, "गोवा को स्वयंपूर्णता की ओर ले जाने के लिए इस पुस्तक में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है।"

कोंकणी साहित्य के अनुवाद के क्षेत्र में सन् 2021 में डॉ. म्हैसूरू हिरियन्ना द्वारा लिखित 'आउट ऑफ इंडियन फिलॉसफी' का अनुवाद मिलिंद म्हामल ने 'भारतीय तत्वज्ञान की रूपरेखा' नाम से कोंकणी में किया है। तत्वज्ञान विषय ही थोड़ा कठिन है और उसका अनुवाद और भी आह्वानकारक होता है पर इस पुस्तक के प्रकाशन कार्यक्रम में डॉ. भूषण भावे ने कहा कि इस अनुवाद कार्य से कोंकणी भाषा समृद्ध हुई है। अनुवादक ने एक बेहतरीन गोताखोर की तरह, समंदर की गहराई से मोतियाँ चुनने में कामयाबी पाई है। (भांगरभूंय– कोंकणी अखबार, 24 नवंबर 2021) मिलिंद म्हामलजी का अभिनंदन ! इन्होंने एक और पुस्तक लिखी है जिसका उल्लेख 'आत्मकथा/जीवनी' के अंतर्गत किया गया है।

VIII वैचारिक लेख 2021

वर्ष 2021 में दिनकर मुरकुंडे अपनी चौथी कृति 'सरभरस' लेकर आए हैं। अपने जीवन के 84वें वर्ष में उन्होंने यह साहित्यिक कार्य संपन्न किया है। उनका मानना है कि लेखकों को कहानी–कविता के साथ–साथ कोंकणी युवावर्ग को स्वावलंबी बनाने के लिए भी लिखना चाहिए। सरकारी नौकरी के पीछे दौड़ने की बजाय कृषि बागवानी की ओर रुख करना चाहिए। जीवन में अनुभव का ज्ञान हमेशा ही ज्यादा उपयोगी सिद्ध होता है।

इस कार्यक्रम में दिपा मुरकुंडे लिखित 'असोय एक दीस' अर्थात् ऐसा भी एक दिन का भी लोकार्पण हुआ।

श्री निराकार संस्थान, लोलये (जगह का नाम है) द्वारा इस देवालय का 1927 से लेकर 2020 तक का समृद्ध इतिहास रखा गया है। प्रस्तुत पुस्तक में कुल चौदह प्रकरण हैं। देवालय का पूरा इतिहास इस पुस्तक में रखा गया है। इस पुस्तक को रघुचंद्र भट द्वारा लिखा गया है।

'नवी फांतोड' अर्थात् नया प्रभात पुस्तक को लिखनेवाले हैं राजू बर्वे।

युवा साहित्य पुरस्कार इस साल संपदा कुंकलकार को दिया गया है। वैचारिक लेखन में संपदा जी ने आज तक, कोंकणी भाषा में ग्यारह पुस्तकें लिखी हैं। पुस्तक तो अभी तक प्रकाशित नहीं हुई पर संपदा को साहित्य अकादमी का युवा साहित्य दिया गया।

गोवा कोंकणी अकादमी, कोंकणी के युवावर्ग के लिए कोंकणी साहित्य का आयोजन हर साल करवाती है। पिछले उन्नीस सालों से इसका आयोजन होता रहा है। वर्ष 2021 में बीसवाँ 'युवा कोंकणी साहित्य सम्मेलन' 31 मार्च को आयोजित

किया गया। इस उपलक्ष्य में 20 सालों के आयोजन में जितने भी अध्यक्ष हुए उनके भाषणों को संकलित रूप में संपादित करके पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया। डॉ. प्रकाश पर्येकार, डॉ. प्रकाश वजरीकार ने मिलकर संकलन और संपादन कार्य को पूरा किया। कोंकणी युवा वर्ग के लिए ये अध्यक्षीय भाषण मार्गदर्शन का कार्य करेंगे।

ले. उदय नरसिंह म्हांबरो द्वारा लिखित 'कालीज उसवलां' अर्थात् यादों में पसीजता मन, सही मायनों में इन निबंधों में पचास साल पहले की जिंदगी, उसके सामाजिक, सांस्कृतिक धागों के साथ ये निबंध अपनी यात्रा तय करते हैं। शहरीकरण की ओर बढ़ते हमारे गाँव, उनके आपसी संबंध, मानवीय मूल्य, व्यवसायों का बदलता रूप आदि संदर्भों में ये निबंध विचार करने पर मजबूर करते हैं।

कोंकणी के अखबार 'भांगरभूंय' में सखाराम शेणवी बोरकार के विचार (अप्रैल, 24, 2021) से प्रस्तुत पुस्तक में जो निबंध हैं वे सब दिल से सजाए गए, शब्द रूपों में जो अभिव्यक्त हुए हैं। कोंकणी साहित्य के निबंधों ने विश्व में अपना स्थान बना लिया है।

प्राध्यापक नारायण देसाय, शिक्षा के क्षेत्र का बहुत चर्चित नाम है। वर्ष 2021 में उनके इन्हीं अनुभवों को लेकर उन्होंने 'उत्फर्के' अर्थात् संवेदना व्यक्त की हैं। शिक्षा का क्षेत्र तथा संस्था चालक के रूप में भी डॉ. नारायण देसाय अपना योगदान दे चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अपने शिक्षा क्षेत्र के अनुभवों को लेकर लिखे गए लेखों से माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को मार्गदर्शन मिलेगा। इतना ही नहीं, शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव लाने की क्षमता भी इनके विचारों से पाई जाएगी। गंभीर दस्तावेज के रूप में इस पुस्तक को सराहा जाएगा, इसमें कोई दो राय नहीं।

वैचारिक लेखन में अपना पहला निबंध संग्रह लेकर एच. मनोज आए हैं। 'मनकठे फुलतना' अर्थात् मनकलियाँ खिलते हुए इस रचना में कुल मिलाकर 26 विचार कणिकाओं को पिरोया गया है। बिंब प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है। इन लेखों में शिक्षा नीति, राजकारण, संस्कृति के विषयों पर प्रकाश डाला गया है। गोवा किस तरह बदल रहा है.....सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टि बिंदुओं पर चर्चा की गई है।

'प्रेरणा रूख' अर्थात् प्रेरणा वृक्ष लेकर कोंकणी कवि, साहित्यिक समीक्षक संजीव वेरेंकार अपना सिक्का जमाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक का आस्वादन करते हुए उदय नरसिंह म्हांबरो, रविवार, 07 नवंबर, 2021 के 'भांगरभूंय' अखबार में लिखते हैं कि यह पुस्तक "एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है।" पुस्तक पढ़ते हुए इस बात का प्रमाण मिल जाता है। सही मायनों में इस पुस्तक में जो व्यक्ति चित्रित किए हैं वे सब शिक्षा क्षेत्र से संबंधित हैं। पुस्तक में अपने–अपने क्षेत्र के, इक्कीस लेख हैं। समाज में बदलाव लाना हो तो शिक्षा से बढ़कर कोई बेहतर साधन नहीं है। लेखक का मानना है कि शिक्षा हमें बेहतर इनसान बनाती है। युवा पीढ़ी के लिए यह पुस्तक व्यक्ति चित्रण द्वारा शिक्षा के इतिहास को बयाँ करती है। 19 दिसंबर, 2021 को गोवा राज्य की मुक्ति को साठ साल पूरे होते हैं। औपनिवेशी काल में हरेक तबके के लोगों को शिक्षा नसीब नहीं होती जिसका दर्द लेखक को सता रहा है। वास्तव में संजीव जी कवि भी हैं। कोंकणी साहित्य में आज तक सत्रह पुस्तकें लिखी हैं जिनमें काव्य संग्रह, वैचारिक लेख, आस्वादकीय लेख शामिल हैं।

'तालो' अर्थात् आवाज। इस निबंध संग्रह के रचनाकार फा. मायरन बार्रेटो हैं। फा. मायरन की अब तक पाँच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्हें गोवा राज्य का युवा सृजन पुरस्कार, दाल्गादो कोंकणी अकादमी का दाल्गादो युवा पुरस्कार, कोंकणी भाषा मंडल का स्वर्गीय नरसिंह दामोदर नायक पुरस्कार जो उनकी पुस्तक 'ओपारिंतल्यान संदेश' अर्थात् कहावतों से संदेश को मिला है। प्रस्तुत पुस्तक में मूलतः मनुष्य की आवाज की महत्ता को अलग–अलग रूपों में प्रस्तुत करके

हमारे सामने रखा है। मनुष्य और प्राणी में सबसे बड़ा भेद आवाज का ही तो है। मनुष्य के पास अपनी भाषा है, अपनी आवाज है। फिर भी बहुत बार हम मौन रहना पसंद करते हैं। मौन का महत्व हर धर्म में दिखाई देता है। जो बोलता रहता है वह खो जाता है। ऐसा माननेवाले भी इस संसार में हैं। फादर मायरन जरूरतमंदों के लिए अपनी आवाज का उपयोग करना चाहते हैं।

'खबर ओपिनियन पोलाची' अर्थात् खबर ओपिनियन पोल की। गोवा के इतिहास में इस ओपिनियन पोल की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। सन् 1961 में गोवा की मुक्ति के बाद, गोवा को महाराष्ट्र में विलीन करने का अभियान चला था। जिसके लिए लोगों का मतदान हुआ था। गोवा के लोगों ने महाराष्ट्र में विलीन नहीं होने का निर्णय, सन् 1967 के इस ओपिनियन में ही लिया। इसके बाद ही गोवा स्वतंत्र राज्य बना। राज्य की भाषा कोंकणी बनी और कोंकणी का विकास हुआ। इसी ओपिनियन पोल की खबर लेकर, लेखक अशोक कामत, अपनी पुस्तक लिखते हैं। उस समय की स्थिति, परिस्थिति, राज्य, राजकीय स्थिति और लोगों का मानस, उस समय किस दौर से गुजरा था, उस इतिहास को संजोना जरूरी है। आनेवाली पीढ़ी के लिए यह विचार मंथन, एक नई राह दिखा सकता है।

IX कोंकणी सिनेमा 2021 आई एफ एफ आई 2020–2021

सन् 2020 में कोविड–19 के कारण नवंबर में इफ्फी (इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया) का आयोजन 16 से 24 जनवरी तक किया गया। 51वें इफ्फी समारोह में, विश्व की पंद्रह फिल्मों को दिखाया गया। इनमें से डेनमार्क की फिल्म 'इन टू द डार्कनेस' ने सुवर्ण मयूर प्राप्त किया। महामारी की पार्श्वभूमि पर इस समारोह का आयोजन हो रहा था तो सबके मन में आशंकाएँ थीं ही, पर गोवा सरकार ने सब नियमों का पालन करके आयोजन को सफल बनाया। सब पत्रकारों ने इसकी प्रशंसा ही की। इफ्फी के यशस्वी आयोजन के लिए अमिताभ बच्चन का अभिनंदन करते हुए विडियो भी समापन समारोह में दिखाया गया। इस 51वें इफ्फी समारोह में कंट्री फोकस के रूप में बांग्लादेश को चुना गया था। इस विभाग में तन्वीर मोकामेल रचित 'मेघमल्लहार', रुबायत हुसैन– 'अंडर कन्स्ट्रक्शन' और 11 दिग्दर्शकों ने मिलकर जो फिल्म बनाई 'सिन्सियरली युअर्स' को दिखाया गया।

गोवान विभाग के अंतर्गत दो लघुपट दिखाए गए। प्रीमियर विभाग में मांगरिश बांदोडकर और प्रवीण पारकर की फिल्म 'शिंवर' में सुयश कामत द्वारा रचित 'विठ्ठल इन द कॉर्नरस' दिखाए गए।

सत्यजीत रे की जन्मशताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में पाँच फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। 'शो मस्ट गो ऑन' के रूप में, अनेक प्रतिकूल माहोल में कोविड काल में भी इस सफल आयोजन के कारण गोवा ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई दिशा दिखाई है। फिल्म रसिक और निर्माण, दिग्दर्शन करनेवाले सब खुश थे क्योंकि इस साल महोत्सव का खोखला दिखावा नहीं था, पर फिल्मों पर गंभीरता से विचार करनेवाले, समीक्षक, आलोचक, पत्रकार उपस्थित थे। सब लोगों ने एक स्वर में महोत्सव की तारीफ ही की। थियेटर के अंदर जाने के लिए धक्कम धक्की नहीं थी, फिल्म प्रदर्शन के बाद कलाकार और दिग्दर्शकों से मिलना भी संभव था। फिल्म निर्माण की शिक्षा लेनेवाले विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

इस साल भारतीय सिनेमा के जनक दादासाहेब फालके की 150वी जयंती मनाई जा रही है इस उपलक्ष्य में उन्हें याद किया गया। वे देशभक्त और द्रष्टा थे। उनके पास धन न होते हुए भी उन्होंने हार नहीं मानी। सरस्वतीबाई को चित्रीकरण भी उन्होंने ही सिखाया। लंदन से उन्हें ऑफर्स आते थे पर उन्होंने अपने देश में रहकर ही हमारे भारतीय सिनेमा को मजबूत बनाने में अपना योगदान दिया। सिनेमा व्यवसाय को आत्मनिर्भर बनाया। इस 51वें इफ्फी में दादासाहेब फालके पर

आधारित एक सिनेमा बनाने का प्रस्ताव भी रखा गया।

इस साल राष्ट्रीय पुरस्कार पानेवाली कोंकणी फिल्म 'काजरो' अर्थात् विषैला बीज, महत्वपूर्ण है।

इस साल का यह दूसरा आई एफ एफ आई कार्यक्रम जो 20 नवंबर, 2021 से 28 नवंबर, 2021 तक चला। कोविड–19 महामारी की वजह से 51वां आई एफ एफ आई कार्यक्रम इसी साल जनवरी 2021 में मनाया गया तथा 52वां आई एफ एफ आई अब चल रहा है। उद्घाटन समारोह फिल्मी सितारों की चमक से हुआ। 'दिमासा' भाषा के 'सेमखोर' सिनेमा से इंडियन पॅनोरमा की शुरुआत हुई। इस फिल्म के दिग्दर्शक एमी बरूआ हैं। प्रस्तुत सिनेमा में सामाजिक परंपरा के कारण अपने बच्चे की बलि न चढ़ जाए। इसी चिंता में माँ का जो संघर्ष है उसे बयाँ किया गया है।

'सेमखोर' फिल्म के दिग्दर्शक एमी बरूआ जो अभिनेत्री भी हैं उन्होंने इस फिल्म के लिए पटकथा लेखन किया है और मुख्य भूमिका रूप में अभिनय भी किया है। उन्होंने 'भांगरभूंय' में, 23 नवंबर, 2021 को अपने साक्षात्कार के दौरान बताया कि सेमखोर के लोगों के पास जीवन की सुख–सुविधा के कोई साधन नहीं हैं....वे उनके बारे में सोचना भी नहीं चाहते, वे जैसे भी हैं अपने उसी रूप में खुश हैं। प्रस्तुत फिल्म में सेमखोर के लोगों की परंपरा, उनके रीति–रिवाज़ और उनकी संकल्पनाओं को प्रतिनिधित्व रूप में चितारा गया है। बाहर के संसार से वे लोग पूर्ण रूप से बेखबर रहना ही पसंद करते हैं। उनके जीवनयापन का एक मात्र साधन खेती है। इसी फिल्म को टोरांटो अंतरराष्ट्रीय महिला फिल्म महोत्सव में उत्कृष्ट कहानी और सुंदर छायाचित्रण के लिए पुरस्कार मिल चुका है।

वर्ष 2021 में कोंकणी फिल्मों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। कोंकणी सब से पहली फिल्म 'मोगाचो आंवडो' अर्थात् प्रेम घुंट, जो कि सन् 1950 में बनी थी उसे रिस्टोर करने की कोशिश शुरू की गई है। कोंकणी सिनेमा की जानकारी संकलित करके इजिदोर दांतास नाम के कोंकणी प्रेमी ने 'कोंकणी चलचित्र' नाम से पुस्तक तैयार की। इस पुस्तक के प्रकाशन के समय 'मोगाचो आंवडो' फिल्म के निर्माता अल जेरी ब्रागांझा के संबंधी ने इजिदोर को भेंट स्वरूप में फिल्म की रील दी। वह रील बहुत ही खराब अवस्था में थी, फिर भी उन्होंने उसे ऐतिहासिक दृष्टि से उस रील का महत्व पहचानकर उसे स्वीकारा। 'नेशनल फिल्म आर्काइव' में जाकर उस फिल्म की रील को रिस्टोर किया जा सकता है या नहीं उस पर चर्चा की। उनके मत से वह रील अत्यंत जर्जर अवस्था में थी तो उन्होंने मना कर दिया। इसके बाद इजिदोर ने फिल्म मेकर बॉर्डरॉय से संपर्क किया, जिन्होंने इजिदोर का परिचय शिवेंद्र सिंग डुंगरपूर से करवाया। पूरी प्रक्रिया में शिवेंद्र को रील रिस्टोर करने में सफलता तो मिली पर उनके मत से वह पूरे का पूरा रिकंस्ट्रक्शन था। शिवेंद्र की 'फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन' संस्था ने रिस्टोरेशन की जिम्मेदारी स्वीकारी। पूरी फिल्म के रील्स इस संस्था ने प्राप्त किए।

'नाचूंया कुंपासार' कोंकणी फिल्म के दिग्दर्शक बार्डरॉय बार्रेटो ने भी इस कार्य के लिए साथ दिया। कोंकणी फिल्म पूर्णतः रिस्टोर हो पाएगी या नहीं, यह कहना मुश्किल है।

वर्ष 2021 की दूसरी इफ्फी में एक महत्वपूर्ण बात यह रही कि यह साल सत्यजीत रे की जन्मशताब्दी का होने के कारण सालभर विविध कार्यक्रमों के आयोजन हो रहे हैं। देश–विदेश में सरकार कार्यक्रमों का आयोजन करवा रही हैं। इस साल हम अपनी आजादी का अमृत महोत्सव भी मना रहे हैं। इस साल की इफ्फी में 'जीवन गौरव' पुरस्कार को 'सत्यजीत रे जीवन पुरस्कार' नाम दिया गया है। फिल्म सृष्टि में उल्लेखनीय कार्य करनेवाले ज्येष्ठ कलाकार को यह पुरस्कार दिया जाता है। इस साल यह पुरस्कार अमेरिकन फिल्म निर्माता मार्टिन स्कॉरसेझी और इस्तेवान सोबो इन दोनों को 20 नवंबर, 2021 को दिया गया। हम सब जानते हैं कि सत्यजीत रे ने

आधुनिक फिल्मों के लिए बुनियाद तैयार की। विश्व में फिल्म रसिकों के मन में आज भी सत्यजीतरे को अटल स्थान प्राप्त है। 24 नवंबर, 2021 की 'मास्टर क्लास' में एफटीआईआई अर्थात् भारतीय सिनेमा और दूर चित्रवाणी संस्था के फिल्म संकलन विभाग के सहायक प्रोफेसर ए.व्ही. नारायण के मत से सत्यजीत रे अपने कैमरे के लेन्स के माध्यम से सीधे, जिस व्यक्ति रेखा को उभारना चाहते, उसकी मनोभूमिका में प्रवेश कर जाते थे! (गोमंतक', मराठी अखबार 25 नवंबर, 2021) कितनी बड़ी बात प्रोफेसर ए.व्ही. नारायण ने कह दी। किसी व्यक्ति रेखा को 'कैमरे के लेंस से व्यक्त करना', उस चरित्र के, मनोमस्तिष्क तक पहुँचना यही बात एक सफल फिल्म, निर्देशन, दिग्दर्शन, कलाकार उसके किरदार, संगीत, पहनावा, उसका वातावरण इन सबको महत्वपूर्ण बनाता है। सत्यजीत रे की फिल्में ही इसका जीता जागता उदाहरण हैं। किसी फिल्म की कहानी ही कैमरे से व्यक्त होती है और उसी प्रक्रिया से संकलन भी सुंदर, सहज रूप से गुंफित होता है। 'अपूर संसार' और 'चारूलता' फिल्मों के दृश्यों से उन्होंने अपनी बातों को स्पष्ट किया। सत्यजीत रे के लिए फिल्म का प्रकार महत्वपूर्ण न होकर वे सिर्फ आशय को ही महत्वपूर्ण मानते थे।

24 नवंबर, 2021 की मास्टर क्लास में लेखक सुमंत बत्रा पुस्तक जो कि अंग्रेजी में है और बहुत जल्द उसका अनुवाद मराठी, हिंदी और गुजराती भाषा में होनेवाला है।

कोंकणी फीचर फिल्म के अंतर्गत 25 नवंबर, 2021 को, 'डिकॉस्टा हाऊस' को दिखाया गया। कोंकणी और मराठी के अखबार के समाचार से पता चलता है कि फिल्म प्रदर्शन हाऊस फुल था।

अब चलते हैं फिल्मों के पुरस्कारों की ओर जो 28 नवंबर, 2021 को प्रदान किए गए–

– युद्ध की स्मृति खोज 'रिंग वॉंडरिंग' को सुवर्ण मयूर पुरस्कार, 40 लाख रुपए और मानपत्र प्रदान किया गया। इस जापानी फिल्म के दिग्दर्शक मासाकाझू कोनेको हैं।

–'गोदावरी' मराठी फिल्म के जितेंद्र जोशी को उत्तम भूमिका के लिए, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार, रजत मयूर, 10 लाख रुपए और मानपत्र प्रदान किया गया।

–स्पॅनिश अभिनेत्री ऍजेला मोलिना (शार्लोट) को सर्वोत्कृष्ट अभिनेत्री पुरस्कार प्रदान किया गया।

X कोंकणी बाल साहित्य

नेपाली लोककथा–भाग–1 संकलन और हिंदी अनुवाद प्रकाश प्रसाद उपाध्याय द्वारा किया गया है और कोंकणी अनुवाद किरण म्हांबरे द्वारा सफलतापूर्वक रचा गया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में कुल अट्ठारह कहानियाँ हैं। बच्चों का विश्व उजागर करने हेतु अलग–अलग विषय और आशय को कहानी रूप में रखा गया है। राजकुमारी पद्मावती, पहले किसको खाऊँ? सियार का निर्णय आदि। इतने सालों से जो चली आ रहीं वे ही कहानियाँ नेपाली भाषा में भी हैं। विज्ञान को लेकर कोई भी कहानी विज्ञान को आधार बनाकर लिखी गई हो वैसा कोई भी उदाहरण इस बाल साहित्य में भी नहीं दिखाया गया। एक कारण यह भी हो सकता है कि बच्चों को अपनी संवेदनशीलता, उद्भूतत्व, कल्पना तत्व जैसी चीजें ज्यादा समृद्ध बनाने के लिए, संस्कार सिंचन के लिए उपयोगी सिद्ध होती हैं। (बाल साहित्य पुरस्कार साहित्य अकादमी– विनीता कोल्हो)

4 अप्रैल 2021, 'भांगरभूंय' वर्तमान पत्र में चेतन आचार्य द्वारा लिखित लेख 'कोंकणी बाल साहित्य के लिए एक नई राह' जिसमें वे लिखते हैं–

भावार्थः बच्चों की कल्पनाशक्ति को बढ़ावा मिले ऐसे चित्रण बाल साहित्य में होने चाहिए। अपने आस–पास के मनुष्य का जीवन समझने में भी बाल साहित्य उपयोगी सिद्ध होता है।

इस साल कोंकणी बाल साहित्य में हर्षा सद्गुरु शेट्ये 'एक आशिल्लें बायूल' अर्थात् एक थी छोटी बच्ची के रूप में यह उपन्यास कोंकणी बाल साहित्य में अपना अलग स्थान पाता है। 'बिंब' प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है। इस बाल उपन्यास को लेखिका अपना बचपन बच्चों के लिए लिखती हैं पर उसे तृतीय पुरुष निवेदन शैली में प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार का लेखन लिखने

के लिए तटस्थ रहना आवश्यक हो जाता है। यह संतुलन लेखिका रख पाई हैं। बाल उपन्यास होते हुए भी, इसकी विशेषता यह है कि पिछले पचास वर्षों का, गोवा का इतिहास, इसमें सरल शैली में लिखा गया है। इतिहास के साथ–साथ सामाजिक जीवन को भी पिरोया गया है। बच्चों के साथ बड़े भी इसे चाव से पढ़ेंगे। मनुष्य का बचपन तो होता ही है पर उसे अलिप्त रहकर देखना और उसमें से विशेषताओं को चुनना एक अनूठा अनुभव होता है। लेखिका अपने उद्देश्य में पूरी तरह से सफल हुई हैं।

बाल साहित्य में इस साल बाल नाट्य लेकर नाटककार जगदीश फडते अपनी नाटिका 'भुरग्यांचे विनोदी–12 भानगडी' अर्थात् बच्चों के विनोद और 12 गड़बड़ के रूप में प्रकाशित कर चुके हैं। इस कोंकणी बाल नाटिका से बाल साहित्य अपने विविध रूपों में आकार पाकर समृद्ध हो रहा है।

इस साल कोंकणी की रोमी (रोमन) लिपि में दो पुस्तकें बाल साहित्य पर प्रकाशित हुई। 'काण्याचें पेटूल' अर्थात् कहानियों का पिटारा, जिसे आंतोनियी मास्कारेन्हास ने लिखा है। इन कहानियों में बच्चों के लिए सरल भाषा में लेखक अपनी बात रखते हैं।

दूसरा संपादित कहानी संग्रह है जिसे विन्सी क्वाद्रूश ने प्रस्तुत किया है। 'भुरग्यां परमल' अर्थात् बच्चों की खुशबू में बाल जगत के अनुरूप कहानियों को रखा गया है, जिसकी महक अलग ही रूप में कोंकणी बाल साहित्य को समृद्ध कर रही है।

XI कोंकणी डिजिटल साहित्य 2021

ऑडियो, वीडियो, पत्रकारिता, समूह माध्यम, जनसंचार, म्यूजिक एल्बम आदि...

ई–पुस्तक प्रकाशन भी कोंकणी भाषा में होने लगा है। 'सदाफुली' अर्थात् बारहमासी का प्रकाशन 16 मार्च, 2021 को हुआ। शिक्षा और पाठशाला साथ–साथ चलते हैं। प्राथमिक विद्यालय बच्चों के लिए बुनियादी तौर पर बहुत आवश्यक होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक, इस बात पर जोर देती है कि विद्यालयों का विकास करने में अध्यापक और अभिभावक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। 'चामुंडेश्वरी देवी कृपा कर' इस ऑडियो–वीडियो के सैट का लोकार्पण 09, अगस्त 2021 को किया गया। भक्ति गीतों के इस रूप को कोंकणी विश्व ने शुरू से ही सराहा है। गीतकार गिरीश आनंद बेणे का कहना है कि देवी की कृपा के कारण ही यह कार्य संपन्न हो पाया है। सौ. समीक्षा भोबे काकोडकार ने इसे गाया है। गिरीष बेणे ने इन गीतों को संगीत दिया है। सिंधूराज कामत के स्टूडियो में इसका ध्वनि मुद्रण हुआ है। तबले का साथ अंबेश तलवडकार का, पखवाज संघर्ष पालेकार, बंसी वादन सोनिक वेलिंगकार, झाँझ बजाने का कार्य वास्तव रिवणकार ने किया है। कोरस गायकों के रूप में युगा सांबारी और ध्रीति बेणे ने साथ दिया है। विडियो दिग्दर्शक संदीप रिवणकार है तथा वीडियोग्राफी विभव परब फिल्म्स की है।

पत्रकारिता में आत्मकथनात्मक पुस्तक का प्रकाशन 27 जुलाई, 2021 को हुआ। 'द एक्सिडेंटल जर्नालिस्ट' पुस्तक में लेखक वामन प्रभू ने पत्रकारिता के पचास सालों का इतिहास रखने की कोशिश की है। गोवा की पत्रकारिता में जो बदलाव आते गए हैं उनका लेखा–जोखा लेने का यत्न किया है लेखक गोवा के टी.वी. चैनल के संस्थापक और संपादक रह चुके होने के कारण पत्रकारिता के क्षेत्र में जो बदलाव आए हैं, उन्हें बयाँ करने में सफल हुए हैं।

XII कोंकणी व्याकरण

कोंकणी साहित्य के वर्ष 2021 में कोंकणी व्याकरण की पुस्तक का जिक्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। हस्तप्रत के रूप में व्याकरण की यह पुस्तक तकरीबन सौ साल तक पड़ी रही और 2021 में उसका प्रकाशन सफल हो सका।

इस पुस्तक का पूरा इतिहास कुछ इस प्रकार है– मौसिन्हो डि अटैडे, द प्रीस्ट, टीचर एंड राइटर (द नवहिंद टाइम्स, संडे, नवंबर 7, 2021. आर्टिकल बाई फ्रेडरिक नोरोंह)

अपनी बात बताते हैं कि उन्हें एक हस्तलिपि की जानकारी मिली थी जो गोवा की लायब्रेरी में थी, तो उन्होंने एक दूसरे प्रिस्ट– क्रिस्टो दी मेनेजीस की मदद ली। इन दिनों वे यू.के. में रहते

हैं। दोनों ने मिलकर मेग्नीफाइन ग्लास की मदद लेकर पूरी हस्तलिपि को संवारा। पूरे सात साल की जद्दोजहद के बाद सन् 2021 में वह पुस्तक प्रकाशन में आई! जिसके लेखक रहे मोनसिग्नोर डॉ. सेबास्तियाँव रोदोल्फो दाल्गादो फ्रेडरिक अपने लेख में लिखते हैं कि दाल्गादो को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था तो उन्होंने अपनी हस्तलिपि को गोवा की सेंट्रल लायब्रेरी को दान कर दिया। Ataide को अपना रिसर्च करते इस हस्तलिपि के बारे में पता चला तो उन्होंने और क्रिस्टो ने मिलकर उस पुस्तक का संपादन किया। मूल लेखक के रूप में दाल्गादो का नाम ऐसे ही रखा गया है। 'ग्रामर ऑफ कोंकणी लैंग्वेज' सौ साल बाद पुस्तक रूप में अब उपलब्ध है। प्रस्तुत पुस्तक में शब्द, वाक्य, स्वर, व्यंजन, रूपविज्ञान, भाषा शास्त्रीय रूप के बारे में जानकारी दी गई है। एक अलग ही अध्याय में कोंकणी भाषा की अनुनासिकता पर विस्तृत रूप से चिंतन किया गया है। इतना ही नहीं समाजशास्त्रीय भाषा अध्ययन पर भी प्रकाश डाला गया है। यहाँ पर एक सवाल उठ सकता है कि दालगाद ने जब व्याकरण की यह पुस्तक लिखी तब भाषा प्रयोग और आज, उसमें काफी बदलाव आ गए हैं तो उसका अध्ययन क्यों? जिसके जवाब में कहा जा सकता है कि भाषा का विकास प्रयोगात्मकता में होता है तो उस समय की भाषा प्रयोग का विकासात्मक रूप ही आज की कोंकणी भाषा में होगा, जिसका तुलनात्मक अध्ययन करने में भी तथा कोंकणी भाषा के विकासात्मक चरणों का, भाषाशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय अध्ययन भी हो पाएगा। सेबास्तियाँव रोदोल्फो दोल्गादो की मृत्यु को अप्रैल 2022 में सौ साल पूरे हो रहे हैं तब उनके योगदान को कोंकणी प्रेमी भूल नहीं सकते।

XIII उल्हास प्रभुदेसाय

वर्ष 2021 में गोवा के कोंकणी साहित्य में प्राध्यापक उल्हास प्रभुदेसाय ने अलग–अलग प्रकार की 15 पुस्तकों का प्रकाशन किया है।

इन पुस्तकों में पुर्तुगाली भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद करके प्राध्यापक उल्हास प्रभुदेसाय ने बहुत बड़ा कार्य किया है। पुर्तुगाली भाषा के जानकार अब कम लोग बचे हैं इससे अंग्रेजी अनुवाद के कारण कौमुनीदाद के कानूनों को समझने में आसानी होगी।

❑❑❑

7

गुजराती साहित्य

वर्षा सोलंकी

कोरोना महामारी के चलते लोगों का जीवन लगभग गत दो वर्षों से थम–सा गया था। इस महामारी ने सभी लोगों के जीवन को सभी तरह से प्रभावित किया। फिर भी किसी न किसी तरह साहित्य का सृजन होता रहा। इस महामारी से विश्व अभी उबर ही रहा था कि कोविड के नए वेरिएंट ने लोगों के मन में फिर से दहशत फैला दी। पर अब जनता ने सभी सावधानियों के साथ इस महामारी का दृढ़ता के साथ सामना करते हुए जीवन के लिए आवश्यक गतिविधियों को जारी रखा। अभी जीवन पूरी तरह से पटरी पर तो नहीं लौट पाया है लेकिन धीरे–धीरे रफ्तार अवश्य पकड़ रहा है। साहित्य के क्षेत्र में भी अपेक्षाकृत सुधार हुआ है। गुजरात की बात करें तो वर्ष 2021 में भी साहित्यकारों ने सभी विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है।

गुजराती साहित्य अपने आप में पर्याप्त रूप से समृद्ध और विस्तृत है। दिन–ब–दिन नवीन रचनाओं को लिखकर, प्रकाशित कर साहित्यकारों ने गुजराती साहित्य के संवर्धन में अपना योगदान दिया है। समय के साथ–साथ प्रतिवर्ष आ रही सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नए–नए आविष्कारों ने मनुष्य को भी उन्हें अपनाने अथवा उनके साथ चलने के लिए मजबूर कर दिया है। जहाँ एक ओर ई–बुक के माध्यम ने लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है वहीं पाठकों में पुस्तकों की माँग भी कम नहीं हुई है। जिन लोगों में पुस्तकें पढ़कर साहित्य का रसास्वादन करने की परंपरागत अभिरुचि है, उनमें पुस्तकों के प्रति आकर्षण अभी बचा हुआ है।

वर्ष 2021 में गुजराती साहित्य में नई–नई रचनाएँ पाठकों के सम्मुख आई हैं। गत वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी साहित्य की अनेक विधाओं में लेखकों ने अपनी कलम चलाई है। आलोच्य वर्ष में कई नवीन लेखक भी हमारे सामने आए हैं। इन सभी ने गुजराती साहित्य को नई सोच, नए विचार और नई दिशा देने का प्रयास किया है। पाठकों ने साहित्यकारों की इस नई सोच, नए विचारों और नई दिशाओं को न केवल पढ़ा, सराहा और अपनाया बल्कि उनसे आत्मसात् करते हुए दिखाई दिए। सोशल मीडिया और तकनीक के उभरते हुए बाजार के बावजूद लोग आज भी उपन्यास पढ़ना पसंद करते हैं। उपन्यासों की शृंखला में नवनीत सेवक के 'अनुराग', 'प्रणयतृषा', 'जाल' और 'त्रषित धरा' आदि उपन्यास इस वर्ष में आए हैं। नवनीत सेवक ने अनेक साहसी कथाएँ, बाल कथाएँ और रहस्यमय कथाओं के द्वारा ऐसे पाठकों की जिज्ञासा को शांत किया है जो सस्पेंस और थ्रिलर से संबंधित साहित्य पढ़ना पसंद करते हैं। हैरीपोटर जैसी साहसी बाल कथाएँ लिखकर उन्होंने बचहोन की

उत्सुकता का भी ख्याल रखा।

राघाव जी माधड़ गुजराती साहित्य में किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। उन्होंने इस वर्ष 'हुकम नी राणी' उपन्यास लिखा है। आधुनिक समाज व्यवस्था को अपने उपन्यासों का केंद्र बिंदु बनाने वाले माधड़ जी गुजराती साहित्य के विशिष्ट साहित्यकार हैं। दिव्य भाष्कर समाचार पत्र में माधड़ जी द्वारा लिखी हुई लघु कथाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। गुजरात की लोक भाषा में लिखी इन कहानियों में सामाजिक संदेश रहता है। माधड़ जी उपन्यास के अतिरिक्त निबंध और नाटक भी लिखते हैं।

गुजराती युवा लेखक 'मुझे पुस्तकों की सुगंध का नशा चढ़ता है' कहने वाले जिटेश दोंगा ने 'नॉर्थपोल' और 'धरामबाई नायक' उपन्यास लिखे हैं। इन उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने समाज के सामने नए विचार रखें हैं जो सभी को सोचने पर मजबूर करते हैं।

साहित्य अकादमी से पुरस्कृत गुजराती युवा साहित्यकार अनिल चावड़ा ने इस साल 'रंडीयर्स' नामक उपन्यास लिखा है। जिसमें उन्होंने जीवन को जीने के तरीके को अपनी विशिष्ट काव्यात्मक शैली में समझाया है। इस युवा साहित्यकार ने उपन्यास के अलावा ग़ज़ल और कविता भी लिखी हैं जो गुजराती पाठकों में अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं।

'स्वयंप्रभा' नामक उपन्यास लिखने वाले देवेंद्र पटेल गुजराती साहित्य के जाने माने लेखक हैं। साठ के दशक का चित्रण इन्होंने इस उपन्यास में किया है। 'गुजरात नी अस्मिता', 'लागजीना फूल', प्रीतना सुख–दुख', 'महानायक नरेंद्र मोदी', 'सद्गुण नी सोभा', 'प्रत्यूषा सुजनी शोध', और 'जीवन प्रभा' जैसे अनेक उपन्यासों की रचना की है। अपने प्रत्येक उपन्यास में देवेंद्र पाठक एक नवीन विषय को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। गुजरात के प्रतिष्ठित समाचार पत्र में वे सालों से लिखते आ रहे हैं।

'किसी ने स्पर्श न किए हों' जैसे विभिन्न और विशिष्ट विषयों को लेकर लिखने वाली लेखिका 'देवांगी भट्ट' ने इस साल 'स्वमेव भर्ता' नामक महिला केंद्रित उपन्यास लिखा है। यह उपन्यास सामाजिक व्यवस्था और प्रेम के तानों–बानों से बुनी हुई नारी प्रधान कथा पर आधारित है, जिसमें नायिका अपने अस्तित्व को बचाए रखने की कोशिश करती दिखाई देती है। प्रस्तुत उपन्यास में लीला नामक निर्भीक महिला अच्छे–बुरे का भेद भूलकर सामाजिक बंधनों से मुक्त होना चाहती हैं। इसके साथ–साथ गुजराती साहित्य में इस वर्ष निशात शाह का 'व्होटस चोर', शैला शाह का 'सामे किनारे' और ममता पटेल का 'धखतो सूरज' कुछ नए उपन्यास आए हैं।

कविता संग्रह में इस साल राजकुमार सेवक का 'स्व' नामक काव्य संग्रह आया है। इस काव्य संग्रह में कवि ने अपने जीवन के अनुभवों को कलमबद्ध किया है और 'स्व' को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने भीतर बसे अपने ही को पात्र बनाकर परमतत्व से जुड़ने की आकांक्षा की है।

साकेत शाह ने 'भींजावानी मजा' कविता संग्रह के माध्यम से प्रकृति के सौंदर्य को जीवन का एक आवश्यक अंग बनाकर मानव जीवन में निहित प्रकृति बोध को चित्रित किया है। प्रकृति के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमें उसके संरक्षण के प्रति सावधान रहने का संदेश कवि ने अपने इस काव्य संग्रह में दिया है। अन्य काव्य संग्रहों में धर्मेश भट्ट का 'अलख जग' प्रमुख है जिसमें मानव जीवन के जीने का ढंग, मनुष्य की विवशता, फैशन से भरा बाज़ारवाद और विज्ञापन की दुनिया में घुटता मनुष्य किस तरह अपने अस्तित्व को बचाए हुए है। जीवन की इन्हीं विडंबनाओं को कवि ने अपने इस काव्य संग्रह में उकेरा है। अनिल त्रिवेदी द्वारा लिखित 'वर्ण वर्णत्वम' नामक काव्य संग्रह भी इसी वर्ष आया है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में व्यंग्यात्मक शैली में जीवन की वास्तविकता दर्शाने का प्रयत्न किया है। यथार्थ और कृत्रिमता के भेद को उजागर करते हुए कवि ने जीवन और जगत की अवधारणाओं

को कविता के फलक पर लाने का प्रयत्न किया है।

डॉ. वर्षा सोलंकी का गुजराती कविता संग्रह 'मननी मिरात' भी 2021 में आया है। इस संकलन में संकलित रचनाएँ छंद मुक्त हैं। सभी कविताएँ कल्पना और यथार्थ से समन्वित भावनात्मक विचारों का गुलदस्ता है। कहीं पर प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण है तो कहीं पर सामाजिक कुरीतियों पर चोट करती हुई व्यंग्यात्मक प्रस्तुति है। कहीं पर नारी चेतना का उद्‌घाटन है तो कहीं विद्रोह करती हुई व्यंग्यात्मक प्रस्तुति है। कहीं पर नारी चेतना का उद्‌घाटन है तो कहीं विद्रोह करती हुई नारी के शौर्य की गाथा है। प्रेम, द्‌वंद्‌व और कुछ कर गुजरने की कामना लिए हुए इन कविताओं में नारी का सशक्त स्वर उभरा है। सभी कविताएँ पुरुष प्रधान इस समाज में आईना दिखाने का काम करती हैं। डॉ. वर्षा सोलंकी सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्‌ध विद्रोह करती हुई नारी का एक सशक्त स्वर है।

काव्य शृंखला में ही ललित वर्मा के हास्य कविता संग्रह 'षडज' तथा 'हँसे तेनु घर खसे' उल्लेखनीय हैं। इनमें सामाजिक रीति–रिवाजों, घर के सदस्यों के बीच होने वाली नोक–झोंक तथा आस–पास घटने वाली सामान्य दैनिक घटनाओं को हास्य एवं व्यंग्य का पुट देकर कविताओं की रचना की गई है। गुजराती साहित्य को अनेक भजन संग्रह, मुक्तक तथा ग़ज़ल संग्रह प्रदान करने वाले उद्‌यन ठक्कर ने इस साल 'हस्त धनून' तथा 'आमंत्रण' नामक दो काव्य संग्रह लिखे हैं। गुजराती साहित्य में उद्‌यन ठक्कर का अपना विशिष्ट स्थान है। ललित वर्मा का 'लालित्य' नाम से कविता संग्रह इसी साल आया है। इन कविताओं में प्राकृतिक सौंदर्य अध्यात्म का सजीव चित्रण है।

कहानी की बात की जाए तो डॉ. वर्षा सोलंकी द्‌वारा लिखित हिंदी कहानी संग्रह 'वृंदा' इस साल के उल्लेखनीय कहानी संग्रहों में है। इक्कीस कहानियों के इस संकलन में अधिकतर कहानियाँ सामाजिक बंधनों में दम तोड़ती और उससे विद्रोह करती हुई महिलाओं पर केंद्रित हैं। महिला सशक्तिकरण की आवाज को बल प्रदान करते हुए लेखिका को महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक रूप से शोषण बेचैन कर जाता है। परिस्थितियों के बंधनों में बँधी अपना सही मुकाम खोजती महिला की वेदना ही इन कहानियों का केंद्र बिंदु है।

डॉ. चंद्रकांत मेहता सुप्रसिद्‌ध एवं लोकप्रिय गुजराती साहित्यकार हैं। उनका कहानी संग्रह 'चहेरे–चहेरे कथा' इस साल प्रकाशित हुआ है। इन कहानियों में मानव–जीवन की व्यथा और संघर्ष का चित्रण है। कपूरिया द्‌वारा लिखित कहानी संग्रह 'जीवन रंग' इस वर्ष प्रकाशित होने वाले कहानी संग्रहों में से है। इन कहानियों में काल्पनिक पात्रों के माध्यम से जीवन के उतार–चढ़ाव को यथार्थ रूप में दर्शाने का प्रयत्न किया गया है। घनश्याम देसाई का कहानी संग्रह 'वात मेलों' में वर्तमान समय की चुनौतियों को उजागर करने का प्रयास किया गया है। सांसारिक जगत के सत्य और खोखलेपन को चित्रित करते हुए रमेश भोजक का कहानी संग्रह 'आपणों वार्ता वैभव' पठनीय है। शैला जगदीश शाह के कहानी संग्रह 'रे मन' और 'प्रथम प्रतिबिंब' में यथार्थ जीवन की चुनौतियों और उनसे रू–ब–रू होते हुए मानव जीवन की व्यथाओं का सजीव चित्रण है। लेखिका ने पारिवारिक उपेक्षाओं के चलते प्रतिभा का किस तरह दमन होता है। यह भी बताने का प्रयास किया है।

वनलता मेहता ने अपने कहानी संग्रह 'भीतरनी भीनाश' में मानवीय मूल्यों के अभाव में घुट रहे मानव जीवन को चित्रित किया है जिसमें मनुष्य अपने आप में अपनों की तलाश करता दिखता है। गीता त्रिवेदी द्‌वारा लिखित 'घेरायेल गगन' में कहानियों के माध्यम से सम–सामयिक सामाजिक जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। समाज से स्त्री–पुरुष संबंध, छल–कपट और स्वार्थ की जो स्थिति है उसी का वर्णन इन कहानियों के माध्यम से दिखाया गया है।

बच्चे आने वाले कल की और समाज की धरोहर हैं। इसके लिए बाल साहित्य का होना भी उतना ही आवश्यक है जितना अन्य साहित्य का। बाल साहित्य से बच्चों के मस्तिष्क का विकास होता है। गुजरात में बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा जाता है। इसमें बाल कहानियों का विशिष्ट स्थान है। इस क्षेत्र में मनसुख लाल उपाध्याय का 'रंगिलयानों रझड़वार' तथा 'किशोर कथानी केडीए' नामक बाल कहानी संग्रह उल्लेखनीय हैं। जिनमें बच्चों की रुचि और उत्साह के अनुरूप कहानियाँ संकलित की गई हैं। बच्चों को चारित्रिक विकास की ओर प्रेरित करती हुई गुलाबदास ब्रोकर का 'जीवन घड़तर ग्रंथावली' नामक बाल कहानी संग्रह भी इसी वर्ष प्रकाशित हुआ है। अरविंद नर्मदा शास्त्री का 'नवरंग वार्तामाला' नाम से बाल कहानी संग्रह आया है जिसमें बच्चों के मानसिक विकास को उभारती हुई कहानियों का संकलन है। इसी क्रम में वनलता मेहता का 'एकज टकोरे', डॉ. दीपक पटेल का 'गंगू गंगुनी जोड़ी' तथा 'श्रमजी वफाजी नी शाजी वातो', खोजा भाई पटेल का 'दादानी डंफास', डॉ. प्रतिबेन का 'जंगल लॉकडाउन', अमृतभाई बांटाइवाला का 'सुंदर मसाना नाटकों' नामक बाल कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

बाल साहित्य के क्षेत्र मे ंही नरवर पटेल का 'कुट निशाले भणवा बैठो' और 'संगीत रसिता शम्भु' नामक बाल वार्ता संग्रह आए हैं। सोकल चंद पटेल ने 'इत्ता–इत्ता पानी', नरेंद्र पंडया ने 'उँधा लटकता नगरमा', नवनीत सेवक ने 'टारझननो दिकरो कोरक', 'टारझन अने रत्नोनी मायाजाल' एवं 'टारझन वहेतिया ओनी दुनिया माँ', बाल कहानी संग्रह लिखे हैं।

उपन्यास, कविता, ग़ज़ल और कहानियों के साथ–साथ गुजराती साहित्य में निबंध भी पर्याप्त मात्रा में लिखे गए हैं। निबंधों की श्रृंखला में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर लिखा गया हेमराज शाह का 'आझा दीनों अमृत महोत्सव' महत्वपूर्ण है। जिसमें आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर भी युवाओं के अधूरे सपने, जन सामान्य की दम तोड़ती आशाएँ, संविधान में प्रदत्त अधिकारों तथा महिला–अधिकारों का उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त हेमराज शाह ने 'आत्मनिर्भरता', 'नारी निर्भय केवी रीते बनी राहें, 'कोरोना आफत ने अवसरमाँ पलटो' आदि निबंध लिखे हैं। सम–सामयिक विषयों पर ज्वलंत सामाजिक समस्याओं पर अपने मौलिक विचारों से अवगत कराने वाले हेमराज जी गुजरात के प्रतिष्ठित साहित्यकारों में से हैं। अन्य निबंध संग्रहों में सेजन पॉदा द्वारा लिखित 'एकलतानी बादबाकी अने एकांतनों सखालों' प्रमुख है जिसमें सेजल ने मनुष्य के एकाकीपन के बारे में लिखा है कि मनुष्य भीड़ में रहते हुए भी नितांत अकेला ही है। इसके अतिरिक्त मीता पटेल द्वारा लिखित 'लव यू जिंदगी आगले मिल' भी प्रमुख निबंधों में है। जिसमें जीवन का महत्व, जीने का तरीका तथा जीवन के उद्देश्य के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है।

अध्यात्म का भी जीवन में बहुत महत्व है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी गुजराती साहित्य पर्याप्त समृद्ध है। अध्यात्म तथा भक्ति के क्षेत्र में भी गुजराती साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया है। डॉ. कमाल पूँजाणी जो हिंदी और गुजराती के प्रसिद्ध विद्वान हैं, वे कविता, कहानी और आध्यात्मिक क्षेत्र में समान रूप से लिखते हैं। इस वर्ष उनके द्वारा भगवान दत्तात्रेय और राधाकृष्ण के ऊपर लिखी हुई रोचक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। जयशेट्टी ने अपनी पुस्तक 'संन्यासिनी जेम विचारो' में अपने आध्यात्मिक अनुभवों को साझा किया है। इसमें जयशेट्टी जी का कहना है कि मनुष्य को भगवान ने जितना दिया है उसमें ही उसे संतोष करना चाहिए। सिस्टर शिवानी की 'असीम आनंद तरफ' इसी वर्ष प्रकाशित पुस्तकों में से है। इसमें शिवानी कहती हैं कि आनंद की खोज में मनुष्य रात–दिन इधर–उधर दौड़ता फिरता है लेकिन असल आनंद मनुष्य के स्वयं के अंदर है। मनुष्य भौतिक सुख को ही असली आनंद मान लेता है। मोना शाह ने अपनी पुस्तक 'नवकार रास' में मनुष्य को साधना

की ओर प्रेरित करने का प्रयास किया है। भानुप्रसाद सुधार ने 'श्रीमद्भागवातार्क' में कर्म करने और फल की कामना न करने का उपदेश दिया है।

मोहन वैष्णव जी अपनी पुस्तक 'चेताना अने दुखोंने रूपांतरण' में कहते हैं कि मनुष्य जीवन में दुखों का आना स्वाभाविक है पर अपनी चेतना को प्रभु–स्मरण में लगाने से दुखों को कम करने की शक्ति प्राप्त होती है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में आनंदमूर्ति गुरु माँ का नाम अत्यंत श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उनकी 'ध्याननुं वास्तविक रूप', 'अंतस्थनी खोज', 'मनथी आझाद', 'रसधार प्रेमना पगथिया' तथा 'शमा भजने रूमी' आदि पुस्तकें आई हैं जो भक्ति भावना से ओत–प्रोत हैं। इसी क्रम में अमृत बाँटाईवाला की 'अंतरनाजना अजवाला' और 'चेतननी अमृतधारा' दो पुस्तकें आई हैं। गुणवंत बरवालिया ने 'सात्विक सहचिंतन' और 'विश्वकल्याणनी बाहे' तथा कृष्णदान गढवी ने 'जागती जोगमाया' लिखा है।

गुजराती साहित्य में इस वर्ष पर्याप्त नाटक भी लिखे गए हैं। गुजराती नाटकों का प्रारंभ सन् 1853 से माना जाता है। 1850 में गुजराती भाषा के प्रसिद्ध कवि दलपतराम ने 'लक्ष्मी' नामक प्रथम नाटक लिखा। वास्तव में यह नाटक 'पुलटस' नामक ग्रीक नाटक का अनुवाद था। गुजराती भाषा का प्रथम मौलिक नाटक 'गुलाब' था जो 1862 में नगीनदास मारफतिया द्वारा लिखा गया। समाज में गुजराती नाटकों की माँग धीरे–धीरे बढ़ती जा रही है। 2021 में नाट्य संग्रह लेखन के क्षेत्र में वनलता मेहता का नाम उल्लेखनीय है। इसी क्रम में प्रभुजी दोस द्वारा लिखित 'नारी प्रधान एकांकी नाटक' प्रमुख है। गोकल चंद पटेल ने 'इत्ता–इत्ता पानी' नाम से बाल नाटक लिखे हैं जो अत्यंत शिक्षाप्रद हैं।

भाषा और साहित्य के क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव के चलते संचार माध्यम में भी लेखन में लोगों की रुचि बढ़ रही है। दिनेश देसाई द्वारा लिखित 'टी. वी. न्यूज स्क्रिप्ट राइटिंग' पाठकों में काफी लोकप्रिय हुई है, जिसमें संचार माध्यम से संबंधित रोचक जानकारी दी गई है।

इस प्रकार गुजराती साहित्य में वर्ष 2021 में साहित्य की सभी विधाओं में पर्याप्त लेखन कार्य हुआ है।

❑❑❑

8

डोगरी साहित्य

ओम गोस्वामी

साहित्य का विषम वर्ष

वर्तमान समय में 'कोविड–19 और साहित्य' एक ऐसा विषय है, जिस पर हरेक सहृदय लेखक गंभीरता पूर्वक विचार करने को तैयार है, कारण कि जीवन के अन्य अंगों की तरह साहित्य–सृजन भी इससे बेहद प्रभावित हुआ है। कोविड–19 विषाणु की विकरालतावश जब जीवन की प्रायः प्रत्येक गतिविधि थम–सी गई थी, उस दशा में साहित्य क्षेत्र का अछूते रह पाना किसी भी हालत में संभव नहीं था।

यह आश्चर्य की बात है कि 'लॉकडाउन' की नज़रबंदी सदृश्य परिसीमा में बँध कर भी डोगरी की अधिकांश रचनात्मक क़लमों ने इस कठिनाई को सुअवसर में बदलने में कोई कोर–कसर नहीं रहने दी। उन्होंने नई–नई कृतियों का सृजन करने के अलावा अधूरी पड़ी पांडुलिपियों को मुकम्मल करने का भगीरथी प्रयास भी किया। परोक्ष में वरदान मुहावरे की तरह लेखकों के लिए दर्जनों नई पांडुलिपियों का लेखन भी संभव हो पाया।

कोविड–विषाणु के विषम–काल में पुस्तक प्रकाशन का कार्य कमोबेश जारी रह पाना लेखक–वर्ग की समर्पण भावना का द्योतक भी है। किंतु, यह तथ्य है कि प्रकाशित पुस्तकों के लोकार्पण समारोहों का आयोजन बाधित रहा तथा पुस्तकों का वितरण भी न हो पाया। इस दशा में अधिकांश पुस्तकें लेखकों के पास ही पड़ी रहीं। पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय जो पहले से गतिरोध का शिकार रहा है, इस विषमकाल में पूर्ण–विराम की दशा को प्राप्त हुआ। इसी कारण से डोगरी के लेखकों को अपनी पांडुलिपियाँ प्रकाशित करवाने के लिए स्वयं आगे आना पड़ा। विगत दो वर्षों में कुछ ऐसे उदाहरण भी सामने आए हैं जबकि किन्हीं लेखकों ने एक से लेकर दो दर्जन तक, अपनी भिन्न–भिन्न पुस्तकें प्रकाशित करवाई हैं। घाटे का सौदा करने वाली यह एक विहंगम स्थिति है। लेखक जब स्वयं अपनी रचनाओं का प्रकाशक हो जाए, तब स्तरहीन पांडुलिपियों के प्रकाशित होने की संभावना बढ़ जाती है।

इस वर्ष के आलेख में उन तमाम पुस्तकों को सम्मिलित किया गया है, जिनकी सूचना उपलब्ध हो पाई है। इसके बावजूद, कुछ पुस्तकों के छूट जाने का अंदेशा भी ज़रूर है। कुछेक पुस्तकें जो व्यावहारिक दृष्टि से तो प्रकाशित इसी समयावधि में हुई हैं, किंतु लेखकों ने पुरस्कार की पात्रता अर्जित करने हेतु उनमें प्रकाशन की तिथि एक–दो वर्ष पीछे की मुद्रित करवा दी, वे पुस्तकें हमारे परिचर्चा क्षेत्र से

स्वतः बाहर हो गई हैं। कुछ ऐसी पुस्तकें भी इस आलेख की परिसीमा में आने से रह गई हैं, जिनके प्रकाशित होने की सूचना तो मिली, किंतु प्रयासों के बावजूद वे हस्तगत न हो सकीं। ऐसी कुछ पुस्तकों में 'उड्डन खटोला' (चंचल भसीन) छंदमुक्त कविताओं का संग्रह है। 'चेंता' (दे. बं. डोगरा नूतन) नामक उपन्यास तथा 'पार' (वेदराही) शीर्षक कविता संग्रह भी इसी अवधि में प्रकाशित कहे जाते हैं।

कविता का वर्ष

वर्ष 2021 का ऐसा लेखक जिसकी सर्वाधिक रचनाएँ पुस्तकाकार में प्रकाशित हुईं, वे हैं ध्यान सिंह। दिसंबर–2021 के अंत तक उनकी दस डोगरी पुस्तकें छप चुकी थीं। दूरभाष पर लेखक द्वारा प्रदत्त सूचना के अनुसार, इस वर्ष उनकी मात्र पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित हुईं हैं। इसमें से सात तो मात्र काव्य–विधा की विभिन्न शैलियों पर केंद्रित हैं, यथा–

(i) सुर संगम (गीतडू संग्रह)
(ii) भाव–छुआले गीत सजाए (गीत संग्रह)
(iii) भाव–रस सुर–संगम (भाख)
(iv) दमखम (परंपरागत कविताएँ)
(v) भावें दी कीदड़ (हाईकु संग्रह)
(vi) कलापे दी रहोल (ग़ज़ल संग्रह)
(vii) भावें दी पारत–सारत (छंद परागा संग्रह)

इनमें से अधिकतर कविताओं के ऐसे प्रस्फोट हैं, जिन्हें गीतडू, गीत, भाख, हाइकु, ग़ज़ल तथा छंद–परागा शैलियों के आकार में प्रस्तुत किया गया है। 'गीतडू', 'भाख' तथा 'छंद परागा' डोगरी–काव्य की ऐसी प्राचीन शैलियाँ हैं जिनको आधार बनाकर बहुत से मध्ययुगीन कवियों ने अपनी रचनाओं का सृजन किया था, किंतु आधुनिक युग में पहुँचते–पहुँचते ये शैलियाँ लोक–वाङ्मय का अंग बन गईं। इसके बावजूद, बहुत से समर्थ कवियों ने इन विस्मृत–प्राय शैलियों को पुनजीर्वित करने के भगीरथ प्रयास किए हैं। कवि ध्यान सिंह द्वारा इन शैलियों को सृजन का वाहन बनाने का प्रयास सराहनीय है। डोगरी के पुराने कवि इन तीन विधाओं के अलावा ज्ञान–वर्धन एवं लोक–रंजन हेतु बुझारती कविताएँ भी लिखा करते थे। डोगरी में साहित्य प्रणयन का नया युग आरंभ होने पर इस भाषा में हिंदी, उर्दू के माध्यम से ग़ज़ल जैसी नई शैलियों का आगमन हुआ। नएपन के संग अन्य आधुनिक शैलियों को भी अपनाया गया। आधुनिकता के व्यामोह में परंपरागत विधा शैलियों को तिरस्कृत कर दिया गया। डोगरी में ये चारों शैलियाँ लोकवार्ता का अंग बनने से पूर्व रचनात्मक साहित्य के तौर पर सदियों तक पुष्पित–पल्लवित होती रही थीं।

बहरहाल, चर्चित वर्ष में ध्यान सिंह ने एक कहानी संग्रह 'कत्थें–तत्थें दी परचोल' तथा एक उपन्यास 'भुल्ल भलांदे चेत्ते' भी प्रकाशित करवाया है। उनकी दसवीं पुस्तक 'चक्करै उप्पर चक्कर ते नमां पौन' एक नाटक है।

वैचारिक मनियारी[1]

अस्सी रचनाओं के इस काव्य–संकलन में अठहत्तर कविताओं के अलावा दो गीत भी संकलित हैं। कवि इंद्रजीत केसर बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी हैं। उनकी लेखनी, कविता, कहानी, उपन्यास और बाल साहित्य जैसी विविध विधाओं में समान सहजता से चली है। इस लेखक की परिगणना उन विलक्षण लेखकों में की जाती है, जिनकी क़लम अविराम वर्षों–वर्ष चलती रही है। विगत अनेक वर्षों में प्रकाशित होने वाली कृतियों में प्रस्तुतीकरण का एक तारतम्य भी दिखलाई पड़ता है। उनकी प्रत्येक पुस्तक में उनके आध्यात्मिक गुरु संत बालक योगेश्वर दास जी महाराज की अनुकंपा का निवेदन अवश्य मौजूद रहता है। इसके साथ ही उनकी प्रत्येक पुस्तक अपने पिता अमरनाथ जी केसर (कटड़े वाले) को समर्पित रहती है।

प्रस्तुत कविता संग्रह में कवि के भाव–जगत की मनियारी भरी हुई है। 'मन की बात' में उसने आधुनिक जीवन की विडंबनाओं पर गहराई

से विचार किया है। राजनीतिक दाँव–पेंच के चलते, उसने सामाजिक यथार्थ को बदलते देखा है। परिवर्तन को समझने के प्रयास में कवि ने इस मनोभूमि और मनोदशा पर विस्तार से प्रकाश डाला है। अपनी रचनाओं में कवि निराशावाद के स्थान पर आशावाद की प्रस्थापना को उचित मानता है। 'मंजल', 'जींदे रौहना', 'मजबूरी', 'जिगरे आह्ले', 'किश्ती', 'तजर्बा' आदि श्रेष्ठ कविताएँ हैं। कवि इंद्रजीत केसर ने विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी के जौहर दिखलाकर, अपने प्रशंसकों में इस आशा का संचार करने का भरपूर प्रयास किया है कि निकट भविष्य में वह महाकाव्य जैसी अछूती विधा में अपने लेखकीय सामर्थ्य को अवश्य परखेगा।

गीतों के अंग–संग[2]

ज्ञानेश्वर सरल एवं निष्कपट भावों के एक मंजे हुए कवि हैं। जीवन के प्रति उनका सकारात्मक दृष्टिकोण उनकी अधिकतर काव्य–रचनाओं में प्रतिबिंबित होता दिखाई देता है। उन्हें एक ऐसा समर्पित साहित्य–साधक माना जाता है, जिसकी विभिन्न विधाओं में प्रतिवर्ष एक या दो पुस्तकें अवश्य प्रकाशित होती रही हैं।

दर्जनों काव्य–संग्रहों के प्रणेता ज्ञानेश्वर की सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'गीतों के अंग–संग' जीवन के बहुरंगी अनुभवों को प्रतिफलित करने का अद्भुत प्रयास है। 127 गीतों को चार विषय–वर्गों में विभाजित किया गया है। ये वर्ग हैं– संयोग, वियोग, वंदना एवं तलाश। कहना न होगा कि परंपरा से चले आते इन विषयों पर डोगरी ही नहीं, भारत की प्रायः प्रत्येक भाषा में गीति–काव्य की रचना की गई है। ज्ञानेश्वर ने पूर्व–कथित भावों को प्रस्तुत करने हेतु अपने सरल उद्गारों का सफल प्रयोग किया है। इन परंपरागत वर्गों पर डोगरी लोकगीतों में बहुतेरी सामग्री उपलब्ध है। यही कारण है कि ये गीत लोकगीतों और नवगीतों का मिश्रित प्रयोग जान पड़ते हैं। अपनी हंसवृत्ति के कारण कवि विभिन्न कवियों के श्रेष्ठ भावों–बिंबों का आश्रय लेकर अपने भाव–संसार की रचना करता दिखाई पड़ता है। यह संग्रह डोगरी गीति–काव्य की एक संग्रहणीय एवं स्मरणीय रचना है।

उत्साह के पंख[3]

नवोदित क़लम अरुण अश्कदेव की यह प्रथम कृति चौंतीस कविताओं का संग्रह है। अधिकांश कविताएँ छंदमुक्त कविता का नमूना पेश करती हैं। यह पुस्तक डोगरी कविता के वर्तमान परिदृश्य में आशा और उत्साह का संचार करती प्रतीत होती हैं हालाँकि अनेक कविताओं में भाव परिपक्वता की परिसीमा से परे दिखते हैं, तथापि यह प्रतीत होता है कि यह युवा कवि यदि कवि–कर्म को जारी रखता है तो निश्चय ही भविष्य में वह बेहतर कविताएँ दे पाएगा। डोगरी के प्रायः तमाम समालोचक प्रतिभावान लेखनियों का स्वागत करते आए हैं– इस कार्यविधि के कारण बहुत–सी अधकचरी रचनाओं को प्रोत्साहित किया जाता रहा है। किंतु, प्रतिभा की चमक छिपाए नहीं छिपती। प्रथम पुस्तक होने के कारण इसमें चली आई प्रूफ़ की अशुद्धियों को यदि दर–गुज़र कर दिया जाए तो 'फंघ हौंसले दे' इस युवा कवि की प्रतिभा के प्रति आश्वस्त करती है। वर्ष 2021 साहित्य–अकादमी युवा पुरस्कार की घोषणा इस पुस्तक के प्रति हमारे इस नज़रिए की पुष्टि करती प्रतीत होती है।

ज़िंदगी गाँवों की[4]

डोगरी–भाषी क्षेत्र के पर्वतीय उपनगर रामनगर को नंदन वन की संज्ञा दी गई है। मनोरम हिमालयी पर्वतमालाओं के तलहटी क्षेत्र में स्थित गाँवों में प्रकृति अपनी अनुपम छटा बिखेरती दिखाई देती है। इस पुस्तक में संकलित कविताओं के कवि ठाकरदास समठियाल इसी क्षेत्र के वासी होने के कारण अपनी जन्मभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत होकर अपने हृदय को पुस्तक के पृष्ठों पर उड़ेल देने में सफल रहे हैं। कविता विधा में तीन दशक पूर्व पग रखने से लेकर कविताओं का संग्रह लिखे

जाने तक कवि ने ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों पर अनिंद्य दृष्टिपात किया है। अपने कोमल मनोभावों को शब्दाकार देते हुए कवि बारंबार प्रकृति प्रेम के समक्ष नतमस्तक हो जाता है।

इस संग्रह में 43 कविताएँ संकलित हैं। इनके विषय में कवि का स्व–कथन है– "अन्य कविताएँ जीवन शैली के विविध बिंब प्रस्तुत करती हैं। कुछ कविताएँ सामाजिक बुराइयों को लेकर हैं तो कुछ वीर–रस, श्रृंगार–रस, भक्ति–रस से ओत–प्रोत हैं। कुछेक ऐसी हैं जो मैंने राष्ट्रीय पर्व मनाने के समय प्रेरक वातावरण से प्रेरित होकर स्कूलों में रहते हुए लिखी हैं। छुटपन के पश्चात् होश संभालने से लेकर आज तक, नौकरी के दौरान मैंने जो कुछ गाँवों में अनुभव किया है, उसे रचनाओं में शब्दबद्ध करने का संजीदा प्रयास किया है।" कवि समठियाल सामाजिक सरोकारों और सांस्कृतिक अनुभवों को भूला नहीं है। सहृदय कवि का यह योगदान डोगरी साहित्य में बहुमूल्य माना जाएगा। इसकी पूरी आशा है।

अनसिले भेंट–वस्त्र[5]

इस वर्ष मोहन सिंह की अलग प्रकार की कविताओं का संग्रह 'नौङने' शीर्षक से प्रकाश में आया है। विवाहानुष्ठान में कन्या–पक्ष की ओर से वर–पक्ष के तमाम संबंधियों को दहेज में दिए जाने वाले अनसिले भेंट–वस्त्रों को 'नौङने' कहा जाता है। संग्रह में चार लंबी कविताओं, यथा– 'ढोल दब्बी बजा', 'कर्ज़ा', 'कबूलनामा', 'ढोल बजाए ढोल' के अलावा परंपराश्रित कविताएँ भी बुनी हैं। 'मृगतृष्णा' मध्ययुगी कृष्णपंथी कवि मायादास की एतद्विषयक कविता से प्रभावित दिखाई पड़ती है।

कवि ने इस संग्रह में कुछ नए प्रयोग भी किए हैं। यथा दोहों को 'दोमुखे' नाम से तथा 'हाइकु' को 'छटप्पे' शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है। यह बताना प्रासंगिक होगा कि डोगरी में दोहा के लिए 'दोहड़ा' शब्द सदियों से प्रयोग में लाया जाता रहा है। इसलिए, दोहड़ा के स्थान पर 'दमुखा' शब्द जंचता नहीं है। पुस्तक का रसास्वादन बढ़ाने हेतु इसमें एक मुक्तक तथा ग़ज़लिया 'क़तअ' भी मौजूद हैं। डोगरी में 'क़तअ' को चमुखा कहा जाता है। इस चमुखे के नाम पर कवि ने त्रैमुखे का भी सृजन किया है। 'कुंडलियाँ' तथा 'खमसे' भी इस संग्रह के स्वरूप को अलग बनाते हैं। लगभग बारह छोटी कविताओं में कवि ने इस दौरान मानस–पटल पर उभरे विभिन्न सामाजिक–राजनीतिक विषयों तथा अनुभवों को पिरोया है। कविता के विभिन्न रूपों को एक संग्रह में प्रस्तुत करने का प्रयास सराहनीय है। कहीं–कहीं कवि ने सांस्कृतिक सरोकारों को भी अंतरंगता से छुआ है।

फालतू[6]

बासठ कविताओं के इस संग्रह में कवि चमन लाल 'चमन' ने अपने मनोभावों को रूपाकार दिया है। अति सादा शैली में प्रत्येक काव्य–रचना पाठक के हृदय पटल को छूती है। यह देखा गया है कि प्रायः प्रत्येक डोगरी शायर के रचनात्मक सफर में जो–जो विषय कवि–हृदय को प्रेरित करते रहे हैं, उन विषयों ने कवि चमन की क़लम को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया है। ऐसे कुछ विषय हैं– इश्क़, नारी, माँ, गरीब, हाली, समां, तांह्ग, दाज (दहेज), प्रीत, मालिन, लारे, आज़ादी, पेड़–पौधे, अभिलाषा (हीखी), सौंदर्य (शलैप्पा), ममता आदि। वस्तुतः आरंभिक कवि–जीवन में प्रायः प्रत्येक कवि का विषयगत साक्षात्कार इन्हीं पर्यावरण–संबद्ध विषयों से होता रहा है। इसीलिए, शब्दावली के फेरबदल से वही–वही भाव कवि–वर्ग की आरंभिक कविताओं में बुने जाते रहे हैं। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि नए कवि को यदि अपनी विशेष पहचान कायम करनी है तो उसे नए–नए स्वानुभूत विषयों को अपनी कविता में विस्तार देना होगा। इससे उसकी कविता में प्रामाणिकता के सुर उभर कर सामने आ पाएँगे।

बहरहाल, कवि चमन का इस विधा में योगदान उनके साहित्यिक यथार्थ का साक्ष्य प्रस्तुत करता है। इस पुस्तक से पूर्व उनका प्रथम संग्रह 'दूआ जन्म' शीर्षक के अंतर्गत

प्रकाश में आ चुका है। इतनी कम समयावधि में दूसरे संग्रह का प्रकाशित हो पाना, इस विधा के प्रति कवि की संजीदगी का परिचायक है। आशा की जा सकती है कि आने वाले वर्षों में वे और अधिक गंभीर, बढ़िया और स्तरीय काव्य पुस्तकों द्वारा डोगरी की कविता विधा में सकारात्मक योगदान दे पाएँगे।

मोती महल[7] बाल साहित्य

लगभग 110 कविताओं के इस संग्रह में बाल–पाठक की अभिरुचि के अनुरूप चयनित विषयों पर कविताएँ लिखी गई हैं पशु–पक्षी, बादल और पर्यावरण से संबद्ध विभिन्न विषयों पर कविताएँ उपलब्ध होती हैं। बाल–मन के लिए उपयोगी विषयों का चयन बेहद प्रेरक है। वीर–बहादुर सेनानियों का यशोगान करती अनेक कविताएँ उपलब्ध होती हैं। चंदामामा, नानी, रेल, मदारी, मेले, चर्खा आदि अनेक ऐसे विषय हैं, जिनके माध्यम से बाल साहित्य की परंपरा का निर्वहन किया गया है। अच्छा होता यदि प्रत्येक कविता को लेखिका चंचल शर्मा ने अलग शीर्षक दिया होता।

बाल साहित्य को यदि सचित्र छपवाया जाए, तो बाल–पाठक के समक्ष उसकी महत्ता बढ़ जाती है, क्योंकि तस्वीरों के प्रति बाल–मन का विशेष आकर्षण रहता है। इससे बाल–पाठक रचना के भावार्थ को भी सहजता से ग्रहण कर पाता है।

डोगरी कविताएँ, गीत[8]

बाल साहित्य की विधा में यह पुस्तक संभवतया इंदरजीत केसर का प्रथम योगदान है। इसमें प्रकाशित पच्चीस बाल–कविताओं की विशेषता यह है कि इनमें परंपरागत विषयों के अलावा, वर्तमान जीवन से संबद्ध विषयों पर भी सुचारू और मनोरंजक भाव–बोध मौजूद हैं। आज का बाल–मान 'फास्ट फूड', 'मोबाइल' जैसी चीज़ों से पूर्णतया परिचित है। इसलिए, इन पर लिखी पंक्तियाँ दिलचस्पी का सृजन करती हैं–

नूडल मोमो, बरगर, पीज़ा,
में निं खानियाँ एह्कियाँ चीज़ां।

मोबाइल के कुप्रभावों पर भाव व्यक्त करने के उपरांत कवि अंत में शिक्षा देता है–

लैना पवै तां मता नेई दिक्खेआं,
ताह्म्मी छड़ी विद्या दी गल्ल सिक्खेआं।

अर्थात्–मोबाइल यदि लेना ही पड़े तो उसे विद्या और ज्ञान के लिए प्रयोग में लाना।

बाल मनोविज्ञान को समझते हुए कवि ने बालावस्था के आस–पास के रिश्तों, पशु–पक्षियों तथा पर्यावरण विषयक विषयों पर बड़ी दक्षता से लेखनी चलाई है। 'हनुमान' और 'सरस्वती' की स्तुति में लिखित बाल–कविताएँ बेहद रोचक, सराहनीय एवं पठनीय हैं।

औपन्यासिक प्रयास डीडो डोगरा[9]

जम्मू के डोगरा लोक नायक 'मियां डीडो' के ऐतिहासिक किरदार पर लिखित उपन्यास है। सदियों से उपेक्षित इस लोक–नायक पर डोगरी के रचनाशील साहित्यकारों ने विशेष कुछ नहीं लिखा। महाराजा प्रताप सिंह के समकालीन पंजाबी लेखक ला. किरपा सागर ने इस विद्रोही चरित्र पर 'डीडो जम्वाल' शीर्षक से एक नाटक अवश्य लिखा था जो 1934 ई. में लाहौर से प्रकाशित हुआ।

मियां डीडो का जीवन चरित्र ऐसे उतार–चढ़ावों और सामाजिक–राजनीतिक उद्देश्यों से संबद्ध है कि उसका परिपाक एक औपन्यासिक कृति के रूप में बखूबी किया जा सकता है। इस बार लोक–नायक ने अपनी सीमित शक्ति के बावजूद पंजाब के सिख शासक महाराज रंजीत सिंह के शक्तिशाली साम्राज्य को ललकारते हुए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। उसका संघर्ष 'डुग्गर देस' की स्वतंत्रता की बहाली था। "राजा तू अपने पंजाब का राज्य संभाल और मेरे डोगरा देस से अपना साम्राज्य समेट ले।"

डीडो डोगरा के विषय में लिखते हुए यह कहना उचित लगता है कि ऐतिहासिक उपन्यास ऐसे नहीं लिखे जाते। ऐतिहासिक विषय और

घटनाक्रम यदि रचनात्मक शैली में न लिखा जाए तो मात्र शुष्क ब्यौरा बनकर रह जाता है। इस उपन्यास का आद्योपांत पारायण करने पर मात्र यह आभास होता है कि हमने उपन्यास नहीं, किसी नीरस इतिहास का पठन किया है। डुग्गर के इस महानायक का चरित्र–चित्रण प्रभावशाली रूप से होना वांछित था। इस चरित्र के कथानक में ऐसे बहुत से प्रसंग हैं, जिन्हें शानदार तरीके से औपन्यासिक उत्स प्रदान करना संभव था। उपन्यास को ऐसी सरल इतिवृत्तात्मक शैली में लिखा गया है कि यह विशेष प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाता। बहरहाल, लेखक मोहन सिंह की इस बात के लिए प्रशंसा की जा सकती है कि 'कोविड–19' के इस कठिन काल में उन्होंने दो पुस्तकें–एक कविता संग्रह और एक उपन्यास प्रकाशित करवाने का अध्यवसाय किया है।

नियतकालिक

लॉकडाऊन की स्थिति में संपर्क साधनों में उत्पन्न गतिरोध का सर्वाधिक नकारात्मक कुप्रभाव पत्रिकाओं के प्रकाशन और वितरण पर पड़ा। साहित्यिक पत्रिकाएँ एवं नियतकालिक विकासशील भाषाओं के उन्नयन में प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। डोगरी के अधिकांश नियतकालिक भी जड़ता का शिकार हुए हैं। इनमें से कुछेक की दशा और दिशा पर दृष्टिपात करना सामयिक होगा।

नमीं चेतना– साहित्यिक पत्रकारिता में विशेष स्थान प्राप्त इस पत्रिका का एक भी अंक इस वर्ष प्रकाशित नहीं हो पाया। पांडुलिपियाँ प्रेस में ही फँसी रहीं। डोगरी भाषा को समर्पित सर्वोच्च संस्था (डोगरी संस्था) का मुख्य–पत्र होने के बावजूद, इसके अंकों का प्रकाश में न आ पाना एक गंभीर स्थिति की ओर इंगित करता है। संस्था के आवश्यक कार्यों के संचालन हेतु वरिष्ठ सदस्य अपनी ओर से अनुदान दे कर इसे गतिमान रखे हुए हैं। यह उनके समर्पण को दर्शाता है। बहरहाल, यह तथ्य है कि चर्चित वर्ष में 'नमीं चेतना' का प्रकाशन रुका रहा। इस वर्ष संस्था की ओर से कोई पुस्तक भी प्रकाश में नहीं आ पाई।

अन्य नियतकालिक– इस वर्ष की विषम परिस्थितियों के वशीभूत 'डोगरी अनुसंधान' तथा 'सोच साधना' सरीखी निजी पत्रिकाएँ भी ठप्प पड़ी रहीं। यशपाल निर्मल के अनुसार 'सोच साधना' का दिसंबर–2021 अंक प्रकाशनाधीन है। इसे 'प्रेम कहानियाँ' शीर्षक से कथा विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है।

शीराज़ा डोगरी– मानवता पर घिरे कोविड–संकट के निराशापूर्ण वर्षों में कल्चरल अकादमी की पत्रिका 'शीराज़ा डोगरी' ने साहित्य–जगत को प्रकाशमान रखने में भरपूर भूमिका अदा की है। इस द्वैमासिक साहित्यिक पत्रिका के अंक न केवल समयानुसार प्रकाशित होते रहते हैं, बल्कि इनके सामयिक वितरण ने लेखक एवं पाठक–वर्ग में आशा का संचार भी किया है। इन विषम वर्षों में अकादमी के अध्यवसाय के अतिरिक्त इस पत्रिका के संपादक के संपादन–कार्य की सराहना भी अभीष्ट है। इसी व्यावसायिक दृष्टि के रहते शीराज़ा उत्तरोत्तर स्तर की बुलंदी को छूता गया है।

इस वर्ष का प्रथम अर्थात् पूर्णांक 265 (दिसंबर 20, जनवरी 21) रेडियाई नाटकों का विशेषांक है। इस अंक में नौ रेडियो नाटक प्रकाशित किए गए हैं, जिनमें जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबद्ध कथाओं को इस श्रोतीय विधा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

शीराज़ा डोगरी का पूर्णांक–266 (फरवरी–मार्च 2021) संस्मरण अंक के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस सद्प्रयास की जितनी सराहना की जाए कम है। पंद्रह आलेखों के संग्रहण से यह अंक अच्छा प्रयास बन पड़ा है। इनमें से लगभग छह आलेख यात्रा विषयक अनुभवों से संबद्ध हैं। इस अंक में कुछेक संस्मरण साहित्यिक दृष्टि से उच्च गुणवत्ता के हैं।

पूर्णांक–267 (अप्रैल–मई–2021) मिश्रित रचनाओं का आम अंक है। विविध विषयों पर

सम्मिलित लेखों के अतिरिक्त नाटक, कहानियाँ, कविताएँ और अन्य सामग्री भी संकलित है अपक्व भाव–भूमि और प्रस्तुति वाली कविताओं का साधारणत्व शीराज़ा के स्तर में समझौता करने के समान है। संपादक ने नई क़लम, बाल साहित्य, अनुवाद को विशेष स्थान देकर एक स्तुत्य कार्य किया है। सत्यपाल गढ़वालिया का साक्षात्कार इस अंक की विशेष उपलब्धि है। साक्षात्कारकर्ता यशपाल निर्मल ने सत्यपाल गढ़वालिया के साहित्यिक जीवन पर प्रचुर सामग्री पेश की है।

पूर्णांक 268 कविता, कहानी, आलेख आदि विधाओं पर केंद्रित हैं। इनमें नियमित स्तंभ यथा नई क़लम, बाल साहित्य, अनुवाद, पुस्तक समीक्षा को जारी रखने का सद्प्रयास भी दृष्टिगोचर होता है। प्रकाशित लेखों में 'डोगरी कविता में समाजी सरोकार' (सीताराम सपोलिया) एक ज्ञानवर्धक लेख है। 'आधुनिक डोगरी कहानी' शीर्षक लेख में लेखक अपनी विषय–वस्तु से न्याय करने में कमोबेश असफल रहा है।

पूर्णांक–270, दो अंकों के संयुक्तांक (अक्तूबर –नवंबर, दिसंबर–21, जनवरी–22) के रूप में प्रकाशित किया गया है। इसमें डोगरी में कार्यरत तमाम पीढ़ी के कथाकारों की कहानियों को प्रस्तुत करने का सद्प्रयास किया गया है। इस दृष्टि से यह कहानी विशेषांक डोगरी कहानी की वर्तमान स्थिति अर्थात् दशा और दिशा का सहज द्योतक है।

'साढ़ा साहित्य'[10]– शीर्षक से प्रकाशित नियतकालिक संकलन डोगरी नाट्य–साहित्य की एक विशेष उपलब्धि है। जम्मू–कश्मीर अकादमी द्वारा प्रकाशित इस वार्षिकी के चार अंकों को संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया गया है। पुस्तक का कलेवर बढ़ जाने से इसे दो खंडों में प्रस्तुत किया गया है। प्रथम खंड 272 और द्वितीय खंड 252 पृष्ठों का है। लब्ध–प्रतिष्ठ डोगरी साहित्यकारों के छह मंचीय नाटक प्रथम खंड में सम्मिलित किए गए हैं। ये छहों नाटककार अपनी अन्य विधाई कृतियों के लिए साहित्य–अकादमी पुरस्कार द्वारा सम्मानित किए जा चुके हैं। प्रमुख डोगरी साहित्यकार डोगरी–साहित्य के संवर्धन हेतु विविध विधाओं में सृजनात्मक योगदान देते आए हैं। प्रायः इसी कारणवश उन्हें बहुमुखी प्रतिभा का धनी माना जाता है।

प्रथम खंड (वर्ष 2020–2021) में वेद राही, नरसिंहदेव जम्वाल, ओम गोस्वामी, ध्यान सिंह, मोहन सिंह, शिव देव सुशील की नाट्य रचनाओं ने स्थान पाया है, जबकि द्वितीय खंड में सुधीर महाजन, जगदीप दूबे, रजनीश गुप्ता, सोहन वर्मा, सतीश शर्मा, राजेश्वर सिंह राजू तथा पी. एल. परिहार के नाटक प्रकाशित हुए हैं। यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि डोगरी भाषा के नए–पुराने नाटककारों ने जीवन की विविध दृश्यावलियों, जीवन के संयोगों तथा विसंगतियों के अलावा जीवन के कटु यथार्थ को अपनी रचनात्मक सामर्थ्य के बलबूते इन नाटकों में सफलता से उद्वेलित किया है। साढ़ा साहित्य के इन दो खंडों के माध्यम से तेरह मंचीय नाटकों का इस 'कोरोना काल' में प्रकाशित हो पाना सचमुच एक सकारात्मक उपलब्धि है।

समाहार

वर्ष 2021 के डोगरी साहित्य विषयक इस आलेख के समाहार में जो मुख्य बिंदु उभर कर सामने आते हैं, वे हैं–

(i) यह वर्ष मुख्यता कविता का वर्ष रहा है। कवि वर्ग ने कविता की विभिन्न शैलियों पर सराहनीय कार्य किया है। इससे कविता विधा के समृद्ध होने के पर्याप्त संकेत प्राप्त होते हैं।

(ii) कवि–वर्ग ने बाल साहित्य का महत्व भी पहचाना है। इस काव्य रूप में यद्यपि मात्र दो प्रयास सामने आते हैं, तथापि इनकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

(iii) चर्चित वर्ष में नाटक विधा में पर्याप्त कार्य हुआ दिखाई पड़ता है; जबकि गल्प विधा प्रायः अनदेखी का शिकार हुई दिखाई पड़ती है। हाँ, एकमात्र अपवाद उपन्यास (डीडो डोगरा) का प्रकाशन है। ऐसा पहली बार हुआ है कि इस

वर्ष एक भी कहानी संग्रह छपकर सामने नहीं आ पाया।

(iv) कोविड–19 महामारी चाहे साहित्य–सृजन की प्रक्रिया में अधिक गतिरोध उत्पन्न न कर पाई हो तो भी पुस्तक प्रकाशन, वितरण एवं लोकार्पण जैसे महत्वपूर्ण कार्यों की इससे बेहद हानि हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सोचें दी मनेआरी; जै माता प्रकाशन, जम्मू
2. गीतें दी र्‌होल : हाइब्रो पब्लिकेशंस, जम्मू (ज.क.)
3. फंघ हौंसलें दे; सर्वभाषा ट्रस्ट, उत्तम नगर, नई दिल्ली– 59
4. जीना ग्राएं दा; हाइब्रो पब्लिकेशंस, जम्मू।
5. नौङने; डुग्गर मंच, डोगरा हाल, जम्मू (ज.क.)
6. लुग्गा; हाइब्रो पब्लिकेशंस, जम्मू (ज.क)
7. मोती मैहल; हाइब्रो पब्लिकेशंस, जम्मू (ज.क.)
8. डोगरी बाल–कवतां गीत; जै माता प्रकाशन, जम्मू (ज.क.)
9. डीडो डोगरा; डुग्गर मंच, डोगरा हाल, जम्मू (ज.क.)
10. साढ़ा साहित्य : जे. एंड के. कल्चरल अकादमी, केनाल रोड, जम्मू (ज.क.)

❑❑❑

9

तमिल साहित्य

चिट्टि अन्नपूर्णा

तमिल भाषा और साहित्य का वैश्विक स्तर पर अपना महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा और संस्कृति की दृष्टि से तमिल भाषा और साहित्य की भारत में ही नहीं, अपितु विश्वभर में पहचान है। उसका साहित्य अत्यंत प्राचीन और विपुल भी है। प्रथम शती के आस–पास लिखा गया व्याकरणिक ग्रंथ तोल्काप्पियम से तमिल भाषा की गरिमा बढ़ी। दो हज़ार वर्ष पूर्व तिरुवल्लुवर द्वारा लिखित तिरुक्कुरल में तमिल समाज और संस्कृति के मजबूत पक्ष अविष्कृत हुए हैं। द्रविड़ संस्कृति और वैचारिकता के आईने के रूप में वह आज हमारे सामने खड़ी हुई है। तिरुवल्लुवर ने इस ग्रंथ में मानव जीवन के प्रमुख तीन पुरुषार्थों का प्रतिपादन किया है। उन्होंने धर्म, अर्थ और काम को व्यक्ति के जीवन के बुनियादी पुरुषार्थ बताते हुए यह निरूपित किया कि धर्म, अर्थ और काम का सही आचरण करने पर मुक्ति अपने आप मिल जाती है। तमिल संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाला संगम साहित्य का भी महत्व श्लघनीय है। ई.पू. तीसरी शताब्दी से आरंभ माना जानेवाला यह साहित्य तीन कालों में विभक्त किया गया है, जैसे प्रथम संगम साहित्य, दूसरा संगम साहित्य और तीसरा संगम साहित्य।

तमिल साहित्य के आरंभिक काल में अर्थात् संगम साहित्य के समय दक्षिण में वैदिक, बौद्ध और जैन धर्म खूब प्रचार में थे। चंद विद्वानों ने तिरुवल्लुवर पर जैन धर्म के प्रभाव को स्वीकार किया है। उत्तर भारत से आए इन तीनों धर्मों ने दक्षिण भारत के धार्मिक विचारों को प्रभावित किया। यह सुविदित है कि वाद, संप्रदाय आदि समय–समय पर समुंदर के तरंगों के समान आगे बढ़ते हैं और पीछे भी हटते रहते हैं। इतिहास इसका साक्षी है। हर समाज की तरह तमिल समाज भी कई वादों और संस्कृतियों को आत्मसात् करते हुए आगे बढ़ा है। इस्लाम और ईसाई धर्मों को भी यहाँ की जनता ने आह्वान किया। तमिल समाज अपने उदारवादी विचारों से भारत में ही नहीं विश्वभर के मानव समुदायों को प्रभावित करता आया है। उन पर अपनी गहरी छाप छोड़ता आया है। तमिल कई देशवासियों की मातृभाषा भी है। विदेशों में इसके बोलनेवालों की संख्या भी अधिक है। सिंगापुर, मलेशिया, मॉरिशस, श्रीलंका आदि कई देशों में तमिल भाषा–भाषी हैं और यहाँ भी तमिल साहित्य लिखा जा रहा है।

साहित्य सामाजिक जीवन की गतिविधियों को प्रभावित ही नहीं करता है, अपितु लोगों के चिंतन को गति भी देता है। तमिल समाज भी इसी प्रकार के समय परिवर्तन के साथ चंद विकसनशील तत्वों को भी आत्मसात् करते हुए आगे बढ़ा है।

21वीं सदी का तमिल साहित्य भले ही भूमंडलीकरण के प्रभाव में अवश्य आया हो, फिर भी नवीनता के साथ चंद प्राचीन परंपराओं, आचार–विचारों को पुनरावलोकन करते हुए विघटित मूल्यों को पुनः स्थापित करते हुए आगे बढ़ रहा है। 2021 का तमिल साहित्य व्यक्ति के वैयक्तिक जीवन पक्ष से लेकर पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि सभी पक्षों को नैतिकता के स्तर तक उतारकर जीवन मूल्यों के प्रति पाठकों को सजग करते हुए लिखा गया है। आज व्यक्ति, पारिवारिक संबंध, सामाजिक व्यवहार आदि सब कुछ भूमंडलीकरण के प्रभाव के गहरे चपेट में आए हैं। जीवन का ऐसा कोई पक्ष अछूता नहीं रहा गया, जो इस प्रभाव में नहीं आया हो। व्यक्ति की मूलभूत सोच में परिवर्तन आया है। पारिवारिक संबंध गहन रूप से प्रभावित हुए हैं। परिवार में प्रेम, आत्मीयता, त्याग, बलिदान आदि के स्थान पर ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ आदि का कहर दिखाई देता है। पारिवारिक व्यवस्था के प्रति लोगों की धारणा में भी बदलाव आया है। माता, पिता, संतान की समस्याएँ, पति–पत्नी की समस्याएँ, वृद्धों की समस्याएँ आदि ढेरों समस्याओं से समाज घिरा हुआ है। वैवाहिक संस्था में आस्था टूटती दिखाई देती है। दांपत्य जीवन में परस्पर आत्मीयता का अभाव दांपत्य जीवन के टूटने का कारण बन गया है। बंधन मुक्त जीवन की आकांक्षा रखनेवाले आज की युवा पीढ़ी के भविष्य पर प्रश्न चिह्न लग गया है। नारी जीवन में भी अपेक्षित सुधार दिखाई नहीं दे रहा है। वह भले ही पढ़ी–लिखी क्यों न रही हो, या नौकरीपेशा बनी हो, अपनी ताकत को समझने में अब भी पूरी तरह से सक्षम नहीं हो पाई। जब नारी खुद की सही पहचान करेगी और अपने स्वधर्म और सशक्ति से अवगत होगी, तभी समाज की उन्नति संभव होगी। खुद की ताकतों की पहचान ही नारी सफलता की कसौटी है। तमिल समाज के आधुनिक स्वरूप और उसमें आए उक्त सभी बदलावों को रेखांकित करते हुए चेतनायुक्त जीवन और साहित्य के मूल प्रयोजन की ओर 2021 तमिल साहित्य ने इंगित किया है।

कवयित्री मु. नावरसि भास्करन ने 'सिंतनैगल सिदरल' (चिंतन का बिखराव) काव्य संग्रह में प्यार भरी और सुसंस्कृत और सुसभ्य समाज के परिदृश्य को प्रस्तुत किया है। नावरसि भास्करन का यह काव्य संग्रह नारी में ही नहीं, पूरे समाज में ऊर्ज़ा भर देता है। इस काव्य संग्रह की कविताएँ पढ़नेवालों को सुकून देती हैं। इस कविता संग्रह में कुल 43 कविताएँ हैं। ये कविताएँ पाठक को स्वधर्म पालन और जीने के कौशल से परिचित कराती हैं। इनके पाठ से व्यक्ति में सुखमय जीवन जीने की आकांक्षा जागृत होती है। लेखिका की यह आस्था है कि धरती पर सुख और शांति का प्रसार नारी के उत्तम रूप से ही संभव होगा। नारी सशक्ति की सही–सही परिभाषा इनकी कविताओं में मिलती है। जितनी भी गंभीर स्थितियाँ आवें, तो भी पीठ न दिखाकर अपनी मंज़िल तक पहुँचनेवाली नारी के आत्मबल का बोध इनकी कविताओं से होता है। 'पेन्मै' (नारीत्व) कविता में कवयित्री एक आदर्श समाज की नारी के जिस स्वरूप की अपेक्षा करती है, उस रूप को उन्होंने इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

अन्बाल् पण्बाल अरिवाल्
तन्पाल् अनैवरयुम ईत्त
पेण्मैयप् पेट्रिट्रनाल
पेरुळकम् पेरुमे पेरुवगै।

अर्थात् प्रेम से, अच्छे संस्कारों से, गुणवती, शीलवती नारी सबको आकर्षित करती है। ऐसी नारी की प्रशंसा पूरा विश्व करता है। कवयित्री ने अपने सच्चरित्र से अपने समाज को उन्नत स्तर दिलाने वाली नारी के चित्रण के साथ–साथ, शिशु के जीवन में माता–पिता, गुरु, मित्र, स्नेह आदि का जो महत्व है, उसको भी निरूपित किया है। काव्य संकलन के अंत में उन्होंने नवभारत के निर्माण का संदेश देकर एक भव्य भारत के निर्माण की आकांक्षा व्यक्त की है। उन्होंने देश के प्रति नागरिक के कर्तव्यों से भी अवगत कराया है। वे सुंदर भारत का जो स्वप्न देख रही हैं, उस स्वप्न को साकार बनाना चाहती हैं। अपनी कविताओं के द्वारा कवयित्री ने पाठकों को भव्य जीवन का दिग्दर्शन कराया है। वे लिखती हैं कि–

इनिय पोळिलगलुडन्
इणक्कमान मनिदनेयं
ईडु इनैइल्ला कलाचारत्तुडन
पीडुनडैयिडुम पांगान
नमनाडु एन कनविले
इनियदु इनिदे ईडेरुम ननविले।।

अर्थात् मधुर वर्षा तुल्य मानवता, हमारे देश की अतुलनीय संस्कृति का सुंदर और शालीन रूप का मेरा जो सपना रहा वह साकार हो उठेगा।

युवा कवि शिप्र इलमुद्दीन कई वर्षों से तमिल साहित्य को अपनी कविताओं के द्वारा समृद्ध करते हुए आ रहे हैं। वर्ष 2021 में उनका प्रकाशित काव्य संग्रह है 'तुयर नील वेळि' (लंबा दुख)। अब तक उन्होंने लगभग 85 कविताएँ लिखी हैं। इनके इस काव्य संग्रह में कुल 13 कविताएँ हैं। 'मोळि पेयरप्पु' (भाषांतरण) कविता में कवि ने आँसू को हृदय की पीड़ा मिटानेवाली दवा बताया है। 'इलैप्पार ओरु नोडि' (आराम का एक पल) कविता में जलते दिल को ठंडी हवा लगने से होनेवाले सुकून की अभिव्यक्ति की। 'मोदल एदिरि' (पहला विरोधी) में मोबाइल के कारण अकेले पड़ते जा रहे युवा पीढ़ी का जीवन और विघटित हो रहे मानवीय संबंधों की ओर इशारा किया है। इनकी 'आरुदल तेडियवलाय' कविता भी मोबाइल फोन के दुष्परिणामों को अंकित करती है। 'वरै यरै' (परिभाषा) कविता में मानव के संबंधों की नई परिभाषा दी गई है। 'उन्न त्तायाग' (तुम्हारी माँ जैसी) कविता में मातृहृदय का चित्रण हुआ है। 'कोडि सुगम्' (करोड़ों सुख) में ऐसे जीवन दर्शन को बताया, जिससे व्यक्ति कभी भी अपने जीवन में अभाव की पीड़ा से पीड़ित न हो। 'मुरिवु' (टूट–फूट) कविता में दोस्ती के बनते बिगड़ते रूपों को चित्रित किया गया है। 'एन्नै सुमंदवळे' (मुझे ढोनेवाली) कविता में नई पीढ़ी और आज के युग में माता–पिता और संतान के रिश्तों में पड़ने वाली दरारों का दिग्दर्शन कराया है। 'कालावधि आगिड अण्बु' (पुराना होता प्रेम) में कवि शिप्र इलमुद्दीन ने जीवन में आत्माभिमान से जीने में जीवन की सार्थकता पर विचार किया है। 'एळुत्तु' (अक्षर) कविता में "सबके लिए आधार अक्षर है" बताते हुए अक्षर के महत्व को निरूपित किया है। 'मेलिदान पुन्नगै' (धीमी मुस्कान) में मुस्कान की ताकत को प्रतिपादित किया है। 'कनवे कलैंदुविडु' (स्वप्न भंग) में तत्व ज्ञान की ओर इशारा करते हुए बताया है कि "जो हुआ सो हुआ" समझकर आगे बढ़ने में ही जीवन का परमार्थ है।

प्रवीण (अलियास) मनोज भी आधुनिक काल के कवि हैं। वे इनफोसिस में अभियंता के रूप में कार्यरत हैं। 'कणविन पिरदि' (सपनों के पन्नें) वर्ष 2021 में लिखी गई काव्य रचना है। यह इनका प्रथम काव्य संग्रह है। इस कविता में विगत काल से लेकर अब तक हुई घटनाओं की प्रासंगिता को प्रस्तुत किया गया है। इनकी कविताओं में आशा, गरीबी, जीवन पाठ आदि के वर्णन के साथ–साथ हाइकू जैसी काव्य शैली भी है।

'कुयिल तोप्पिलिरिंदु ओरु कुरल' (कोयल वन से एक आवाज़) वर्ष 2021 काव्य संग्रह की कवयित्री हैं मंजुला गांधी 'मंजु'। इन्होंने कविताओं को पारंपरिक शैली में लिखा है। अप्रैल 2021 में प्रकाशित कवयित्री श्यामला राजशेखर के 'सोलै पूक्कल' (मरुभूमि के फूल) कविता संग्रह में 'करोना कुरल' (कोरोना की पुकार) और 'कादल पाक्कल' (प्रेम गीत) शीर्षक के अंतर्गत सौ से अधिक कुरल और वेण्बा छंद में कविताएँ लिखी गई हैं। इसी प्रकार वर्ष 2021 में तंगम भारती के '100 कविन्जरगल 100 कविदैगल', नंदकुमार के 'पाळवट्टम' और मु मुरुदेश के 'ओरु तुलित्तुयर' आदि काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

प्राचीन तमिल साहित्य की सबसे प्रसिद्ध विधा है एकल गीत। वर्ष 2021 में पेरुमाल मुरुगन के 'वानकुरुविइन् कूडु' एकल गीत का संग्रह प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में लेखक ने विभिन्न प्रसंगों में विभिन्न कवियों द्वारा लिखे गए काव्य गीतों को लिया है। इन गीतों में एक विशाल दुनिया का दिग्दर्शन कराया गया है। इन गीतों में राजाओं, कवियों, धर्मभीरु व्यक्ति को ही नहीं, विभिन्न वर्ग के लोगों को भी चित्रित किया गया है। तमिलनाडु की जीवन–शैली का वर्णन, लिखित

और बोलचाल दोनों भाषा रूपों का प्रयोग इस रचना की विशेषताएँ हैं। पाठक इसके अध्ययन से प्राचीन तमिल साहित्य से परिचित होंगें। 'काडुम चेडियुम', 'वानकुरुविइन् कूडु', 'सिवनानेन', 'अन्दगने नायगन', 'कारुलवुम कोंगु', 'पळमपडु पनैइन किळंगु', 'पिच्चैयुम पुरप्पाडु', 'कात्तान सत्तिरम', 'कुट्टि सुवरे वरुग', कुयिलोसयुम कामकलगमुम आदि गीत इस एकल गीत संग्रह में संकलित हैं।

तमिल काव्य का विषय जितना विस्तृत रहा है, उतना ही कथा साहित्य का भी रहा है। उपन्यास और कहानियों में जीवन के विविध पक्षों के चित्रण के साथ–साथ खोजपरक, गहरे चिंतन प्रधान विषयों को भी विषयवस्तु बनाया गया है। ति लक्ष्मीकांतन के द्वारा लिखा गया 'वन्नक्कुडै' (रंगीन छत्री) उपन्यास, एक गरीब व्यक्ति, जो छत्रियों की मरम्मत कर जिंदगी गुज़ारता है, के आत्माभिमानी व्यक्तित्व को कथावस्तु बनाकर लिखा गया है। आदमी भले ही गरीब क्यों न हो, सच्चाई, ईमानदारी, आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान से जीने में ही जीवन की सार्थकता रहती है। उसकी सच्चाई, ईमानदारी और आत्माभिमान उसमें आत्मबल प्रदान करते हैं। इस संदेश को उपन्यासकार ने इस उपन्यास के सिलुवै पात्र के माध्यम से दिया है। सिलुवै जो छतरी की मरम्मत करते हुए अपने जीवन का गुज़ारा करता है, उसकी पत्नी एक बेटे को जन्म देकर मर जाती है। वह खुद माँ बनकर बेटे की देखभाल करता रहता है। बेटे को अच्छी पढ़ाई देना चाहता है, लेकिन गरीबी के कारण उसकी इच्छा की पूर्ति नहीं हो पाती। गरीबी के बावजूद वह अपने आत्माभिमान को नहीं छोड़ता। गिरिजाघर के फॉदर सिलुवै के बच्चे को कुछ खाने–पीने और खेलने की चीज़ें देना चाहते हैं, तो सिलुवै इनका तिरस्कार बहुत ही नम्रता से करता है और वह खुद खरीदकर देने की बात कहता है। एक बार सिलुवै का बेटा मरम्मत के लिए आई रंगीन छतरी से खेलने की ज़िद करता है, तो सिलुवै उसे मना करता है। फॉदर क्रिसमस के अवसर पर रंगीन छतरी खरीदकर देना चाहता हैं, तो तब भी आत्माभिमानी सिलुवै कहता है कि "नहीं स्वामी। उसको मैं ही खरीदकर दूँगा। तभी मेरा मन खुश होगा।" (इल्लै सामी, नाने अवनुक्कु वांगि तरेन। अप्पदान एनक्कुम मनसु आरुम)। पत्नी जीवित रहते समय तक उसे खुशियाँ देती रही। वह अपना दांपत्य जीवन संतुष्टि से बिताता रहा। इसी बीच पत्नी की मृत्यु हो जाती है। पत्नी मरते हुए उसे एक बेटे को देकर जाती है। सिलुवै पत्नी के अभाव को विस्मृत कर बेटे के लिए जीने का इरादा करता है। उसे खुशी से रखना चाहता है। बच्चे की खुशी के लिए छतरी खरीदकर न दे सकने का दुःख उसे सताता ही रहता है। यह अपनी असमर्थता पर दुखी होता है। इस प्रकार गरीबी के कारण विडंबनात्मक जीवन जीने वाले सिलुवै जैसे लोगों की दुख भरी कहानी को लेखक ने कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। उपन्यासकार ने गरीबी के कारण खुशियों से वंचित होकर विडंबनात्मक जीवन जीने के बावजूद आत्माभिमान ही व्यक्ति का सही आभूषण मानकर जीनेवालों के प्रतिनिधि के रूप में सिलुवै के चरित्र को अंकित किया है।

इसी क्रम का और एक उपन्यास है 'यात्तिरै' (यात्रा)। इसके लेखक हैं आर.एन. जे.डी. कुरूस। इनको 'कोरक्कै' उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। यात्तिरै उपन्यास आध्यात्मिक खोज से संबंधित है। लेखक को कोविड़–19 काल में रामेश्वरम के अक्का मठ नामक गाँव में ठहरने का मौका मिला है। तब वहाँ के तटीय प्रदेश के पारंपरिक जीवन की जगह ईसाई मिशनरियों के धर्म प्रचार और धर्मांतरण से बदली जीवन शैली को लेकर उनके मन में कई प्रश्न उठते हैं। इन प्रश्नों ने उन्हें ईसाई धर्म, ईशू के ईश्वरत्व आदि विषयों पर गहरे चिंतन करने के लिए प्रेरित किया है। लेखक ने इसी क्रम में ईशू को एक सामान्य मानव बताया है। उन्होंने यह भी बताया है कि ईशू ने प्रेम और करुणा के द्वारा समाज का कल्याण करने का प्रयास किया था। ईशू ने यह कभी नहीं कहा था कि वे ईश्वर हैं। उन्होंने लोगों से इतना ही कहा था कि उनके संदेशों का आचरण करें। उनके आचरण ने ही उन्हें ईश्वर का दर्जा दिलाया। इस उपन्यास की कथा इसी खोज से आगे बढ़ती

है। इसकी कथावस्तु मानव में ईश्वर के प्रति विकसित आस्था और उसके मूल कारणों को खोजते हुए ईश्वर भी एक साधारण मानव होने की सच्चाई की ओर आगे बढ़ता है। इस उपन्यास के एक छोटे बालक में ईशू का अर्थ जानने की जिज्ञासा जागृत होती है। वह वृद्ध भी हो जाता है, फिर भी उसकी जिज्ञासा संतुष्ट नहीं होती। बच्चे से लेकर वृद्ध अवस्था तक ईश्वर की परिकल्पना की जो चिंतन यात्रा हुई, इसी के आधार पर यात्रा शीर्षक दिया गया है। लेखक ने इस उपन्यास में समुद्र तटीय लोगों की पारंपरिक जीवन शैली के प्रमाणों को सिद्ध करने का प्रयास किया है। उन्होंने ईसाई मिशनरियों के द्वारा पारंपरिक जीवन शैली मिटाए जाने की ओर भी इशारा किया है। इस उपन्यास में वृद्ध, पात्र जो बचपन में ईश्वर की खोज करता रहा, अंत में इस निर्णय पर पहुँचता है कि ''मुन्नोरगळै पुनितरगुलागवुं, एसुवै तन्नै पोंड्र एलिय मनिदनागवुं, सर्वेसुवरनागवुं अवन् इनन्गीगिरान्'' (वे अंत में इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि पूर्वज पवित्र हैं और ईशू अपने जैसे सामान्य मानव और सर्वेश्वर हैं।)

वर्ष 2021 में प्रकाशित 'कथीडरल' एक लघु उपन्यास है। इसके लेखक हैं थूयन। उपन्यासकार 19वीं सदी के अंग्रेजों के अधीन रहे, ऊटी पहाड़ी प्रदेश में एक गिरिजाघर में होने वाली एक रहस्यमय खोज को प्रधान विषय वस्तु बनाकर इस लघु उपन्यास का लेखन किया है। इसमें गिरिजाघर में होनेवाले रहस्यमय कार्यों की खोज को भी चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में राजनीति और राजनीतिक लोगों के द्वारा अपने अधिकार का दुरुपयोग करते हुए किए जाने वाले रहस्यात्मक कार्यकलापों को भी लेखक ने प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में एक नायिका और दो व्यक्ति हैं, जिनमें एक लड़की है, जो अपने बचपन के सपनों से वंचित होकर कन्यास्त्री बनकर रह जाती है और दूसरा व्यक्ति अपने जीवन को ही खो बैठता है। ये साथ मिलकर अधूरे भवन में अधूरी पुस्तक की खोज करते हैं। उनकी खोज चितन की चोरी करने वाले एक पाश्चात्य चिकित्सक को ढूँढ़ने की कोशिश है। यह जासूसी उपन्यास है, जो रोचक और मनोरंजक है।

इसी वर्ष में पो. करुणागरमूर्ति का 'वेयिल नीर' (धूप का पानी) उपन्यास संकलन प्रकाशित हुआ है। यह उन्हींके द्वारा लिखित पाँच लघु–उपन्यासों का संकलन है, जो इस प्रकार हैं 'सूर्यनिलिरुन्दु वन्दवरगल' (सूरज से आए हुए), 'पच्चैत्तेवदैयिन कोलुसुगल' (हरी परी की पायल), 'वित्तगन' (प्रतिभावान), 'वेयिल नीर' (धूप का पानी), पिरगु मळै पैयददु (वर्षा बाद में हुई) और 'कोट्टुतनै' हैं। इस वर्ष के अन्य प्रसिद्ध उपन्यास हैं– आर शिवकुमार का 'तरुनिळल', ना. पार्थसारथी का 'तुलसी माडम', राजम् कृष्णन का 'करीप्पू मणिगल' और रमणि चन्दिरन का 'पू मगल वन्दाल' आदि।

वर्ष 2021 में कथाकार वण्णनिलवन् का कहानी संग्रह 'इरन्डु उलगंगल' प्रकाशित हुआ है। इस कथा संग्रह में लेखक ने यह बताया है कि समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनाचार आदि का सामना करना है, तो हर एक व्यक्ति में आत्मबल की आवश्यकता है। आधुनिक समाज की भ्रष्ट व्यवस्था का विरोध करने के लिए हर–एक व्यक्ति को चेतना युक्त होना चाहिए। भ्रष्टाचारियों, अत्याचारियों के द्वारा किए जानेवाले भ्रष्ट कर्मों से हिम्मत से लड़ने के लिए आवश्यक आत्मशक्ति पर उन्होंने ज़ोर दिया है। जो व्यक्ति आत्मबल से वंचित रहता है, वह व्यक्ति बुरी ताकतों के प्रभाव में आकर सर्वस्व खो बैठता है। व्यक्ति को समाज में सच्चाई की स्थापना करनी है और संघर्ष करना है, तो आत्मबल को बढ़ाना चाहिए। इन कहानियों में लेखक ने सामान्य पात्रों का चयन कर, उनके माध्यम से बुराई के साथ संघर्ष करते हुए चित्रित किया है। इस कहानी संग्रह को पढ़ने के बाद हर व्यक्ति में समाज के साथ संघर्ष करने का आत्मबल प्राप्त होता है। तमिल के गद्य साहित्य में ये प्रेरणादायी रचनाएँ हैं।

'विरुन्दु' कहानी संग्रह के लेखक हैं के. एन. सेंथिल। इस कहानी संग्रह में उन्होंने रक्त संबंधों में जो आत्मीयता का चित्रण किया है। इन्होंने पात्रों के ज़रिए बहुत कम शब्दों में रक्त संबंधों के

आत्मीय व्यवहार को चित्रित किया है। आगे इन कहानियों में उन्होंने युवाओं की चारित्रिक पवित्रता, परिवार में नारियों के द्वारा झेली गई पीड़ाएँ और उनकी वर्तमान काल की पीड़ा, पुरुषों की आंतरिक और बाह्य परेशानियाँ, रोगग्रस्त वृद्धों का अकेलापन, अधिकार के दबाव में दबने वाले साधारण छात्रों और उनकी यौन–इच्छाएँ और सामाजिक मर्यादाओं का अतिक्रमण आदि का मार्मिक चित्रण भी किया गया है।

कोविड–19 का प्रभाव साहित्य प्रकाशन पर भी पड़ा है। वर्ष 2020 में शुरू हुई यह समस्या अब भी चल रही हैं। इसका प्रभाव देश के नहीं विश्व के सभी देशों के साहित्यकारों पर पड़ा। फिर भी चंद साहित्यकारों ने ऑनलाइन माध्यम अपनाकर साहित्य कार्य जारी रखे हैं। इसी सिलसिले में तमिलनाडु की प्रसिद्ध पत्र–पत्रिकाओं का ऑनलाइन प्रकाशन होने लगा। इसके चलते 'तिन्नै' जो तमिल की प्रथम ई–पत्रिका है, जो 9 मई, 2021 में निकली है। इस पत्रिका में 'तोट्रम' (रूप) कहानी प्रकाशित हुई। लेखिका कौशल्या रंगनाथ ने आज के यांत्रिक जीवन में काम के पीछे दौड़ते–दौड़ते अपने सहज व्यवहार तक को भूलनेवाले व्यक्ति का चित्रण किया है। तनावग्रस्त जीवन जीनेवाले आधुनिक व्यक्ति की आँखों के सामने जो गुजरता है, वह उसे ही यथार्थ मानकर चल रहा है। लेकिन, उसके पीछे की सच्चाई को जानने और सोचने तक की स्थिर बुद्धि का उसमें अभाव है। यही इस कहानी का संदेश है।

'विलंगु मनम्' (पशु बुद्धि) ऑनलाइन पत्रिका तिन्नै 8 जून, 2021 में प्रकाशित हुई कहानी है। इसके लेखक हैं के.एस. सुधाकर। इस कहानी में व्यक्ति के अंदर छिपे रहनेवाले मृगत्व को लेखक ने दर्शाया है। इस कहानी की नायिका अनुजा विवाह के दस साल बाद, तीन बच्चों और पति को छोड़कर जाने का निर्णय लेती है। यही विषय वह अपने पति के दोस्त से ज़ाहिर करती है, तो पहले से ही नारी के प्रति हीन भाव रखनेवाला पुरुष का स्वभाव, अनुजा की बातों से और प्रेरित हो जाता है। वह उसके साथ सबके सामने यह कहते हुए बदतमीज़ी करता है कि ''अप्पो एन्न पुडिचिइरुक्का! इदिलै ओण्डु कुडुंग पार्पोम।'' (तब मैं पसन्द आया क्या? चलो, मजा उठायेंगे।) इस कहानी के माध्यम से लेखक ने पुरुष के लंपट स्वभाव को और नारी को अबला मानकर चलने की प्रवृत्ति को दर्शाया है।

लेखक जननेसन की 'कन्नीर पडै' (आँसू की सेना) जनवरी 2021 में प्रकाशित हुई कहानी है, जो कलाबाज़ी के सहारे जीवन गुज़ारने वाले समुदाय के निस्सहाय और विडंबनात्मक जीवन का चित्रण करती है। इस कहानी में कलाबाज़ी करने वाला व्यक्ति अमीर व्यक्ति की कार के द्वारा कुचला जाता है, तो उस समुदाय के लोग न्याय के लिए हड़ताल करने बैठ जाते हैं। फिर भी अमीर अपराधी के पक्ष में रहनेवाली न्याय व्यवस्था इनके दुख को नहीं समझती। कलाबाजी करनेवालों का समुदाय न्यायाधीश के घर के सामने हड़ताल करते हुए बैठ जाता है। न्यायाधीश बाहर इन लोगों को देखने के बाद अपने बचपन को याद करते हुए सोचता है कि वह बचपन में ऐसी कलाबाज़ी देखकर कितना खुश होता था। ऐसे लोगों की दयनीय स्थिति पर पिघलकर न्यायाधीश उन्हें न्याय दिलवाने का आश्वासन देकर भेजता है। इस प्रकार गरीब लोगों के प्रति अमीर लोगों व न्यायलयों द्वारा भेद–भाव बरतने की विडंबनात्मक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

लेखक जननेसन का कथा सग्रह हैं 'कारणं अरिगिलार' (कारण नहीं मालूम)। इसकी कहानियाँ मध्यवर्गीय मानव के जीवन को चित्रित करती हैं। कहानीकार इस संग्रह के माध्यम से यह बताना चाहता है कि आज मानव समुदाय के विकृत होते जाने के कारण मानवता नष्ट हो रही है। उनकी सभी कहानियाँ पाठक को चिंतन–मंथन के लिए प्रेरित करती हैं। 14 अक्तूबर, 2021 में विगडन पत्रिका में प्रकाशित एस. रामकृष्णन की कहानी 'इरंडु किळवरगल' (दो वृद्ध) 75 वर्ष के वृद्ध–विधुर के जीवन की गाथा है। इनकी संतान में से एक लड़की अमरीका में रहती है और लड़का मुंबई में रहता है। वह वृद्ध दुर्घटना का शिकार होने से

नहीं अकेले जीवन से परेशान होता है। अपने अकेले जीवन की पीड़ा उन्हें बहुत सताती है। उनके सपने में बार–बार गांधी जी आते रहते हैं। वे सोचते रहते हैं कि 70 वर्ष में गांधी जी कितनों को प्रेरित करते रहे। इस चिंतन से खुद प्रेरणा पाना चाहते हैं। लेकिन वे असमर्थ होते हैं। दिल्ली में गांधी जी की समाधि से वापस लौटते समय वहाँ की पुस्तक की दुकान में 'कबीर सोलगिरान' पुस्तक को देखते हैं और कबीर के दोहे को पढ़ते हैं। उस दोहा का यह अर्थ रहा कि एक चींटी, जो चावल ले जाती रहती है, लेकिन बीच में उसे दाल मिलती है, तो उसे भी साथ ले जाना चाहती है। वह वृद्ध व्यक्ति चींटी की जीवन लालसा पर आश्वस्थ होकर जीवन को आनंदमय बनाना चाहते हैं। लेकिन, वह अपने लंगड़ेपन के कारण फिर से चिंतामग्न होकर बैठ जाते हैं। उन्हें लंगड़ेपन के कारण जीवन से हार जाने का अनुभव होता है।। इस कहानी में बदले आर्थिक परिवेश से अकेले पड़ते जा रहे वृद्ध लोगों के विडंबनात्मक जीवन पर प्रकाश डाला है।

जयमोहन की कहानी 'कोदि' (मार्च 2021)को www.jeyamohan.in में प्रकाशित हुई। 'कोदि' (नज़र लगना) में आदिवासी लोगों के अंधविश्वास पर विचार किया गया है। नेट्टांग्य गाँव के पहाड़ी क्षेत्र में निर्मित गिरिजाघर का फादर तांत्रिक कर्म करते हुए अंधविश्वासों को फैलाता है। इस कहानी में आदिवासी की बस्ती में अंग्रेज़ों के द्वारा गिरिजाघर का निर्माण करना और वह जनता की सेवा के लिए अस्पताल का निर्माण करना आदि के बारे में बताया है। 'निरैवेली', 'तिरै', 'सिट्टेरुम्बु', 'वलम्', 'यट्चन', 'पडैयल' आदि 25 कहानियों को आपने अपने वेबसाइट में प्रकाशित किया है।

इ.रा. वैक्कटाचलपति ने पत्रात्मक शैली में 'वा.ऊ.सी. युम गांधी युमः 347 रुपाय 12 अना' ग्रंथ लिखा है। इसमें गांधी जी और वा.ऊ.सी. के आपसी पत्राचार का विवरण है। यह ग्रन्थ वा.ऊ.सी. द्वारा लिखे गए आठ और गांधी जी द्वारा लिखे गए ग्यारह पत्रों का संकलन हैं। इस पत्राचार से हमें यह भी ज्ञात होता है कि जब वा.ऊ.सी. जेल गए थे तब गांधी जी सहित दक्षिण अफ्रिका के लोगों ने उनकी आर्थिक सहायता की थी। इस ग्रंथ में हमें वा.ऊ.सी. के पारिवारिक सबंधों का भी परिचय मिलता है। इनकी पत्नी मिनाक्षी अम्मा के अनोखे व्यक्तित्व के बारे में भी बताया गया है।

इस वर्ष विदेशी और क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों का तमिल भाषा में अनुवाद भी हुआ है। लेखक मार्टिन 'ओ' केन द्वारा लिखित ऐरिश उपन्यास फ्यूऑल फ्यून (Fuifoll Fuine, 1970) है। इस उपन्यास को अंग्रेजी भाषा में अनूदित किया गया है। इसके अनुवादक रहे हैं – आलन टिट्ली। इन्होंने 'द ड्रेग्स ऑफ द डे' (The Dregs of the Day, 2019) के नाम से अनूदित किया था। तमिल में इसका वर्ष 2021 में लेखक आर सिवकुमार ने 'अन्द नालिन कसडुगल' के नाम से अनुवाद किया। इस लघु उपन्यास की कथावस्तु में दो दिन की कालावधि में एक व्यक्ति की समस्याओं का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास के नायक को लेखक ने दुख देने वाले संबंधों और शत्रु समुदाय का सामना करते हुए चित्रण किया है। उसके पास पत्नी के शव को दफ़नाने के लिए भी पैसे नहीं होते हैं और पैसे जुटाने में अकेले सड़क पर भटकता ही रहता है। आखिर में वह समाज से विरक्त होकर आध्यात्मिक साधना में अपने आपको समर्पित करता है और घर नहीं लौटता। 'किरुक्की' कहानी संग्रह के रचनाकार हैं इहसान अब्दुल कुत्तूस। इसका तमिल भाषा में अ ज़ाकिर हुसैन ने अनुवाद किया है। यह कहानी संग्रह, हमें अरब–संस्कृति से परिचय कराता है। यह अरब देशों पर पड़े आधुनिक संस्कृति के प्रभाव को रेखांकित करता है। अरब देश आधुनिक सभ्यता से प्रभावित हैं या नहीं – इस सवाल का जवाब हमें इस कहानी संग्रह में मिलता है। इस कहानी संग्रह में 26 कहानियां हैं। 'रोट्टिपोडि कडै' (रोटी की दुकान) कहानी में एक पालस्तीन शरणार्थी की पीड़ा का चित्रण हुआ है। 'डेय' कहानी में पारिवारिक जिम्मेदारियों से घिरे हुए युवा, प्रेमी–प्रेमिका के आपसी संबंधों का चित्रण हुआ है। 'मगिळ्च्च' (खुशी) कहानी में शंका के कारण बरबाद होने वाले दंपतियों के दांपत्य जीवन

का चित्रण हुआ है। 'मदम' (धर्म) कहानी में विधर्मी विवाह करने से होने वाली समस्याओं का चित्रण है। इसी कहानी संग्रह की और एक कहानी 'निनैवुगलिन वीडु' की कथावस्तु विधुर युवा और विधवा युवती के पुनर्विवाह को लेकर चलती है। इस प्रकार लेखक ने परिवार और समाज में व्यक्ति के विभिन्न स्वरूपों को इन कहानियों में चित्रित किया है।

कोविड–19 के चलते कई रचनाकारों ने कई रचनाएँ इस अवधि में लिखी थीं। फिर भी प्रतिबंधों के कारण उन्हें छापने में समय लगा है। परिणाम स्वरूप कई रचनाकारों ने 2022 में उनका प्रकाशन किया है। प्रस्तुत आलेख में 2021 में जो प्रकाशित हैं, उन्हीं रचनाओं का जिक्र किया गया है।

❑❑❑

10

तेलुगु साहित्य

गुर्रमकोंडा नीरजा

ध्यातव्य है कि तेलुगु साहित्य में कई दशकों से विमर्श आधारित साहित्य का सृजन हो रहा है। आरुद्रा, श्रीश्री, दशरथी, सिनारे आदि अनेक लब्धप्रतिष्ठ कवियों ने तेलुगु कविता क्षेत्र को समृद्ध किया। एन. गोपि लगातार छह दशकों से इस क्षेत्र को समृद्ध कर रहे हैं। तेलुगु में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, माइनॉरिटी विमर्श, हरित विमर्श और वृद्धावस्था विमर्श की कविताओं को देखा जा सकता है। तेलुगु के कवि प्रयोगशील हैं। हर वस्तु को कविता के रूप में बदल देते हैं। अश्रु भी कविता है और सागर की तरंगें भी। रिश्ते–नाते भी और जीवन के अनुभव तो हैं ही। अस्तु। इस वर्ष की तेलुगु पुस्तकों का सर्वेक्षण करने पर स्पष्ट होता है कि कविता संग्रहों की संख्या अधिक है।

'निजम' नाम से विख्यात पत्रकार का वास्तविक नाम है गारा श्रीराममूर्ति। वे अपने जीवन के अनुभवों को पत्रकारिता के साथ–साथ साहित्य के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। 'अललु (तरंग)' शीर्षक इस पुस्तक में सम्मिलित कविताओं की मुख्य वस्तु प्रकृति है। हरित विमर्श की दृष्टि से ये कविताएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वी. आर. विद्यार्थी ने 'दृश्यम नुंडि दृश्यानिकी' (दृश्य से दृश्य तक) शीर्षक कविता संग्रह में अपनी अनुभूतियों और अनुभवों को ही काव्य के रूप में अभिव्यक्त किया है। इनके अतिरिक्त भानुश्री कोतवाल (नान्ना –पिता), बी. शशिकुमार (गुंडे सव्वडि – हृदय गति), डॉ. के. दिवाकराचारी (मनुषुलमै ब्रतकाली – मनुष्य बनकर जीना है), एस. वी. कृष्णजयंती (मरीचिका – मृगतृष्णा), एस. वी. कृष्ण (मुख चित्रम–मुख पृष्ठ) आदि की कविताएँ उल्लेखनीय हैं।

तेलुगु साहित्यकारों की रुचि पहले से ही कविता में रही, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वे किसी और विधा को नहीं अपनाते। कथा साहित्य, निबंध और आत्मकथा लेखन को भी देखा जा सकता है। अट्टाडा अप्पलनायुडु कृत उपन्यास 'बहुला' (बाहुल्य) की कथा–वस्तु ऐतिहासिक है। इस उपन्यास में पाँच दशकों में घटित उत्तर आंध्र प्रदेश की ऐतिहासिक घटनाओं को देखा जा सकता है। इसमें उपन्यासकार ने यथार्थ के साथ कल्पना का समावेश करके कथाक्रम को रोचक ढंग से आगे बढ़ाया है। इसमें एक ओर जमींदारी प्रथा है, तो दूसरी ओर वैश्वीकरण का आयाम। श्रीकाकुलम जिला और गंगुवाड़ा ग्राम के परिवारों के माध्यम से उपन्यासकार ने नक्सलवादी आंदोलन को भी रेखांकित किया है। नारायण, बलराम, कनकमनायुडु, राधेय, सत्यकाम, बंगारम्मा जैसे पात्रों के माध्यम से लेखक ने उत्तर आंध्र की संस्कृति को बखूबी दर्शाया है। यह उपन्यास उत्तर आंध्र की आंचलिक भाषा का भी प्रामाणिक दस्तावेज है।

डॉ. वंकायलपाटी रामकृष्ण ने एक धीरोदात्त दलित महिला की कहानी को 'मँगी' शीर्षक उपन्यास में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

पद्मावती रामभक्त के कहानी संग्रह 'कुरिसी अलसिन आकाशम' (बरस कर थका हुआ आकाश) में आज के समय में बिखर रहे मानवीय संबंधों को देखा जा सकता है। मूल्यों का विघटन हो चुका है। जीवन की आपाधापी में पता नहीं चल रहा कि हम कब और कैसे अपनों से दूर होते जा रहे हैं। अकेलेपन, अजनबीपन और संत्रास का जन्म हो रहा है। स्त्रियों और वृद्धों की स्थिति तो और भी शोचनीय बनती जा रही है। स्त्री, वृद्ध, पर्यावरण, आर्थिक विषमता, आधुनिक जीवन शैली आदि को पद्मावती रामभक्त ने छोटी–छोटी कहानियों में पिरोया है।

दासरि रामचंद्र राव की कहानियाँ ग्रामीण परिवेश की कहानियाँ हैं। उन्होंने अपने आस–पास के परिवेश से ही कथा–सूत्र को उठाया है। 'अल्पपीड़नम्' (निम्न दबाव) शीर्षक कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में उन्होंने सामाजिक यथार्थ, मूल्य ह्रास, अकेलापन, शोषण, भ्रष्टाचार आदि को बखूबी चित्रित किया है। इन कहानियों में यथार्थ और कल्पना का मिश्रण द्रष्टव्य है।

राचपूड़ी रमेश के कहानी संग्रह 'वारधि' (सेतु) में संकलित 'मनस्साक्षी' (अंतरामा), 'वारधि' (सेतु), 'समांतर रेखलु' (समांतर रेखाएँ), 'एक्वेरियम,' 'कष्टे–फले' आदि कहानियाँ यह प्रतिपादित करती हैं कि निजी स्वार्थ त्याग कर हम मनुष्यता को कायम रख सकते हैं।

गरिपेल्लि अशोक कृत 'सरिकोत्ता आवु पुलि कथलु' (गाय और बाघ की नई कहानियाँ) बाल कहानियों का संग्रह है। इसमें उन्होंने दादा–दादी, नाना–नानी की कहानियों को आज के परिवेश के अनुरूप री–स्ट्रक्चर किया है।

यह ध्यान देने की बात है कि तेलुगु साहित्य में आत्मकथा लेखन बहुत कम है। इतना ही नहीं, स्त्री आत्मकथाएँ तो और भी कम हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि काल्कूरि श्यामला ने 'चदुवु तीर्चिन जीवितम्' (शिक्षा द्वारा बदला हुआ जीवन) शीर्षक से अपनी आत्मकथा प्रस्तुत की है। उन्होंने संयुक्त परिवार से लेकर एकल परिवार तक की अपनी जीवन यात्रा को रेखांकित किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कितना संघर्ष करना पड़ा। इस आत्मकथा में शिक्षा व्यवस्था में आए बदलाव को भी देखा जा सकता है। साथ ही पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवेश को रेखांकित किया जा सकता है।

रंगनायकम्मा ने 'कम्युनिस्ट्लु, बुर्जुवा पार्लमेंट्री एन्निकललॉ पाल्गोनवाच्चुना, लेदा?' (कम्युनिस्ट और बुर्जुवा संसदीय चुनाव में भाग ले सकते हैं या नहीं?) शीर्षक निबंध संग्रह में चुनाव से संबंधित अनेक प्रश्नों, शंकाओं और जिज्ञासाओं को सम्मिलित किया है। आजकल राजनीति कैसे रणनीति के रूप में परिवर्तित होती जा रही है, इससे संबंधित अनेक पक्षों पर लेखिका ने मार्मिक ढंग से प्रकाश डाला है।

आंध्र प्रदेश के पाँच दशकों के क्रांतिकारी साहित्य को पाणी ने 'वसंतगानम्' (वसंतगान) शीर्षक से संपादित किया है। इस पुस्तक में कोड़वटिगंटि कुटुंबराव, त्रिपुरानेनी मधुसूदन राव, के वी आर, वरवरराव, बालगोपाल, चलसानि प्रसाद, निखिलेश्वर, रत्नमाला, अल्लम राजैया आदि अनेक क्रांतिकारी साहित्यकारों के विचारों को देखा जा सकता है। यह पुस्तक वास्तव में एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए कृषि क़ानूनों के खिलाफ किसानों के शांतिपूर्ण संघर्ष आदि अनेक विषयों को प्रो. मूडभाषी श्रीधर ने 'रैतू व्यतिरेक चट्टालपै तीरगबड्डा ट्राक्टरलु' शीर्षक पुस्तक में बेबाकी से प्रस्तुत किया है।

चागंटि तुलसी का निबंध संग्रह है 'रंगुलंटे इष्टम' (रंग बहुत प्रिय हैं)। इसके शीर्षक से यह भ्रम होना स्वाभाविक है कि यह पुस्तक चित्रकला से संबंधित होगी। लेकिन चित्रकला से इसका कोई नाता नहीं है। इस पुस्तक में चालीस निबंध संकलित हैं। समय–समय पर लेखिका द्वारा लिखे गए आलोचनात्मक निबंध, समीक्षाएँ, संस्मरण, अनुवाद आदि पुस्तक के रूप में पाठकों के समक्ष उपस्थित हैं। इन निबंधों में तेलुगु के प्रसिद्ध साहित्यकार गुरजाड़ा अप्पाराव, आरुद्रा, श्रीश्री, चासो (चागंटि

सोमयाजुलु–लेखिका के पिता), नारायणबाबु आदि से जुड़े हुए प्रसंगों को देखा जा सकता है। इन निबंधों में साहित्य की विविध विधाओं के विविध रंग दिखाई देते हैं, शायद इसीलिए लेखिका ने पुस्तक का शीर्षक रखा है 'रंग बहुत प्रिय हैं।'

महात्मा गांधी आज भी सबके रोल मॉडल हैं। डॉ. काल्लकूरि शैलजा कृत निबंध संग्रह 'नवतरानिकी रोल मॉडल गांधी' (युवा वर्ग के लिए रोल मॉडल गांधी जी) इसका प्रमाण है।

गौहर गिलानी ने अपनी निजी शैली में कश्मीर से संबंधित अनेक ज्वलंत मुद्दों को 'कश्मीर : रेज एंड रीज़न' में सम्मिलित किया है। इसका अनुवाद तेलुगु में 'कश्मीर आग्रह कारणालु' (कश्मीर : आग्रह और कारण) शीर्षक से रमासुंदरी ने किया है।

इनके अतिरिक्त सूक्तियों का संकलन 'मधुर वाक्कुलु' (सूक्तियाँ – पलकलूरी शिवराव), 'कोरोना लॉकडाउन 360' (कोडम पवन कुमार), 'आधुनिकांध्र साहित्यम लो स्त्री वादम् : पुरुष रचयितलु' (आधुनिकांध्र साहित्य में स्त्रीवाद : पुरुष रचनाकार – डॉ.सी.एच.सुशीला) आदि कृतियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

❑❑❑

11

नेपाली साहित्य

ज्ञानबहादुर छेत्री

वर्ष 2020 की तरह 2021 में भी कोरोना महामारी के कारण सारा विश्व बुरी तरह प्रभावित हुआ। हमें अनेक प्रकार की परेशानियाँ और तबाहियाँ झेलनी पड़ीं। इस घातक महामारी ने धनी–गरीब, शिक्षित–अशिक्षित, ज्ञानी–मूर्ख, विकसित–अविकसित देश सबको एकाकार कर दिया, किसी को भी नहीं छोड़ा। व्यापार–वाणिज्य ठप हो गए, बस–रेल–मोटर–हवाई जहाज से यातायात बंद हो गया। शिक्षानुष्ठान भी बंद रहे। सब लोग भयभीत लगते थे, कब क्या होगा, किसी को पता नहीं था। परंतु ऐसी नाजुक परिस्थिति में भी एक कर्म नहीं रुका– वह था साहित्य सर्जना। कोरोना के समय में भी हमारे लेखक मित्रों का मनोबल नहीं टूटा। कोरोना की तबाही को लेखकों ने अपने सृष्टिकर्म में प्रतिबिंबित किया। पुस्तकों का प्रकाशन एवं वितरण संभव न होने के कारण प्रविधि का भरपूर उपयोग किया गया। इसके फलस्वरूप सामाजिक संजाल के माध्यम से विश्व साहित्य के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ घर बैठे–बैठे प्राप्त होने लगीं।

2021 वर्ष के नेपाली साहित्य में भी कोरोना का प्रभाव सकारात्मक रहा। प्रवीण लेखकों के साथ नवीन लेखकों ने भी अपना पूरा समय अध्ययन और साहित्य सृजन में व्यतीत किया। पिछले वर्षों की तुलना में आलोच्य वर्ष के नेपाली साहित्य में संख्यात्मक और गुणात्मक दृष्टि से बढ़ोतरी स्पष्ट दिखाई देती है। विशेष रूप से उपन्यास, नाटक और समालोचना के क्षेत्रों में अच्छी प्रगति हुई है।

प्रस्तुत सर्वेक्षण आलेख में विधागत रूप में 2021 में प्रकाशित कुछ उल्लेखनीय ग्रंथों के बारे में सामान्य परिचयात्मक चर्चा की जाती है।

कविता

कविता मानव हृदय के भावों और अनुभूतियों की रसमय शाब्दिक अभिव्यंजना है। वास्तव में कविता ही दुख के समय का प्रकृत साथी है। हृदय से निःसृत होने के कारण कविता को अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम माना जाता है। महान ग्रीक दार्शनिक प्लेटो ने कविता की शक्ति को परखते हुए भयभीत होकर कवियों को देश से बाहर कर दिया था।

विचंद्र प्रधान नेपाली साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि हैं। प्रधान की कविता का मूल स्वर प्रेम है। उनकी मानें तो प्रेम ही जीवन का सब कुछ है, इसके बिना मानव एवं चराचर जगत बिल्कुल शून्य है। उनका मानना है कि समस्या कितनी भी जटिल और पेचीदा क्यों न हो, प्रेम उस का समाधान ढूँढ़ सकता है। आलोच्य वर्ष में उनकी दो काव्यकृतियाँ प्रकाशित हुईं – (क) 'नील सागरको किनारमा' (ख) 'अनन्ता! अनन्ता!!'

अनंता नाम की किसी काल्पनिक प्रेमिका को संबोधित करते हुए कवि विचंद्र उनकी प्रेमिल अनुभूतियों को अभिव्यक्त करते हैं। इसे खंड काव्य या शृंखला कविता कहा जा सकता है।

म छु आएको अब
तिमीलाई वरण गर्न
तिम्रा सारा दुख वेदना हरण गर्न
अनंत अनंत अनंतसम्म
आएको छु म तिमीसित
एकाकार बन्न
निर्विकार बन्ननहीं
साकार बन्न।

(अनन्ता ! अनन्ता !!)

इसी तरह शीर्षकविहीन एक कविता में कवि प्रधान नारी को समस्त शक्ति, प्रेम और सृष्टि का मूलाधार मानते हुए उनके सम्मान में नतमस्तक होता है–

संसारका तमाम नारीअघि तर
सधैं म झुक्छु शिर नत गरेर
किनकि
संसारका तमाम नारी
आद्याशक्ति हुन ती
बुद्ध जन्माउने महामाया हुन ती
येसु जन्माउने माता मेरी हुन ती।

(नील सागरको किनारमा)

डॉ. खिलानाथ शर्मा पेशे से चिकित्सक हैं। 'मेरो माइक्रोस्कोप' उनका पहला कविता संकलन है। मेडिकल साइंस से संबंधित बातों को मानवानुभूति और ग्लोबल दुनिया की तमाम परिघटनाओं से जोड़कर काव्यिक प्रस्तुति दी है। विज्ञान के तकनीकी शब्दों के सघन प्रयोग से रसभंग होता है, फिर भी कवि की अभिनव शैली ने रोचकता प्रदान की है। मेरो माइक्रोस्कोप की कविता विषय पर आधारित खंडों में निम्न प्रकार हैं–

खंड (क) क्यान्सर
खंड (ख) रोगी संसार
खंड (ग) महामारी
खंड (घ) कविता संसार
खंड (ङ) कृत्रिम बुद्धिमत्ता

खंड (घ) के अंतर्गत 'कविता संसार' में सबसे ज्यादा तेईस कविताएँ हैं, जिनमें कवि ने कविता की असीमित शक्ति का परिचय दिया है। कविता में भी कभी कभार अनचाहा तत्व घुसकर कविता को दुर्बल बनाने की कोशिश करता है परंतु ऐसे तत्वों को कविता में अंतर्निहित शक्ति स्वतः जलाकर राख कर देती है। देखें कवि की एक अभिव्यक्ति–

एक–दुइवटा गद्दार शब्दहरू छन भन्दैमा
कविताको मृत्यु हुँदैन
एक–दुइवटा विश्वासघाती वाक्यहरू छन
भन्दैमा
कविताले आफ्नो अस्तित्व गुमाएको हुँदैन
हरेक बिहान अनि हरेक साँझ
नबलीकन बस्ने अनगन्ती चुल्हाहरूको
निशब्दतालाई ध्यान लगाएर सुन्ने हो भने
सुनिन्छ त्यहाँ कविता।

(कविताको मृत्यु हुँदैन)

कोरोना की भीति और निराशा के बीच में भी असम प्रांत की चार युवा कवयित्रियाँ– अनुपमा कटेल, नीलिमा आचार्य, पुजा उपाध्याय और नैना अधिकारी आशा की किरण लेकर आई हैं। पुजा उपाध्याय की 'असमर्थ सहर', नीलिमा आचार्य की 'परिवर्तन र अन्य कविता' और नैना अधिकारी की 'घात प्रतिघातका उद्गारहरू' 2021 में प्रकाशित कविता की पुस्तकें हैं। इन तीनों की कविता में वर्तमान समय की सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक आदि विभिन्न क्षेत्रों की विकृति–विसंगति को उजागर किया गया है। उन का दृढ़ विश्वास है कि कोरोना सहित सारी विसंगतियाँ जल्द ही दूर हो जाएँगीं और जीवन सुखमय होगा।

हेरिराख !
खान नपाएर मानिस मरेनन भने
नोकरी नपाएर युवाहरू बहुलाएनन भने
दाम नपाएर कृषक पासो लागेनन भने
पैसा नभएर क्रेता रोएनन भने

परिवर्तन भान्साकोठाको दैलोबाट आउँछ
मेरो गाउँ डिजिटल बन्छ बन्छ।

(मेरो गाउँ डिजिटल बन्छ बन्छ–
नैना अधिकारी)

शोणितपुर समारदलनी के कमल शर्मा की कविताएँ दो दशक तक पत्र–पत्रिकाओं में ही बिखरी हुईं थीं। आलोच्य वर्ष में उन्होंने अपना पहला कविता संग्रह 'समयका रातहरू समयका समयहरू' प्रकाशित किया है। कवि कमल ने उनकी कविता में आज के परिवर्तित समय में जीवन को परखने का प्रयास किया है। उसी तरह नीलिमा आचार्य भी समाज की सारी विसंगतियों को दूर करना चाहती हैं– अपनी कविता के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाना चाहती हैं। उनकी 'परिवर्तन र अन्य कविता' की कविताओं में यही संदेश मिलता है। संकलन की ज्यादातर कविताएँ नारी मन की पीड़ा से और 'नयाँ युगको निर्माण' शीर्षक की कविता पर्यावरण की चेतना से संपृक्त हैं।

'परिश्रांत पृथिवी' पर्यावरण विषय पर रचित कविताओं का महत्वपूर्ण संग्रह है। इस ग्रंथ में कवि डॉ. देवेन सापकोटा की चालीस कविताएँ प्रकाशित की गई हैं। कविता के माध्यम से लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना कवि देवेन सापकोटा का लक्ष्य है। इसके अलावा कुछ कवियों ने कविता को ठोस स्वरूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इनमें मिलन बोहोरा ने ज्यामितीय रोम्बस आकृति में सौ अक्षरों में निर्माण किया है और रेवतीमोहन तिमसिना की पिरामिड आकार की कविता उल्लेख्य है। परंतु कविता मुक्त है, किसी निर्दिष्ट आकार में कविता की विस्तृति नहीं समा सकती। उसके भाव न कि उसकी कलात्मक प्रस्तुति कविता की आत्मा होती है। इसलिए ऐसे प्रयोग दो दिन चमकने के बाद नकली सोने की तरह फिके पड़ जाते हैं। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित कविता की पुस्तकों की सूची इस प्रकार है–

1. घुम्तीमा नआऊ है– अर्जुन उप्रेती
2. मनका कुरा– कमल छेत्री
3. मणिकुट– नवसापकोटा
4. बाँचिदिनु होला (ग़ज़ल संग्रह)–डिल्लीप्रसाद अधिकारी
5. जीवन यात्रा– के एस राई सहयोगी
6. मेरो जन्मभूमि– छबिलाल उपाध्याय
7. हुङ्कार (ग़ज़ल संग्रह)– प्रकाश कुइँकेल
8. अनुनाद (सामूहिक कविता संकलन)– संपादक पुष्प दाहाल, अञ्जन बाँसकोटा
9. हाइकु प्रवाह (हाइकु संग्रह) –डम्बर दाहाल।
10. मनका पाहुना (युग्मक संग्रह) –डम्बर दाहाल

आख्यान

जीवन का विविध रंगी चित्रण आख्यानों में होता है और संभवतः इसी कारण पाठकों की रुचि भी अन्य विधाओं से आख्यान विधा पर अपेक्षाकृत अधिक होती है। मानव–चरित्र का गहरी अध्ययन, सामाजिक मूल्यों और संवेदनाओं के अनुभव और सूक्ष्म अंतर्दृष्टि के बिना सफल उपन्यास लेखन संभव नहीं है। विस्तृत आकाश की तरह उपन्यास का क्षेत्र भी बहुत विशाल होता है।

आलोच्य वर्ष 2021 में प्रकाशित उपन्यासों में प्रवीण राई जुमेली का 'सन्नेरेटा' और छुदेन काबिमो का 'फातसुङ' विषय और विशिष्ट शैली के लिए महत्वपूर्ण हैं। जुमेली का सन्नेरेटा परंपरागत लेखन से भिन्नता के लिए चर्चा में आया है परंतु इसकी संरचनात्मक जटिलता के कारण साधारण पाठक के लिए अबोधगम्य प्रतीत होता है। इस उपन्यास में लेखक जुमेली ने भिन्न दृष्टि से जीवन और जगत को देखने का प्रयास किया है। उपन्यास की पंरपरित संरचना के खिलाफ रचित यह एक एंटीनोवेल है, फिर भी इसमें कई आंञ्चलिक तत्व विद्यमान हैं। कमनम्यानको पोम्प्लास र डार्क सेडोज, भर्टिकल टाउको, डिफराँस–स्लिप्पेज, गेट, प्रिज्म, डिपार्टमेंन्ट अफ पोएट्री, एकदिन, व्हेर इज योर स्माइल म्यान, स्वप्नदंश, फिक्सनल एन्टागोनिस्ट र क्लासरुम, योयोखमचिवा, सन्ड्रिज, सन्नाटाको मुन्धुम, ल्याबरिन्थाइन, टेलबियरर र मृत्युसपना, द ग्रामर अव मनुवाखेदो, ब्रन्जग्रेल एंड द डिपार्चर,

प्रस्थान अनवरत, अ राइजन दीऐत्रे , आउटबर्स्ट, प्रस्थान अनवरत–2, आटरवर्ड : दि नेम अव दि देस्रि– इक्कीस उपशीर्षकों में इस उपन्यास की कहानी विस्तारित हुई है। विश्व साहित्य के अनेक संदर्भों के साथ कलाजगत से संबंधित उक्तियों के कारण इस आख्यान कृति की अंतर्पाठीयता भी पाठकों का मनोरंजन बौद्धिक जगत की सैर कराता है। भाषिक दृष्टि से इस उपन्यास में मिश्रित भाषा का प्रयोग समकालीन साहित्य पर विश्वव्यापीकरण का प्रभाव दर्शाता है। 308 पृष्ठ के इस उपन्यास को कितापलच्छी प्रकाशन (सिक्किम) ने प्रकाशित किया है, इसका मूल्य तीन सौ रुपए है।

नेपाली साहित्य में 'फातसुङ' उपन्यास की खूब चर्चा हो रही है। 'फातसुङ' लेप्चा भाषा का शब्द है। इसका अभिधात्मक अर्थ होता है मिट्टी की कहानी। वास्तव में यह धरती की कहानी है। इस उपन्यास के लेखक छुदेन काबिमो एक कवि, आख्यानकार एवं पत्रकार के रूप में सुपरिचित प्रतिभा हैं। उनको 2018 का साहित्य अकादमी दार्जिलिंग युवा पुरस्कार प्राप्त हुआ है। फातसुङ दार्जिलिंग के युवाओं की बिखरी हुई आशा, टूटे हुए स्वप्नों और गुमे हुए उम्र की दर्दभरी कहानी है। देश की आजादी और स्वाधीन राष्ट्र के निर्माण में भारत के सच्चे सपूत गोर्खाओं का त्याग और बलिदान किसी से कम नहीं परंतु विडंबना की बात है, आज भी अपनी पहचान के लिए लड़ना पड़ रहा है। इस उपन्यास में लेखक काबिमो ने न केवल दार्जिलिंग के बल्कि सारे भारतवर्ष के गोर्खा लोगों के अंतर्मन की बात कही है।

नेपाली भाषा में लिखित इस उपन्यास को समकालीन नेपाली साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में देखा जा सकता है। हिंदी, बांग्ला और अंग्रेजी भाषाओं में इस उपन्यास का अनुवाद हो चुका है। संबोधन पब्लिकेशन (सालुगड़ा, शिलिगुड़ी) के बैनर में प्रकाशित इस उपन्यास की पृष्ठ संख्या 200 से अधिक और मूल्य ₹250/ है।

नाटक

नाटक साहित्यिक कलाकृति की प्रस्तुति होता है जिसके परिणामस्वरूप जीवन के विविध पक्षों और विविध समस्याओं का प्रस्तुतिकरण नाटककार का मुख्य उद्देश्य होता है ताकि नैतिक मूल्यों और जीवनादर्शों की स्थापना हो सके। आलोच्य वर्ष नेपाली नाटक के लिए आशाव्यंजक प्रतीत होता है। नाटक का क्षेत्र विस्तृत, व्यापक एवं बहुआयामी है जिसकी अनेक संभावनाएँ हैं। साहित्य के श्रव्य–दृश्य दो स्थूल भागों में नाटक दृश्यात्मक है। नाटककार, रंगकर्मी और दर्शक को लेकर तीन पक्षों के संबंध से नाटक का स्वरूप त्रिआयामिक होता है। इसीलिए नाटक को साहित्य की सबसे प्रभावशाली एवं जनप्रिय विधा माना जाता है।

'शरद पूर्णिमा की रम्य रमिता' मुक्तिप्रसाद उपाध्याय का पूर्णांकी नाटक है। आलोच्य नाटक उच्च शिक्षानुष्ठान के शैक्षिक वातावरण को दर्शाता है। अशिक्षा और अंधविश्वास की चपेट में देश के लोग आज भी जकड़े हुए हैं। शहर का उच्च शिक्षित परिवार भी इससे पूरी तरह मुक्त नहीं है। किशोर मनोविज्ञान का आभास देनेवाले इस नाटक में पूर्ण सर जैसे शिक्षक, प्रकाश और रमिता जैसे युवा छात्र–छात्राओं को सही मार्गदर्शन कराने में दत्तचित्त हैं। पूर्ण सर देश के शिक्षक समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि प्रकाश और रमिता आज के छात्र–छात्रा के प्रतिनिधि चरित्र हैं।

'आफ्नै गाउँ फर्की आएँ' (वापस लौट आया अपने गाँव में) राम उपाध्याय के पूर्णांकी नाटक में गाँव के सरल जीवन और बड़े शहर की संवेदना रहित जटिल जीवन का प्रतिबिंब प्रस्तुत किया गया है। नाटक में राजाराम के तीन पुत्रों में उच्चशिक्षित ज्येष्ठ पुत्र अभिषेक अमरीका में और कनिष्ठ पुत्र आदित्य दिल्ली में कार्यरत होने के विपरीत कम शिक्षित मंझला पुत्र अविनाश गाँव में ही छोटा–मोटा काम करता है। राजाराम अपने शहरवासी दोनो पुत्रों की भौतिक उन्नति पर घमंड करता है और मंझिले पुत्र को हमेशा टोकता है।

अंजली, राजाराम की इकलौती बेटी उच्च शिक्षा के लिए अमरीका जाती है परंतु उसका बड़ा भाई बहन की मर्जी के खिलाफ उसकी दुष्ट मकान मालिक के साथ शादी कराना चाहता है यानी बहन को बेच देता है। इधर कनिष्ठ पुत्र अपने माता–पिता को दिल्ली बुलाकार खातिरदारी करता है। स्वार्थी पुत्र चाहता है पिता गाँव की जायदाद बेचकर उसे दिल्ली में मकान खरीदने में मदद करें। लालची पुत्र की कपटपूर्ण बातों में आकर राजाराम दिल्ली चला जाता है परंतु कुछ ही दिनों में उनको असलियत का पता चल जाता है और शहरी जीवन का मोहभंग हो जाता है। राजाराम अपने गाँव वापस लौट आता है। देर ही सही, आखिर में वह समझ जाता है कि उसका गाँव में रहनेवाला कम शिक्षित पुत्र ही उसकी असली संपत्ति है जिसे वह पहचान नहीं सका था।

असम नेपाली नाट्य सम्मेलन के महासचिव पूर्णकुमार शर्मा भारतीय नाट्य साहित्य का एक चर्चित नाम हैं। उनके लिखित नाटकों का देश के विभिन्न स्थानों पर मंचन हुआ है। 'मुटुको खिया' उनका नवीनतम एकांकी संकलन है। इस संकलन में समावेशित उनके सात एकांकियों के शीर्षक हैं– 'तीन पोयाको डोरी', 'मुटुको खिया', 'कुतकुती', 'नीर अधीर धरित्री', 'नौगेडी चोर', 'भिखारी भोजन' और 'हृदयको दियालो'।

'कठपुतली र अन्य एकांकीहरू' धर्मेंद्र उपाध्याय के इस एकांकी संग्रह में उनके चार एकांकी संकलित हैं जिसमें 'कठपुतली' शीर्षक का मंच–सफल एकांकी काफी प्रशंसित हुआ। इसने राज्यस्तरीय नाटक प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार भी हासिल किया। एकांकी के दो क्रांतिकारी पात्र शिखा और विप्लव स्वाधीनता के लिए संग्राम करते हैं। उनके दादा–परदादा इसी व्यवस्था में अभ्यस्त हैं, उनको विश्वास है, शासक ईश्वर का प्रतिनिधि होता है– शासन सत्ता के अनुग्रह से लोगों का जीवन चलता है। इसीलिए उनका विरोध करना ईश्वर का विरोध करने जैसा पाप कर्म है। वे दोनों दासता की शृंखला को उखाड़ फेंकना चाहते हैं परंतु पुरखों से चली आई व्यवस्था को निर्मूल करना आसान नहीं। एकांकी के सभी चरित्रों के गले में लोहे की शृंखला होती है। चारों एकांकियों में लेखक का प्रगतिवादी विचार सुस्पष्ट हुआ है।

इनके अतिरिक्त रेवतीमोहन तिमसिनाकृत 'लकडाउन' और पृथिविलास भट्टराईकृत 'औसीको' जून आलोच्य वर्ष में प्रकाशित उल्लेखनीय पूर्णांकी नाटक हैं।

निबंध–प्रबंध

निबंध–प्रबंध का क्षेत्र सबसे विस्तृत, विशालतम होता है। यह विचार को सीधे संप्रेषित करने की सर्वोत्तम विधा है। जीवन और जगत से जुड़ा हुआ दर्शन, विज्ञान आदि अनेक विषयों की चर्चा निबंध–प्रबंध के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। इसीलिए इस विधा को ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद और सबसे उपयोगी विधा माना जाता है। आलोच्य वर्ष 2021 में निबंध–प्रबंध विधा में कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें कुछ ग्रंथो का विवरण इस प्रकार है–

'पूर्वोत्तर भारतको नेपाली साहित्यको इतिहास' वर्ष 2021 में भारतीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित नेपाली साहित्य का इतिहास है। इस ग्रंथ के लेखक खेमराज नेपाल हैं। 399 पृष्ठ के इस बृहत् ग्रंथ में लेखक नेपाल ने पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों (अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और सिक्किम) में नेपाली साहित्य के विकासक्रम पर आलोकपात किया है। लेखक के अनुसार पूर्वोत्तर भारत में नेपाली साहित्य का लगभग एक सौ तीस साल का इतिहास है और इस इतिहास की 1893 में प्रकाशित तुलाचन आले द्वारा रचित 'मणिपुरको धावाको सवाई' से शुरुआत होती है।

नेपाली भाषा की उत्पत्ति, नेपाली लोक साहित्य, कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, बाल साहित्य, निबंध, समालोचना, अनुवाद और अन्यान्य– कुल ग्यारह अध्यायों में अलग–अलग विधाओं को समेटकर इतिहास को प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट 1 और परिशिष्ट 2 में कुछ

ऐतिहासिक दस्तावेजों के उल्लेख हैं। इस ग्रंथ के प्रकाशन को भारतीय नेपाली साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है।

आलोच्य वर्ष में साहित्य अकादमी की भारतीय साहित्य के निर्माता शृंखला के अंतर्गत 'विनिबंध हरिप्रसाद गोर्खाराई' प्रकाशित हुआ। इसके लेखक सीताराम काले हैं। इस विनिबंध में लेखक काले ने नेपाली साहित्य के एक पुरोधा स्रष्टा व्यक्तित्व हरिप्रसाद गोर्खाराई के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आलोकपात किया है। संक्षिप्त परिचय, सर्जकका रूपमा, क्याम्प उठ्यो, एक विवेचना, कथा संग्रह यहाँ बदनाम हुन्छ एक दृष्टि, बाबरी संक्षिप्त विवेचना, गीतांजली र कवितांजली– विमर्श, हरिप्रसाद गोर्खाराईका कथाहरू– कृति आलोचना, स्रष्टा अनि दृष्टिकोण, प्राप्त सम्मान र पुरस्कारहरू– उपशीर्षकों में गोर्खाराई के कृतित्व का विश्लेषण किया गया है। भारतीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित 111 पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य 50 रुपए है।

कविता लामा नेपाली साहित्य में समालोचक के रूप में प्रतिष्ठित लेखक हैं। 'बबी जामा' उनकी बाल्यकाल की संस्मरण कथा है। लामा का जन्म पहाडों की रानी दार्जिलिंग के किसी गाँव में हुआ। उस विख्यात गाँव में सब कुछ था, किसी चीज की भी कमी नहीं थी। सिक्किम विश्वविद्याय की प्रोफेसर के रूप में कार्यरत कविता लामा अपने अतीत को झाँककर देखती हैं जहाँ उनका सुनहरा बाल्यकाल बीता। उनको लगता है यांत्रिक सभ्यता ने बच्चों का सुख–चैन सब कुछ छीन लिया है। आजकल के बच्चे मानवीय संवेदना से भी दूर होते जा रहे हैं, यह शुभलक्षण नहीं है। बबी जामा, ओकेको जूत्ता, छुर्पी बाटो, स्कुले साथीहरू, रेनकोट, अमोल चित्रकलाको चित्र, बर्मेनीको दोकान, लेजिपुर, मेरो पुर्खौली थलो, साना साना दुर्घटना, सयपत्री क्लब, आप्पाकी छोरी– उपशीर्षकों में लेखक ने आलोच्य ग्रंथ को विभाजित किया है। अनुक्रम के सभी एपिसोड रोचक एवं पठनीय तो हैं ही, बबी जामा और लेजिपुर– मेरो पुर्खोली थलो पाठकों के अंतर्मन को छू लेता है।

साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित मुक्तिप्रसाद उपाध्याय का 'बुच्के छपडी' उनके अतीत का रोमंथन है। इसमें चार शृंखलाएँ हैं– 'बुच्के छपडी', 'भाग्यमानी मालती', 'अनुवादको आफ्नै फूलबारीमा रुमलिंदा' और 'मेरो नाट्य यात्रा'। बुच्के छपडी असम का एक टापू है। ब्रह्मपुत्र नदी के इसी हरे–भरे टापू से लेखक का गहरा आत्मिक संबंध था। स्मृति रोमंथन के दौरान लेखक ने लुप्तप्राय इतिहास का उत्खन्न भी किया है। 'मालती' शीर्षक के बाल उपन्यास के लेखक उपाध्याय को साहित्य अकादमी पुरस्कार (2015) प्राप्त हुआ था। 'भाग्यमानी मालती' में लेखक सिक्किम, मुंबई आदि स्थानो में एनबीटी, साहित्य अकादमी आदि संस्थानों द्वारा बाल साहित्य पर आयोजित संगोष्ठी में अपनी सहभागिता का जिक्र करता है। लेखक ने कई पुस्तकों का अनुवाद भी किया है। 'अनुवादको आफ्नै फूलबारीमा रुमलिंदा' इस खंड में अनुवाद विषय पर उनके अनुभव का बयान है। 'मेरो नाट्य यात्रा' उपाध्याय का नाटक लेखन और अभिनय से संबंधित अध्याय है। इस पुस्तक को लेखक की आत्मजीवनी कहा जा सकता है।

रुद्र बराल के निबंध संग्रह 'ब्रह्मपुत्रका लिगेसीहरू' में समसामयिक संदर्भ और विषयों पर लिखित कुल बीस निबंध संकलित हैं। असम में नेपाली भाषा–साहित्य की समस्या, पूर्वोत्तर भारत में नेपाली पत्रकारिता का विकास, नेपाली भाषा की संवैधानिक मान्यता, असम में गोर्खा जनजीवन जैसे विषयों पर अपने विचार अभिव्यक्त किए हैं। संकलन में समावेशित 'मेचे– एक लोपोन्मुख जाति' शीर्षक के निबंध में उनकी अन्वेषक प्रतिभा और अन्य कुछ निबंधों में उनकी समालोचकीय प्रतिभा का परिचय मिलता है।

वर्ष 2021 असम के साहित्यकार डंबर दाहाल के लिए सबसे महत्वपूर्ण रहा क्योंकि इसी वर्ष सितंबर में उनकी आठ पुस्तकें प्रकाशित हुईं। विभिन्न विधा की उन पुस्तकों में निबंध विधा की पुस्तक 'निबंध पुष्प और व्यक्ति संदर्भ' विशेष उल्लेखनीय हैं।

यात्रा साहित्य

इन दिनों अलग पहचान बनाकर यात्रा साहित्य का विकास हो रहा है। नेपाली भाषा में यात्रा साहित्य में दो लेखकों को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिल चुका है। आलोच्य वर्ष को नेपाली यात्रा साहित्य के लिए संतोषप्रद मान सकते हैं। इस वर्ष यात्रा साहित्य की तीन पुस्तकें प्राप्त हुईं जो इस प्रकार हैं– 1. पर्थ हुँदै सिडनी 2. स्वच्छ डोनाउको किनारमा और 3. एन फ्रेंकको देशमा। ख्यातिप्राप्त नाटककार, उपन्यासकार, निबंधकार और अनुवादक मुक्तिप्रसाद उपाध्याय ने यात्रा साहित्य में भी परिचय बनाया है। पर्थ हुँदै सिडनी उनके ऑस्ट्रेलिया भ्रमण के अनुभव और यूरोप के अनुभव स्वच्छ डोनाउको किनारमा में वर्णित हैं।

संतोष रावत की पहली पुस्तक 'एन फ्रेंक की देश में' यात्रा साहित्य की एक उल्लेख्य पुस्तक है। लेखक रावत म्यानेजम्यान्ट विषय पर अध्ययन के लिए छह महीने के लिए एभान्स विश्वविद्यालय में थे। इसी दौरान छुट्टी के समय को सदुपयोग करते हुए रावत ने नेदरल्यान्ड्स के कई महत्वपूर्ण स्थानों का भ्रमण किया। इसके साथ स्वीट्जरलैंड, फ्रांस, जर्मनी और बेल्जियम का भ्रमण किया। एन फ्रेंक के देश में रावत ने अपने अनुभव को अभिव्यक्त किया है। पच्चीस वर्षीय युवा छात्र का भ्रमण कहानी में उनके जिज्ञासु मन और अधूरेपन के अनुभव अत्यंत रोचक लगते हैं।

समालोचना

समालोचना का काम सौंदर्य संपन्न वस्तुओं की विशेषताओं का विश्लेषण और मूल्यों का निर्धारण करना होता है। भारतीय तथा पाश्चात्य के विद्वानों ने समालोचना की अनेक परिभाषाएँ और सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं– इकोकिटिसिज्म या परिवृत्तीय समालोचना उसी की एक नवीन शाखा है। सिक्किम के साहित्यकार देवचंद्र सुब्बा का 'नेपाली कवितामा परिवेश' परिवृत्तीय समालोचना का एक उत्कृष्ट मानक ग्रंथ है जिसका प्रकाशन 2021 में उपमा पब्लिकेशंस (कालेबुङ) ने किया है। इको क्रिटिसिज्म के लिए लेखक सुब्बा ने नेपाली भाषा में परिवेश विमर्श पदावली का प्रयोग किया है। पर्यावरण में फैला हुआ प्रदूषण, प्रकृति विनाश से उत्पन्न संकट, पारिस्थितिकी का असंतुलन आदि विषयों को लेकर अलग पहचान लेकर पर्यावरण साहित्य का विकास हो रहा है। प्रस्तुत ग्रंथ में अध्येता सुब्बा ने परिवेश विमर्श का सैद्धांतिक आधार एवं परिचय को चर्चा के साथ नेपाली कविता के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। सुब्बा ने उनके अध्ययन में ऋतुविचार (लेखनाथ पौडेल), ऋतु निमंत्रण (मोहन कोइराला) और ऋतु क्यांभसमा रेखाहरू (मनप्रसाद सुब्बा)– तीन काव्यकृतियों को लिया है। नवीन पौडेल के भारतीय नेपाली समालोचक कोश के प्रकाशन को भी नेपाली समालोचना साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। इस ग्रंथ में लेखक ने भारत के लगभग दो सौ नेपाली समालोचक और उनकी कृतियों का विवरण प्रस्तुत किया है। मनिका मुखिया का 'साहित्य परिदर्शन,' और चिदानंद उपाध्याय द्वारा संपादित 'केही व्यक्ति र व्यक्तित्वहरू,' अविकेशर शर्मा का 'आदिकविको चिरफार,' डंबर दाहाल का 'सिर्जना संदर्भ' आदि आलोच्य वर्ष के उल्लेख्य समालोचना ग्रंथ हैं।

बाल साहित्य

विज्ञान–प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण से वर्तमान जनजीवन पूरी तरह प्रभावित है। बाल–बालिकाओं के लिए अपना घर खुसी, आनंद और उमंग का अक्षय भंडार होता था। परंतु आज घरो की आत्मीयता मकानों की कृत्रिमता में संकुचित हो रही है– यह चिंता का विषय है। ऐसी स्थिति में बाल साहित्य की रचना करना मुश्किल होता है। इस चुनौती को स्वीकारते हुए भारतीय बाल साहित्य विकसित हो रहा है। नेपाली भाषा में अनेक समस्याओं को झेलते हुए बाल साहित्य का विकास हो रहा है। आलोच्य वर्ष में नेपाली भाषा में प्रकाशित कुछ पुस्तकें निम्न प्रकार हैं–

यह अति आवश्यक है कि बच्चे सबसे पहले अपने ही गाँव या शहर के इतिहास, भूगोल और भाषा–संस्कृति के बारे में जानकारी हासिल करें। इसी बात को ध्यान में रखते हुए तेजपुर के बाल

साहित्यकार विष्णु शास्त्री ने किशोरों के लिए उपयोगी एक उपन्यास की रचना की है। ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी तट पर बसा पुराण प्रसिद्ध तेजपुर एक छोटा–सा अति सुंदर शहर है। दादा जी और उनके पोते के बीच संवाद की शैली में उपन्यास आगे बढ़ता है। दादा जी पुराणों में उल्लिखित तेजपुर शहर की कहानी सुनाते हैं और उनका पोता सुनता है और प्रश्न करता है। 'तेजपुर' शीर्षक का यह उपन्यास बाल साहित्य का अनमोल ग्रंथ है। कृष्णप्रसाद भट्टराई के फूलबारी बाल कविता संकलन में विभिन्न विषयों की बालोपयोगी पचास कविताएँ हैं। इसी तरह दैवकी देवी तिमसिना के दुष्ट राजकुमार कहानी संग्रह में बच्चों में जिज्ञासा का भाव पैदा करनेवाली चित्रात्मक कहानी रोचक लगती हैं। डंबर दाहाल का बाल कविता 'गाउँदै जाऔं', 'सिक्दै जाऔं' बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए रचित है। कविता लयात्मक होने के कारण बच्चे नाचते–गाते बहुत कुछ बातें सीख सकते हैं।

बाल साहित्यकारों को चाहिए कि वे बाल–बालिकाओं के लिए उपयोगी विषयों को सरल भाषा में बालकों जैसे निर्मल ह्रदय से साहित्य की रचना करें। बाल–बालिकाओं के मन में अच्छाई के प्रति झुकाव और बुराई के प्रति असहिष्णु भाव सृष्टि करने की क्षमता बाल साहित्य में होनी चाहिए।

साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित मुक्तिप्रसाद उपाध्याय ने नेपाली बाल साहित्य के मौलिक अनुवाद और इतिहास लेखन का महत्वपूर्ण काम किया है। भारतीय नेपाली बाल साहित्य (द्वितीय संस्करण) नेपाली बाल साहित्य का मानक अपडेटेड इतिहास है। इस ग्रंथ में बाल साहित्य की प्रयोजनीयता से लेकर नेपाली बाल साहित्य के लेखक और प्रकाशित पुस्तकों के बारे में ब्यौरा प्रस्तुत किया है। साहित्य अकादमी की बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त पुस्तकों और लेखकों के बारे में इस पुस्तक में विस्तृत जानकारी मिलती है।

आलोच्य वर्ष नेपाली बाल साहित्य के लिए बहुत ही अच्छा रहा क्योंकि इस वर्ष नेशनल बुक ट्रस्ट से बाल साहित्य की लगभग बीस अनूदित पुस्तकें प्रकाशित हुईं (सूचना स्रोत डॉ. खगेन शर्मा, गुवाहाटी विश्वविद्यालय)। ज्ञातव्य यह है कि असम नेपाली साहित्य और नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त प्रयास में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के आधुनिक भारतीय भाषा एवं साहित्य अध्ययन विभाग में फरवरी 2020 में चार दिवसीय कार्यशाला संपन्न हुई थी। इस कार्यशाला में अनूदित की गई पुस्तकों का विवरण मुक्ति उपाध्याय के भारतीय नेपाली बाल साहित्य (दूसरा संस्करण) में प्रस्तुत किया गया है।

अनुवाद

अनुवाद को क्षेत्रीय साहित्य और विश्व साहित्य को जोड़ने वाले सेतु के रूप में देखा जाता है। भूमंडलीकरण की अवधारणा और विश्वग्राम की संकल्पना का आधार संचार तथा अनुवाद को माना जाता है। अनुवाद वास्तव में लेखकीय आत्मा के विस्तार का दूसरा नाम है। विश्व की हरेक भाषा के विचारक, उद्भावक और लेखक चाहते हैं कि उसकी उपब्धियों से सारा विश्व लाभ उठा सके। यह केवल अनुवाद से ही संभव हो सकता है, अन्यथा नहीं। यह सौभाग्य की बात है कि हमारा देश भारतवर्ष बहुभाषी लोकतांत्रिक देश है। अतः हमारे देश के नागरिक स्वभावतः बहुभाषी एवं अनुवादक हैं। भारतीय साहित्य, राष्ट्रीय अनुवाद मिशन और एन बी टी जैसे राष्ट्रीय संस्थान अनुवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। नेपाली भाषा भी इनकी परियोजनाओं से लाभान्वित हुई है। इसके अलावा व्यक्तिगत रूप से भी नेपाली भाषा को उत्स भाषा या लक्ष्य भाषा के रूप में लेकर अनुवाद कर्म हुआ है। वर्ष 2021 में बीटीएडी (असम) क्षेत्र के रेवतीमोहन तिमसिना द्वारा अनूदित बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के बहुचर्चित बांग्ला उपन्यास 'कपालकुण्डला' ने नेपाली साहित्य को समृद्ध किया है। 'एउटा पिस्तोल र कुन्दपुष्प' नाम के मणिपुरी भाषा के

उपन्यास को भवानी अधिकारी ने नेपाली भाषा में रूपांतर किया है। इस अनुवाद के लिए भवानी अधिकारी को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसी तरह असमिया भाषा के अरुण शर्मा का अकादमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास 'आशीर्वादर रङ' को एक ही शीर्षक में वेदा देवी ने नेपाली भाषा में प्रकाशित किया है। रुमी लस्कर बरा के नेपाली जनजीवन पर आधारित असमिया उपन्यास 'डम्फु' का असमिया भाषा के नेपाली पाठकों में लोकप्रियता के कारण तीन नेपाली लेखकों ने इसका अनुवाद किया है। एक ही शीर्षक में विष्णु शास्त्री और चम्पा उपाध्याय ने नेपाली भाषा में और सरिता शर्मा ने अंग्रेजी भाषा में इसका अनुवाद किया है। डंबर दाहाल द्वारा अनूदित 'अस्तित्वर समय का चयनित कविता' भी आलोच्य वर्ष की उल्लेख्य अनुवाद कृति है। इसके साथ गुवाहाटी विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में अनूदित लगभग दो दर्जन बाल पुस्तक नेशनल बुक द्वारा प्रकाशित होना इस वर्ष की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

विविध साहित्य

विविध विषयों पर सामूहिक संकलन के रूप में प्रकाशित ग्रंथों और पत्र–पत्रिकाओं में भी स्तरीय साहित्य का भंडार होता है। 2021 में प्रकाशित कुछ उल्लेख्य पुस्तक पत्रिका स्मृति ग्रंथ–

'लौहित्य' (असम नेपाली साहित्य सभा, सदिया जिलाको स्मृति ग्रंथ) संपादक विपुल उपाध्याय।

'विक्रमवीर थापा मेरा आँखीझ्यालबाट' (जीवनी) लेखक विशाल केसी।

'जनार्दन उपाध्याय' (स्मृति ग्रंथ) संपादक नवप्रभा अधिकारी।

'छबिस्मृति'(स्मृतिग्रंथ) संपादक धर्मेंद्र उपाध्याय।

'पुलिसको डायरी' (खंड 3) जनार्दन उपाध्याय।

'अभिव्यक्ति पत्रिका' उनतालीसवाँ अंक (दुलियाजान) संपादक बालकृष्ण उपाध्याय।

'स्मृतिप्रवाह (खंड 2)' डंबर दाहाल।

❑❑❑

12

पंजाबी साहित्य

फूलचंद मानव

भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता लिए हुए है। यहाँ विविध प्रदेशों की आधारभूमि कहीं न कहीं एक संदेश दे रही है। रहन–सहन, खान–पान, भाषा–बोली और सामाजिक सरोकार अपने हैं और अपनों के लिए हैं। आज भी पंजाब खड्गभुजा कहलाता है। यहीं से हिमाचल और हरियाणा का उदय हुआ। दिल्ली और राजस्थान के साथ जम्मू–कश्मीर भी हमारे पड़ोसी प्रांत कहलाते हैं। साहित्य और भाषा के स्तर पर यहाँ भावनाएँ, सरोकार और मूल्य लगभग एक जैसे पाए जाते हैं। पंजाबी भाषा आज इतनी संपन्न और समृद्ध है कि देश में ही नहीं, विदेशों में भी पंजाबी भाषा और संस्कृति की गूँज विख्यात हो रही है। गिद्धा, भांगड़ा, मेले, नाटक, साहित्य के साथ हमारी पत्रिकाएँ और पुस्तकें सोशल मीडिया के द्वारा ही नहीं, मुद्रित सामग्री के रूप में भी सम्मान पा रही हैं।

पंजाबी पत्रकारिता और साहित्यिक पत्रकारिता लगभग एक जैसी चल रही हैं। दैनिक समाचार पत्रों में साहित्यिक परिशिष्ट प्रत्येक रविवार या साप्ताहिक रूप में मुखरित होकर सामने आते हैं। इनमें गतिविधियाँ, चित्र, कहानी, कविताएँ, ग़ज़लें ही नहीं लेख, रिपोर्ताज, यात्रा वृत्तांत सचित्र प्रकाशित होते रहे हैं। पंजाबी अखबारों के इन्हीं ठोस साहित्यिक संस्करणों ने पाठक तैयार किए हैं। और समाज को मनोरंजन के साथ दिशा देने की कोशिश भी की है। धारावाहिक उपन्यास, लंबी कहानियाँ या प्रतियोगिताएँ जहाँ आकर्षण का केंद्र हैं वहीं पंजाबी अखबारों के संपादकीय पृष्ठ, ठोस और संपन्न सामग्री के साथ पाठकों तक साल 2021 में आते रहे हैं। हम इन अखबारों से सीखते हैं, अपनाते हैं और नई सोच ग्रहण करते हैं।

सन् 2021 में दैनिक पंजाबी ट्रिब्यून, पंजाबी जागरण, देस सेवक, जगबाणी, नवां जमाना, अजीत या स्पोक्समैन सरीखे अखबारों के साथ अन्य बहुत से समाचार पत्र साहित्य परोसते रहे हैं। इनमें नए रचनाकार अपनी जगह बनाने के लिए प्रयत्नरत रहे हैं। स्थापित साहित्यकारों से साग्रह सामग्री मांगकर अखबारों में प्रकाशित की जाती रही है और मझोले लेखक यहाँ स्थान बनाने के लिए सक्रिय पाए गए हैं। उल्लेखनीय है कि नवां जमाना, पंजाबी ट्रिब्यून, देस सेवक, पंजाबी जागरण, अजीत जैसे अखबारों ने साहित्यकारों को प्रोत्साहित ही नहीं किया, इन्हें स्थापना की ओर अग्रसर भी किया है। समाचार के साथ संपादकीय पृष्ठों पर जब विचार प्रस्तुत होता है तो अग्र लेख या निबंध बहुत कुछ बोल रहे होते हैं। प्रतिदिन इनमें नई चेतना और चिंगारी उभरती है जो बुद्धिजीवियों को उत्तेजित करती हैं। नए–नए विषयों का सुझाव दे जाती हैं।

उल्लेखनीय वर्ष 2021 में पंजाबी पत्रिकाएँ एक आंदोलन की तरह सामने आ रही हैं। इनके संपादकों का अनुभव पत्रिकाओं की परस्पर होड़ कतिपय विशेषांक और योजनाबद्ध तरीके से निकाले गए अंक, महत्वपूर्ण कहलाए हैं। पंजाबी पत्रिका सरकारी हो या अद्र्ध–सरकारी, अथवा गैर सरकारी, लेखकों को स्थान ही नहीं देती, उनके विचारों को पाठकों तक लेकर संपर्क और संवाद का मौका भी प्रदान करती है। देखा जाए तो नागमणि, आरसी, अक्स, प्रतीक जैसी पंजाबी पत्रिकाएँ आज भले नजर न आ रही हों, लेकिन पंजाबी में इन्हीं पत्रिकाओं की प्रतिच्छाया दृष्टिगोचर हो रही है। दिल्ली, अमृतसर, जालंधर, चडीगढ़, लुधियाना, पटियाला या छोटे बड़े अनेक ऐसे केंद्र हैं, जहाँ से पंजाबी में पत्रिकाएँ नियमित रूप से साल 2021 में प्रकाशित होती रही हैं।

पत्रिकाओं की संख्या सैकड़ों में हो सकती है। लेकिन अभी मेरे सामने कहानी धाराय, मुहाँदरा, गुप्तगू, छिण, मिनी, पंज दरिया के साथ सृजना, समकालीन साहित, शब्द, चिराग और ऐसी अनेक दूसरी पत्रिकाएँ भी हैं, जो मोटे विशेषांकों के साथ पाठकों को संतुष्ट कर रही हैं। इनमें वैचारिकता लिए हुए लेख और निबंध रिपोर्ताज, चर्चाएँ, टिप्पणियाँ सहज भाव से पाठकों को बाँधती हैं। पारंपरिक स्तर पर कविता, कहानी, लघुकथा प्रायः हरेक पत्रिका में किसी न किसी रूप में प्रकाशित होती रही हैं। अनुवाद के क्षेत्र में भी पाश्चात्य भाषाओं का साहित्य, अंग्रेजी या हिंदी से अनूदित होकर, पंजाबी पत्रिकाओं में आता रहा है। कभी कभार भारतीय भाषाओं की कहानियाँ या कविताएँ भी पंजाबी में 2021 में पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। पत्रिकाओं का उद्देश्य मात्र पैसे कमाना नहीं, पाठकों तक सामाजिक सरोकार पहुँचाना भी है। ऐसे में, भाषा विभाग पंजाब 'जन साहित्य' और 'पंजाबी दुनिया' दो पत्रिकाएँ प्रति मास प्रकाशित करता रहा है। दिल्ली की पंजाबी साहित सभा, पंजाबी भवन से त्रैमासिक 'समकालीन साहित्य सज–धज के साथ बलबीर माधोपुरी के संपादन में छापता रहा है। पंजाबी त्रैमासिक सृजना के 203 अंक इसकी दीर्घ यात्रा के सूचक हैं। रघबीर सिंह के संपादन में यहाँ विदेशों में रचनारत पंजाबी साहित्य और भारत, पंजाब के लेखकों की रचनाएँ परख कर प्रकाशित की जाती रही हैं। सन् 2021 में ही इसका 200वाँ अंक इतना संपन्न और ठाटबाट के साथ निकला है जिसे पंजाबी साहित्य का दस्तावेज कहा जा सकता है। 2021 में जिंदर के, संपादन में चार अंक आए हैं जिनमें से 'समकालीन' कहानी का वार्षिक विशेषांक और आम आदमी के रेखाचित्र के साथ ही 'तलवेंदर सिंह' विशेषांक स्मरणीय होकर रह गए हैं। प्रतिबद्ध पत्रिका 'चिराग' तिमाही है। जिसे कर्मजीत सिंह देख रहे हैं। इनके संपादन में पाकिस्तान और भारत का ही नहीं, विभिन्न भाषाओं का उल्लेखनीय साहित्य पढ़ने को मिलता है।

भगवंत रसूलपुरी पंजाबी के कहानीकार हैं। इन्होंने कहानी धारा पत्रिका में जो आकर्षण दिए हैं उनके आधार पर पाठक इसे खरीदते और पढ़ते हैं। इसके लेखकों में प्रेम प्रकाश, जीतेंदर सिंह हाँस, दीप्ती बरूटा, बलबीर परवाना, जगतार सिंह प्रकाशित हुए हैं। बरनाला की पत्रिका मुहाँदरा का अपना इतिहास है। 1967 से प्रारंभ हुई यह पत्रिका प्रीतम सिंह राही के बाद डॉ. जोगेंदर सिंह निराला के द्वारा प्रकाशित की जा रही है। जिसके प्रबंध संपादक डॉ. राहुल रूपाल हैं। एक युग में मुहाँदरा मालवा की साहित्यिक पत्रिका का गढ़ रहा है और मुहाँदरा के अंक 2021 में भी पूरी गरिमा के साथ लेखकों और उनकी रचनाओं को प्रस्तुत करते रहे हैं। अमृतसर गुप्तगू और मिनी छोटी पत्रिकाओं में शुमार हैं। लघु कथा या मिनी कहानी के आंदोलन के साथ डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति इनका संपादन देख रही हैं। मिनी त्रैमासिक के 132 अंकों ने पंजाबी साहित्य जगत को आकर्षित किया है लगन, शौक और श्रम के साथ डॉ. दीप्ति अभी इसको निकालते आ रहे हैं। पटियाला से प्रकाशित 'छिण' त्रैमासिक पत्रिका हरप्रीत सिंह राना और देवेंदर पटियालवी के संपादन में छप रही हैं। इसमें चर्चा, परिचर्चा, पुस्तक–समीक्षा, साहित्यिक गतिविधियाँ सचित्र प्रकाशित होती हैं और भारतीय लघुकथाओं

के अनुवाद भी। 'पंच दरिया' पंजाबी का एक नामवर रिसाला रहा है। इसकी स्थापना श्रेष्ठ कवि प्रो. मोहन सिंह ने की थी। 2021 में इसके अंक भूपिंदर सिंह मांगट के संपादन में देखने को मिले हैं। इसमें कविताएँ, कहानियाँ, लेख और अन्य सामग्री प्रकाशित होकर, समय पर आ जाती हैं।

हाँ पंजाबी पत्रिकाएँ सोच, चिंतन, प्रतिबद्धता में अपने–अपने स्तर पर कायम हैं। मार्क्सवादी चिंतन, साम्यवाद, समाजवाद, जनचेतना, नारी, विमर्श, दलित चिंतन, आदिवासी साहित्य के साथ नए से नए प्रयोग भी पत्रिकाएँ दे रही हैं। इनके आधार पर साहित्य चौंकाता है, खींचता भी है। हम साहित्यिक पत्रिकारिता को नजरअंदाज इसलिए नहीं कर सकते कि पाठकों के साथ जुड़ाव इन्हीं के माध्यम से हो पाता है। कवि दरबार हो, साहित्यिक गोष्ठियाँ हों, सेमिनार हों, अथवा पुस्तक समर्पण या चर्चा परिचर्चा के आयोजन, पंजाबी पत्र–पत्रिकाएँ सूचना ही नहीं देतीं, पाठकों को दुर्लभ सामग्री भी परोसती रही हैं। साल 2021 इसका दस्तावेज है। यहाँ बड़े से बड़े लेखक, लेखिकाएँ, नए चेहरे, हस्ताक्षर हमें मिलते हैं। यह चर्चा के विषय भी बने रहते हैं।

कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, आलोचना, संपादन या तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में छात्र अध्ययन कर रहे हैं, साल 2021 में विविध विश्वविद्यालयों में यहाँ के पंजाबी विभागों द्वारा अनेक विषयों पर पंजीकरण होता रहा है। यह बताता है कि शैली विज्ञान, भाषा विज्ञान, पांडुलिपि पाठ की अपेक्षा अन्य विधाओं में शोधकार्य के लिए छात्र–छात्राएँ सामान्यतः आकर्षित रहे हैं। प्रायः यही हो रहा है कि शोधकर्ता, गाइड से निवेदन करते हैं कि उनको विषय सुझाया जाए। जिस पर वे एम फिल या पीएचडी कर पाएँ। स्वयं अपनी योग्यता और प्रतिभा के आधार पर विषय चयन करके बहुत कम छात्र अपने गाइड को बता पाते हैं कि वह इस दिशा में शोध करना चाहेंगे। ऐसे में विषयों की भरमार बताती है कि कहानी, उपन्यास, कविता साहित्य पर पंजीकरण अधिकाधिक हो रहा है। पंजाबी साहित्य में भी 2021 में ऐसा देखने में आया है। गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़, कुरुक्षेत्र, दिल्ली या अन्य किसी भी यूनिवर्सिटी में शोधार्थियों के विषयों का अध्ययन किया जाए तो सर्वेक्षण में यही निष्कर्ष सामने आएगा कि 2021 में काव्यालोचना, कथा समीक्षा, उपन्यास–विश्लेषण जैसे विषयों पर जोर दिया जाता रहा है। हाँ, कुछ अपवाद हो सकते हैं जहाँ मौलिक कार्य सृजनात्मक शोध भी कहलाता रहा है। ऐसे ग्रंथ छपकर सामने आए हैं।

रचनात्मक कविता के क्षेत्र में रविंदर रवि, जागीर सदधर, देविंदर विमरा, नीलू जर्मनी के साथ राजन दीप कौर मान, नवराज और ओमप्रकाश गासो की काव्यकृतियाँ मैं देख रहा हूँ। इनमें से होकर गुजरने के बाद 'दर्पण ते दर्शनय,' 'अपने हिस्से दा अंबर,' 'मैं नदिया दा पाणी,' 'वैराग,' 'कलम दी आहट,' 'रूख विच उकरीयाँ लकीरां' के साथ 'कित्थे है आदमीय' जैसे काव्य संग्रह संतुष्ट करने वाले हैं। इनमें व्यक्ति, समाज, देश और दुनिया का असंतोष कहीं न कहीं दर्शनीय है। व्यक्ति के अंदर का संकट, संत्रास, पीड़ा, घुटन और छटपटाहट, लगभग प्रत्येक कवि कहीं न कहीं महसूस कर रहा है। भूगोल और इतिहास की सीमाओं के पार रचनाकार देश के किसी क्षेत्र में हो या विदेश में, उसकी संवेदना सहृदयों के प्रति सराहनीय कहलाती है। रविंदर रवि 'दर्पण ते दर्शन' में अपने कृतित्व की झलक देकर छह दशक के काव्य सफर को सार्थक कर गए हैं। जगीर सदर गीत, कविता की आठ पुस्तकें देने के बाद इस वर्ष 'अपने हिस्से दा अंबर' लेकर आए हैं। बड़ी छोटी इन कविताओं में आम आदमी नगरबोध, ग्रामीण चेतना और प्रकृति की छटा निहारनीय है।

'मैं नदियाँ दा पाणीय' डॉ. देवेंदर विमरा का काव्य संग्रह पंजाब की मिट्टी, परिवर्तन, सामाजिक चेतना और मानवीय दर्द को उभारते हुए कुछ ही पंक्तियों में बड़ी कविता कह जाते हैं। 'वैराग' नीलू जर्मनी का काव्य संग्रह है, जो भारत से बाहर रहते

हुए मुक्त कविता और छंदबद्ध शैली में रचनारत हैं। इनके सरोकार विस्तृत हैं। एक शेयर देखिए–

सूरज दा मैं तख्त हडांवां, धूप दे बैठ बनेरे
सुपना तेरे रंग जेहा, संदली उड़े नैना विच मेरे
दिल दा चाअ के इक परछावा, तेरे बरगा जम्मा
ताईओं बुरकी तोर चानण दी मुँह विच पावा नेरे

वैराग में कवयित्री ने शिद्दत के साथ काव्य में अभिव्यक्ति दी है। एक और कवयित्री राजनदीप कौर मान 'कलम दी आहट' पुस्तक लेकर उल्लेखनीय वर्ष में आई हैं। यह कवयित्री की पहली पुस्तक है। इसमें संभावना है। शैली और शिल्प के साथ भाषा भी सहयोग दे रही है। 'कलम दी आहट' बनी रहे, यह जरूरी है। नवराज की किताब 'रुख विच उगीयाँ लकीरां' एक पठनीय कृति इस साल आई है। इन्होंने छोटी–छोटी कविताओं में गंभीर और विस्तृत अभिव्यक्ति दी है। कविता पाठक और श्रोता को बाँधने में सफल हो रही है। अंतिका में इन्होंने लिखा है–

स्थापना दी कविता नहीं/में/बदलाअ दा गीत/वनाणा है/शोर दी गूँज/विच गवाची खामोशी दा/संगीत बनना है। (पृष्ठ–183)

पंजाबी साहित्य में चिंतक और उपन्यासकार के तौर पर पहचान बना चुके रचनाकार ओमप्रकाश गासो की कई कृतियाँ उल्लेखनीय वर्ष में सामने आई हैं। इन्होंने बरनाला और मालवा के क्षेत्र में रहते हुए साहित्य रत्न की उपाधि और सम्मान पंजाबी सरकार से प्राप्त किया है। 'कित्थे है आदमी' इनका कविता संग्रह है, जिसका चौथा संस्करण नवंबर 2021 में, मित्र मंडल प्रकाशन द्वारा छपकर सामने आया है। कहा और सुना जाता है कि कविता बिकती नहीं, कविता के पाठक कम हो रहे हैं। इसी बात को चुनौती देकर शायद ओम प्रकाश गासो ने 'कित्थे है आदमी' अपनी कविता का चतुर्थ संस्करण प्रकाशित किया है। यह एक दीर्घ कविता है। जिसमें 162 अंश हैं। इन अंशों में समाज और देश ही नहीं, गाँव देहात के सामान्य व्यक्ति से लेकर, शहर की त्रासदी तक उद्घाटित हो रही है। मनुष्य आर्थिक और भौतिक स्तर पर फैलता हुआ, भीतर से सिकुड़ता जा रहा है। उसने मान मूल्य खो दिए हैं। कीमतें भुला दी हैं। ईर्ष्या, द्वेष होड़ में भागता हुआ पागल हो रहा है। ओम प्रकाश गासो के पास सरल भाषा में कहने के लिए बहुत कुछ है जो उनके कवि को मुखरित कर रहा है।

ग़ज़ल के क्षेत्र में 'शीशा' (ताहीरा सरां), 'कतरेविच इक सुमुंदर' (रजनी शर्मा), 'तेरा अपना' (आदेश अंकुश), 'मैं–अमैं' (जगविंदर जोधा) और 'हरफ हमेशा रहनगे' (सर्वजीत सोही) के साथ 'सुन्नी अंख दा सुपना' (गुरदियाल दलाल और सुरेंदर रामपुरी)। जैसी कृतियाँ आई हैं। कविता में आज सूक्ष्मता इस कदर उभर कर आ रही है कि चकित कर देती है। नई कवयित्री या स्थापित कवि, जब भारतीय कविता की टक्कर में अपनी भाषा पंजाबी में कुछ नया कह जाते हैं तो भाषा और पाठक को गौरवान्वित कर जाते हैं। न्यूयार्क में रहती कवयित्री ताहीरा सरा की ग़ज़लें 'शीशा' संग्रह में संतुष्ट करती हैं। बानगी देखिए–

मिट्टी, अग ते पानी चुप ए
तां हवा मरजाणी चुप ए
इहदा मतलब की समझां मैं
तंद टूटी ते ताणी चुप्पए (पन्ना–50)

ताहीरा सरा में गहराई और उसको मापने की दृष्टि काव्यबोध का एहसास करवा रही है। 'कतरा वी इक समुंदर' रजनी शर्मा का काव्य संग्रह है। रजनी शर्मा के पास कहने के लिए कविता और ग़ज़ल में बयान करने के लिए इतना कुछ है कि वह समृद्धियों, संस्कारों से लेकर संसार और देश की गहराइयों तक सामाजिक चेतना को अभिव्यक्ति दे जाती हैं। यह सामान्य–सी दिखने वाली एक महत्वपूर्ण पुस्तक, इसी साल 2021 में आई है। पंजाबी ग़ज़ल में जगविंदर जोधा का नाम आत्मीयता और गौरव के साथ लिया जाता है। इनके पास रचनात्मकता, मौलिकता और सृजन अंदर से

प्रस्फुटित हो रहा है। वर्तमान में पंजाबी के पाँच–सात श्रेष्ठ ग़ज़लकारों में जगविंदर जोधा को शुमार किया जा सकता है। इनकी नई किताब में 'मै–अमैं' एक अलग दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। उर्दू और हिंदी ग़ज़ल का अध्ययन करके जगविंदर जोधा ने अपना मुहावरा पंजाबी ग़ज़ल में प्रस्तुत किया है। परिवार के आत्मीय सदस्यों पर, लंबी ग़ज़ल की तरह इन्होंने रचनाएँ की हैं। माता, पिता, भाई, बहन, पत्नी और ऐसे संबंधो को परिभाषित करना कविता के माध्यम से जगविंदर जोधा के हिस्से आया है। इससे पूर्व भी इनकी कुछ कृतियाँ पाठकों में सराहना पा चुकी हैं। उल्लेखनीय वर्ष में ग़ज़ल के रूपाकार को लेकर इस कृति की चर्चा होती रही है।

'तेरा अपणा' आदेश अंकुश का ग़ज़ल संग्रह चेतना प्रकाशन से आया है। ग़ज़ल का यहाँ संबंधों में सहज होते हुए द्रवित होकर संवेदना तक चला गया है। इनकी ग़ज़लों में ताजगी है। नए हस्ताक्षर का स्वागत इस साल हुआ है। 'हरफ हमेशा रहनगे' सर्वजीत सोही ऑस्ट्रेलिया में जा बसे ग़ज़लकार की पंजाबी कविताएँ हैं। काव्य और ग़ज़ल में सर्वजीत सोही का अपना स्थान इसलिए है कि इन्होंने अनुवाद, संपादन में भी, रचनात्मक सहयोग, दिया है। विषय और भूमि अंतरमन में बीज की तरह फूटती है और सहज ही पेड़ की तरह छा जाती है। 'हरफ हमेशा रहनगे' की भावना भाषा और शब्दों के सेतु बनाकर मानव मन को आगे ले जा रही कविता कही जाएगी। साल 2021 में छपी पुस्तकों में ग़ज़ल विधा पर सूक्ष्मता के साथ संकलित और संपादन में, संयुक्त ग़ज़लें गुरदियाल दलाल और सुरेंदर रामपुरी ने प्रस्तुत की हैं 'ग़ज़ल ते छंद शास्त्र' और इसके विदान को समझाकर यहाँ उस्ताद ग़ज़लकार की तरह दोनों रचनाकारों ने अपनी भूमिका निभाई है। अनेक पंजाबी ग़ज़लकारों को शेयरों को उद्धृत करते हुए इन्होंने अपनी–अपनी रचनात्कमता के द्वार मुक्त किए हैं। ग़ज़ल और कविता सर्वाधिक छपती है और हाथों–हाथ वितरित भी हो रही है। लेकिन पंजाबी में कविता के गंभीर पाठकों और आलोचकों का अभाव है।

कहानी पंजाबी में सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली विधा है। कहानियों पर नाट्य रूपांतर तैयार किए जाते हैं। टीवी सीरियल या फिल्मों तक जाने के लिए रचनाकार कोशिश करते हैं। उल्लेखनीय वर्ष में 'सूलां दा सालण' कहानी संग्रह के लिए खालिद हुसैन को 2021 का साहित्य अकादमी राष्ट्रीय पुरस्कार पंजाबी में देने की घोषणा हुई तो इसका नया संस्करण छपकर सामने आया। इसमें 'उपदेश,' 'मैली धूप,' 'लकीर,' 'इश्क मलंगी' से लेकर 'हाथी ढ़ाई लख दा, खौफसूरत' और 'जागदे जमीर दी आवाज,' जैसी कहानियाँ शामिल हैं। खालिद हुसैन का संबंध जम्मू–कश्मीर से रहा है। एक लंबी यात्रा, साहित्य में इन्होंने तय की है। जम्मू यूनिवर्सिटी पंजाबी विभाग के रिसर्च स्कालर कमलदीप सिंह के संपादन में, सामने आया दूसरा संस्करण बेहतर प्रोडक्शन में उपयोगी जान पड़ता है। खालिद हुसैन के विषय आंचलिकता लिए हुए और अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते हैं। राजनीति हो या सामाजिक सरोकार, अर्थ तंत्र, हो या प्रेम–प्यार, नफरत या घृणा, लेखक की कलम बारीकी से कहानियों में जो संवेदना छोड़ती है, पाठक को बाँध लेती है। महाश्वेता देवी 'दीयाँ चौणियाँ' कहानियों का पंजाबी अनुवाद कर्मजीत जख्मी ने किया है। जिसका प्रकाशन तर्कभारती बरनाला से हुआ है। महाश्वेता देवी भारतीय साहित्य में उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं। इन्होंने अपने स्तर पर दलित, आदिवासी समाज की ही नहीं, मनुष्य के संबंधों की त्रासदी की बात भी अपनी कहानियों मे उभारी हैं। 'बीज,' 'द्रोपदी,' 'शिकार,' 'शाम सवेरे दी मां,' 'बेहूला' और 'हड़' जैसी कहानियाँ, आदमी को विचलित करती हैं और प्रोत्साहित भी। इनके अनुवाद में कर्मसिंह जख्मी ने ईमानदारी दिखाई है। पंजाबी में अनूदित कहानियाँ पुस्तकाकार कम आ रही हैं। जबकि इसके पाठक कई बार श्रेष्ठ कथाकार और स्तरीय कहानी की तलाश में भटकते हुए देखे हैं, खोज करते हुए। विश्व साहित्य को लेकर इंद्रजीत पाल कौर के अनुवाद में 'ग्यारह विश्व प्रसिद्ध कहानियाँ' पुस्तकाकार सामने आई हैं। भारतीय साहित्य की तरह विश्व साहित्य भी चाव से पंजाबी में पढ़ा जा

रहा है। 2021 की यह पुस्तक ओ हैनरी, चेखब, पर्ल एस बक्स, लियो टॉल्स्टॉय, बालजा जैसे कथाकारों को प्रस्तुत कर रही है। इसके साथ ही हिंदी के प्रतिनिधि हस्ताक्षर अमृतलाल नागर, शेखर जोशी और ऊषा प्रियंवदा की कहानियों के अनुवाद यही संकलन में शामिल किए गए हैं। सभी कहानियों का फलक विस्तृत और बहुआयामी है। विभिन्न समाजों की चर्चा करती ये कहानियाँ मूलतः संवेदना को उजागर करने वाली हैं। इनमें 'वापसी,' 'कोसी का घटियार' और 'दो आस्थाएँ' हिंदी की कहानियाँ हैं तो 'डार्लिंग,' 'रहस्यमयी हवेली', 'छह वर्षों बाद,' 'रोटी और शैतान का बच्चा,' 'ताबूतसाज,' 'पुनर्णनम और उसकी इच्छा' जैसी प्रतिनिधित्व करती कहानियाँ पाठक को आनंद दे जाती हैं। अनुवाद की भाषा, वफादार, सरल और सहज है। वाक्य विन्यास पंजाबी मुहावरों के अनुकूल है। ऐसी कृतियाँ पंजाबी में कभी–कभी प्राप्त होती हैं। 2021 में छपी इस पुस्तक के लिए चेतना प्रकाशन बधाई का पात्र है। 'सुण सुरजीत' कवयित्री और कथाकार सुरजीत बैंस का कहानी संग्रह है। ये अलग अंदाज की कहानियाँ हैं। उल्लेखनीय वर्ष में पढ़ने को मिली 'सुण सुरजीत' पुस्तक पर एक गोष्ठी में चर्चा करने का अवसर भी मिला। चंडीगढ़ के दर्जनभर आलोचकों, लेखकों, लेखिकाओं ने 'सुण सुरजीत' के अलग–अलग पहलुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए। सुरजीत बैंस के पास कहानी कहने का अपना अंदाज है। वह लिखती नहीं सुनाती हैं, और कभी–कभी चित्रवत, सबकुछ दिखा भी जाती हैं। इनकी कहानियों में 'भारतमाता,' 'हिसाब किताब,' 'दो बैलों वाला जाट,' 'जरायनपेशा' से लेकर 'बड़ी खानसामन,' 'सरदानी मुख्तार कौर जी,' 'अकलां तो परे' और 'अक्को' जैसी कहानियाँ इसलिए उल्लेखनीय लगीं कि इनके पात्र हमारे और आपके सजीव संसार में से लिए गए हैं। सुरजीत कौर बैंस की कहानी में पठनीयता बनी रहती है और काव्यरस भी झलकता है।

पंजाबी कथा की तीन पीढ़ियाँ एक साथ साल 2021 में सक्रिय रही हैं। इनकी सोच, अनुभव और अभिव्यक्ति अपने–अपने स्तर पर उभरकर सामने आई हैं। कहानीकार लंबी रचना लिख पाए या लघु कथा, रचना का मर्म उसकी संवेदना और लक्ष्य में निहित रहता है। पंजाबी में आंचलिकता, संबंधों की टूटन, आर्थिक पक्ष, कामातुर समाज और राजनीति, साथ–साथ काम कर रही हैं। कुछ प्रतिबद्ध रचनाकार कहानियों में पार्टी राजनीतिक पक्ष बयान करके, अपनी बात कह रहे हैं तो कहानियों में दूसरी तरफ अत्याधुनिकता भी फैली नजर आती है। भारतीय ज्ञानपीठ ने इसी साल पंजाबी की समकालीन कहानियाँ पुस्तक प्रकाशित की है। जिसका अनुवाद, चयन और संपादन फूलचंद मानव ने किया है। समकालीन पंजाबी कहानी में होनहार हस्ताक्षरों और पंजाबियत के सुधी पाठकों को समर्पित इस संकलन में 23 कहानियाँ, शामिल की गई हैं। पाँच–छह पन्नों की भूमिका के साथ यहाँ 'कामबलि', 'तराजू', 'बस तू अब सो जा', 'चौथी दिशा', 'नाकाबंदी', 'आत्मराम की आत्मा' और 'धूप छाह की दूरी' जैसी कहानियों को लिया गया है। डॉ. तिरलोक सिंह आनंद, केएल गर्ग, बलदेव सिंह, वरयाम सिंह संधू, जिंदर, बलदेव सिंह धालीवाल और सुखजीत जैसे समर्थ कथाकारों ने इन कहानियों में समकालीनता का जो परिवेश प्रस्तुत किया है, पंजाब के मानस को स्पष्ट करने में सफल कहलाता है। आज कहानी मात्र किस्सेगोई या बयान नहीं आंतरिक संघर्ष भी है। मनुष्य के अंदर जो संघर्ष चल रहा है, उसको रेखांकित करने के लिए नर और नारी पात्र जिस जीवट के साथ जद्दोजहद कर रहे हैं, ये कहानियाँ बयान कर रही हैं।

'लाशों के शहर में,' 'वापसी,' 'काली रातें,' 'उखड़े हुए वृक्ष,' कुछ इस तरह की कहानियाँ हैं जिन्हें जसबीर भुल्लर, जगजीत बराड, गुरबचन सिंह भुल्लर, एन कौर जैसे रचनाकारों ने ट्रीटमेंट देकर कथा विधा को सफल बनाया है। देशकाल, वातावरण, संवाद शैली जैसी बातों से ऊपर और आगे आकर, यहाँ कहानीकारों ने मानवीय संवेदना को स्पर्श किया है। 'बागी की बेटी', 'लिखतुम लाजवंती', 'जोगासिंह का चौबारा', 'पांव की जूती', 'नगीने वाली अंगूठी', 'पहली रात', 'शाने पंजाब',

'साधारण उदास आदमी' के साथ 'एक साधारण आदमी का पत्र' शीर्षक कहानियाँ एक काल खंड को अभिव्यक्ति दे रही हैं। इन रचनाकारों ने बड़ी व्यावसायिक और साहित्यिक पत्रिकाओं में छपकर नाम ही नहीं कमाया, पाठक वर्ग भी अर्जित किया है। यों गुरमुख सिंह मुसाफिर, करतार सिंह दुग्गल, अमृता प्रीतम, रामस्वरूप अणखी, और गुरदियाल सिंह सहित जसवंत सिंह विरदी, रघुवीर ढंड, सुरजीत विरदी और दलीप कौर टिवाणा अपने अपने समय में इतिहास रचने वाले कहानीकार कहलाए हैं। इनकी कहानियाँ पाठ्यक्रम में शामिल हैं। इन पर शोध कार्य हुआ है और हो रहा है। डेड लाइन (प्रेम प्रकाश) एक ऐसी उल्लेखनीय कहानी है जिसका अनुवाद भारत की लगभग सभी भाषाओं में प्रकाशित हुआ है। यों पंजाबी की समकालीन कहानियाँ जो ज्ञानपीठ से प्रकाशित इस हिंदी संकलन में 2021 में प्रकाशित होकर आई हैं। भारतीय भाषाओं की पत्रिकाओं में अनुवाद होकर समय–समय पर स्थान पाती और चर्चित होती रही हैं।

इसी तरह 'पंजाबी की लोक कथाएँ' प्रभात पेपर बैक से आई एक नवीन कृति है। जिसमें प्रांतीय ग्यारह चर्चित और लोकप्रिय कहानियों को संकलित किया गया है। कहानी के पाठक उपन्यास की तरह रचना के साथ जुड़ते हैं, और कभी कभार प्रतिक्रियाएँ भी व्यक्त करते हैं। स्मरण आ रहा है कि 2021 में ही हिंदी की 10–12 सरकारी और गैर सरकारी पत्रिकाओं ने पंजाबी कहानियों का अनुवाद हिंदी में प्रकाशित करके पाठकों तक पहुँचाया है। 'भाषा', 'हंस,' 'कथा यात्रा,' 'समकालीन भारतीय साहित्य', 'वागर्थ,' 'वीणा' और 'साक्षात्कार' आदि पत्रिकाएँ यहाँ उल्लेखनीय हैं। इनकी संपादकीय दृष्टि भारतीय साहित्य और विभिन्न भाषाओं की कहानियों पर टिकी रहती है, जो अनूदित साहित्य दिया करते हैं। हमारे यहाँ हर साल प्रतियोगिताओं में कहानियों को पुरस्कृत किया जाता है। इनके विशेषांक निकाले जाते हैं। 'दैनिक' 'नवां जमाना,' 'पंजाबी जागरण' और 'पंजाबी ट्रिब्यून' जैसे अखबार साल के अंत में वार्षिक लेखा–जोखा प्रस्तुत करते हुए साहित्य सर्वेक्षण सामने लाते हैं। ऐसे में अलग–अलग दृष्टिकोण समीक्षकों, संपादकों द्वारा पाठकों तक पहुँचते रहे हैं। कहानी और कहानीकार इस तरह मकबूल भी हो रहे हैं।

पंजाबी नाटक रंगमंच पर ही नहीं पाठ्यक्रमों में भी प्रस्तुत हो रहे हैं। एकांकी और नाटक आज समाज में सर्वाधिक प्रभावित करने वाली विधा है। रेडियो नाटक हो या टेलीविजन सीरियल अथवा फिल्मी रूपांतर, इनमें बराबर दिलचस्पी दर्शकों की बनी रहती है। अमृतसर, लुधियाना, पटियाला, चंडीगढ़ ही नहीं बठिंडा और दिल्ली जैसे शहरों में भी पंजाबी नाटक देखा और सराहा जा रहा है। रंगकर्मी अपने–अपने दृष्टिकोण से नाटकों का चयन करके उनकी प्रस्तुति देते हैं। और समाज में संदेश ले जाते हैं। यहाँ उल्लेखनीय है कि नाटक सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम कहलाता है। आत्मजीत सिंह, स्वराजबीर, जसवंत जफर, सतीश वर्मा जैसे रंगकर्मियों ने पंजाब में ही नहीं देश में पंजाबी नाटक के क्षेत्र में अपना स्थान बनाया है। आत्मजीत सिंह शिरोमणि नाटककार होने के साथ–साथ दिल्ली की संगीत नाटक अकादमी से भी पुरस्कृत हैं। पटियाला और चंडीगढ़ में विश्वविद्यालयों में नाट्य प्रशिक्षण विभाग हैं। यहाँ से डिग्री पाकर रंगकर्मी छात्र सिनेमा, टेलीविजन और मंच के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। 2021 में प्रकाशित मेदनी, 'धर्मगुरु', 'बुढ़ड़ा दरिया' और ऐसे अनेक नाटक सामने आ रहे हैं। जिनके लिए रंगमंच खुला मिलता है। केवल धालीवाल हो या साहब सिंह, शब्दीश, अनीता हो या देवेंद्र दमन पंजाबी नाटक के लिए चंडीगढ़ में सुपरिचित नाम हैं। इन्होंने समय–समय पर अपने योगदान द्वारा पंजाबी नाटक को प्रोत्साहित किया है।

गद्य के क्षेत्र में एस अशोक भौरा की दो पुस्तकें सामने आई हैं। 'वक्त दे नाल नाल' पुस्तक में विश्व की चर्चित हस्तियों को समझते हुए उन पर टिप्पणियाँ दी गई हैं। विश्व के अनेक देशों के सत्ता में हावी रहे व्यक्तियों का उल्लेख 'वक्त दे

नाल नाल' पुस्तक में, मिल रहा है। अमरीका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान या अन्य देशों के नामवर चेहरे यहाँ शामिल किए गए हैं। इसी तरह 'गायकी गगन दे उदास नगमे' एक दूसरी पुस्तक एस अशोक भौरा की प्रकाशित हुई है। जिसमें गिरीश कर्नाड, बरकत सिद्धू, दया सिंह दिलावर, प्रीतपाल सिंह बैंस और योगासिंह योगी के साथ के दीप, कर्मजीत धूरी, कुलदीप मानक और नरेंद्र बीबा, बहुत से संगीतकारों, गायकों का चित्रण, वर्णन उनकी कार्यक्षमता के साथ मिल रहा है। यह लोकोपयोगी साहित्य कहलाता है। विश्व के राजनेता हों या देश के गायक इनके बारे में जानने की इच्छा, आकांक्षा बहुत से पाठकों को रहती है, समय–समय पर, प्रकाशित होते रहे एस अशोक भौरा के इन लेखों को संकलित करके दो पुस्तकों में प्रस्तुत किया गया है। 'किरमची लकीरां,' इंद्रजीत सिंह संधू की रेखाचित्रों की पुस्तक है। इसमें सुरजीत पातर, सतेंदर सरताज, सुखविंदर अमृत और परवेज संधू जैसे हस्ताक्षरों को मिलाकर, उनसे भेंट करके अपने प्रभावों को इंद्रजीत कौर सिद्धू ने कलमबद्ध किया है। 'किरमची लकीरां,' भारत से कनाडा, अमरीका जैसे देशों में घूमकर आए साहित्य कर्मियों की चर्चा करने वाली पुस्तक है।

'गल्पकार संतबीर दा रचना संसार' एक समकालीन लेखक उपन्यासकार, कवि, कथाकार के साहित्यांकन की कृति है। इसके संपादक डॉ. राजेंद्र सिंह कुराली ने पूरे श्रम के साथ 300 पन्नों में रचनाकार संतवीर के साहित्य को मूल्यांकित करते हुए सात भागों में बाँटकर विश्लेषित किया है। ऐसी पुस्तकें लेखक के जीवनकाल में छपकर, उसे प्रोत्साहित करती हैं और बेहतर लिखने के लिए प्रेरणा भी देती हैं। 'मैं जिंदगी हाँ' उपन्यासकार ओमप्रकाश गासो के संवेदनात्मक निबंधों का संग्रह है। इसमें तीस निबंध शामिल हैं। लेखक भावों, विचारों के साथ संघर्षरत होते हुए अपने समय के यथार्थ को प्रस्तुत कर रहा है। पंजाब के प्रमुख 8–10 रचनाकारों को पंजाब रत्न की उपाधि राजकीय स्तर पर मिल चुकी है। गासो उनमें से एक हैं। 'मैं जिंदगी हाँ' के माध्यम से रचनाकार ओम प्रकाश गासो, जीवन के उत्थान–पतन और विश्लेषण की चर्चा बारीकी से कर रहे हैं। सांस्कृतिक परिवेश में इनका विशेष हस्तक्षेप है। इन्होंने निबंध लेखकों के दायरे में अपना विशिष्ट स्थान अर्जित किया है। प्रो. ओ पी वर्मा अर्थशास्त्र के प्राध्यापक रहे हैं। मालेरकोटला से सेवानिवृत्त होकर इन्होंने 'निजीकरण अते असीं' जैसी तीन पुस्तकें समाज को दी हैं। वैश्वीकरण, निजीकरण के द्वंद्व में आज आदमी पिसता जा रहा है। इसके लाभ–हानि, पक्ष–विपक्ष को रेखांकित करते हुए प्रो. ओ पी वर्मा ने 'निजीकरण अते असीं' में मूल्यांकन किया है।

पाश अवतार सिंह पंजाबी के क्रांतिकारी कवियों में शुमार हैं। 240 पृष्ठों की किताब 'पाश डायरी अते चिट्ठियाँ', संपादक अमोलक सिंह सामने आई हैं। इस पुस्तक में पंजाबी कवि पाश की देश और विदेश में लिखे पत्रों की बानगी मिलती है। दरअसल, आदमी चिट्ठियों में प्रायः पारदर्शी हो सकता है। और पाश का यह रूप इन चिट्ठियों में सामने आया भी है। शमशेर सिंह संधू, डॉ. नाहर सिंह, मुस्ताक सिंह, तेजवंत सिंह गिल और सुरजीत पातर के नाम लिखे पत्रों में अपने मन की गुत्थम गुत्था होती स्थितियों की गूँजती और घुटती आवाज को पाश ने उजागर किया है। यह चिट्ठियाँ पठनीय ही नहीं ऐतिहासिक दस्तावेज भी हैं। डायरी के पन्ने जिस तरह कवि की मानसिकता को उभारकर सामने ला रहे हैं। पठनीय कहलाए हैं। पाश पर पंजाबी के अतिरिक्त हिंदी अंग्रेजी में भी पर्याप्त सामग्री प्रकाशित होती रही है। 2021 की कृतियों में इसे उपेक्षित नहीं किया जा सकता।

'सेहत कुदरत दा तोहफा' जोगिंदर टाइगर की पुस्तक लगभग 75 अध्याय लिए हुए हमारे सामने है। इसमें स्वास्थ्य संबंधी चर्चा पाठकों के लिए लाभदायक इसलिए है कि मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बना रहे, तो मनुष्य दीर्घजीवी कहलाता है। पंजाबी में इस तरह की महत्वपूर्ण पुस्तकें कम देखने को मिलती हैं। उल्लेखनीय वर्ष

में इसी स्तर की दूसरी पुस्तक 'आपरेशन ब्लू स्टार 84' नृपइंदर सिंह रतन द्वारा लिखित चर्चा में रही है। यों ही एक आत्मकथा 'जिस आसण हम बैठे' डॉ. तेजवंत मान की लिखी नवरंग पब्लिकेशंस, समाना से प्रकाशित हुई है। तेजवंत मान पंजाबी के आलोचक, कहानीकार और प्राध्यापक हैं। इन्होंने अपनी प्रतिबद्धता के आधार पर अपनी जीवन यात्रा को, पत्रों के माध्यम से भी व्यक्त करने की कोशिश की है। यह पुस्तक पंजाबी के अन्य लेखकों की जीवनी से अलग इसलिए है कि इसमें साहस के साथ तेजवंत मान ने खुलकर अपने मन को प्रकट किया है।

डॉ. सुरजीत बराड आलोचक हैं। पंजाबी उपन्यास 'सामाजिक सभ्याचारक सरोकार' इनकी शोधकृति है। गंभीरता के साथ लोकप्रिय साहित्य में भी पर्याप्त प्रचलित है। बड़े उपन्यासकारों के अतिरिक्त, नए लेखकों ने भी उपन्यास कला में हस्तक्षेप करते हुए उपन्यास दिए हैं। सांस्कृतिक और सामाजिक सरोकारों को विश्लेषित करते हुए डॉ. सुरजीत बराड ने इस पुस्तक में उपन्यासों की चर्चा करते हुए उनका सामाजिक पक्ष उजागर किया है। इसी तरह आलोचना में पीएचडी और एम.फिल के दौरान हुए शोधकार्य पर भी अनेक पुस्तकें इस साल प्रकाशित होकर आई हैं। 'वाणी श्री गुरु तेग बहादुर जी' डॉ. रत्न सिंह जग्गी और डॉ. गुरशरण कौर जग्गी की संयुक्त कृति है। व्याख्याकार के तौर पर दोनों रचनाकारों ने गुरु तेग बहादुर जी की वाणी को सहज भाव से यहाँ पाठकों के लिए खोलकर प्रस्तुत किया है। '..ते कलम लिखदी रही' इंद्रजीत कौर सिद्धू की गद्य रचना है। इसमें कनाडा के पंजाबी बच्चे, कनाडा की पंजाबी संस्कृति और इसी स्तर के विषयों को स्पर्श करते हुए लिखा गया है। दो भागों में विभाजित यह छोटी–सी किताब रोचक पाठ प्रस्तुत करती है। 'निगिय्याँ यादां दे सिरनावे', बाबू सिंह रैहल की भारत यात्राओं से जुड़ी किताब है। इसमें सिक्किम, भूटान, कोलकाता, सिलीगुड़ी, गोहाटी, गोवा के साथ ही रामेश्वरम, चेन्नई, जयपुर, पुष्कर, ओड़िशा के मंदिर, पटना साहिब जैसी यात्राओं का वर्णन अपने अनुभवों के आधार पर किया है। डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति की किताब 'इक भरा पूरा दिन' रोगियों को आत्मबल प्रदान करने वाली कृति सिद्ध हो रही है। जीवन में संघर्ष करके भी व्यक्ति स्वास्थ्य का सुधार कर पाए, तभी उसके हित सुरक्षित हो सकते हैं। अपने अनुभवों के आधार पर डॉ. दीप्ति ने अट्ठारह अध्यायों में पुस्तक मुकम्मल की है, और इसका नोटिस भी लिया जा रहा है। 'बाबा साहेब अंबेडकर दी जीवनी' के लेखक धनंजय कीर हैं। 600 पृष्ठों में छपी इस कृति का अनुवाद डॉ. बलदेव सिंह बद्दल ने किया है। बाबा साहेब पर पंजाबी में लिखी गई किताबें उपलब्ध हैं लेकिन अनूदित जीवनियों में यह एक उल्लेखनीय कृति कहलाएगी। 'राख चो उगे' डॉ. महेंद्र सिंह रंधावा आईसीएस की पुस्तक का अनुवाद है। इसका संपादन जगदीश कौर और दवि देविंदर कौर ने किया है। पंजाबी संस्कृति के लिए डॉ. महेंदर सिंह रंधावा चिंतनशील रहे। उनकी रचना 'आउट आफ द एशिज' का यह पंजाबी अनुवाद है। इस पुस्तक में पश्चिमी पाकिस्तान से पूर्वी पंजाब के गाँव, देहातों में आए शरणार्थियों के पुर्नास्थापन का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास भारतीय साहित्य में बड़े शौक से पढ़े जाते हैं। लोकप्रिय और साहित्यिक कृतियों में पंजाबी उपन्यासकारों ने अंतर रखते हुए हर तरह की रचना प्रस्तुत की है। अमृता प्रीतम, नानक सिंह, जसवंत सिंह कंवल, दलीप कौर टिवाणा आदि के साथ राम स्वरूप अणखी के बाद अब जो पीढ़ियाँ सक्रिय हैं, उनके तेवर अलग हैं। सम्मान और पुरस्कार कैसे दिए लिए जाते हैं। संस्थाएँ या अकादमियाँ इसमें किस तरह का व्यवहार प्रदर्शित करती हैं। ऐसी घटनाओं को लेकर जहाँ हिंदी में ममता कालिया ने 'कल्चर वल्चर' जैसा उपन्यास दिया था, वहीं पंजाबी कथाकार, कवि और उपन्यासकार जसबीर भुल्लर ने 'खिद्दो' उपन्यास द्वारा बड़ी हलचल पैदा की है। आदान–प्रदान,

लोभ–लाभ या ऐसी ही विकृतियाँ समाज में उजागर होने लगी हैं। इसका चित्रण जसबीर भुल्लर ने अपने उपन्यास 'खिद्दो' में किया है। 'जलावतनी' नवतेज सरना का उपन्यास है जिसका पंजाबी अनुवाद पवन गुलाटी द्वारा किया गया है। सरना उच्च प्रशासनिक अधिकारी हैं। और उनके इस उपन्यास को पाठकों ने सराहा और सम्मानित भी किया है। 'मिट्टी दी चिड़ी' मुख्तार गिल का उपन्यास दूसरे संस्करण में इसी साल प्रकाशित हुआ है। वरयाम मस्त, नदीम परमार और ओम प्रकाश गासो के उपन्यास भी हमारे सामने है। 'काली धरती गोरे लोक', 'मापे वखरी तरां दे' और 'रवानगी दे रंग' यह तीनों उपन्यास इसी साल आए हैं। 'काली धरती गोरे लोक' में वरयाम मस्त ने भारतीय और पाश्चात्य सभ्यता का तुलनात्मक अध्ययन करके अपने भ्रमण के आधार पर पात्रों पर केंद्रित किया है। 'मापे वखरी तरां दे' नदीम परमार का उपन्यास है तो 'रवानगी दे रंग' ओम प्रकाश गासो का लघु उपन्यास है। ओम प्रकाश गासो कविता, उपन्यास, निबंध और चिंतन में सक्रिय हैं। इन्होंने ग्रामीण अंचल और मालवा की संस्कृति को उजागर करते हुए अपने विषय को उभारा है।

पंजाबी साहित्य, पुस्तकाकार आने से पहले, किसी भी अन्य भाषा की तरह पहले पत्रिकाओं या अखबारों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचता रहा है। साल 2021 में महत्वपूर्ण पत्रिकाओं में से कुछ नाम ले सकता हूँ जहाँ बेहतरीन साहित्य छपता रहा है। कविता, कहानी, लेख, आलोचना ही नहीं तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद की दृष्टि से भी श्रेष्ठ रचनाएँ ऐसी साहित्यिक पत्रिकाओं में आई हैं। 'साहित्यिक एकम' और 'अक्खर' इनमें से अलग पहचान बना चुकी हैं। अमृतसर से प्रकाशित हो रही यह त्रैमासिक पत्रिका अरतिंदर संधू के संपादन में आ रही है। इसके 2021 के चारों अंक गुरवचन सिंह भुल्लर, हरमीत विद्यार्थी, सुरेंदर रामपुरी, जसबीर भुल्लर के साथ जगजीत सिंह आनंद, मनमोहन और बलबीर परवाना को प्रकाशित करते रहे हैं। इनके साथ ही डॉ. नरेश, सुरेंदर सिंह तेज और प्रेम सिंह मान भी उल्लेखनीय रचनाकार हैं। जिन्हें 'साहित्यिक एकम' के अंकों में शामिल किया है। इनकी चर्चा अलग–अलग कारणों से क्रमशः आगे के अंकों में मैं पढ़ता रहा हूँ। इसी तरह विशाल के संपादन में 'अक्खर' नामक पत्रिका ब्यास, जिला अमृतसर से पाठकों का ध्यान खींचती रही है। इसके अंकों में विधा, विविधा की बानगी सराहनीय कहलाती है। संपादकीय टिप्पणियाँ तीखी हो जाती हैं और कटाक्ष भी कर जाती हैं। पंजाबी कथाकार दलबीर चेतन पर केंद्रित 'अक्खर' का मई, जून, जुलाई 2021 का अंक खासतौर पर रेखांकित किया जा रहा है। 'हथ दंदा दी प्रीत' कविता इसी अंक में वरिष्ठ कवि मोहनजीत द्वारा लिखित शामिल की गई है। जितेंदर सिंह हांस ने इसी अंक में व्यक्ति चित्र लिखकर, कथाकार गुरपाल सिंह लिट्ट को स्मरण किया है। कविता चयन हो या रेखांकन संपादन कला में विशाल ने चेहरा उभारा है। अनूदित कविताएँ और कहानियाँ अनुवाद एवं चर्चा परिचर्चा यहाँ मुखर होकर आई हैं और पढ़ी भी गई हैं।

नई पत्रकाओं में तासमन के उल्लेखनीय अंक बतला रहे हैं कि संपादक के पास सूझबूझ और संपर्क दोनों हैं। सतपाल भीखी के संपादन में तासमन पटियाला से अक्रम पत्रिकाओं में शुमार है। इसमें कवि विशेष, शायरी, शढसीयत, कहानियाँ, क्लासिक, काविसुखन, दस्तावेज और विश्व साहित्य के साथ प्यार प्रसंग, कोरोना डायरी, रमजा, फोकस, कविता दा बूहा, चिंतन, विश्व कहानी, परख पड़चोल जैसे विभाजन बता रहे हैं कि भारतीय और विश्व साहित्य को प्रस्तुत करने में तासमन के सरोकार हैं। इस पत्रिका में हर अंक विशेषांक की तरह आने लगा है। इसमें पंजाब और भारत के ही नहीं, विदेशों में स्थापित हो चुके पंजाबी प्रवासी, रचनाकार आमंत्रित किए जाते हैं। जगजीत बराड, सुरजीत या ऐसे ही अनेक रचनाकारों की कहानी, कविता यहाँ तरजीही तौर पर प्रकाशित की हैं। पत्रिका में संपादकीय टिप्पणियाँ भी ध्यान आकर्षित करती हैं। 200 पृष्ठों का एक अंक महत्वपूर्ण कहला रहा

है कि इसमें बीस पुस्तकों का उल्लेख करते हुए उन पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ दी गई हैं। एक और महत्वपूर्ण पत्रिका 'प्री पोटिक' सामने आई है। इसकी विशेषता विदेशी और प्रवासी साहित्य को अनूदित रूप में देने के कारण मानी जा रही है। स्वर्गीय कवि हरिनाम पर एक परिशिष्ट देकर इन्होंने आधुनिक और अत्याधुनिक कविता की चर्चा को हवा दी है। इसके साथ ही उदयन वाजपेयी, लवली गोस्वामी की कविताएँ भी पंजाबी में अनूदित होकर पाठकों का प्यार प्राप्त कर रही हैं। चित्र प्रस्तुति और काव्यानुवाद को लेकर प्री पोटिक एक नया इतिहास स्थापित कर सकती है। 240 पृष्ठों का अंक अपनी शृंखला में दूसरा कहला रहा है जिसका मूल्य 170 रुपए छपा है। इसी में बीसवावा शिम्बो रसका, बेरा पावलोवा, ली मिन युंग और नोवेल पुरस्कार प्राप्त निकानोर पार विदेशी रचनाकारों की कविताओं के अनुवाद चुनकर समाज को अर्पित किए हैं।

'फिलहाल' नामक चंडीगढ़ से प्रकाशित एक अन्य अनियतकालीन पत्रिका है। जिसमें भाषा को लेकर तलखी और ताजगी दोनों मिलती हैं। संपादकीय दृष्टिकोण अलग है। गुरबचन इसका संपादन करते हैं। यह आलोचक हैं। इन्होंने शमील, हरपाल सिंह पन्नू, अमरीक, जसलीन कौर, सुभाष परिहार, जगतारजीत सिंह के साथ हरविंदर भंडाल आदि की मुखर रचनाएँ देकर 'फिलहाल' अंक 30 को मुखर बनाया है। अतिथिय संपादकीय सुखदेव सिंह द्वारा लिखा गया है। जिसमें निराशा और गुस्से के आलम में पंजाब के बारे में चर्चा की गई है। पत्रिका का प्रकाशन, मुद्रण उल्लेखनीय है। रंगीन पृष्ठों ने इसको और भी मनमोहक बना दिया है। 'वाहगा' पत्रिका पंजाबी बोली और पंजाबियत को समर्पित है। जिसका संपादन चरनजीत सोहल और सुखचैन ढिल्लों कर रहे हैं। अमृतसर से प्रकाशित यह पत्रिका पाठकों को जोड़ रही है। इसमें भी भारत के अतिरिक्त विदेशों में रह रहे पंजाबी लेखकों की रचनाएँ दी जाती हैं। के सी मोहन व अन्य अनेक स्थापित पंजाबी रचनाकार यहाँ मिलते हैं, जिनकी रचनाएँ पंजाबी से भारत की अन्य भाषाओं में भी जा रही हैं।

यह संयोग ही है कि पंजाबी पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं के अनुवाद हिंदी की अनेक पत्रिकाएँ सहज भाव से प्रकाशित करती आई हैं। 'आर्यकल्प' बनारस से डॉ. लोलार्क द्विवेदी के संपादन में आई है। जिसमें पंजाबी साहित्य उल्लेखनीय तौर पर प्रकाशित हुआ है। हरियाणा गौरव सम्मान प्राप्त करने वाले यमुनानगर के पंजाबी कवि डॉ. रमेश कुमार की पुस्तक 'बहस–बिहून' चेतना प्रकाशन से उल्लेखनीय वर्ष में महत्वपूर्ण है। छोटी कविता में बड़ी बात कहना और रचनात्मक स्तर पर कहना, तनिक कठिन कहलाता है। लेकिन डॉ. रमेश कुमार इस दिशा में अपनी पहचान बना चुके हैं कि उन्होंने मार्मिक अभिव्यक्ति के द्वारा जो कविताएँ इस संकलन में प्रस्तुत की हैं, उनमें 'घर, दीवा, डीलीट बदरंग, मास्क, शिलालेख, कोलाज, पत्थर, एहसास जैसी कविताओं को शिलालेख–सी स्मणीय बना दिया है। गहराई और अनुभव की बुलंदी बहसबिहून काव्य पुस्तक में नजर आ रही है। कन्नड महाकाव्य रंपा नागराजइया द्वारा रचित है। 'चारू–वसंता' नामक इस महाकाव्य का हिंदी से पंजाबी अनुवाद रजवंत कौर प्रीत ने किया है। इसके प्रकाशक आरसी पब्लिशर्स दिल्ली हैं। 290 पृष्ठों का यह महाकाव्य एक महत्वपूर्ण कृति के रूप में सामने आया है। जिसकी भूमिका में गुरबचन सिंह भुल्लर ने पहल कदमी की है। अनूदित कविता सदैव सराहनीय तभी हो सकती है जब उसकी भाषा जनप्रिय हो और सामान्य पाठक के लिए उपयोगी भी।

हम ऊपर बयान कर आए हैं कि तमाम साहित्यिक विधाएँ पंजाबी में गौरवान्वित हो रही हैं। जिन्हें साल 2021 में पत्र–पत्रिकाओं ने ही नहीं, पुस्तकों ने सम्मानित किया है। यह प्रस्तुति, विषय और रुझान यह सिद्ध करता है कि पेपर बैक्स के अतिरिक्त हार्डबाइंड किताबें आज उतनी ही लोकप्रिय हैं और पुस्तकालयों के लिए खरीदी, सहेजी भी जा रही हैं। मुद्रण प्रकाशन के क्षेत्र में

भले ही तरह–तरह के प्रयोग हो रहे हों लेकिन अभिव्यक्ति के स्तर पर आत्मीय स्पर्श, भावों और विचारों में यहाँ मुखरित हो रहा है। उपन्यास हो या कहानी, कविता हो या नाटक, सभी विधाओं में सैकड़ों लेखक, लेखिकाएँ अपनी प्रतिभा के साथ इस साल बोलती बतियाती दिखाई दे रही हैं। आलोचना, संपादन, अनुवाद, रेखाचित्र, डायरी, संस्मरण और गद्य की अन्य उपेक्षित विधाओं में पंजाबी में साहित्य रचा गया है और 2021 ने कोरोना महामारी के बावजूद पाठक वर्ग को संतुष्ट किया है।

❑❑❑

13

बांग्ला साहित्य

सुव्रत लाहिड़ी

कोविड अतिमारी की भयानकता को पार करते हुए हम 2021 तक पहुँचे। यह सही है कि यहाँ तक पहुँचने में हमें बहुत कुछ खोना पड़ा। कोविड ने हमारे समाज में अपना प्रभाव छोड़ा।

खासकर जीवन जीविका और रोजमर्रा के जीवन में महामारी का प्रभाव अभी भी देखने को मिलता है। संस्कृति पर भी इसका असर देखने को मिला। प्रकाशन क्षेत्र इसके प्रभाव से मुक्त नहीं रहा। व्यावसायिक दृष्टि से बंगाल में गंगा किशोर भट्टाचार्य ने सबसे पहले 1816 ईस्वी में सचित्र पुस्तकों का प्रकाशन किया। इस वर्ष उन्होंने कवि भारतचंद्र का काव्य ग्रंथ 'अन्नदा मंगल' का सचित्र संस्करण प्रकाशित किया था। 1820 ईस्वी में तीस बांग्ला पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। तत्पश्चात् बाधा और उतार–चढ़ाव पार करते हुए पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय तेजी से विकसित हुआ। लेकिन कोरोना काल में नई बाधा का सामना करना पड़ा। परंतु बाधा का अतिक्रमण करते हुए 2021 में बांग्ला प्रकाशन व्यवस्था फिर से गतिशील होने लगी।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में अनगिनत कृतियाँ प्रकाशित हुईं।

कथा साहित्य

उपन्यास– इस समय काल में बांग्ला में अनेक उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। सभी उपन्यासों पर चर्चा करना संभव नहीं है इसलिए पाठकों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय कुछ उपन्यासों पर यहाँ चर्चा की जाएगी।

'कुआशा नगरीर उपाख्यान' श्रीजात द्वारा रचित यह उपन्यास पाठकों में बहुत चर्चित रहा है। जादुई यथार्थ इस उपन्यास की विशेषता है। कोहरे से घिरे एक जंगल के अंतिम छोर पर उसी नगरी की राजकन्या कैद है। उसके माता–पिता दिवंगत हो चुके हैं। अब महामंत्री इस कुआशा नगरी के राजा बन गए हैं। उन्हीं के आदेश से इस राज्य में सब कुछ बदला जा रहा है। जिस नगरी में शांति थी अब वहाँ युद्ध के लिए तैयारी चल रही है। क्योंकि राजा की इच्छा है कि युद्ध किया जाए। और राजा की इच्छा ही सब कुछ है। राज्य के सीमांत में शिविर बनाया जा रहा है और बाहर से आए हुए सभी लोगों को कैद कर नवनिर्मित शिविर में रखा जा रहा है। क्यों? इसका एक ही उत्तर है, राजा की इच्छा है।

राजा की तानाशाह और जनविरोधी नीतियों के खिलाफ प्रतिवाद करने वालों के साथ यही किया जाता है। लेकिन विप्लवी नाम के एक व्यक्ति ने सबको सचेत किया और एकजुट किया। ताकि प्रजा मिलकर तानाशाह को खत्म कर पाए। इसीलिए विप्लवी को कैद कर लिया गया।

राजकन्या भी कैद है और वह इस प्रतिवादी क्रांतिकारी विप्लवी से प्रेम करने लगी। पर राजा

प्रतिवादी विप्लवी को न्याय का प्रहसन कर मौत की सजा दे देता है। हर तानाशाह राजा ऐसा ही करते हैं।

इस कुआशा नगरी में भी जिसने भी राजा के खिलाफ आवाज उठाई राजा ने उसे ही मौत के घाट उतार दिया। ऐसी परिस्थिति में एक विदेशी वहाँ आता है। वह अपने को यादों का कारीगर बताता है। यहीं पर कहानी में एक घुमाव आता है। जादू और यथार्थ दोनों सम्मिलित होकर कथा को नया आयाम देते हैं। विश्व के वर्तमान यथार्थ और तानाशाह की क्रूर अमानवीयता को उकेरा गया है।

उपन्यासकार ने वर्तमान समय और राजनीति के तालमेल के यथार्थ को जादू के आवरण में नई शैली में चित्रित किया है।

तीरंदाज : सुचंद्र मुखोपाध्याय बांग्ला के वरिष्ठ और बहुत ही लोकप्रिय उपन्यासकार हैं। 'अंदाज' उनका नया रहस्य उपन्यास है। सुमित घोषाल उर्फ बुलु इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। शबर भी इस उपन्यास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शबर जासूस है। शबर की आँखों से दर्शनशास्त्र में एम.ए. सुमित को आँका गया है। जीवन के प्रति बहुत ही उदासीन सुमित घोषाल कोलकाता में टैक्सी चलाकर अपना गुजारा करता है। इन सबके बीच दर्शनशास्त्र की पुस्तकें भी पढ़ता रहता है। परिस्थितिवश वहाँ गोलाबारी में रहता है जहाँ विभिन्न आपराधिक तत्वों से वह घुल–मिल जाता है। गुले, पंचा, बाबुल, शीतल जैसे क्रिमिनल भी वहीं रहते हैं। वह इनको साथ लेकर जाह्नवी कुमार बसु के यहाँ डकैती करता है।

क्योंकि जाह्नवी कुमार बसु ने सुमित के पिताजी के व्यवसाय का सत्यानाश कर दिया था। उसी का प्रतिशोध लेने के लिए गैंग के साथ मिल जाता है। जाह्नवी की बेटी सोनाली सुमित से प्यार करती है। वह पुलिस को फोन करके बताती है कि सुमित अच्छा आदमी है और उसने कभी किसी का खून नहीं किया है।

लेकिन सुमित सोनाली के पास न जाकर पंद्रह साल की लड़की दीया के पास चला जाता है क्योंकि दीया उसे बेतहाशा प्रेम करती है।

शबर इस उपन्यास के विभिन्न चरित्रों की जटिल गाँठ धीरे–धीरे खोलता जाता है। बांग्ला साहित्य में यह रहस्य उपन्यास एक नया संयोजन है। कृष्ण पर्व प्रथम खंड– बांग्ला भाषा में इतिहास की घटनाओं को केंद्र में रखकर कथा साहित्य रचने की परंपरा बहुत पुरानी है। इसी कड़ी में तमाल बंधोपाध्याय का उपन्यास 'कृष्ण पर्व का प्रथम खंड' 2021 में प्रकाशित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। उपन्यास का आरंभ कृष्णचंद्र की नदिया के राजा बनने की घटना से होता है। और कभी भारत चंद्र की काव्य कृति अन्यदा मंगल की रचना होने तक की लंबी अवधि को समझते हुए इस उपन्यास का अंत होता है।

राजा कृष्णचंद्र के चरित्रांकन में लेखक ने बड़ी बारीकी से विभिन्न घटनाओं का सहारा लिया है। राजा कृष्णचंद्र का जीवन बहुत घटना बहुल है। उनके बहुआयामी चरित्र में दंभ, शौर्य, कामना, वासना में उदासीनता है तो दूसरी तरफ उनका कला, संगीत और साहित्य के प्रति अगाध प्रेम, लगाव भी है। उनके चरित्र के विरोधाभास को उपन्यासकार ने विश्वसनीय ढंग से चित्रित किया है। निष्ठुरता और क्रूरता, छल, बल, कौशल सब कुछ राजा बनने के लिए अपनाया जाता है। इस कार्य में कई व्यक्तियों ने उनका साथ दिया। एक ब्राह्मण हरनाथ उनके प्रमुख परामर्शदाता थे। पर उनको भी कृष्णचंद काम होने के बाद बाहर नहीं जाने देते। जब हरनाथ सिंहासन के उत्तराधिकारी चाचा रामगोपाल की हत्या करने का परामर्श राजा कृष्णचंद्र को देता है तो कृष्णचंद्र प्रत्यायन करते हैं। लेकिन छल के जरिए अपना काम कर लेते हैं।

कृष्णचंद्र का ऐय्याशीवाला रूप भी अनछुआ नहीं है। सुंदरी रमणी के प्रति उनका आकर्षण भी है। एक ऐसा समय आता है जब बंगाल के नवाब का लाखों रुपए का कर्ज राजा कृष्णचंद्र चुका नहीं पाते। उनके समय के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेश को ध्यान में रखकर और तत्कालीन विभिन्न घटनाओं के कारण हुए उथल–पुथल को केंद्र में रखकर इस उपन्यास का ताना–बाना रचा गया है।

क्षत्रिय राजा कृष्णचंद्र के साथ ब्राह्मण हरनाथ का चरित्र भी इस उपन्यास में महत्वपूर्ण है। अरुण आप ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान का सपना देखता है जबकि उसका यह सपना पूरा नहीं होता।

इस उपन्यास का अंत कालीभक रामप्रसाद और कवि भारतचंद्र के साथ राजा कृष्णचंद्र की मित्रता दिखाकर होता है। उन्हीं की प्रेरणा से कवि भारतचंद्र नूतन मंगल रचना में लग जाते हैं। यह उपन्यास बंगाल के इतिहास का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

'महाकांतार' यह अनीता अग्निहोत्री का नवीनतम उपन्यास है। यह उनके पूर्ववर्ती उपन्यास महानदी की अगली कड़ी है। विकास की विभिन्न योजना के चलते विस्थापित होते लोगों के संघर्ष को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। हीराकुंड डैम के कारण ज्यादातर लोग विस्थापित हुए पर उनके पुनर्वास पर ध्यान नहीं दिया गया। उनकी जीविका भी संकटग्रस्त हो गई। महाकांतार यानी विशाल जंगल। इंद्रावती नदी ओड़िशा के कालाकुंडी कोरापुट फिर छत्तीसगढ़ होते हुए महाराष्ट्र के गढ़चिरौली पहुँचकर गोदावरी नदी में अपनी यात्रा समाप्त करती है। पूरे इलाके में गहन अरण्य था। आदिवासियों की अपनी भूमि। बीसवीं सदी के छठे दशक में पूर्वी बंगाल के विस्थापित शरणार्थियों को दंडकारण्य भेजा गया। नतीजतन आदिवासियों और विस्थापित बंग निवासियों के बीच टकराहट होने लगी। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का बॉक्साइट खनन के खिलाफ डोगरिया कांधा आदिवासियों ने विरोध किया। अपनी भूमि से विस्थापित और वंचित हो रहे लोगों की संघर्ष गाथा है यह उपन्यास।

गोंड आदिवासियों की संस्कृति बहुआयामी है। लेकिन ओड़िशा से महाराष्ट्र तक विस्तृत इलाके की एक करोड़ से भी ज्यादा आबादी को विकास के नाम पर हाशिए पर डाल दिया गया।

इस उपन्यास में कोई नायक या नायिका नहीं है अपितु लोक विश्वास द्वारा निर्मित जुड़वा भाई, बहन, सुनादेई और बूढ़ा राजा हैं। इस उपन्यास के प्रधान चरित्र हैं। इसी प्रकार गीतकुड़िया नियम जो जीवन के हर पल को अपने गीतों में बाँध के रखता है वह भी इस उपन्यास में अहम भूमिका निभाता है। इसी तरह सालोआ जुडुम के अत्याचार से खदेड़ा गया पईराम, पन्नु, प्रजा कन्या देवकी झोडिया, पहाड़ दखल के खिलाफ आंदोलन संगठित करने वाला शंकर परजा, जीविका के लिए शहर को जाते इस इलाके के आम लोग, यहाँ आए पूर्वी बंगाल के विस्थापित शरणार्थी और शोधार्थी कालांतर में समाज सेविका गायत्री आदि इस उपन्यास में अहम भूमिका निभाते हैं।

उपन्यासकार अनीता अग्निहोत्री ने इस अंचल के विवर्तन, यहाँ की बदलती कृषि अर्थनीति और और आम लोगों पर हो रहे शोषण, अत्याचार, क्रूरता के साथ प्रकृति की लूट, सरकारी तंत्र की विदेश नीति, राजनीति और अर्थनीति के विकास के नाम पर राष्ट्र शक्ति की और मानवीयता का नंगापन इस उपन्यास में अत्यंत यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है।

'जानो से माटी पेले : हेलो जी' वर्ष में प्रकाशित होने वाला सुमित चक्रवर्ती का यह एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह समाज के हाशिए पर रहने वाले एक नगरनी या फालतू आदमी कमल मालाकार की जीवन कथा है। वही इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र है। उसकी एक छोटी–सी चाय की दुकान है। एस ए 1 अदना–सा चरित्र के माध्यम से लेखक कुछ मौलिक प्रश्नों को पाठकों के सामने रखते हैं। वस्तुतः कमल के शरीर और मन को लेकर लगातार खोज चलती है। सवाल उठाया जाता है कि क्या शरीर और मन दो पृथक तत्व हैं? मन शरीर के बारे में सोचता है और शरीर मन को लेकर परेशान है। दोनों में संतुलन होना आवश्यक है।

शरीर और मन के बीच वार्तालाप चलता रहता है। कमल का जीना ही सवालों के घेरे में है। अनगिनत समस्याओं से घिरा हुआ है। वह अस्वस्थ भी रहता है। तमाम शारीरिक और पारिस्थितिक सुविधाओं के बावजूद कमल जीना चाहता है। उसे जीवन और मृत्यु को लेकर तरह–तरह की उपलब्धियाँ होती हैं। कमल पंछी की आवाज सुनना चाहता है। संगीत में जीवन जीना चाहता है। कथावस्तु और चरित्र की संरचना की दृष्टि से यह उपन्यास नयापन लिए हुए है। यही इस उपन्यास की सार्थकता है।

संमात्रानंद द्वारा रचित 'दीनेश गुप्तेर रिवलबर' आलोच्य वर्ष में बहुचर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास के कथानक का ताना–बाना सनसनीखेज रहा है। पराधीन भारत के एक गुप्त संगठन के गुप्त धन को खोज निकालना इस उपन्यास का केंद्रीय विषय है।

मेधावी और भटका हुआ एक विज्ञानी विरूढक उस गुप्त धन को हथियाने में लग जाता है। इसी बीच मिदनापुर में अपने मामा के यहाँ घूमने आए दाली को एक स्केच बुक हाथ लग जाती है। इसी सूत्र पर दाली का अध्यापक मामा और उनकी बेटी बेगम भी रत्न भंडार के रहस्य के समाधान में लग जाते हैं। इन सारी घटनाओं को लेकर उपन्यास आगे बढ़ता है।

मिदनापुर शहर, कभी पहाड़ी इलाका, अभी चेन्नई आदि तमाम जगहों पर कथा घूमती रहती है। इस व्रत में बंजार की खोज के साथ उपन्यासकार में देश भक्ति मूलक कथा का भी विकास किया है।

गुप्त धन के बहाने उपन्यासकार अतीत की ओर लौट जाते हैं और स्वतंत्रता संघर्ष का वर्णन करते हैं। साथ ही साथ फिर फ्लैशबैक छोड़ते हुए कथानक वर्तमान में लौट आता है। वर्तमान व्यक्ति प्रेम की प्रतिशोध की कथा और रत्न भंडार धूप निकालने की यात्रा तय करता है। अपने आप नहीं गए उपन्यास कथा विचित्र और घटना हो गई चित्र के सहारे पाठकों को आकर्षित करता है।

कहानी : गल्प यानी छोटी कहानी पहले बोला था पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है फिर उन्हें संकलित कर कहानी संकलन प्रकाशित किया जाता है।

'नरकेर शेष यात्री' यह राज्यश्री बसु अधिकारी का कहानी संकलन है। नरकेर शेष यात्री में जीवन की विडंबना, लालसा को केंद्र में रखकर पुरुष तांत्रिक समाज का नंगापन चित्रित हुआ है। एक तरफ कमजोर स्त्रियाँ जहाँ पुरुष तांत्रिक समाज के सामने आत्मसमर्पण कर मृत्यु अपना लेती हैं वहीं कुछ स्त्रियाँ प्रतिवाद कर अपनी आत्मा, मर्यादा के साथ फिर से जीवन जीती हैं।

लेखिका ने न्यायाधीश होने के कारण न्याय करते हुए अपने अनुभव में संचित अपनी मानसिक यंत्रणा को शब्दों में बाँधा है।

विभिन्न कहानियों में रोहिणी, सुमना, नीता जैसी स्त्रियाँ जीवन का स्वाद पाने के पहले ही पार्श्विकता और निशंक लालसा के कारण मर जाती हैं पर टुलु संघर्ष करती है और नतीजतन जीवन को जीने का अवसर पाती है। अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनाती है। स्त्री विमर्श की कहानियाँ अत्यंत मार्मिक हैं जो हृदय के अंतःस्थल को छू जाती हैं।

'आश्चर्य आविष्कार कल्प गल्पो 50' यह शीर्षेंदु मुखोपाध्याय की 50 कहानियों का संकलन है। विज्ञान के साथ कल्पना को जोड़कर कहानियाँ रची गई हैं। अधिकांश कहानियाँ आने वाले कल यानी भविष्य काल में क्या घटित होने वाला है इस को चिह्नित करती हैं। अर्थात् आज से सौ साल, पाँच सौ या हजार साल बाद यह धरती कैसी होगी इसी को आँका गया है। सभी कहानियाँ अन्य धारा और स्वाद की हैं। कहानी की संरचना में विज्ञान और को चुटिया हास्य का काफी सुंदर सम्मिश्रण हुआ है।

'जयराम बाबू' कहानी का आरंभ इस तरह होता है ''जयराम बाबू सुंघनी का डब्बा मंगल ग्रह में छोड़ आए हैं। इसी तरह और एक पात्र एक जगह कहता है अरे बाबा सात मिनट के अंदर मुझे नेबुला के उस पार जाना है। मेरा रॉकेट सेकंड में दो करोड़ मील की रफ्तार से जाता है।''

यानी इक्कीसवीं सदी के अंत तक अंतरिक्ष में एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर आने–जाने की रफ्तार में यह समय इतना लगेगा जैसे दिल्ली के चाँदनी चौक से रामकृष्णपुरम तक आवाजाही में लगता है। अर्थात् ग्रह से ग्रहांतर होने में चंद सेकंड लगेंगे।

'अगला गणेश' कहानी में कहानीकार ने वर्ष तीन हजार पाँच सौ नवासी में धरती कैसी होगी उसकी कल्पना की है। कृत्रिम बुद्धि के सहारे चिकित्सा विज्ञान ने विजय प्राप्त कर ली है। अद्भुत रोबोट का अविष्कार हुआ है। कहानीकार

आशंका करते हैं कि क्या इस धरती से कविता, गीत, साहित्य, नाटक, सिनेमा सभी खत्म हो जाएगा। विज्ञान ही हमें नियंतित्र करेगा।

मनुष्य की अनुभूति, विवेक, मानवीयता, सौंदर्य बोध सब लुप्त हो जाएगा। बुद्धिलब्धि सब कुछ होगा। क्या भावनात्मक लब्धि समाप्त हो जाएगी? इसका उत्तर 'अगला गणेश' कहानी में लेखक देते हैं। विज्ञान के युग में गणेश मनुष्य की चित्र व्यक्ति सौंदर्य बोध शिक्षा अनुभूति लौटाने में अहम भूमिका निभाता है।

'भगबानेर आविर्भाव' कहानी के माध्यम से लेखक यही संदेश देना चाहते हैं की विज्ञान कितनी भी प्रगति कर ले पर भगवान और दूध दोनों का अस्तित्व कल था आज है और कल भी रहेगा।

कहानीकार 'भूतेर भविष्यत', 'भौतिक चश्मा' या 'बाजार' दस कहानियों में नए कच्चे के माध्यम से विज्ञान और भूत को मिलाकर विज्ञान आधारित भौतिक हास्य परिवेश का निर्माण करते हैं।

इन पुस्तकों के अलावा और भी कहानी संकलन प्रकाशित हुए हैं। जैसे गौतम गुह राय का 'अनशन शिल्पेर खुंटिनाटि' इस संकलन में 'पोडा मानुष एकटि खसरा प्रतिवेदन', 'मृत्युर निजस्व उपत्यका', 'दांगार आंचेर बाइरे सेवा रंधनशाला' और 'देहांशेर प्रदीप' आदि कहानियाँ समाज के विभिन्न संघर्षरत वर्गों और हाशिए में रहने वाले लोगों के संघर्ष और भूख की गाथा हैं। तकनीकी विकास के लिए विस्थापित और वंचित लोगों की अर्चना दी गई इन कहानियों में प्रतिध्वनित हुआ है।

मुख राधाकांत माहिती की अट्ठारह कहानियों का संकलन है। 'अभीदार चेंबार', 'योजनगंधा', 'स्वाधीनता दिवस', 'तेभागा', 'असुख', 'जिनियस' आदि कहानियों में मानव जीवन के विभिन्न आयामों को उजागर किया गया है।

कविता– आलोच्य वर्ष में कई महत्वपूर्ण कविता संकलन प्रकाशित हुए हैं। 'पार्क स्ट्रीट पदावली' यह रूपक चक्रवर्ती और अग्नि राय का काव्य संकलन है। दोनों कवियों की कविताओं में नगर बोध भरा हुआ है। समकालीन जीवन की जटिलताएँ उनकी कविताओं में परिलक्षित होती हैं।

रूपक चक्रवर्ती कविता को कहानी की तरह विस्तार देते हुए आवेग में बह जाते हैं। उनकी कविताओं में सहज सौंदर्य बोध हैः

आकाश आज अपराजित फुलेर मतो नील/ए पुण्य बंगभूमि छुइए दिच्छे रौद्र।

'प्रश्नपत्र', 'आंतर्जातिक साबान', 'अनुरोध' आदि कविताओं में नयापन है।

इस संकलन के द्वितीय कवि अग्नि राय की कविताओं में भी समकालीन बोध बड़ी सहजता से अभिव्यक्त हुआ है। उनकी कविताओं में लाल, नील, गोलापी, हलुद और कालो रंग 'रंग जे नामे डाको' कविता में विस्तृत है।

ऋत्विक चक्रवर्ती का कविता संकलन 'अनच्छ जलेर छवि' किसी वर्ष में प्रकाशित हुआ है। प्रमुख कविताओं में 'दहण काल', 'निदाघ सनेट', 'फिनिक्स पाखि', 'चांदभासि', 'कोपाई तोमार जल', 'आज एक अरण्ये' आदि कविताएँ मन को छू लेती हैं।

अनंत आनंद धारा शर्मिष्ठा राय गुप्ता का काव्य संकलन है। 'आदि प्रेमहीन तार काव्य', 'स्पर्श, 'दिन बदलेर गान', 'समाप्ति' आदि कविताओं में कल्पना और यथार्थ का अद्भुत सहावस्थान परिलक्षित होता है। प्रेम, विरह, विषाद और जिजीविषा भी मार्मिक रूप से अभिव्यक्त हुई है।

कविता के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण अनुवाद कार्य हुए हैं। विशेषता भारतीय साहित्य में स्त्री कवयित्रियों के लेखन का अनुवाद हुआ है।

भारतीय कविताओं 'नारीर स्वर' तृष्णा बसाक ने भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित कविताओं का संकलन और अनुवाद कर संपादित किया है। यह संकलन अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है।

संकलित कविताओं में भी स्त्री जीवन की यंत्रणा और वंचना का स्वर उभर आया है। भूमिका संपादक ने अनामिका की 'नारी' कविता को उद्धृत किया है :

ओरा आमादेर दायसारा बांबे पड़े/बाच्चार नोट भी देखें छेंडा पाता।

यहाँ ओरा या नहीं पुरुष तांत्रिक समाज और उनकी जिओ के प्रति उपेक्षा दिखाई गई है।

ममता कालिया की 'खांटि घरोआ नारी' कविता का अत्यंत सुंदर अनुवाद किया है। इस कविता में पैंतीस साल घर की जिम्मेदारियाँ निभाने के बाद एक स्त्री को अंततः कुछ नहीं मिला। सुनीता की यंत्रणा को कवयित्री ममता कालिया ने इस कविता में उकेरा है।

संथाली कवि निर्मला पुतुल की कविता 'ओरा सेइ लोक' में शहरी भद्र बाबू लोगों के ढोंग और चेहरे पर लगा मुखौटा उतार कर सामने रख देती है–

ओरा सेइ लोक/आमार कविताओं खोजें जाता/आमार शरीर शुधु।

असमीया, कन्नड, मणिपुरी, मलयालम, ओड़िया, गुजराती, अंग्रेजी आदि भाषाओं को राजेश्वर के इस संकलन में स्थान दिया गया है।

हिंदी के दो महान कवि कबीरदास और रहीम की कविताओं का अनुवाद बांग्ला में इसी वर्ष हुआ है।

हेमंत बंधोपाध्याय ने 'कपिल शतक' नाम से कबीर साहित्य का अनुवाद किया है। चौताली चट्टोपाध्याय ने 'चौतालिर कबीर' नाम से अत्यंत सहज बांग्ला में कबीर के दोहों का अनुवाद किया है।

कुमार राणा ले 'रहिमेर दोहा : मोमेर घोड़ाय सवार' में रहीम के दोहों का बांग्ला भाषा में पहली बार अनुवाद किया है। इस संकलन में उन्होंने दोहा को देवनागरी में और उसका अनुवाद देकर इस ग्रंथ को और अहम बना दिया है।

नाटक : उस समय आम लोगों को एक साथ चलना, बैठना निषेध था इसलिए रंगमंच भी उस परिस्थिति में प्राय बंद ही रहा है। इसलिए मंचोपयोगी नाटक ना के बराबर प्रकाशित हो पाए हैं। फिर भी पार्थप्रतिम देव के 'दुटि नाटक' और शेखर समाद्दार का 'नाटक समग्र–1' प्रकाशित हुए।

विविध– जीवनी, संस्मरण, बाल साहित्य, यात्रा साहित्य, साक्षात्कार आदि की कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। जैसे पृथ्वीराज सेन ने 'अग्निपुरुष श्यामाप्रसाद' शीर्षक से श्यामाप्रसाद मुखोपाध्याय की जीवनी की रचना की है। कल्याण सेनगुप्त द्वारा रचित 'योगीराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी व परंपरा' शीर्षक से योगीराज की जीवनी का सृजन किया है।

तापस राय ने 'कुंभेर आलोय यात्रा' साहित्य रचा है। वर्ष 2021 में प्रकाशित पुस्तकों का यही है लेखा जोखा है।

❑❑❑

14

मलयालम साहित्य

बी. अशोक

प्राकृतिक भिन्नताओं तथा चमत्कारी छटाओं से प्लावित हरियाली की छत के नीचे भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित एक छोटा–सा भूभाग है केरल। यहाँ के मसालों की गंध की मस्ती में कितनी सदियों पहले से ही पूरा संसार इस भूभाग की ओर आकर्षित हुआ। पुर्तगाली आए, डच आए, अरब आए, अंग्रेज़ आए। जो–जो आए, वे अपनी कला, अपने शिल्प, अपनी भाषा, अपने आचार–विचार तथा अपनी संस्कृति के कुछेक अंशों को यहाँ छोड़कर चले गए। परंतु केरल राज्य, जिसकी जुबान मलयालम है, अपने स्वत्वों को सुरक्षित रखते हुए मिट्टी की गंध को सूँघ रहा है। अतः मलयालम के साहित्य ने अपनी खूबसुरती से सृजन को बरकरार रखा, ज्ञानपीठ के सोपानों को अनेक बार लांघा। वर्ततान समय में भी मलयालम साहित्य अपनी निराली शोभा फैला रहा है। इस दौर में एक सफर है 2021 के मलयालम साहित्य पर एक नजर।

कथा साहित्य निरंतर प्रवाहमान विधा है जो नवनूतन प्रयोगों से साहित्य को संपन्न बना देता है। मलयालम का कथा साहित्य भी गतवर्ष इस दिशा में प्रयत्नशील रहा। 2021 के प्रकाशित उपन्यासों में 'मामा अफ्रीका' का विशेष स्थान है। टी डी रामकृष्णन के मामा अफ्रीका की कहानी अफ्रीका के युगांडा में घटती है। तारा विश्वनाथ नाम की लेखिका अपनी रचनाओं द्वारा साहित्य में पैर जमा रही थी। वह मूल में मलयाली थी। अपनी रचनाओं को मलयालम से अनूदित करके अफ्रीकन साहित्य की नई आवाज बनती जा रही थी। मामा अफ्रीका उसकी भी कहानी है। टी डी रामकृष्णन की सारी रचनाओं की कहानियाँ उनमें चित्रित देश, वहाँ की संस्कृति, आचार–विचार और उस जगह की राजनीति की हैं। 'मामा अफ्रीका' अफ्रीका नामक माँ की कहानी है। साथ ही उपनिवेश काल में रेलवे निर्माण को गए एक मलयाली मज़दूर के पी एम पणिक्कर की भी कहानी है। उसके नेतृत्व में गठित 'उहुरू' नामक क्रांतिकारी संगठन की कहानी है।

ईदी आमीन किसी भारतीय नारी को चाहता है। वह केवल शरीर से ही नहीं, मन से भी उस काले रंग वाले अफ्रीकी को समर्पित है। युगांडा से भारतीयों को भगा देने का कारण था कि वे काले वंशजों से निम्नस्तर के नागरिक जैसा बर्ताव करते हैं और उनसे शादी करने को मना करते हैं। एक दिन पणिक्कर को ईदी आमीन के सैनिक पकड़कर ले जाते हैं। उसकी लाश ही लौट कर आती है।

बाद में विश्वविद्यालय की छात्रा तारा विश्वनाथ को युगांडा की प्रथम महिला नागरिक बनाने की कोशिशें राष्ट्रपति द्वारा की जाती हैं। वहीं से तारा की ज़िंदगी जोखिम भरी बन जाती हैं। मृत्यु से पहले वह एक जानी–मानी लेखिका के रूप में प्रतिष्ठा पा चुकी थी। शायद एड्स की बीमारी का शिकार बनकर मरनेवाली प्रथम लेखिका होगी तारा विश्वनाथ।

उपन्यास का शिल्प अत्यंत बारीक है। एक छोटे से गाँव का एक स्नातक छात्र युगांडा की अपनी लेखिका मित्र को खत लिखता है। केवल आठ या नौ महीने का आकर्षण। परंतु सालों बाद शारजा पुस्तकोत्सव की वेला में सोफिया नामक एक प्रकाशिका से उसका मिलन होता है। बात–बात में वह पहचानता है कि सोफिया खतों द्वारा आकर्षित हुई तारा विश्वनाथ की ही बेटी है। सोफिया मलयालम नहीं जानती। परंतु माँ द्वारा लिखी गई पुरानी कुछ पांडुलिपियों का संग्रह करने का न्योता सोफिया उसे देता है। इस प्रकार संगृहीत होने वाले एक लघु उपन्यास, एक साक्षात्कार, कुछ कहानियाँ, कुछेक कविताएँ और एक अधूरी आत्मकथा की कहानी 'मामा अफ्रीका' कहता है। उपन्यास इस मिथक को तोड़ने की कोशिश करता है कि भाषा संस्कृति का बुनियादी ढाँचा है।

करीब 50–60 साल पहले केरल के दूरगामी गाँवों में जीवन बिताने वाली साधारण से साधारण स्त्रियों के जीवन यथार्थ को दर्शाकर देश, इतिहास, राजनीति तथा नारी के द्वंद्वों को चित्रित करने वाला राजश्री का उपन्यास है – कल्याणी और दाक्षायणी नाम की दो स्त्रियों का किस्सा। इस उपन्यास के दो प्रमुख पात्र हैं कल्याणी और दाक्षायणी, जो साधारण स्त्रियों से परे अपनी जीवन राहों को खुद पहचान पाती हैं। तीसरी कक्षा में शिक्षक द्वारा दंड के बहाने जाँघ पर मसलने से क्रुद्ध होकर स्कूल छोड़ने वाली दाक्षायणी और उसके साथ निकलने वाली कल्याणी खुद जीवन का सामना करने का फैसला लेती हैं। दाक्षायणी परतदार लकड़ी की कंपनी में काम करके तथा दाई के रूप की आमदनी से जीवनयापन करती है तो कल्याणी कंकड़–पत्थर ढोकर आजीविका चलाती है। दोनों अपने इलाके की होनहार युवतियों की प्रतिनिधि हैं। लेकिन जब उनके जीवन में पुरुष आ जाते हैं और वे पराजय की गंध सूँघने लगती हैं तब उसे लांघने की उनकी कोशिशें कहानी को आगे ले जाती हैं। अपने पैरो तले जमीन के ढह जाने पर जिस ढीली परत में वे फँस जाती हैं वही अस्तित्व जमाने वाली ये युवतियाँ अपनी अलग पहचान बना देती हैं। कहीं भी अंकित न होने वाले ग्रामीण युवतियों के मनोबल के किस्से को इसमें भावनात्मक आधार दिया गया है।

यह उपन्यास इस तथ्य को रेखांकित करता है कि हर व्यक्ति अपने में स्वतंत्र है। दाक्षायणी पहचानती है कि पुरुष द्वारा बनाई जानेवाली व्यवस्था का उल्लघन करनेवाली नारी को समाज नकारता है। अपने पुरुष की उपेक्षा करके आनेवाली दाक्षायणी से घर, आगँन और इलाका सब नफ़रत करते दिखाई पड़ते हैं। इच्छाओं, कामनाओं, विश्वासों, पहचानों तथा वातावरणों से लड़ते हुए अपने तन और मन के सहारे नारी द्वारा खींचे जाने वाले जीवन–नक्शे के समान उपन्यास में प्रदेश का अस्तित्व जमा है। वह रेखांकित करता है कि जड़ों के जमने से पूर्व ही उखाड़ फेंक दी जाने वाली दुर्वस्था को जीने के लिए स्त्री हमेशा विवश है। अंततः उपन्यास यह चेतावनी देता है कि समाज उस नारी पर हमेशा अधिकार जमाता जाएगा जो अपनी असलियत को पहचानने की दुविधा में पड़ जाती हो। केरल के उत्तर भूभाग में दिखाई पड़ने वाली खोखली सदाचार राजनीति तथा दक्षिण में फैली जातीय राजनीति का पर्दाफाश यह उपन्यास करता है।

मलयालम के मशहूर कथाकार बन्यामिन का उद्वेग भरा उपन्यास है– 'मांतलिर के बीस साम्यवादी साल'। तिरुवितांकूर के मध्यदेश का एक भूभाग है मांतलिर। वहाँ सदियों पुराना एक गिरिजाघर है, सेंट थोमस। वह गिरिजाघर सालों से हो रहे सभा के मुठभेड़ों का केंद्र है। कथा का उद्भव यहीं से होता है। गिरिजाघर के इर्दगिर्द में

अपनी जीविका चलाने वाले लोगों का समूह गिरिजाघर से जुड़ी बातों को जरूरत से ज्यादा महत्व देते हैं। ये सब प्यार और झगड़े से मिल–जुलकर जीवनयापन करनेवाले मांतलिर वालों की बपौतियाँ हैं। उनकी कहानियाँ रसीली हैं और जिज्ञासा पैदा करने वाली हैं जिसे सुनते हुए कभी ऊब नहीं होती। कहानी मांतलिर के साम्यवादी दलों की स्थापना, उनके विकास तथा उनके अंत की है। साथ ही साम्यवादी दल के साए में विकसित ईसाई सभाओं का इतिहास भी है। केरल के साम्यवादी दलों का इतिहास पहले भी लिख चुके हैं। कभी अनुगामियों और कभी प्रतिगामियों द्वारा। लेकिन उस सबसे भिन्न है बन्यामिन का इतिहास जिसमें व्यंग्य के पुट घुलमिल गए हैं। संगठन के साथ सभा के झगड़ों के प्रभावस्थल वाला गिरिजाघर मिल जाता है तो कहानी रोचक बनने लगती है। ऐतिहासिक सच्चाई के साथ–साथ एक प्रतिभाशाली लेखक की भावनात्मक सच्चाई भी इस उपन्यास की खूबी है। उपन्यास में हमारे बीते दिनों की सच्चाई को आँका गया है जब रंगीन टेलीविजन, टाटा सुमो आदि के माध्यम से केरल को नए अनुभव प्राप्त हुए थे। उस ज़माने की सच्चाई और दिल्लगी को लेखक चित्रित करते हैं। यह उपन्यास ज़्यादातर एक शांत सरिता–सा थिरकते ताल लेकर बहता रहता है तो कहीं दर्शन के महागर्भ में पाठक को पहुँचाता है। उपन्यास का चाचा कहता है– "देख, एक किताब निकलती है तो तत्काल उसे पढ़ने की होड़ नहीं करनी है। बीस साल बाद भी वह पढ़ा जाता है तब ले के पढ़ना। क्योंकि वह किताब देशकाल का अतिक्रमण करनेवाली है। मैंने आखिरी बार बोरिस पॉकर का उपन्यास डॉ. शिमागो पढ़ा था। उनकी मृत्यु के बाद मैंने पढ़ना छोड़ दिया। जब उनसे बढ़कर प्रतिभा वाले लेखक इस पृथ्वी पर जन्म लेगें तब पढ़ना ज़ारी रखूँगा।" इस प्रकार मांतलिर गाँव के माध्यम से लेखक ने जीवन को सूक्ष्म नज़रों से परखने की कोशिश की है। मांतलिर की जनता के लिए वहाँ का धर्म और वहाँ की राजनीति जीववायु के समान है। ये दोनों जनता के जीवन में लगातार हस्तक्षेप करते आ रहे हैं जिनसे उत्पन्न संघर्षों को व्यंग्य के पुट पर इसमें चित्रित किया गया है।

जाने–माने मलयालम के उपन्यासकार विनोद थॉमस की 2021 में प्रकाशित रचना है 'वल्मीक'। इंजील की पुरानी किताब में यात्रा नाम का एक भाग है। वह एक जनसमुदाय की यात्रा का वृत्तांत है। उसका अगुआ मोशा का परिवार, जनसमुदाय के प्रति उनका रिश्ता, देश का निर्माण सबका वर्णन किताब में है। यह उपन्यास भी पाठक को उसी स्तर तक ले जाता है। पेरुंबाड़ी देश, वहाँ के लोग, देशी बोली, भिन्न जाति एवं धर्मवाली जनता सब मिलने वाली एक सार्वजानिक जगह का चित्र उपन्यास में है। इतिहास का नया दृष्टिकोण किसी जनता और किसी देश को समझने में कितना सहायक है, इसका चित्रण उपन्यास करता है। देश के इस इतिहास में लोककथाएँ, चाय की दुकानें, गिरिजाघर, मंदिर, ग्रंथालय, राजनीतिक मुठभेड़, समझौते, पुल का निर्माण, चारवाह, संघर्ष, प्रणय, झरना आदि के माध्यम से पेरुंबाड़ी देश के इतिहास को रेखांकित करने की कोशिश उपन्यास करता है। उपन्यास उसका भी पर्दाफाश करता है कि भारतीय समाज में परिवारों के संगठन के पीछे पुरुष केंद्रित दृष्टिकोण काम करता है और इसका सबूत परिवार में हो रहे अमानवीय कार्य हैं। विकास की राजनीति को यह उपन्यास रेखांकित करता है। पेरुंबाडी देश, वहाँ की जनता, वहाँ के जीवजंतु आदि पर असर डालनेवाले पुल के निर्माण के लिए होनेवाले सर्वेक्षण का व्यंग्यात्मक चित्र उपन्यास में है। नदी से बहने वाले पानी तथा उसकी थाह मापने के लिए नदी किनारे स्थापित करनेवाले पैमाने से ही वहाँ की जनता पहचानती है कि यहाँ एक पुल बनने वाला है। इस एक घटना के माध्यम से उपन्यासकार साबित करता है कि विकास किस प्रकार जनता पर थोपा जाता है और इसमें जनता की भागीदारी कितनी है। उपन्यास के सभी पात्र एक दूसरे का सहारा लेकर आगे बढ़ते हैं– यहाँ तक कि पात्र, जानवर, पेड़ सब। हरेक पर होनेवाली घटना का असर दूसरों पर भी पड़ता है। इस प्रकार देश तथा वहाँ के जीवों का आपसी

संबंध एक अदृश्य रस्सी के समान सबको बाँधे रहने का अनुभव उपन्यास देता है, साथ ही नवनिर्मिति का एक बड़ा संसार हमारे सामने दर्शाता है।

मलयालम की कविताओं के कलासौंदर्य को केरल के सांस्कृतिक तथा सामाजिक वातावरण से पृथक पहचानने की कोशिश अधूरी ही रहेगी। इसलिए काव्य की भाषाशैली को कथ्य से जोड़कर पढ़ना समीचीन रहेगा। 2021 के केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त अनवर अली का कविता संग्रह है 'मेहबूब एक्सप्रेस'। रेलगाड़ी के ताल में सूनाई पड़नेवाले विभाजनों, दंगा – फसादों तथा पलायनों की आवाज़ 'मेहबूब एक्सप्रेस' में गूँजती है। –

छह सालों के बाद/दिल्ली से/ मेहबूब भाई की चिट्ठी आई/कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो/धरती थोड़ी हिलती है/कहकर ही/अब रेलगाडियाँ सफर करती हैं।

भारत के अशांत एवं संघर्षपूर्ण समकालीन इतिहास को रेखांकित करता है 'मेहबूब एक्सप्रेस'। कोद्टयम की सवारी गाड़ी से शुरू होकर दिल्ली, सियाचिन, लाहौर, अहमदाबाद, अमृतसर और सबरमती से कोचिन मेट्रो तक यह यात्रा ज़ारी होती है। एक आगजनी रेलगाड़ी के समान जिंदगी में इधर से उधर भागते रहने वाले मेहबूब की अकेली सफ़र की धधकती आवाजें 'मेहबूब एक्सप्रेस' में सुनाई पड़ती हैं।–

मेहबूब भाई आग और धुआँ बिना भटकता रहा/शादी के लिए भी पहुँचा नहीं/छुट्टी को/सबरमती/जैसलमेर/मेघालय/के लिए गाड़ी पकड़ी।

इस रफ़्तार में वह पहचानता है कि धर्म–निरपेक्षता, नैतिकता, शांति तथा भाईचारा की सारी गुंजाइशें खत्म हो जाती हैं।

सच्चिदानंदन की कविताएँ अपने से, दूसरों से, प्रकृति से और दुनिया से लगातार संवाद करने वाली हैं। 'दुख नाम का घर' संग्रह की कविताओं में पीड़ाओं से पीड़ाओं की ओर सफर करने वाले हमारे देश की दुर्दशा का साक्षी बनने वाले कवि का दुख और आत्मसंघर्ष भरे संवाद भरे पड़े हैं। 'घर' सच्चिदानंदन की कविता में मिथम बनकर आया है।–

हम घरों में रखे हुए अंतिम वंशज के नमूने हैं/परिणाम की खोई हुई कड़ियाँ भी हम हैं/मानव समूह जन्मने ही वाले हैं।

हर कविता में घर का अर्थ बदलते नज़र आता है। हर घर में विश्व की ओर देखने और समझने की खिड़कियाँ हैं। इसमें शरीर भी कुछ अंतराल के लिए आत्मा का वासस्थान है। इस प्रकार घर नामक संज्ञा की विभिन्न संभावनाओं को कवि ने ढूँढ़ा है। इसका घर चकनाचूर हो रहे देश का प्रतीक है और नींव नष्ट हो जाने वाले एक देश की दुर्वस्था है। अंततः दुख घर बन जाता है।–

दुख एक घर है/पीली रंग वाली दीवारें/काई से भरे छप्पर वाले/कई कमरे/दुख, पीड़ा, ठंड भरे/ कमरे भरे घर।

शिशिर से हेमंत की ओर जैसे हर कमरे से दूसरे की ओर किवाड़ हैं। लगता है, ये पुरातनता से आधुनिकता की ओर खुले हुए हैं। इस प्रकार मलयालम की कविताएँ समय का अतिक्रमण करके मानसिक व्यापारों को अपने गर्भ में समेटने वाली हैं। समय की सीमा में अपने को समेटने में विवश होने वाले मनुष्य की व्यथा की आहें उनसे निकलती रही हैं।

'हृदयरोग' मलयालम के जाने माने लेखक एवं केंद्र साहित्य अकादमी से पुरस्कृत साहित्यकार जार्ज ओनक्कूर की आत्मकथा है। जिंदगी की तलहटियों की सच्चाई में अप्रिय सत्यों को भी जार्ज ओनक्कूर ने अपनी आत्मकथा में चर्चा का विषय बनाया है। इसके पत्रों में ओनक्कूर गाँव की छटा, वहाँ का प्रणय, ग्रामीण दांपत्य की जय–पराजय सबको विषय बनाया है। साथ ही मातृत्व की महत्ता को रेखांकित करने वाला कलत्तामरा तथा वर्तमान शासन तंत्र में धर्म और राजनीति द्वारा कुचला जानेवाला स्त्रीत्व सब आत्मकथा को पठनीय बना देता है। पृथ्वी और मानव के बीच का अटूट संबंध इसमें विद्यमान है। धर्म के बारे में लेखक

का विचार है – "धर्म आत्मा की एक तलाश है। यह व्यक्ति की अपनी खोज की पराकाष्ठा है। उससे बढ़कर कोई अनैतिकता धर्म धारण नहीं करता। कोई भी प्रार्थना एक दूसरे में पृथकता नहीं रखती। संस्कृत में उच्चरित होनेवाला मंत्र हो, सुरियानी के कीर्तन हों, कपूर की गंध हो, धूप का धुआँ हो सब कुछ केरलीय को एक ही संदेश देते हैं। जहाँ भी रहे, जो भी भाषा बोले, जैसा भी वेश पहने, जिस प्रकार का विश्वास रखे, पर सब एक ही माँ की संतानें हैं। अपनी मौलिक शैली द्वारा साहित्य जगत को उर्वर करने वाले जार्ज ओनक्कूर के ये आत्मकथ्य सच्चाई की खुराबू से ओतप्रोत हैं।"

'वे तीनों और एक इंद्रधनुष' बाल साहित्य की रचना है। इंद्रधनुषी रंगों से भरे बालमन को गहराई से जानने वाले बाल साहित्यकार रघुनाथ पलेरी का बाल उपन्यास है– 'वे तीनों और एक इंद्रधनुष'। चंतु नामक बालक के माध्यम से लेखक अपने बचपन की अभूली यादों को समेटने की कोशिश करते हैं। उन यादों को तराशकर चंतु की यात्रा के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। एक ओर यह बाल रचना बच्चों के अंतर्मन को टटोलती है तो दूसरी ओर बड़ों के दृष्टिकोण को मनोविज्ञान की नज़र से परखती है। इस रचना को 2021 का केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

'नंगे और आदमखोर' वेणु का यात्रा वृत्तांत है। तिरुवनंतपुरम से ओडिशा तक कोई पूर्वनिश्चित योजना के बिना संपन्न होने वाली यात्रा की अभूली यादों से यह यात्रा वृत्तांत शोभित है। कार में हो रही यात्रा, कहे–सुने नदी किनारों, खूनी सड़कों, जनजातीय संस्कृति स्थलियों को लांघकर खत्म होनेवाली साहसपूर्ण रफ्तार है। हर यात्रा अपने खोए गए कल को पकड़ पाने की कोशिश है। 62 वर्ष की उम्र में अपनी कार में वेणु अकेले यात्रा को निकल पड़ता है। तिरुवनंतपुरम से शुरू होकर तमिलनाडु, आंध्रा और छत्तीसगढ़ को पारकर ओडिशा तक होनेवाली साहसपूर्ण यात्रा के वर्णन से यह वृत्तांत भरा है। इस यात्रा के दौरान यात्री कई जगहों को लांघता है जिनसे उसका संबंध पढ़ी हुई पुरानी कहानियों से है। काननसीता सिनेमा के लिए निर्देशक अरविंदन द्वारा चुने गए दंडकारण्य, माओ क्रांतिकारियों की क्रीडास्थली बस्तर, पुरी, कोणार्क, आगे गोदावरी, इंद्रावती आदि नदियाँ, कुक्कुट युद्ध, जनजातियों के प्राचीन आचार–विचार, मनुष्य गंध से मुक्त वीरान जगहें, डराते–सहलाते अनुभव सब इस यात्रा वृत्तांत को जीवंत बनाते हैं। यह यात्रा वृत्तांत कोरे किताब से ऊपर उठकर एक यात्रा की अनुभूति प्रदान करता है। आधुनिक समय में जब मनुष्य पर्यटन स्थानों की यात्रा करने को उद्यत होते हैं वहाँ वेणु भारत के गाँवों की आमजनता, वहाँ की प्रकृति और वातावरण की खोज करता हुआ दिखाई देता है। उसकी यात्रा गांधीजी के कथन को सार्थक बनानेवाली है कि भारत की आत्मा गाँवों में है। यात्रास्थलियों के इतिहास को भी जोड़कर दृश्य रचनेवाला लेखक अपने विचारों से युक्त संस्मरण सा इसे अंकित करता है। यात्रा की राहों की यादगार तस्वीरों को भी पुस्तक में शामिल किया गया है। सभ्य समाज द्वारा शोषण का शिकार बननेवाले आदिवासी जीवन संसार के स्पंदनों से यह यात्रा वृत्तांत सना हुआ है। संक्षेप में यह किताब असलियत को पहचानने की दिशादर्शक दस्तावेज़ है।

इस दृष्टि से नज़र दौड़ाएँ तो 2021 का मलयालम साहित्य समय के साथ सवार होकर अपने को दर्ज करने की क्षमता रखनेवाला है। किसी भी रचना का मूल्यांकन समय और परिवेश करता है। पाठक इसके लिए सेतु का काम करता है। 2021 का मलयालम साहित्य इसका सबूत है।

❑❑❑

15

मैथिली साहित्य

वैद्यनाथ झा

वैसे मैथिली साहित्य में सभी विधाओं–कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, साक्षात्कार, बाल साहित्य, जीवनी, आत्मसंस्मरण, अनुवाद आदि में पर्याप्त मात्रा में रचनाएँ हो रही हैं पर इन विधाओं में सबसे अधिक कविताएँ रची जा रही हैं।

आलोच्य वर्ष 2021 में मैथिली साहित्य की सभी विधाओं में प्रकाशित सामग्रियों पर एक संक्षिप्त दृष्टिपात किया जाए–

कविता

मैथिली साहित्य में अन्य विधाओं की तुलना में कविताएँ अधिक लिखी जा रही हैं। तीन–तीन पीढ़ियाँ एक साथ कविता लिख रही हैं। गंगेश गुंजन से मुख्तार आलम तक, सुस्मिता पाठक से सोनी नीलू झा तक। कवयित्रियों की युवा वाहिनी आजकल खूब कविता रच रही है। 30–35 वर्ष आयु–वर्ग की इन कवयित्रियों की कविताओं के तेवर में प्रतिरोध और विद्रोह अधिक होता है।

इस वर्ष के उल्लेखनीय कविता संग्रहों में से एक 'अन्हार में डमरू' का प्रकाशन रहा है जिसके रचनाकार प्रसिद्ध कवि गंगेश गुंजन हैं। संग्रह के नाम से ही कविताओं के अर्थबोध व भावबोध स्पष्ट हो जाते हैं। अँधेरे का भाव स्पष्ट रूप से समाज में व्याप्त मूल्यहीन आचरण और प्रवृत्ति से है। उच्च सनातन–मूल्यों के प्रति संवेदनशील कवि गंगेश गुंजन समाज में व्याप्त अँधेरे से व्यथित हैं और डमरू बजाकर (कविता से) झकझोरना अपना परम कर्त्तव्य मानते हैं। प्रसिद्ध आलोचक देवशंकर नवीन इस संग्रह के बारे में लिखते हैं–

"सामाजिक सरोकार, मानवता, जीवन–मूल्य, उत्तरदायित्व–बोध, काव्य–विवेक के प्रति अनुराग उनके संपूर्ण रचनात्मक उद्यम का अनुषंग है। विषय और कथन–भंगिमा का वैविध्य इस संग्रह का विशिष्ट गुण है''।

इस संग्रह का काव्य–सौंदर्य खूबसूरती से किए गए बिंबों और प्रतीकों के प्रयोग में दिखाई देता है। बिंब–योजनाएँ कविताओं के भाव–जगत का सौंदर्य और भी बढ़ा देती हैं, अर्थ–बोध को नया आयाम देती हैं। मूल्यों के क्षरण/अपसंस्कृति की चिंता ही उस काव्य संग्रह की काव्य–वस्तु का मेरूदंड है।

नारायण जी समकालीन मैथिली कविता के अति महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। मिथिला के एक गाँव में खेत–खलिहान, ताल–तलैया, हल–बैल के परिवेश में रहकर वे साहित्य–साधना करते हैं, विश्व की कालजयी कृतियों की जानकारी रखते हैं। इसलिए उनकी कविताओं में मानवता, वैश्विक अनुभूतियाँ व प्रेम के तत्व उपस्थित रहते हैं।

'कोनो टूटल अछि तंतु' नारायण जी की चार खंडों–'क्षरण', 'क्षोभ', 'उद्गम' और 'प्रवाह' में 71 कविताओं का संकलन है। हर खंड का अपना

विशिष्ट काव्यात्मक टेक्स्चर है। शब्दों के धनी कवि द्वारा कविताओं की शब्द–योजना में काफी सतर्क और सटीक प्रयोग मिलता है जो उनके काव्य–शिल्प का अंग है। प्रसिद्ध आलोचक प्रो. पंकज पाराशर लिखते हैं–

"सघन रागात्मकता और गहन अनुराग से भरी उनकी भाषिक त्वरा तो बेजोड़ है ही, समकालीनता को गहरी तीव्रता से व्यक्त करने वाली भाषा को बहुस्तरीयता बार–बार सम्मोहित करती है।"

इस समकालीनता की मिसाल देखिए, किसान–आत्महत्या के विषय पर–

किसान देशक असली तागति छथि/कालिहयों ढोल–नगैड़ा बजबैज गाओल गेल अछि/ जखन कि/पाकड़िक गाछक ठाढ़िसँ/बांहल रस्सी में झूलैत अनकर नहि/आत्महत्या कएल एकटा किसानक शव पाओल गेल अछि।

(किसान देश की वास्तविक शक्ति है/कल भी ढोल–नगाड़े बजते गाया गया/जबकि/पाकड़ के पेड़ की डाल में बँधी रस्सी में झूलती किसी और की नहीं/आत्महत्या किए हुए एक किसान की लाश पाई गई)।

संग्रह की कविताओं में मानवता है, रागात्मकता है जो संवेदनात्मक तंतुओं से निर्मित होती है। जब ये तंतु टूटते हैं तो मानवीय–रागात्मकता शिथिल होने लगती है या टूटने लगती है। कवि इन्हीं टूटे तंतुओं को तलाशते हुए कविता रचता है।

कवयित्री निवेदिता झा का कविता संग्रह 'मणिकर्णिका' शेखर प्रकाशन, पटना से प्रकाशित हुआ है। इस काव्य–संग्रह में 71 कविताएँ हैं। इन कविताओं का मूल स्वर स्त्री–मन की पड़ताल है। स्त्री ही स्त्री–मन की सही, सटीक एवं निर्बाध पड़ताल कर सकती है।

काशी के महाश्मशान 'मणिकर्णिका' को कथ्य बनाकर उन्होंने बिंबों, प्रतीकों में सजाकर प्रस्तुत किया है। स्त्री का भोगा हुआ यथार्थ कितना मार्मिक होता है, इसकी अभिव्यंजना में कितने सटीक बिंब का प्रयोग किया गया है–

मणिकर्णिकासँ पहिने लाख बेर जरि जाइत छथि स्त्री

आ मोक्षसँ पहिने मरि जाइत छै मनुष्यता।

(स्त्री मणिकर्णिका पहुँचने से पहले लाख बार जलती है और मोक्ष से पहले इंसानियत मर जाती है)।

यहाँ एक बार फिर दांपत्य जीवन में विश्वास जगाए रखने की भूमिका में स्त्री ही है–

सावित्री/घरे–घर व्याप्त छथि/तखने तँ जखन अहां बरखो–बरख लेल/पंजाब, दिल्ली विदा भऽ जाइत छी

पाछू ओ पसरल नीरवता। .... (बड़साइति)

(घर–घर में सावित्री व्याप्त है, तभी तो आप पंजाब और दिल्ली जाते हैं और पीछे रह जाता है एक सन्नाटा)।

इस वर्ष एक युवा–कवि मुख्तार आलम का एक काव्य–संग्रह 'परिचय बनैत शब्द' प्रकाशित हुआ है जिसमें 51 कविताएँ संकलित हैं। इन कविताओं में जाति, समुदाय से ऊपर उठकर निरी मानवतावादी दृष्टि है, मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपड़ा, रोजगार, शिक्षा आदि की प्रमुखता है। कवि वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने और अपनी भाषा, संस्कृति एवं परंपराओं से जुड़े रहने का भी आह्वान करता है। कवि बालिका–शिक्षा का प्रबल समर्थन करता है और उसके सपनों को उड़ने के लिए पंख देता है–

उड़ि जो बेटी चान पर/खोंता–चिड़ै, चुनमुन जकां/अनंत अकास में

रचि दही इतिहास/आ देखा दही जे/हम ककरों सँ कम नहि।

(बेटी, चाँद तक उड़ान भरो/चिड़ियों की तरह/अनंत आकाश में/इतिहास रच दो/दिखा दो कि तुम किसी से कम नहीं)।

एक कविता–संग्रह 'गाम सँ ग्लोब धरि' प्रकाशित हुआ है। कवि हैं –डॉ. राजीव कुमार वर्मा।

इस संग्रह में 121 कविताएँ संकलित हैं। इन कविताओं के माध्यम से कवि समाज से मानविकी के विषयों जैसे इतिहास, भूगोल आदि को भी वैज्ञानिक दृष्टि से समझने का आग्रह करता है। वे

स्वयं इतिहास के प्रोफेसर हैं। दूसरी बात, डॉ. वर्मा मनुष्य समाज को तमाम ऊँचाई तय करने के बाद भी अपनी जड़ को लौट आने/न भूलने का संदेश देते हैं।

मैथिली कविता–जगत में कवयित्रियों की एक नई पौध तेजी से विकसित हो रही है। इनकी कविताओं में विचारों की स्पष्टता है, मान्यताओं, परंपराओं, संस्कृति के प्रति आग्रह है पर ताजी हवा के झोंके भी हैं। वह पौराणिक चरित्रों के महिमा–गान को सहजता से स्वीकार नहीं करती बल्कि आज के मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करती है और उन्हें कटघरे में खड़ा करती है।

इन युवा–कवयित्रियों में से एक नेहा झा 'मणि' की पुस्तक 'अंगना में आकास', प्रकाशित हुई है। नेहा झा का मैथिली में यह पहला काव्य–संग्रह है। 70 कविताओं के इस संग्रह में निजी पारिवारिक संबंधों और स्थानीयता के माध्यम से भावबोध को व्यापकता दी गई है। कवयित्री बनारस में रहती है तो बनारस को बड़ी शिद्दत से महसूस करती हैं। यह अनुभूति कई कविताओं में मिलती है। कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से जीवन का कटु सत्य उद्घाटित करते हुए एक कविता–संग्रह 'आर्ट गैलरीक ओ पेंटिंग' प्रकाशित हुआ है। कवि हैं मधुकांत झा।

ये कविताएँ एक कटु सत्य को पाठकों के समक्ष लाती हैं। कलाकारों का किस तरह शोषण होता है, यह इस कविता–संग्रह का एक विषय है। इसे ही कहते हैं– दुःख, पीड़ा, शोषण की मार्केटिंग। इस कविता संग्रह में यही मूल स्वर है। कवि–कर्म बहुत कुशलता से किया गया है।

खंड–काव्य 'सीता–प्रस्थान' प्रकाशित हुआ है। रचयिता 88 वर्षीय वयोवृद्ध कवि राजेंद्र लाल दास हैं। इसे नवारंभ प्रकाशन ने प्रकाशित किया है।

इस खंड काव्य का वर्ण्य–विषय राजा राम द्वारा सीता के निष्कासन के बाद महारानी सीता के वनगमन से लेकर उनके धरती में समा जाने तक की कथा है। संस्कृत में यह 'उत्तर रामचरित' का वर्ण्य–विषय है।

60 पृष्ठों में समाहित इस खंडकाव्य में 5 सर्ग हैं। पहले सर्ग में लक्ष्मण द्वारा सीता को वन में छोड़ना, सीता का विलाप और बाल्मीकि द्वारा उन्हें अपने आश्रम ले जाना, दूसरे सर्ग में बाल्मीकि के आश्रम का प्राकृतिक सौंदर्य, तीसरे में लव–कुश का जन्म, पालन, शिक्षा, रामायण–गान का प्रशिक्षण आदि, चौथे में अयोध्या के गली–हाट, चौराहों से होते हुए लव–कुश का राम के दरबार में रामायण–गान, पाँचवें में सीता का राम के दरबार में प्रवेश, राजा के सम्मुख न्याय की गुहार–बल्कि राम की न्याय–व्यवस्था पर तीखे सवाल यथा कुछ प्रजाजनों द्वारा उनके चरित्र पर शंका उठाने पर बिना आरोपों की जाँच किए सीधे सजा, जिसने उनके प्रति अपराध किया, उसके अपराध का निर्धारण न होना, न उन्हें कोई सजा? यह कैसी न्याय–व्यवस्था है? और अंत में वहीं उनका धरती में समा जाना।

यह खंड–काव्य एक प्रश्न तो उठाता ही है कि जो प्रश्न उस समय सीता को करना चाहिए था, वे प्रश्न आज इक्कीसवीं सदी की नारी कर रही है। राम को कटघरे में खड़ा कर रही है, उनकी न्याय–व्यवस्था को ही दोषपूर्ण बता रही है। अगर राजा की न्याय–व्यवस्था पारदर्शी है तो बिना जाँच कैसे एक स्त्री को दंड मिला? क्या वह सीता न्याय–व्यवस्था की शिकार नहीं हुई?

'धिया कहए' शीर्षक से एक कविता–संग्रह प्रकाशित हुआ है। इसकी रचनाकार युवा कवयित्री स्वाती शाकंभरी हैं। यह 38 कविताओं का संग्रह है। नाम से ही स्पष्ट है कि कवयित्री अपने पिता के साथ संवाद में केवल सुनती नहीं, अपनी बात कहती भी है। ये कविताएँ एक बेटी के रूप में नारी के उद्गार हैं। वह पितृसत्तात्मकता– पिता के गोत्र, वंश, कुल को दरकिनार कर पति के गोत्र, कुल को धारण करने पर सवाल खड़ा करती है। एक कविता देखिए–

हमर परिचय/पितासँ नहि/भायसँ नहि/ अहाँक उच्च वंशसँ नहि/हमरा तँ/जिनके हाथ/लगा देब/सएह होयताह/हमर वंशधर/हुनकहि परिचयसँ/हमर परिचय होएत

(मेरा परिचय पिता, भाई, आपके उच्च वंश से नहीं होगा। मुझे तो आप जिसके हाथ में सौंप देंगे, वही मेरा वंशधर होगा और उन्हीं का परिचय मेरा परिचय होगा)।

अपने उद्‌गम से बिछुड़ने की पीड़ा कितनी त्रासद होती है, यह एक स्त्री की कविता से ही पता चलता है।

'औनी–पथारी' मैथिली की नवोदित युवा कवयित्री सोनी नीलू झा का पहला काव्य संग्रह है। इस संग्रह में 56 कविताएँ हैं। प्रायः सभी कविताओं के मूल में स्त्री–विमर्श है। स्त्री की आशा, आकांक्षा, व्यथा, विषमताजन्य कष्ट तो है ही, नैसर्गिक प्रेम की वकालत भी इन कविताओं में है।

एक कविता संग्रह 'सोनाक पिंजरा' प्रकाश में आया है। रचनाकार वैद्‌यनाथ मिश्र हैं। इस संग्रह में चवालीस कविताएँ हैं। इन कविताओं में कवि विषमता, शोषण एवं संवेदना खोते जा रहे मनुष्य के प्रति चिंतित हैं और इन कविताओं से मानव चेतना को झकझोरते हैं। इसके लिए उन्होंने प्रतीकों और बिंबों का खूबसूरती से इस्तेमाल किया है। 'गिद्‌ध' कविता में गिद्‌ध को शोषक का प्रतीक बनाते हुए लिखते हैं–

आब ओ/गिद्‌ध जकां मृत नहि/जीवितक भक्षणक/छोहमे/सदिखन तत्पर रहैत छथि।

(अब वे गिद्‌ध की तरह मृत नहीं, जीवित प्राणी को खाने की ताक में हमेशा तत्पर रहते हैं।)

अकेली यही कविता पूरे संग्रह की कविताओं के तेवर दर्शाने के लिए काफी है। राजनीति के कुरूक्षेत्र में पांडवों की तलाश में कौरव ही कौरव मिलते हैं, पर तलाश जारी है। यही जिजीविषा है।

विचारोत्तेजक काव्य–संग्रहों में से एक 'महानगर में कवि' का प्रकाशन है। नवारंभ प्रकाशन से प्रकाशित इस संग्रह के रचयिता विनोद कुमार झा हैं।

वस्तुतः यह काव्य संग्रह कवि के वर्तमान परिवेश का सूक्ष्म विवेचन है, वैचारिक उथल–पुथल, चिंतन का शब्दावतार है। हमेशा मिथिला की मिट्‌टी, संस्कृति, साहित्य, समाज को खून के कतरे–कतरे में जीने वाला कवि मुंबई जैसे महानगर की जीवन–शैली, समाज, संस्कृति, अपने मिथिला के लोगों के महानगर में उपहास, अपमान, आर्थिक स्थिति, विवशता, जीवटता, रचनात्मकता की स्थिति को कवि ने आँखों से देखा और महसूस किया है और उन्हें कलम से उतरा है। संपूर्ण कविता–संग्रहा का सार इस कविता से समझा जा सकता है–

हम जुगताक रखने छी/दियासलाइक डिब्बामे बंद/बारूदक साटल काठी
जुनि हताश होइ अपन मिझाइत मशाल देखि/आउ, एम्हर आउ अग्निजीवी लोकनि/हमरा लग अछि काठी

(मैंने सँजोकर रखी है/माचिस की डिब्बी में बंद/बारूद लगी तीलियाँ।

निराश मत होइए अपनी बुझी मशाल देख/मेरे पास हैं तीलियाँ।)

इस संग्रह में उम्र/अनुभव से संतृप्त उद्‌गारों का संकलन है।

एक और कविता संग्रह 'आँजुर भरि इजोत' प्रकाश में आया है। इसकी कवयित्री स्त्री के हक में मुखर कविता रचने वाली रोमिशा हैं। अंतिका प्रकाश ने इसे प्रकाशित किया है। इस संग्रह की कविताओं में मानव वेदना, संवेदना, चेतना की बातें हैं, परंतु उससे बहुत आगे जाकर ये कविताएँ स्त्री–चेतना की बातें करती हैं। बिंबों–प्रतीकों और शिल्प से लैस इन कविताओं में नैसर्गिक प्रेम के साथ स्त्री के पक्ष में जो भी कहा गया है, वह 'अपीलिंग' है, नारी–स्वातंत्र्य की उनकी अवधारणा में आक्रामकता नहीं है, मार्मिकता है।

इसके अतिरिक्त 'इजोरियाक व्याकरण' (अजित आजाद), 'जानकी करथि पुकार' (प्रवीण नारायण चौधरी), 'वैश्विक पटल पर नारी' (शेफालिका वर्मा), 'वैश्विक पटल पर मैथिली कविता' (शेफालिका वर्मा), 'कागतक फूल' (विष्णुकांत मिश्र), 'चिनबार' (आभा झा), 'गेनाक फूल' (नबोनाथ झा), 'चित्रलेखा' (महेश डखरामी), 'चेतना' (विष्णुकांत मिश्र), 'चुप्पी चिकरैछ निःशब्द–निःशब्द' (विजेता चौधरी), 'उजहिया' (परमेश्वर झा 'प्रहरी'), 'कने हमरो सुनू' (आभा झा), 'संवेदनाक भीत पर' (अश्विनी कुमार तिवारी), 'जेना होइत हो भोर' (अरूण लाल दस), 'थिर कएने मोन' (अमर नाथ झा 'अमर'), 'ई नहि

थिक हमर प्रार्थना' (आनंद मोहन झा), 'ऐहे गदहबेरमे' (लक्ष्मण झा 'सागर'), 'अभिसारिका' (जयंती कुमारी), 'फुलडाली' (शंकर मधुपांश)। 'टीस' (महावीर प्रसाद मस्करा), 'जनअरण्यक बीच' (संतोष कुमार झा), 'श्री चंद्र चकोरी जय जय हो' (राम सेवक ठाकुर), आदि कविता संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

देश की रक्षा में प्राणोत्सर्ग करने वाले मिथिला के वीर सेनानियों की वीरगाथा पर कविताओं का एक संग्रह 'बलिदान' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह के संपादक मलयनाथ मिश्र हैं। इस कविता संग्रह में पुराने–नए 57 कवियों की 90 कविताएँ संकलित हैं। विषय–वस्तु के महत्व को देखते हुए यह अनूठा प्रयास है और पूरे क्षेत्र में इसे महत्व मिल रहा है।

गीत–संग्रहों में 'मैथिली गीतमाला' (दीपिका झा), 'मिथिलामे सियाराम' (सविता झा 'सोनी'), 'गीतक फुलबाड़ी' (अमरनाथ मिश्र 'अलबेला'), 'मोहिनी मिथिला' (रूपम झा) और 'कखनो बनि आबी बदरा' (नारायण जी मिश्र) का प्रकाशन हुआ है।

इसके अतिरिक्त 'रखबार' (बैकुंठ झा), 'नब युद्धक ओरियान' (प्रेमचंद्र पंकज) 'स्वेद–राग' (सं. धीरेंद्र प्रेमर्षि) और 'फाटल ह्रदय' (करुणा झा) भी प्रकाशित हुए।

ग़ज़ल संग्रहों में से एक ग़ज़ल संग्रह 'आबि रहल एक हाहि' का प्रकाशन मैथिली ग़ज़ल की दुनिया में सुखद घटना है। इस संग्रह के लेखक प्रसिद्ध रंगकर्मी, नाट्यलोचक, डॉ. कमल मोहन 'चुन्नू' हैं। इस संग्रह में 71 ग़ज़लें हैं। सभी ग़ज़लें संप्रेषणीय हैं। शब्दों का सटीक चयन और निजता है।

ग़ज़लें पाठकों से सीधे संवाद करती हैं और उर्दू तथा अन्य के प्रभाव से भाषाओं और पैमाने से युक्त हैं। इस ग़ज़ल संग्रह की विशेषता यह है कि बड़ी से बड़ी बातें शायर एक स्पष्टता के साथ बिना किसी रूकावट के कह देते हैं।

अनुवाद

' पाटदेई' ओड़िया भाषा की प्रसिद्ध कथाकार वीणापाणि मोहंती द्वारा लिखित कथा–संग्रह है। मैथिली में इसका अनुवाद डॉ. चंद्रमणि झा ने किया है। इस संग्रह में बारह कहानियाँ संकलित हैं। इन सभी कहानियों में मानवीय संवेदना प्रखर रूप से उभरी है। इस संग्रह का प्रकाशन साहित्य अकादमी ने किया है।

'स्लोडाउन' पंजाबी भाषा के साहित्यकार के चमकते नक्षत्र नछत्तर ने यह उपन्यास लिखा है और मैथिली में अनुवाद वैद्यनाथ झा ने किया है। प्रकाशन साहित्य अकादमी ने किया है। छह कहानी संग्रहों और सात उपन्यासों से अपनी विशिष्ट जगह बना चुके नछत्तर ने आर्थिक उदारीकरण के समाज पर पड़ रहे दुष्प्रभाव को आधार बनाकर इस उपन्यास की रचना की है। बेरोजगारी से जूझ रहे युवा किस तरह निराशा और कुंठावश अपराध जगत में उतरते हैं, देखना हो तो यह उपन्यास पढ़ें।

अनुवाद विधा में इस वर्ष एक पुस्तक 'अग्निकलश' प्रकाशित हुई है। यह पंजाबी कथा संग्रह है। गुरबचन सिंह भुल्लर इस कथा संग्रह के लेखक हैं। मैथिली में अनुवाद वैद्यनाथ झा ने किया है। इन कहानियों में प्रेम है, महानगरों में रह रहे लोगों की जीवनशैली है, सोच है, आर्थिक स्थिति है, पंजाबी समाज की संस्कृति है, जीवन–दर्शन है, जीवन–मूल्यों की बात है, आडंबर है, अध्यात्म का भी पुट है। इस कहानी संग्रह में बीसवीं शताब्दी का समाज है।

अनुवाद विधा में एक महत्वपूर्ण कृति प्रकाश में आई है 'किएक कनलें उपमा'। यह नेपाली भाषा का कथा संग्रह है। संग्रह के लेखक लोकनाथ उपाध्याय चापागई हैं और मैथिली में अनुवाद प्रसिद्ध साहित्यकार व रंगकर्मी प्रदीप बिहारी ने किया है। साहित्य अकादमी ने इस कथा–संग्रह का प्रकाशन किया है।

कथाओं की विषयवस्तु नेपाली समाज के जीवन के विभिन्न आयाम, पहाड़ी वातावरण, मानवीय मूल्यों के प्रति सजगता एवं लोक संस्कृति के तत्वों को समेटे हुए हैं। कई कहानियाँ प्रेमकथा सी लगती हैं। इन कथाओं में महाभारत काल की कथाओं को आज के समय के आलोक में व्याख्यायित किया गया है। अनुवाद कौशल ने नेपाली और मैथिल समाज के बीच के अंतर मिटा दिया है। यह

अनुवादक के भाषा पर अधिकार के कारण ही संभव हो सकता है।

एक नेपाली उपन्यास 'नीलकंठ' का मैथिली अनुवाद साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है। उपन्यास के लेखक मत्स्येंद्र प्रधान हैं और मैथिली में अनुवाद मैथिली की सुपरिचित कवयित्री, कथाकार एवं अनुवादका मेनका मलिक हैं।

पुस्तक का शीर्षक 'नीलकंठ' विषपायी का अर्थबोध दे रहा है। भावबोध की दृष्टि से देखें तो नीलकंठ अर्थात् विषपायी–निजी पीड़ा, संत्रास को जज़्बकर दूसरे को सुख देने का प्रतीक है– शिव की तरह जिन्होंने लोककल्याण के लिए हलाहल विष का पान कर लिया, उसे कंठ से नीचे नहीं उतरने दिया, स्वयं को अप्रभावित रखने का दुष्कर कार्य किया।

उपन्यास का नायक भी यही करता है। वह स्वयं कष्ट को सहकर, भूलकर दूसरे के हित में लगा रहता है।

मैथिली कृतियों के अनुवाद

मैथिली के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रदीप बिहारी की दस लघुकथाओं का डोगरी में, चार कथाओं का ओड़िया में और दो कथाओं का मलयालम में अनुवाद हुआ है।

प्रदीप बिहारी की ही चुनिंदा मैथिली कहानियों का हिंदी में अनुवाद मैथिली व हिंदी के सुप्रसिद्ध युवा कवि प्रोफेसर अरूणाभ सौरभ ने 'तालाब में तैरती लकड़ी' के शीर्षक से किया है। इसे भारतीय ज्ञानपीठ ने प्रकाशित किया है।

इसके अतिरिक्त डॉ. ललितेश मिश्र ने मैथिली की तीन पीढ़ियों के कवि–कवयित्रियों की कुल 55 कविताओं का 'Pied Poesy' नाम से अंग्रेजी में अनुवाद किया है। इसे बुक रीवर्स ने प्रकाशित किया है।

कहानी

वर्ष 2021 में एक महत्वपूर्ण कहानी–संग्रह 'माटि' प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह के लेखक मिथिला की मिट्टी के कथाकार श्री शिवशंकर श्रीनिवास हैं। यह पुस्तक उनकी 16 कहानियों का संग्रह है। यह लेखक का चौथा कहानी संग्रह है।

सहज भाव, भाषा एवं शिल्प से कथा बुनना कथाकार शिवशंकर जी का परिचय है। अकृत्रिम भाषा, स्थानीय मुहावरों व लोकोक्तियों से सज्जित कहानियाँ भी रोचक हो जाती हैं। ग्रामीण संस्कृति पर मुग्ध होते हुए भी इसकी विकृतियाँ भी कथाकार को बुरी लगती हैं। गाँव की श्रमशक्ति का बाहर जाना, पारिवारिक विशृंखलता, क्षीण होती जा रही सामाजिक समरसता इस संग्रह की कहानियों का मूल स्वर है। शिवशंकर की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कहानियाँ समाधानमूलक और प्रगतिशील और वैश्विक दृष्टि से संपन्न होती हैं।

पद्मश्री उषाकिरण खान मैथिली व हिंदी साहित्य में सर्वाधिक समादृत नाम है। उनकी रचनाओं में लोकभाषा, लोक संस्कृति, लोक–तत्व की व्यापकता होती है। उनके नायक–नायिकाएँ अपने–अपने क्षेत्र में संघर्षरत हैं। उस संघर्ष में ही उनके माध्यम से जनचरित्र उभरता है।

उनका एक कहानी संग्रह– 'सदति यात्रा' इस वर्ष प्रकाशित हुआ, नवारंभ प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है।

इन कहानियों में मिथिला के ग्रामीण व नागर जनजीवन की झाँकी मिलती है। पीढ़ी–अंतराल से अपनी समस्याएँ, उनमें वैचारिक परिवर्तन, पशुओं पर क्रूरता (अब्दुल तांगावाला), सीता का विवाह, तत्कालीन वैवाहिक संस्कार, आचार–व्यवहार (आधा मिथिला), मिथिला की स्त्री–विद्वत्ता की परंपरा (ब्रह्मज्ञानी मैत्रैयी) आदि विषय–वस्तुओं को उठाया गया है। उषाजी की भाषा की सहजता, सरलता, समाज में प्रचलित रोजमर्रा की वस्तुओं के प्रचलित शब्दों के प्रयोग, लोकोक्ति व मुहावरों का सुंदर प्रयोग कहानियों की महत्ता बढ़ा देता है।

'स्त्री, राति आ प्लेटफार्म नंबर तेरह' मैथिली की प्रसिद्ध अनुवादक, कवयित्री व कथाकार मेनका मालिक का कथा संग्रह है। बेगूसराय के चतुरंग प्रकाशन से प्रकाशित इस कहानी–संग्रह में सोलह कथाएँ हैं। इन सभी कथाओं में मानव–स्वभाव, विशेष रूप से नारी–हृदय की परतों को खोला गया है।

स्व. बाबू साहब चौधरी एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जिन्होंने मैथिली भाषा को समुचित महत्व दिलाने के लिए समर्पित भाव से आंदोलन किया, संघर्ष किया। इस संघर्ष में उन्हें कई अनुभवों के दौर से गुजरना पड़ा। उन अनुभवों को संस्मरणात्मक आत्मकथा के रूप में संकलित व संपादित पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक का नाम है 'जीवनक रंग; मैथिलीक संग'।

इसके अतिरिक्त सतज्जा (राजकुमार मिश्र, 'करामात' (नबोनाथ झा)।

संस्मरण

वर्ष 2021 में एक पुस्तक प्रकाशित हुई है, 'अक्ष पर नचैत' लेखक हैं, केदार कानन। यह मैथिली के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं जीवकांत के लिखे गए पत्रों के आधार पर तैयार की गई संस्मरणात्मक पुस्तक है। जीवकांत जी की एक खूबी यह थी कि वे अपने अनुवर्ती रचनाकारों को खूब पत्र लिखते थे। वे उन पत्रों में जीवन मूल्य, आदर्शों, वर्तमान परिस्थितियों की चर्चा करते थे। साहित्यिक संस्कार भरते थे।

लेखक ने जीवकांत जी के 1979 से 1991 के बीच लिखे गए पत्रों को आधार बनाकर संस्मरण लिखा है। थोड़ी गहराई से देखें तो यह महज दो व्यक्तियों के बीच के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक परिस्थितियों का विश्लेषण ही नहीं है बल्कि यह इस कालखंड की समूची मैथिली साहित्यिक स्थितियों–परिस्थितियों का मंथन है। केदार जी की विशिष्ट शैली ने पुस्तक की रोचकता और उत्सुकता और बढ़ा दी है।

संस्मरण की एक और पुस्तक 'धात्री पात सन गाम' प्रकाशित हुई है। प्रोफेसर डॉ. महेंद्र इस पुस्तक के लेखक हैं। अंतिका प्रकाशन ने यह पुस्तक प्रकाशित की है।

संस्मरण की यह पुस्तक वस्तुतः ग्रामकथा है। गाँव के सभी रंग दिखाता साहित्यिक बाइस्कोप। इसमें गाँव के सभी वर्गों के लोगों जैसे शिक्षकों, मित्रों, इतिहास, भूगोल, सामाजिक सरोकारों, कोशी नदी की विभीषिका ही नहीं, गाँव की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें भी दर्ज हैं। मिथिला की शोक–नदी कोशी अपनी बाढ़ से प्रति वर्ष क्षेत्र का इतिहास भूगोल बदलती रहती है जो समाज को हमेशा एक आसन्न भय से ग्रस्त रखता है। लेखक कहना चाहता है कि ग्राम संस्कृति में मिथ्या–आडंबर या पाखंड के लिए कोई जगह नहीं है।

इसके अतिरिक्त एक आत्मकथात्मक संस्मरण की पुस्तक 'हम परिणाम निराशा' प्रकाशित हुई है। वयोवृद्ध कवि उदय चंद्र झा विनोद ने यह पुस्तक लिखी है।

निबंध

मैथिली साहित्य में ललित निबंध विधा में पुस्तकों का प्रकाशन अपेक्षाकृत कम होता है। अंतिका प्रकाशन से इस वर्ष 2021 में ललित निबंध विधा में एक पुस्तक का प्रकाशन हुआ है जिसका शीर्षक है– 'हमर पसार संसार सार'। इस निबंध पुस्तक के लेखक रमण कुमार सिंह हैं। मूलतः रमणजी कवि हैं पर इस निबंध–सग्रंह ने गद्य–रचना के उनके लेखकीय कौशल को रेखांकित किया है। यह बीस निबंधों का संग्रह है।

इन निबंधों में निबंधकार ने अति साधारण विषयों को अपने लेखकीय कौशल से कलात्मकता का उपयोग कर विमर्श का बिंदु बना दिया। 'एक कप चाह', 'पयर में पहिया', 'सोशल डिस्टेंसिंग', 'गुरू कुम्हार शिष कुंभ', 'ताला', 'की अहां लग रूमाल अछि' आदि में भाषाई सरसता का पर्याप्त पुट, मनोरंजन, वक्रोक्ति, व्यंग्य आदि देकर पठनीय कल्पनाशीलता के दर्शन होते हैं।

इसके अतिरिक्त 'मोबाइल लीला' (कमलकांत झा), 'चेतनाक स्वर' (प्रो. डॉ. गौरी चौधरी), 'लोक साहित्यिक सांस्कृतिक परंपरा' (डॉ. मेघन प्रसाद) और 'पारिजात–मंजरी' (प्रो. रमण झा) आदि निबंध पुस्तकें नवारंभ प्रकाशन से प्रकाशित हुईं।

लघुकथा

इस वर्ष मैथिली के प्रसिद्ध बहुविध साहित्यकार श्री प्रदीप बिहारी का एक लघुकथा संग्रह 'हे रौ' प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में 26 लघुकथाएँ हैं। इन लघुकथाओं में कोई रिपोर्टिंग नहीं है, न कोई अपराध–कथा है। इनमें मानव–व्यवहार की पेंचीदगियाँ हैं तो संवेदना के सूक्ष्म तंतु उपस्थित हैं। बिजली कौंधने जैसे मार्मिक तत्व चेतना को झकझोरते हैं तो कुछ प्रेम की कोशिकाओं को

सहलाते से लगते हैं। कहीं आधुनिकता और पारंपरिकता में टकराव है, आभासी और वास्तविक दुनिया का द्वंद्व है। लघुकथाएँ सामाजिक एवं सांस्कृतिक विसंगतियों पर चोट भी करती हैं।

उपन्यास

उपन्यास विधा में एक महत्वपूर्ण उपन्यास 'ओ जे कहिओ गाम छलै' प्रकाश में आया है। लेखक हैं युवा लेखक शुभेंद्र शेखर और अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद ने इसे प्रकाशित किया है।

शुभेंद्र शेखर पेशे से वैज्ञानिक हैं और महानगर दिल्ली में रहते हैं। गाँव और शहरी समाज के निरंतर संपर्क में हैं। वे महसूस करते हैं कि स्वतंत्रता के लिए समूचे देश के सम्मिलित संघर्ष ने स्वातंत्र्योत्तर भारत में एक ऐसे समाज का निर्माण किया जो धार्मिक स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता और सहिष्णुता का पक्षधर रहा। मानवतावाद समाज की विचारधारा पर हावी रहा। परंतु अब धीरे–धीरे यह स्थिति बदल रही है। अब वही समरस समाज एक ऐसे समाज में बदलता जा रहा है जो अपने धर्म को ही सब कुछ मानता है, असहिष्णु और हिंसक होता जा रहा है। उपन्यास का वर्ण्य–विषय भी यही है। वह मानवीय विवेक का पक्षधर है और समाज के जंगल में बदलते जाने के खतरे से चिंतित है। एक स्थान पर वह कहता भी है–

जंगल के एकटा खूबी होइत छै जे एहिमे केम्हरो सँ घुसल जा सकैत छै।

(जंगल की एक विशेषता है कि इसमें किसी भी तरफ से घुस सकते हैं)

लेखक समाज को जंगल अर्थात वहशियानेपन के विरुद्ध सतर्क करता है। पूरा उपन्यास मानवीय विवेक की वकालत करता दिखाई दे रहा है। भाषा सरल है, कहीं कोई जटिलता नहीं है, आवश्यकता के अनुसार लोकोक्ति, मुहावरों का प्रयोग किया गया है। भाषा–शैली की उत्सुकता पाठक को बाँधे रखती है।

इस वर्ष एक उपन्यास 'मडर' प्रकाशित हुआ है। उपन्यासकार हैं सुभाष चंद्र यादव और यह पुस्तक अंतिका प्रकाशन से प्रकाशित हुई है।

यह उपन्यास समकालीन समाज का आईना है। आज के मध्यम, निम्न मध्यम लोगों की आपबीती है, प्रेम, संदेह, घृणा का त्रिकोण है। अशिक्षा, बेरोजगारी जैसे मसाला तत्व उपन्यास में मौजूद हैं। प्रेम में संदेह होता है तो वही घृणा को जन्म देता है। शिक्षा, रोजगार, भोजन के यांत्रिक कर्मकांड में प्रेम को जीना भी मध्य व निम्न मध्यम वर्ग का चरित्र है। प्रेम के संबंध में उपन्यासकार की अपनी एक धारणा है– "प्रेम एक से ही होता है। एक से अधिक से प्रेम वासना है।" उपन्यास की भाषा सहज और स्थानीयता को प्रतिबिंबित करती है। भाषा में कोई दुरूहता नहीं है। दांपत्य जीवन में पैदा होती विकृतियों के प्रति सचेत किया गया है, साथ ही शिक्षा के महत्व को भी रेखांकित किया गया है।

इसके अतिरिक्त 'लय' (विभूति आनंद), 'न जायते म्रियते वा' (श्याम दरिहरे), 'निर्मल गंगा' (वीरेंद्र झा), 'मिथिलाक माछ' (आशुतोष कु. झा) आदि उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं।

बाल साहित्य

मैथिली बाल साहित्य के लिए यह एक सुखद संकेत है कि बाल–पाठकों के लिए विज्ञान कथाएँ लिखी जा रही हैं। बच्चों में वैज्ञानिक सोच व तार्किकता को बढ़ावा देने के लिए ऐसी कथाएँ बेहद जरूरी हैं। गत वर्ष हमने ऐसी ही एक बाल विज्ञान कथा 'जुबली ग्रह पर भानु' (लेखक अमित मिश्र) पढ़ी थी। फिलहाल ऐसे कहानी संग्रह इक्का–दुक्का ही आते हैं।

वर्ष 2021 में बच्चों के लिए एक कथा संग्रह 'अंतरिक्ष में गुनगुन' प्रकाशित हुआ है। लेखक हैं मनोज कुमार झा और प्रकाशक चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय है। इस संग्रह में 18 कहानियाँ हैं। मनोज कुमार झा पेशे से विज्ञान–शिक्षक हैं और अपने शिक्षण में भी प्रयोगधर्मी हैं। उनकी इन कहानियों में सरल, सहज भाषा में पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति, जीव–संरचना, पृथ्वी के भौतिक, स्वरूप, पर्यावरण, प्रदूषण आदि विषय उपस्थित हैं। बाल–पाठक अतीत जीवन, परंपरा से जकड़े रहने, फंतासी में उलझे रहने, घोर काल्पनिकताओं

जैसी प्रवृत्तियों से बचने में ये कहानियाँ सहायता करती हैं।

इस वर्ष मैथिली बाल साहित्य में 'चल जंगल चल' नामक एक बालगीत संग्रह का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण घटना है। इस समय हम वैश्विक स्तर पर प्रदूषण, पर्यावरण–असंतुलन की समस्या से जूझ रहे हैं। विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है। प्रश्न उठता है कि इसे कौन नियंत्रित करे?

इस प्रश्न का उत्तर दिया है, एक बालगीत संग्रह 'चल जंगल चल' के प्रकाशन ने। इस संग्रह के रचनाकार कुमार मनीष अरविंद हैं। वे झारखंड में वन संरक्षक के पद पर कार्यरत हैं और सरल, सहृदय, संवेदनशील और प्रकृति प्रेमी हैं। वे भावी पीढ़ी पर पूरा भरोसा करते हैं, इसलिए उन्होंने बच्चों को जंगल अर्थात् प्रकृति की ओर चलने का आह्वान किया है।

इस पुस्तक में 8 अध्याय और 108 बालगीत हैं। इन अध्यायों में वन भ्रमण, जैव–विविधता, वन में संकट, इतिहास दर्शन, वनों में ऋतुचक्र आदि हैं। सभी गीत लयबद्ध, गेय, सरल शब्दों में रचे गए हैं और अपनी छंदात्मकता व गेयता के कारण बच्चों में लोकप्रिय हैं, अतः उनके जेहन में ये सरोकार जल्दी और आसानी से घर करते हैं।

एक बालनाटक 'छोट खिखिरक मोट नांगरि' का प्रकाशन हुआ है। डॉ. वीरेंद्र झा ने इस बालनाटक का लेखन किया है। पुस्तक आकार में छोटी है, पर भ्रष्टाचार, कुव्यवस्था पर प्रहार, कथ्य के केंद्र में है। नाटक का केंद्रीय किरदार अपने सिद्धांत पर डटा रहता है, यहाँ तक कि अपने शिक्षक के विरूद्ध भी खड़ा हो जाता है। यह नाटक बच्चों से ऐसे ही सैद्धांतिक दृढ़ता की अपेक्षा करता है।

नाटक की भाषा, शब्द–चयन, शैली सहज व सरल है।

एक और बालगीत संग्रह 'निनिया' प्रकाश में आया है। शिक्षिका, कथाकार व अनुवादक कल्पना झा ने ये बाल कविताएँ लिखी हैं। यह पुस्तक सरल, सहज व पारंपरिक ठेठ शब्दों से लैस शिशु–गीतों का संकलन हैं। ये गीत तुकांत, गेय व बोधगम्य हैं। गीतों में दैनिक आवश्यकताओं की घरेलू चीजों को भी कविता का विषय बनाया गया है। ऐसी पुस्तकों से ही बच्चों में मातृभाषा के प्रति अनुराग बढ़ेगा।

सर्वशिक्षा की अवधारणा पर आधारित एक बालनाटक 'हमहूँ जेबै इसकूल' प्रकाशित हुआ है। लेखक हैं मनोज कामत जो पेशे से शिक्षक हैं। बालिका–शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए श्री कामत ने बच्चों के लिए यह नाटक लिखा। इस नाटक का व्यापक रूप से मंचन भी हुआ है। इस नाटक की नायिका 'मीना' को बनाया गया जो यूनीसेफ की एक परिकल्पना की नायिका थी। यह मीना बाल–विवाह का विरोध करती है, बालिकाओं को स्कूल जाने के लिए प्रेरित करती है और कई अन्य सामाजिक बुराइयों का भी विरोध करती है। यह एक बेहद सफल व प्रेरक नाटक है।

इसके अतिरिक्त बाल कविता संग्रह 'आम गोटी, जाम गोटी' (कमलेश प्रेमेंद्र), 'प्रणाम बाबा' (कीर्तिनारायण मिश्र), 'प्रण' (बाल उपन्यास–वीरेंद्र झा) भी प्रकाशित हुए हैं।

साक्षात्कार

इस वर्ष साक्षात्कार विधा पर एक पुस्तक 'जेना ओ कहलनि' का प्रकाशन हुआ है। इस पुस्तक के लेखक लक्ष्मण झा 'सागर' हैं। यह पुस्तक 7 व्यक्तियों से श्री सागर द्वारा लिए गए साक्षात्कारों का संकलन है। इन सात व्यक्तियों में मैथिली भाषा, समाज और संस्कृति के लिए कार्य करने वाले अग्रणी लोगों जैसे बाबू साहब चौधरी, भाषा–इतिहासकार जयकांत मिश्र, पीतांबर ठाकुर, पत्रकार व 'कर्णामृत पत्रिका के संपादक स्व. राजनंदन लाल दास, कवि वीरेंद्र मलिक, मैथिली नाटक के स्तंभ महेंद्र मलंगिया और अशोक झा हैं।

इन साक्षात्कारों में भी सागर जी ने विशेषज्ञों से ऐसे ही प्रश्न पूछे हैं, जिनके उत्तर बहुत उपयोगी साबित हुए हैं। इन साक्षात्कारों में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विभिन्न पक्षों/मुद्दों पर विशेषज्ञों के अभिमत की जानकारी देते हैं।

नाटक

'जीतब हम' संस्कृति मिश्र द्वारा लिखित नाटक है। इस नाटक को नवारंभ प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इस नाटक का मुख्य विषय

स्तन–कैंसर है। स्तन–कैंसर वर्तमान समय में स्त्री–रोग का सबसे भयावह रोग है। आधुनिक जीवन–शैली, खान–पान, तनाव आदि के कारण यह रोग भारत में भी तेजी से फैलता जा रहा है। इस रोग में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से भोगी गई यंत्रणा के शिकार रोगी व उसके परिजनों की अनुभूतियाँ भी इस नाटक में व्यंजित हुई हैं। यह मन को झकझोरने और जगाने वाला नाटक है जिसे संस्कृति ने नाट्य–प्रस्तुति के रूप में उपस्थित किया है।

इसके अतिरिक्त 'सामा–चकेबा' (रोहिणी रमण झा), 'स्वर्ग ने हमर गाम सन' (शिवेश झा 'शिव') और 'दुलारक भूख' (शिवम झा 'शिवेश') भी प्रकाशित हुए।

आलोचना

मैथिली के विद्वान प्रोफेसर डॉ. ललितेश्वर मिश्र की आलोचना विधा में इस वर्ष एक पुस्तक 'रचना–रसायन' प्रकाशित हुई है। पाश्चात्य साहित्य, विशेष रूप से आधुनिक अंग्रेजी साहित्य से मैथिली साहित्य का एक तुलनात्मक अध्ययन/विश्लेषण के क्षेत्र में यात्रा वृत्तांत, संस्मरण साहित्य, साहित्य का इतिहास, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक चेतना, कविता, कहानी विधा की कृतियाँ आईं।

'रचना रसायन' का प्रकाशन मैथिली साहित्य के निबंध भंडार के लिए महत्वपूर्ण वृद्धि है। यह निबंध समीक्षात्मक निबंध है। इस पुस्तक के लेखक डॉ. ललितेश मिश्र हैं। इस पुस्तक में 29 निबंध संकलित हैं।

डॉ. मिश्र के इस मत से सहमत हुआ जा सकता है कि मैथिली साहित्य में आलोचना पर बहुत कम काम हुआ है। जो हुआ भी है, वह संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य के आलोचना–सिद्धांतों पर आधारित है। इस लिहाज से यह निबंध संग्रह आलोचना की नई दृष्टि प्रस्तुत करता है। वह दृष्टि है तुलनात्मक एवं व्यावहारिक पक्ष को मापदंड बनाकर अपना अभिमत प्रस्तुत करना। इन आलोचनात्मक निबंधों में पाश्चात्य समालोचना और मैथिली साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, साहित्य में काव्य और मैथिली साहित्य के विभिन्न विद्वानों के योगदान और महत्व, चंदा झा से विकास वत्सनाभ तक की कविता–यात्रा की समीक्षा आदि विवेचित किए गए हैं। आलोचना के विद्यार्थियों और उत्साही पाठकों के लिए अच्छी पुस्तक है।

आलोचना विधा में एक महत्वपूर्ण ग्रंथ 'रंगमंच' का प्रकाशन हुआ है। यह नाट्यालोचना की पुस्तक है। इस ग्रंथ का प्रणयन डॉ. कमल मोहन चुन्नू ने किया है।

आलोचना विधा में प्रायः कविता, कहानी या उपन्यास की आलोचना मिलती है पर नाटकों की आलोचना कम ही मिलती है। मैथिली में वैसे भी नाट्यालोचना की पुस्तकें बहुत कम लिखी जाती हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह परंपरागत अवधारणा और दृष्टि से हटकर आलोचना की नई दिशा तय करती है। आलोचक की दृष्टि नवोन्मेषी है। इस पुस्तक में मैथिली नाटकों के समकालीन मूल्यांकन करने हेतु नाटक के साहित्य–मूल्य और नाटक के मंच मूल्य दोनों समेकित कर एक नई आलोचना दृष्टि विकसित की गई है। इस पुस्तक में नाटक के विभिन्न प्रभेदों जैसे रास, रासक, लीला, चौबटिया नाटक (नुक्कड़ नाटक) आदि की भी मैथिली में पहली बार स्थापना की गई है।

लेखक को मैथिली में नाट्यालोचना में नाट्य–साहित्य और नाट्येतर साहित्य की पारंपरिक दूरी को भी कम करने के प्रयास में सफलता मिली है।

आलोचना के क्षेत्र में एक नई पुस्तक प्रकाश में आई है। इस पुस्तक का नाम 'उपन्यासक आलोचना' है। यह पुस्तक मैथिली के प्रसिद्ध कथाकार व आलोचक डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास ने लिखी है।

इस पुस्तक में अपने समकाल के चर्चित उपन्यासों और आलोचना की दो पुस्तकों की आलोचना की गई है। औपन्यासिक शिल्प पर भी मंथन किया गया है। जिन उपन्यासों पर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, वे हैं 'अभिमानिनी', 'बलचनमा', 'नबतुरिया', 'भोरूकवा', 'मधुश्रावणी', 'कन्यादान', 'प्रतिमा', 'पृथ्वीपुत्र' और 'दू धाप आगू'। उन्होंने

जिन उपन्यासों को विचार हेतु चुना, उनमें कृषि, संस्कृति व लौकिक परंपराएँ अनिवार्य रूप से उपस्थित हैं। विवेचना की पृष्ठभूमि में समाजशास्त्रीय दृष्टि है।

इसके अतिरिक्त 'मिथिलाक व्रतकथा'– 'एक मूल्यांकन' (डॉ विभूतिनाथ सिंह झा), 'मैथिली कथा में नारी' (डॉ. उमाकांत झा), 'कसबट्टी' (रमेश), 'कृष्ण तत्व आ मैथिली साहित्य' (डॉ. आदित्य नाथ झा) आदि आलोचना की पुस्तकें नवारंभ प्रकाशन से प्रकाशित हुईं।

अन्य विविध ग्रंथों में 'मिसरजीक दलान' (ललित कथा–धर्मेंद्र कुमार झा), 'गीता–बोध' (गीता अर्थ विवेचन), 'भाषाक गाछ तर' (पं. गोविंद झा), 'वर्ण व्यवस्था' (वर्ण व्याख्या–अमर कुमार मिश्र), '1984 सिख विद्रोह आ षडयंत्र' –परमेश्र झा 'प्रहरी' प्रकाशित हुए हैं। ये पुस्तकें नवारंभ प्रकाशन से प्रकाशित हैं। नई दिल्ली के सिद्धिरस्तु प्रकाशन ने 'भारतीय ज्ञानमाला' (हरिमोहन झा, उज्ज्वल कुमार झा, अरुण कुमार मिश्रा), 'सिराउर' (उपन्यासः दिलीप कुमार झा), 'बदलि गेल आब गाम' (कविताः सत्यनारायण झा) और 'समयक हस्ताक्षर' (शेफालिका वर्मा, राजीव वर्मा एवं कुमकुम वर्मा) पुस्तकें प्रकाशित कीं।

मैथिली प्रकाशक

मैथिली साहित्य को समृद्ध करने में प्रकाशकों की भूमिका को कमतर करके नहीं आँका जा सकता है। मधुबनी स्थित नवारंभ प्रकाशन ने वर्ष 2021 में लगभग 65 पुस्तकें, अनुप्रास प्रकाशन, मधुबनी ने 8, सिद्धिरस्तु प्रकाशन ने 5 और साहित्य अकादमी ने लगभग 44 पुस्तकें प्रकाशित कीं।

❑❑❑

16

संथाली साहित्य

रेखा

भाषा शब्द भाष् धातु से बना है जिसका अभिप्राय है बोलना, लिखना अर्थात् अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम। स्वयं की अभिव्यक्ति के बिना कोई भी व्यक्ति, पशु–पक्षी यहाँ तक कि पेड़–पौधे भी नहीं रह सकते। सबकी अपनी–अपनी सोच व अभिव्यक्ति होती है। जिस तेजी से आधुनिकता बढ़ती जा रही है और प्रत्येक क्षेत्र में अपने पैर पसार रही है, अपनी भावनाओं को आम जनमानस तक पहुँचाने के लिए कलम का सहारा लेना ही पड़ता है। साथ ही भारतवर्ष की बात करें तो यह तो है ही विविधताओं में एकता का देश। यहाँ विविध भाषा–भाषी और प्रदेश के लोग रहते हैं। विविध जनजातियाँ हैं। इनमें से ही एक– झारखंड की संथाल जनजाति है। जिन्होंने अपनी भाषा को इतनी सजगता से विकसित किया है कि संविधान की 22 भाषाओं में अपना स्थान सुरक्षित कर पाई है। संथाली भाषा बोलने वाले मूल वक्ता को ही 'संथाली' कहते हैं। किंतु अन्य जातियों द्वारा शब्द संथाली को अपने–अपने क्षेत्रीय स्वरूप के अनुसार उच्चारण रूप "संथाल, संताल, संवतल, संवतर" आदि के नाम से संबोधित किया जाता है जबकि ऐसा कोई शब्द ही नहीं है। वास्तविक शब्द केवल 'संथाली' है। जिसे उच्चारण के अभाव में देवनागरी में संथाली और रोमन में Santali लिखा जाता हैं। संथाली भाषा बोलने वाले वक्ता 'खेरवाड़ समुदाय' से आते हैं जो अपने को 'होड़' (मनुष्य) अथवा 'होड़ होपोन' (मनुष्य की संतान) भी कहते हैं। यहाँ भी 'खेरवाड़' और 'खेरवार' शब्द और अर्थ में अंतर है। 'खेरवाड़' एक समुदाय है जबकि 'खेरवार' इसी की उपजाति है।

संथाली भाषा के लोग भारत में अधिकांश झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओड़ीशा, बिहार, असम, त्रिपुरा, मणिपुर, मेघालय, सिक्किम, मिजोरम, राज्यों तथा विदेशों में अल्पसंख्या में चीन, न्यूजीलैंड, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, जावा, सुमात्रा, आदि देशों में रहते हैं। संथाली भाषा के लोग भारत की प्राचीनतम जनजातियों में से एक हैं किंतु वर्तमान में इन्हें झारखंडी (जाहेर खोड़ी) के रूप में जाना जाता है। झारखंडी का अर्थ झारखंड में निवास करने वाले नहीं हैं बल्कि 'जोहेर' (सारना स्थल) के 'खोड़' (वेदी) में पूजा करने वाले लोगों से है, जो प्रकृति को विधाता मानता है अर्थात् प्रकृति का पुजारी है। जल, जंगल और जमीन से जुड़े लोग। ये 'मारांग बुरू' और 'जाहेर आयो' (माता प्रकृति) की उपासना करते हैं। संथाली समाज अद्वितीय विरासत की परंपरा और आश्चर्यजनक परिष्कृत जीवन शैली है। उनके लोकसंगीत, गीत, संगीत, नृत्य और भाषा सबसे अलग है। इनकी सांस्कृतिक शोध दैनिक कार्यों में परिलक्षित होती हैं। डिजाइन, निर्माण, रंग–संयोजन और अपने घर की सफाई

व्यवस्था में है। दीवारों पर आरेखन, चित्र और अपने आँगन की स्वच्छता कई आधुनिक शहरी घरों के लिए भी शर्म की बात होती है। मकान ऐसे हैं जिनमें खिड़कियाँ नहीं होतीं। पारिवारिक सामाजिक ढाँचा मजबूत होता है। सामाजिक कार्य भी सामूहिक होते हैं। अतः पूजा, त्योहार, उत्सव, विवाह, जन्म–मृत्यु आदि में पूरा समाज शामिल होता है। संथाली समाज भले ही पुरुष प्रधान हो लेकिन सभी को बराबरी का दर्जा दिया जाता है। घर में लड़का जन्म ले या लड़की उसका जन्मोत्सव आनंद व खुशी के साथ मनाया जाता है। दोनों को ही विशेष अधिकार प्रदान किए गए हैं। वे शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं, हाट, बाजार में घूम सकते हैं, वे इच्छित खानपान का सेवन, इच्छित परिधान, सजना–सँवरना, नौकरी, मेहनत–मजदूरी, प्रेम–विवाह कर सकते हैं। इनके समाज में पर्दा प्रथा, सती प्रथा, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा नहीं है बल्कि विधवा विवाह, अनाथ बच्चों का भरण–पोषण, नाजायज बच्चों को नाम व गोत्र देना और पंचायतों द्वारा उनके पालन–पोषण की जिम्मेदारी उठाने जैसी श्रेष्ठ परंपराएँ हैं।

संथाली समाज में मृत्यु के शोक, अंत्येष्टि संस्कार को अति गंभीरता से मनाया जाता है। इनके धार्मिक विश्वास और अभ्यास किसी भी अन्य समुदाय या धर्म से मेल नहीं खाते हैं। इनके प्रमुख देवता हैं– सिञ बोंगा, मारांग बुरु, जाहेर ऐरा, गोसांय ऐरा, मोमेंटकों, युक्तकों, माँझी पाट, आतु पाट, सुरु पाट, सेंदरा बोंगा, आगे बोंगा, ओडा बोंगा, जोमसिम बोंगा, परगना बोंगा, सीमा बोंगा, हापडाम बोंगा आदि। पूजा, अनुष्ठानों में बलि का विधान है। समाज के विभिन्न कार्यों के निर्वहन के लिए समाज के मुख्य लोग माँझी जोग, माँझी परनीक, जोग परनीक, गोडेत, नायके और परगना होते हैं। जो सामाजिक व न्याय व्यवस्था में अपनी भूमिका निभाते हैं। इनके चौदह मूल गोत्र हैं– हासंदा, मुर्मू, किस्कू, सोरेन, टुडू, मार्डी, हेम्ब्रोम, बास्के, बेसरा, चोणें, बेधिया, गेडवार, डोडका और पौरिया। संथाली समाज मुख्यतः बाहा, सोहराय, नाग, ऐरोक, माक, मोड़ें, जानताड, हरियाड सीम, पाता संदेश, सकरात, राजा सालाह : जनजातीय समूह प्रमुख हैं। इनके विवाह को 'बापला' कहा जाता है। संथाली समाज में 23 प्रकार की विवाह प्रथाएँ प्रचलित हैं। आदिवासियों का धनी साहित्य लिखित नहीं लेकिन गीत और संगीत में बहुत पाया जाता है। इन लोकगीतों और कहानियों को जब साहित्य में ढाला जाता है तो इस व्यवस्था को 'ओरेचर' कहते हैं। ओरल यानी मौखिक और लिटरेचर यानी साहित्य। इन शब्दों का मिलन अर्थात ओरेचर है। ओरेचर श्रेणी को सबसे पहले युगांडा के आदिवासी लेखक 'पियो जिरिमू' ने स्थापित किया था। जिससे बहुत आदिवासी लेखकों और साहित्यकारों को प्रेरणा मिली। इनमें अफ्रीका के न्गूगी वा थ्योंगो का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इस श्रेणी की संथाल जाति से आने वाली वंदना टेटे प्रमुख ओरेचर है। वंदना टेटे जिन्होंने अपनी पुस्तक में लोकगीत और कहानियों को जगह दी है। उन्होंने अपने लेख से लोगों के ज्ञान को मान्यता दी है। उनकी रचना 'कवि मन जन जनीमन' में झारखंड के आदिवासी जनी यानी–आदिवासी महिलाओं की कविताओं को प्रमुखता से लिया गया है। किसी भी समाज का आधार स्त्री ही है, जो परिवार व समाज की सूत्रधार होती है। इसीलिए वंदना जी की सभी कविताएँ आदिवासी भाषा में ही लिखी गई हैं। साथ ही उन्होंने ओरेचर पद्धति का इस्तेमाल किया है तो ऐसा नहीं कि उन्होंने पुरुषों की रचनाओं को महत्व नहीं दिया। हाँ, यह सत्य है कि उन्होंने प्रथमतः या प्रथम दृष्टया यदि कहें तो स्त्रियों को महत्व अधिक दिया है। सभी कविताएँ आदिवासी भाषा में लिखी गई हैं। वंदना टेटे झारखंड के सिमडेगा जिले के समतोली गाँव से आने वाली एक साहित्यकार और एक्टिविस्ट हैं। वे आदिवासियों का गौरव हैं। वंदना टेटे राँची और उदयपुर आकाशवाणी से भी जुड़ी रही हैं। उन्होंने आदिवासियों के राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर प्रकाशित विभिन्न पत्रिकाएँ जैसे 'अखरा झारखंड'

(हिंदी), 'संस्कृति अखरा' (बहुभाषी), 'सोरिनानिड' (खड़िया), 'जोहरसहिया' (नागपुरी) में भी योगदान दिया है। इसके साथ ही उन्होंने बहुत–सी पुस्तकें भी लिखीं। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं– 'पुरखा लड़ाके', 'किसका राज है', 'झारखंड : एक अंतहीन समर गाथा', 'पुरखा झारखंडी', 'साहित्यकार और नए साक्षात्कार', 'असुर सिरिंग', 'आदिवासी साहित्य : परंपरा और प्रयोजन' और 'आदिम राग'। इन्हें अपनी आदिवासी पत्रकारिता के लिए 2012 में झारखंड राज्य सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। किसी भी लेखक के लिए अपनी मातृभाषा में साहित्य रचना एक गर्व का विषय है। संथाली साहित्य के महान साहित्यकार पंडित रघुनाथ मुर्मू ने लिखा है– "अपने घर–द्वार, परिवार से इतर दूसरा व्यक्ति यह सब नहीं देखेगा अपने को ही देखना पड़ेगा। यहाँ पर भी अपनी मातृभाषा में लेखन खुद को ही करना पड़ेगा, इसके लिए कोई दूसरा नहीं आएगा।" बांग्ला साहित्यकार माइकल मधुसूदन दत्ता पहले अंग्रेजी में लिखते थे। लेकिन ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी ने उन्हें समझाया कि अपनी मातृभाषा ही प्रमुख होती है और उनके समझाने पर वह अपनी मातृभाषा में ही साहित्य रचना करने लगे थे। इसके बाद उन्हें ज्ञात हुआ कि, उनकी प्रसिद्धि का सबसे बड़ा साधन उनकी अपनी ही भाषा बनी। मातृभाषा मातृ दुग्ध के समान होती है। यह लेखन में सर्वविदित है। यह बात न केवल संथाली बल्कि सभी भाषाओं पर लागू होती है। वर्तमान में श्यामा सी टूडू, लालचंद सोरेन, परिमल हासंदा, अनपा हार्डी, सुचित्रा हासंदा, मायनों टुडू रानी मुर्मू, गुहीराम किस्कू जैसे युवा लेखकों की कलम से संथाली साहित्य लगातार समृद्ध हो रहा है। 1925 में पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा संथाली के लिए वैज्ञानिक लिपि 'ओलचिकी' की खोज, 1988 में 'अखिल भारतीय संथाली लेखक संघ' की स्थापना, 2003 में 'भारतीय संविधान में संथाली भाषा का आठवीं अनुसूची' में अंतर– भुक्तकरण, 2006 से संथाली के लिए भी 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' शुरू होना और सन 2016 में 'जुबान ओनेलिया नामक संथाली भाषा साहित्य की अंतरराष्ट्रीय संस्था' की स्थापना। ये सभी ऐसी घटनाएँ रही हैं जिसने संथाली साहित्य के विकास में ईंधन का काम किया और यह अपने विकास के मार्ग पर ना केवल चलने लगी बल्कि दौड़ने भी लगी और जीत की ओर अपना लक्ष्य निश्चित कर लिया।

'चंदा बोंगा' संथाली भाषा के विख्यात साहित्यकार अर्जुन चरण हेंब्रम द्वारा रचित कविता संग्रह है। जिसके लिए उन्हें सन् 2013 में संथाली भाषा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी कविताओं का विषय संथाली की संस्कृति व परंपरा से रहा है। उनकी कविताओं में समाज की झलक व वहाँ का सजीव चित्रण उत्पन्न होता है। वहाँ की न्याय प्रणाली प्रकृति रीति–रिवाज, स्वतंत्रता, संस्कृति व संस्कारों की बात उनकी रचनाओं में कही गई है। वर्तमान में संथाली में अच्छा–अच्छा साहित्य लिखा जा रहा है। संथाली से अन्य भाषाओं व अन्य भाषा से संथाली में साहित्य का अनुवाद हो रहा है। ऐसा नहीं है कि यह भाषा मात्र अनुवाद की मोहताज रह गई है। इस भाषा में श्रेष्ठ साहित्य की रचना की जा रही है और विभिन्न साहित्यकारों के नाम इसीलिए प्रारंभ में दिए गए हैं ताकि उनका परिचय हमें भली प्रकार से प्राप्त हो सके। यह हमें ज्ञात है कि आदिवासियों का यह धनी साहित्य लिखित नहीं है। साथ ही यह गीत और संगीत में बहुत गाया पाया गया है। इन लोकगीतों में संपूर्ण संथाली समाज समाया हुआ है। इसलिए बताया गया है कि संथाली लेखक ओरेचर पद्धति को सबसे अधिक अनुकरणीय मानते हैं। 'खेरवाल सोरेन' संथाली के विख्यात साहित्यकार हैं जिन्होंने 'चेत रे चिकायेना' नामक नाटक की रचना की। जिसके लिए उन्हें 2007 में संथाली भाषा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। इस नाटक का मुख्य विषय संथाल की प्रमुख संस्कृति को प्रकट में लाना था। 'दमयंती बेसरा' ने भी संथाली काव्य संग्रह 'शाय साहेंद' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त किया। संथाली

के विख्यात साहित्यकार रवि लाल टूडू द्वारा रचित नाटक 'पारसी खातिर' जिसके लिए उन्हें संथाली भाषा में ही साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। बादल हेंब्रम ने संथाली भाषा में 'मानमि' नामक कहानी संग्रह की रचना की। उनकी साहित्य रचना में कहानियाँ एक मील का पत्थर साबित हुई हैं। उनकी प्रत्येक कहानी वहाँ की संस्कृति, वहाँ की सभ्यता, वातावरण, प्रकृति, रहन–सहन बातचीत का ढंग और रीति–रिवाजों के विषय में दर्शाई गई हैं। आदित्य कुमार मांडी ने 'बंचाओ लरहाई' नामक संथाली भाषा में कविता संग्रह की रचना की है। कविता तो होता ही भावों का उद्वेलन है। अपनी संस्कृति के विषय में उत्पन्न उनके मनोभावों को उन्होंने अपनी लेखनी से कविताओं में परिवर्तित कर दिया है। इन्हें भी साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। संथाली भाषा के अन्य प्रख्यात साहित्यकार जदुमणि बेसरा ने 'भाबना' नामक कविता संग्रह की रचना की और इन्हें भी अपनी श्रेष्ठ रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। भोगला सोरेन संथाली भाषा के विख्यात साहित्यकार हैं। इनके द्वारा रचित एक नाटक 'राही रांवाक काना' के लिए उन्हें सन् 2010 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ समय–समय पर आती रही हैं– 'सूड़ा साकोम' (नाटक), 'रही चेतान ते' (नाटक), 'खोबोर कागोज' (नाटक), 'सांसनो' (नाटक), 'बिटलाहा' (नाटक), 'मान दिसोम पोरान परायनी' (नाटक), 'उपाल' (उपन्यास), 'चापोय' (उपन्यास) एवं 'संथाली भाषा लिपि और साहित्य का विकास' (लेख) लिखा है।

आज अवसर प्राप्त हुआ जब बिना किसी दायरे नियम में बँधे बिना कुछ लिखा जाए। कुछ ऐसा जो अपने जीवन से जुड़ा सत्य हो। संथाली लेखक इसी विचार से अपनी रचनाएँ करते हैं। रूपचंद हासंदा का जन्म 22 फरवरी, 1962 को बांदवान जिला पश्चिम बंगाल राज्य के अंतर्गत कायरा गाँव में हुआ था। हासंदा 25 वर्षों तक 'ऑल इंडिया संथाली रायटर्स एसोसिएशन' के अध्यक्ष रहे हैं। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली में संथाली मंडल के 'प्रथम सलाहकार सदस्य' व संथाली अकादमी बोर्ड के भी सदस्य रहे हैं। उन्होंने अब तक डेढ़ सौ से भी ज्यादा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों को संबोधित किया है। उन्होंने आकाशवाणी से कई बार वक्तव्य देने का गौरव प्राप्त किया है। वह वर्तमान में 'बिरला फाउंडेशन अवार्ड कमेटी संथाली' के संयोजक हैं। अब तक उन्हें गुरु गोमके, पंडित रघुनाथ मुरमू सम्मान पुरस्कार, साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार 2018 से सम्मानित किया जा चुका है। रूपचंद हासंदा ने जिन पुस्तकों की रचना तथा प्रकाशन किया है उनमें 'शाबार्दी' (कविता), 'ईञ बाबा नायके हासंदा आर कायरा आतु' (जीवनी), 'कवि शारदा प्रसाद किस्कू' (जीवनी), 'संथाली रोनोड', 'बांग्ला संथाली अडा माला' (शब्दकोश), 'श्रीमद्भागवत गीता' (अनुवाद), 'मित्र जोड कोलोम' (अनुवाद), 'वचन', 'बिब्लोग्राफी ऑफ संथाली राइटर्स' (भाग 1–2), 'सेन दावे युक्त आप मेन्खान चेदाक्'। उनके साथ–साथ उन्होंने निम्नलिखित पुस्तकों का संपादन तथा प्रकाशन किया। जिसमें 'मोडे सिञघ मोड़ ञिदा' (भाग 1–2) 'हिहिडी–पीपीडी', 'ओनाडहे मोहक' (कविता), 'संथाली ओनोल माला' (निबंध), 'जियोन गाडि' (लघु कहानी), 'जियोन हेलेक' (लघु कथा), 'सोरेस हिंदी कहानी माला', 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडिया लिटरेचर' (4 भाग), 'मंतार पत्रिका', 'खेरवाडड़ाहार पत्रिका', 'तेतेर पत्रिका' आदि प्रमुख रहे हैं। संथाली भाषा साहित्य के लिए रूपचंदा को उनके कविता संग्रह 'गुड दाक् कासा दाक्' (गुड़ पानी कसैला पानी) के लिए सम्मानित पुरस्कार साहित्य अकादमी 2020 प्रदान किया जा रहा है।

अंजलि किस्कू को उनके कविता संग्रह 'अंजले' के लिए साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2020 प्रदान किया जाएगा। वह आदिवासी साहित्य को एक समग्र रूप में देखने का अलग ही नजरिया प्रदान करता है। उनका जन्म 14 जुलाई, 1992

को हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा एम पी पंचाल बालिका उच्च विद्यालय बांकुरा से प्राप्त की। नेताजी महाविद्यालय आरामबाग हुगली पश्चिम बंगाल से संथाली विषय में स्नातक किया। विश्व भारती विश्वविद्यालय से संथाली विषय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने 2017 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिलहाल वे पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा स्थित स्वामी डी डी के महाविद्यालय भारा में प्राध्यापक हैं। उनके द्वारा रचित पुस्तक 'अंजले मिद् विता' (कविता 2020), 'इपिल' (लघु कहानी) आदि हैं। इसके अतिरिक्त उनकी रचनाएँ विभिन्न संथाली पत्रिकाओं 'सिली', 'सार', 'उमुल', 'भाबना' आदि में प्रकाशित होती रही हैं। वर्तमान में वह ऑल इंडिया संथाली रायटर्स एसोसिएशन के कार्यकारी समिति की सदस्य हैं।

बाल साहित्य के लिए जयराम टूडू को साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया है। वह ओड़िशा स्थित राउरकेला निवासी हैं। उनकी रचनाएँ 'भोंज कुल भुरका : इपिल सुनाराम सोरेन' (भोज का शेर ध्रुव तारा सुनाराम सोरेन) जीवनी के लिए साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार 2020 प्रदान किया जाएगा। इनका जन्म 12 अक्तूबर, 1964 को मयूरभंज (ओड़िशा) स्थित मंधावानी गाँव में हुआ था। उनकी शिक्षा–दीक्षा जगन्नाथपुर स्थित एल पी स्कूल, बाती हिज मिडिल स्कूल व सर गांधी हाई स्कूल राउरकेला से हुई। एम सी पी कॉलेज बारीपदा से आगे की पढ़ाई की, जबकि बारीपदा से ही आईटीआई और राउरकेला लॉ कॉलेज से कानून की डिग्री इन्होंने हासिल की। स्नातकोत्तर संबलपुर विश्वविद्यालय से किया। उन्होंने विभिन्न पुस्तकों की रचना की जिनमें– 'सारना धोरो बोंगा बुरू', 'जानम पारसी अडाङ', 'लुगु बुरू घंटा बड़ी, 'बाबा तिलका मांझी', 'अरहो पांडुलिपि तोगे मेनाकू गेया' आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि संथाली साहित्य अपने आप में एक ऐसी समृद्ध परंपरा है जो निरंतर गति से आगे बढ़ रही है। यह न केवल अपनी जाति से लोगों को परिचित करा रही है बल्कि समस्त जनता के साथ अपना परिचय और अपना संपर्क भी बढ़ा रही है। जिससे वह अपनी समृद्धि और साहित्यिक परंपरा को और अधिक आगे बढ़ाने का सफल प्रयास करने में लगातार जुटी हुई है। यह आमजन के लिए भी बहुत अच्छी बात है कि वह अपनी संस्कृति से इतर अन्य संस्कृतियों के विषय में जान पा रहा है। भारतवर्ष के लिए तो यह और भी गौरवशाली बात है क्योंकि यह तो जाना ही संस्कृति के लिए जाता है। आशा और उम्मीद है कि इसी प्रकार से संथाली साहित्य और अन्य विधाएँ भी अपने मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यहाँ एक बात मैं जरूर कहना चाहती हूँ कि बीच में कोरोना काल के चलते हुए जो क्षति सभी क्षेत्रों में हुई वह हमारे साहित्य क्षेत्र को भी कहीं ना कहीं झेलनी पड़ी है। इसका असर हमें इस वर्ष देखने को मिला है। पर ऐसी आशा है कि आगे आने वाले समय में जब हम इस पर पूरी तरह से काबू पाने में सक्षम हो सकेंगे। तो हम पुनः अपने मार्ग पर अग्रसर होंगे और हमें उन्नत साहित्य देखने को मिलेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

झारखंड पब्लिकेशन, छत्तीसगढ़ विकिपीडिया

❑❑❑

17

संस्कृत साहित्य

देवेश कुमार मिश्र

संस्कृत भाषा में प्रथम दृष्टया लोकमंगल की भावभूमि से महाकाव्य लेखन की परंपरा ही रही है। सुख–दुख, पाप–पुण्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, की बातें संस्कृत कविता में ही होती चली आ रही थीं। इसी क्रम में खंडकाव्य, नाटक आदि भी लिखे जाते रहे हैं।

कहा जाने लगा कि संस्कृत भाषा में अखबार नहीं छपते, वहीं कालिदास आज भी पढ़ाए जा रहे हैं। भाषा मृतप्राय हो गई आदि आदि। किंतु भाषा सेवकों ने इस धारणा को और इस मान्यता को कभी नहीं स्वीकारा। हाँ एक बात अवश्य है कि प्रभूत मात्रा में पुस्तक लेखक नहीं हो पा रहे। लोग समझते हैं कि ऐसा मान लिया गया कि संस्कृत साहित्य के प्रशंसक, अनुयायी यदि संख्या में कम हैं तो भाषा मर गई। बात हास्यास्पद है, अमराणां भाषा मृतभाषा। धन्य हे भारतवासी! अरे आपको जानना चाहिए कि संस्कृत का साहित्य प्रकाशक और दुकान की सजावट नहीं होता। यह तो सहृदयों के हृदय की गहराई में प्रस्तुत भावों को अपना सहयात्री बनाता है। इन बातों को केवल भाषा सीखकर कविता में संस्कृत के कवि नहीं ढाला करते। शायद इतर साहित्य के लोग भूल गए कि संस्कृत भाषा और साहित्य में विशेष साधनापूर्ण व्यक्तित्व की माँग है। कवियों ने जन्म जन्मांतर तक इसे पूरा किया है। क्या इस तकनीकी युग में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की इस प्रकार की मायापरक संस्कृति में भी कविता की शक्ति लेकर संस्कृत के साधक आ रहे हैं? जी हाँ बिलकुल आ रहे हैं। अभी देखिए न श्रुति कानिटकर की काव्य–प्रतिभा को, कैसे कवि कर्म में निपुणता का प्रदर्शन कर रही हैं।

श्रुति कानिटकर महाराष्ट्र से हैं। अवस्था पच्चीस से अधिक नहीं है किंतु संस्कृत साहित्य के प्रवाह में अपने लेखन द्वारा किस प्रकार अवगाहन कर रही हैं और कविता की शक्ति से अभिव्यक्ति को किस प्रकार प्रमाणित कर रहीं हैं। ऐसा सहज ही उनकी प्रतिभा से उद्भासित है। उन्होंने विभिन्न भाषाओं में कविताओं की रचना की है। अपनी मातृभाषा मराठी में ये बारह साल की उम्र से ही लिख रही हैं। यही नहीं अंग्रेजी और हिंदी में भी कविताएँ लिखी हैं। संस्कृत सीख रही हूँ, ऐसा बोलती हैं। संस्कृत में भी छंदों की रचना कर रही हैं। इन्होंने पाँच नाटकों के साथ 80 से अधिक स्तोत्र संस्कृत में रचे हैं और आज तक अलग–अलग मानकों में मिश्रित छंदों की रचना करती आ रही हैं। विभिन्न गीतों का संस्कृत में अनुवाद भी किया है। जैसे 'काले मेघा' (फिल्म : लगान), 'ऐ वतन' (फिल्म : राज़ी), 'भारत ये रहना चाहिए' (फिल्म : मणिकर्णिका), चक दे इंडिया' (फिल्मः चक दे इंडिया) और अन्य भी। इनमें से

कुछ गीत पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। जबकि कुछ ऑडियो गीतों के रूप में सोशल प्लेटफॉर्म पर हैं। वर्ष 2021 में श्रुति की पहली पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक का नाम 'श्रीमती–चरित्रम्' है। इसमें श्रीकृष्ण की पत्नी श्रीमती राधा देवी की जीवनी है। इसमें वृंदावन में उनके जन्म से शुरू होने वाली राधा देवी के दिव्य खेल, उनके बचपन, युवावस्था, कृष्ण से अलगाव से लेकर दिव्य निवास तक के दिव्य खेल को प्रदर्शित किया गया है। कवयित्री से वार्ता के अनुसार भले ही श्री राधा पर संस्कृत के साथ–साथ अन्य भाषाओं में भी महाकाव्य लिखे गए हैं, किंतु यह पहली कविता है जिसमें राधा जी के जीवन के सभी पक्षों को सम्मिलित किया गया है। सात खंडों में विभाजित कविता है, इसमें 5559 श्लोक हैं। मुख्य छंद अनुष्टुप है, लेकिन अन्य का उपयोग भी किया गया है। श्रुति जी की कविताओं में पाणिनीय व्याकरण के नियमों का पालन करने की पर्याप्त स्थिति है। लेकिन कभी–कभी भिन्नताएँ होती हैं। उदाहरण के लिए इन्हीं की ओर से अंग्रेजी में दिए हुए एक लिखित प्रस्तर में देखा जाए–

डॉ. अरविंद कुमार तिवारी को संस्कृत साहित्य में नवोदित कवि ही नहीं बल्कि नवीन विमर्श लाने वाला उद्भावक भी माना जा रहा है। काव्य–प्रतिभा इनमें सचमुच विराज रही है। महीने भर की अवधि में महाकाव्य रचना किसी अद्भुत शक्ति का ही परिचायक है। अरविंद जी का कार्य एकदम नए तरीके का है। इनकी सांख्यमुक्तावली तो वर्ष 2012 से ही लगातार शारदा संस्कृत संस्थान, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित हो रही है। इसमें कुल छह अध्यायों में सांख्यदर्शन के सिद्धांतों का प्रश्नोत्तर शैली में अद्भुत उपस्थापन है। वासुदेवचरितम् को कविवर ने गुरु के संस्कृतावदान को केंद्र में रखते हुए इस काव्य का प्रणयन किया है। काव्योद्यानम् शतकविध की रचना है। इसमें मुक्तकाव्य ग्रथित हैं। यह भी इस वर्ष सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली से प्रकाशित है। अन्योक्तिनिर्झरः में कवि ने मनोहर अन्योक्तियों का प्रयोग किया है। पंडितराज के बाद इस तरह की रचनाएँ अब आने लगी हैं। अन्योक्तियों की प्रधानता के कारण इसका नाम अन्योक्तिनिर्झर है। हा हन्त! उपन्यास है। लगातार प्रकाशित है इसे खूब प्रसिद्धि मिली है। विभिन्न संस्थाओं में इसपर शोधकार्य भी होने लगे। अभिनव ललित यह उपन्यास ग्रामवर्णन, नगरवर्णन, तीर्थवर्णन, समस्यावर्णन एवं शास्त्रवर्णन के साथ संस्कृतभाषा में पाँच निश्वासों में विभक्त है।

नीतिकल्पद्रुमः में प्राचीन नीति परंपरा का दिग्दर्शन नवीनता के साथ परिलक्षित होता है। बालगुंजनम्– बालसाहित्य की दृष्टि से सुगम सुबोध रचना है। बालोचित कविताओं का प्रणयन अरविंद जी के बालभावत्व का परिचायक है।

पंचाशिकात्रय में मातृपंचाशिका, मित्रपंचाशिका एवं श्वशुरालयपंचाशिका हैं। इनमें माता, मित्र एवं श्वशुराल का अंतरंग चित्रण है। योगिविजयम्– शतकविध रचना है। यह उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी के कार्यों का चित्रण प्रस्तुत करती है। उनका त्याग, औदार्य, देशप्रेम तथा प्रजावात्सल्य इसमें वर्णित है। अरविंद जी की कविता केवल सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर ही नहीं होती, इनकी रचना संस्कृत के काव्यशास्त्र पर भी है। इन्होंने काव्य में अलंकार की प्रमुखता पर जो रचनाएँ समाज को दी है, उसका नाम काव्यालंकृति है। काव्यालंकृतिः में काव्य का प्रमुख तत्व अलंकार है। ऐसा कारिकाओं द्वारा तर्कपूर्वक इस कृति में वर्णित है। ग़ज़ल की विधा का विकास संस्कृत में हुआ है। राधावल्लभ त्रिपाठी और अभिराज राजेंद्र मिश्र इसके उदाहरण हैं। गलज्जलिकोर्मिः कुल 26 ग़ज़लें हैं जिनका हिंदी अनुवाद भी दिया गया है।

नारी–चेतना के अप्रतिम वर्णन से सुसज्जित श्रीरामचरितम्/अरविंदरामायणम् 22 सर्गों का महाकाव्य है। दिल्ली से सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस से इस वर्ष प्रकाशित हुआ है। इसमें संपूर्ण एवं संक्षिप्त श्रीरामकथा का संस्कृत भाषा में अपूर्व वस्तुओं के साथ ग्रंथन किया गया है। कवि ने यह सिद्ध किया है कि भगवान् श्रीराम ने स्वयं माता कैकेयी से वन जाने की बात कह कर राजा

दशरथ से वरदान मँगवाया था। इसके साथ राष्ट्रीयभावना, मानवमूल्य आदि समस्त सांप्रतिक विषयों का सन्निवेश इस महाकाव्य को चारुता प्रदान करने वाला है। इनके 'कोरोनासन्देशम्' में 225 मन्द्रकान्ता छंद हैं। कोरोनाकाल में देश त्रस्त हो गया। इस कारुणिक वेदनामयी कथा को संस्कृत के लोग दूरभाष काव्य के रूप में प्रणीत बता रहे हैं। कोरोनाक्रमणम् सात अंकों का है। कोरोना की दूसरी लहर से अकालमृत्यु को प्राप्त मनुष्यों की वेदना इसमें चित्रित है। 2022 में एजुकेशनल बुक सर्विस नई दिल्ली से प्रकाशित पद्यबोधिनी रचना संस्कृत छंदों पर आधारित है। इसमें 5 अध्याय हैं। इसमें कुछ अर्वाचीन कवियों के उदाहरणों को उनके नाम के साथ संकलित किया गया है। वस्तुतः छंद में प्रवेश पाने के इच्छुक जन के लिए यह रचना उपयोगी है। बताते चलें कि 2 वर्षों से तो अधिकांश रचनाएँ कोरोना की विभीषिका को केंद्र में रखकर कवियों ने लिखी हैं। निम्नलिखित रचनाओं को डॉ. रमाकांत शुक्ल जी ने सबसे पहले प्रकाशित कराने का कार्य किया। किंतु ये रचनाएँ विभिन्न प्रकाशनों से अद्यतन प्रकाशित हो रही हैं। यह सभी कोरोना काल की रचनाएँ अवश्य है, किंतु इनमें नवीन विषयों की बहुलता है। इसीलिए मैंने संकलन रूप में यहाँ पर विषय सूची से ही उठाकर प्रस्तुत कर दिया है। नवप्रकाशन चर्चा में डॉ. रमाकांत शुक्ल जी सभी की बात करते हैं। यथा– कोरोना रचनावलिः की विषय सूची ही प्रमाण है–

कोरोनाशतकम् ('अभिराज' राजेंद्र मिश्रः), कोरोनोत्सादनस्तोत्रम् ('अभिराज' राजेंद्र मिश्र), कोरोना– विडंबन–शतकम् (डॉ. माधव देशपांडे), कोरोना (डॉ. महेश झा), जय जय चीनसुते (डॉ. निरज मिश्र) प्रीतो भव महेश (डॉ. निरंजन मिश्र), दिव्या करोना (डॉ. निरंजन मिश्र) त्वं कथं शिवगामिनी (डॉ. निरज मिश्र), करोनाषट्कम् (जिएस श्रीनिवासमूर्ति), कोरोने! तव कारणात्प्रियतमा दूरङ्गतोऽयं शशी (डॉ. शशिकांत तिवारी 'शशिचरः'), कोरोना विषाणुव जैविक (डॉ. शशिकांत तिवारी 'शशिर), कोरोना–कविसम्वादः, अर्वाचीनसंस्कृतम् (डॉ. शशिकांत तिवारी 'शशिधरः), कोरोणाऽऽवलि! (डॉ. चंद्रगुप्त वर्णकर), दम्पत्योः संवादः (डॉ. अरविंदकुमार तिवारी), अरविंद्रविरचितं कोरोनादण्डकम् (डॉ. अरविंद कुमार तिवारी), प्रवाहीतो निजं चीनम् (डॉ. अरविंद कुमार तिवारी), को वेति कस्य हृदये रमते करोना? (डॉ. अरविंद कुमार तिवारी) भवानी संस्तवः (डॉ.अरविंद कुमार तिवारी), कॅरोना–गलज्जलिके (डॉ. राम विनय सिंह), करोणामवश्यं जयेद्धारतम् (रमाकान्त शुक्लः), कोरोनाष्टकम् (डॉ. श्रेयांशद्विवेदी), कोरोना किं करिष्यति? (डॉ. अम्बालाल प्रजापतिः), कोरोनानिरोधकाव्यम् (डॉ. अम्बालाल प्रजापतिः), संचलनम् (डॉ. अरविंद कुमार तिवारी) श्रुत्वा भारतमातुरार्तवचनम् (डॉ. कमला पांडेय), कोरोना (डॉ. लक्ष्मीनारायण पांडेय), दर्शय भगवन् द्वारम्! (डॉ. अरविंद कुमार तिवारी), कोरोनोन्मूलनक्रतुः (डॉ. नवलता), कोरोनासंक्रमणम् (डॉ. राजेंद्र त्रिपाठी रसराजः), वैश्विक चिंतनम् (डॉ. राजेंद्र त्रिपाठी 'रसराजः') करोनापञ्चदशी (डॉ. जयानंद विजयन) करोनाषट्कम् (1)करोनाषट्कम् (2); 'करोनात्रिकम्' (3), कोरोना कोविदः (प्रो. चौरि उपेंद्र रावः), 'कोरोना विषाणु' (डॉ. राजेंद्र त्रिपाठी रसराजः), एते! (डॉ. सचिन कुमार त्रिपाठी) महामारी कोरोनेवं, कोरोनेयं महामारी (डॉ. धनजय मिश्र), कोरोनारक्षास्तोत्रम् (डॉ. अरविंदकुमार तिवारी), न हस्तमेलनं वरं न सज्जनैश्च मेलनम् (आचार्य मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी), नीतिसारमवलम्ब्य .तम् अभिनवनीतिसारम् (मुसलपुर मोहनदास), कोरोनामेवाभिलक्ष्य कतिपयान्यभिनवानि पद्यानि (डॉ. राम विनय सिंहः), कोरोने! धन्यवादा! (डॉ. पुष्कर आनंदः), कोरोनासन्देशम् (डॉ. अरविंद तिवारी), अरविंदोपज्ञम् ईशदण्डकम् (डॉ. अरविंद तिवारी), नवीनसूर्य (डॉ. प्रीतिः पुजारा), सप्तकसप्तकम् (डॉ. बुद्धेश्वर षडंगी) प्रथमं वृद्धसेवासप्तकम् (डॉ. बुद्धेश्वर षडंगी), द्वितीयं मुखावरणसप्तकम् (डॉ. बुद्धेश्वर षडंगी), तृतीयं गात्रावनसप्तक (डॉ. बुद्धेश्वर षडंगी), चतुर्थम् आरोग्यसेतुसप्तकम् (डॉ. बुद्धेश्वर षडंगी) पञ्चमं दरिद्रान्नसेवासप्तकम् (डॉ. बुद्धेश्वर षडंगी,पष्ठं वृत्तिरक्षासप्तकम् बुद्धेश्वर

षडंगी), सप्तपदीसप्तकम् (डॉ. बुद्धेश्वर षडंगी), करोणा माये (डॉ. बुद्धेश्वर षडंगी), हटे करोना विषकीट राष्ट्र से (डॉ. युवराजभट्टराई)

डॉ. बनमाली बिसवाल वस्तुतः ओड़िशा से हैं। इनकी भी काव्य–प्रतिभा नवीनशैली की उद्भाविका है। समकालिक संस्कृत साहित्य के समर्थ सर्जक समीक्षक बिसवाल की रचनाधर्मिता में नयी शैली में कथा, ललित निबन्ध, उपन्यास, नाटक, बाल साहित्य आदि तमाम नवीन सर्जनात्मक विधाओं में प्राप्त रचनाओं में सङ्गमेनाभिरामा व्यथा, ऋतुपर्णा, प्रियतमा, वेलेण्टाइनडे– पर भी संस्कृत में संदेशकविता (संस्कृत कविता संग्रह) नीरवस्वन बुभुक्षा, जगन्नाथचरितम्, जिजीविषा (संस्कृत– कथा संग्रह) तारा अरुन्धती, विवेकलहरी (अनूदित संस्कृत कविता संग्रह), जन्मान्धस्य स्वप्नः (अनूदित संस्कृत–कथा संग्रह), पत्रालयः (अनूदित संस्कृत नाटक), कश्चित्कांता (ओड़िया कविता संग्रह), ओड़िया कथा संग्रह ये सभी इनकी नवीनशैली में नए–नए विषयों की उपस्थापिका रचनाएँ हैं। डॉ. नवलता रचित 'स्रोतोवहा' मौलिक संस्कृत कविताओं का संग्रह है जिसमें स्फुट संस्कृत गीत, समस्यापूर्ति, लोकगीत, शास्त्रीय छंदों में रचित कविताएँ हैं। यह पुस्तक भाषा संगम प्रकाशन में यंत्रस्थ है। इनके संस्कृत गीत, कजरी वगैरह सब गाए जा रहे हैं। मीडिया पर उपलब्ध हैं। हाल ही में गाए जाने वाले गीतों को देखिए – आशा श्रीवास्तव के स्वर में इसी वर्ष प्रकाशित – विवाहगीतम् में वर विषयक संदेह और घर घर की खुशियाँ–

राज्ञा जनकेन स्वयंवरो रचितः
वरविषये संदेहो हे।
धनुर्भङ्गेन हरिष्यति तापं
तेनैव भवितोद्वाहो हे।।
मिथिलानगर्यां प्रचरिता चर्चा
हर्षमयः प्रतिगेहो हे।
गंगा स्नान के लिए प्रेरणा :
चल मनो गङ्गायमुनातीरे।
वहति धवलगाङ्गेयो धारः।
श्रद्धालुर्मज्जति संसारः
श्यामलयमुनानीरे।। 1।।

कजरी को तो नवलता जी ने बिल्कुल वही रूप दे दिया जैसा भोजपुरी में गाते हैं–

हरे राम, वर्षति श्रावणधारो
घनावली गर्जति रे हारी।
छादन्ते कज्जलमेघाः
द्योतन्ते मत्ताश्चपलाः।
हरे राम, वायुर्वाति सवेगः
पुलकतनुरेजति रे हारी।। 1।।
नदनदीसरःसु जलौघः
शिखिचातकदर्दुरावः।
हरे राम, श्यामा तरौ रसाले
पञ्चमे गायति रे हारी।। 2।।

कविताओं में जीवन के प्रति आशावादी दृष्टि तथा चुनौतियों को स्वीकार करने की प्रेरणा 'मधुमास आगन्ता पुनः' इसी प्रकार का गीत है। 'नव्यं भारतम्' राष्ट्र के नवनिर्माण का आह्वान करने वाला गीत है जिसका मूल संदेश है – 'कल्पयेम समवेत्य साम्प्रतः नव्यं भारतम्'। कवयित्री कवि का आह्वान करती हुई कहती है–

सखे संकल्पितं ते लोकभद्रं
न गेयांतर्व्यथामय्यात्मगीतिः।

इस वर्ष स्वतंत्रता के अमृतमहोत्सव के परिप्रेक्ष्य में 'विचार्यताम्' शीर्षक कविता में स्वतंत्रता संग्राम के प्रसंगों को इंगित किया गया है। राष्ट्र के नागरिकों से राष्ट्रगौरव की रक्षा के लिए स्वयं जाग्रत रहने का संदेश दिया गया है–

जागृहि स्वयं प्रबोधयस्व मानवम्।
रक्ष रक्ष भ्रातरद्य राष्ट्र गौरवम्।।

कवयित्री ने जनसामान्य में सरल संस्कृत के प्रति रुचि जागृत करने तथा लोकप्रिय सांस्कृतिक पक्षों को लोकगीतों के माध्यम से उद्घाटित किया है।

संस्कृत के प्रति हिंदी साहित्य के लोगों में कभी विमर्श को लेकर, कभी समस्या को लेकर, कभी नई विधा को लेकर तो कभी यथार्थवाद को लेकर चर्चा होती रहती है। जानना चाहिए कि गंगा के प्रवाह की तरह संस्कृत साहित्य अपने नए – नए रूपों में भी आ रहा है और उसी प्रकार पाठकों के लिए प्रभावशाली भी सिद्ध हो रहा है। यह सब

बातें नवलता जी की कविताओं में देखी जा सकती हैं।

उर्दू साहित्य के प्रतिमानों का अपना एक अंदाज है, वहाँ अलंकरण के माध्यम से संवेदना की ओर जाने का प्रयास करते हैं। अंग्रेजी की रचनाएँ उनकी अपनी सांस्कृतिक परिसीमा और भाव भूमि की परिधि में घूमती रहती हैं। ओड़िया, पंजाबी गुजराती राजस्थानी, कुमाऊनी, गढ़वाली भोजपुरी, मैथिली, बांग्ला अथवा जापानी शैली ही क्यों न हो; अपेक्षाकृत संस्कृत की कविताएँ आज भी भाव सबलता में कम अग्रणी नहीं हैं।

सांस्कृतिक मूल्यों की दृढ़तापूर्वक रक्षा करनी चाहिए। कवयित्री इसके लिए चिंतित हैं। गद्यकाव्य में 'अनुक्तकथा' पंडिता क्षमाराव की तरह नवलता की लेखनी से अनुस्यूत है। इनके पितामह तथा पिता के द्वारा जिए गए संघर्षपूर्ण जीवन में सिद्धांतों एवं सांस्कृतिक मूल्यों की दृढ़तापूर्वक रक्षा तथा मानवीय जीवन–मूल्यों के संस्कार से संवलित यह नवीन आख्यायिका है। 'महामनीषी आचार्यरघुवीरः' अनूदित जीवनवृत्त है। स्वातंत्र्य संग्राम तथा स्वातंण्य प्राप्ति के पश्चात् विदेश में बिखरे संस्कृत साहित्य, विशेषतः महत्वपूर्ण अभिलेखों को भारत में लाकर विशाल संग्रहालय की संकल्पना के साथ ही संस्कृत के प्रति उनके विशेष योगदान को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। (रचयिता से वार्ता द्वारा प्राप्त)

एक ओर जहाँ पर विभिन्न प्रकार के विषयों को लेकर नई–नई उद्भावनाएँ प्रकट करने के लिए संस्कृत के कवि विविध प्रकार की रचनाएँ कर रहे हैं तो दूसरी ओर शास्त्रीयता से संयुक्त प्रोफेसर राजेश्वर मिश्र इन दिनों बैठे–बैठे शास्त्रीय कार्य भी कर रहे हैं। बिल्कुल नए तरीके से अपने लेखों के संकलन द्वारा नवीन दृष्टि अपनाते हुए अपनी पुस्तकों से समाज को लाभान्वित कर रहे हैं। साहित्योपनिधि और ज्ञानामृतसंदोह उनकी रचनाएँ हैं। दिल्ली से प्रकाशित इन रचनाओं में मिश्र जी ने कालिदास बाल्मीकि से लगायत भगवद्गीता आदि सभी पर दृष्टिपात करते हुए कहीं रसायन विद्या तो कहीं पर विभिन्न शास्त्रीय ज्ञान विज्ञान से संबंधित नवीन दृष्टि से पाठकों को विषय प्रदान किया है। इन रचनाओं में संस्कृत भाषा का बहुधा प्रयोग है। नए तरीके की वर्णनचातुरी है। कुछ शीर्षकों में ऐसे देखिए–

महाकवि कालिदास पर वैदिक प्रभाव, दुर्वासा का शाप, 'श्रीमद्भगवद्गीता' और वेद, सगोत्र विवाह, कौटिल्याभिमता गुप्तचरव्यवस्था, प्राचीन भारतीय रसायनविद्या।

उत्तराखंड राज्य में पलायन एक बहुत बड़ी समस्या है। प्रत्येक ग्रामवासी वहाँ से पलायित होने की सोच रहा है। कविवर हेमचंद्र बेलवाल जी इसी विषय को केंद्रित करके वर्तमान वर्ष में ऐसे लिख रहे हैं–

ग्रामस्य चिन्तां न करोति कश्चिद् ग्रामस्थितानामियमेव चिन्ता। ग्राम्यैश्चितोऽसौ जननायकोऽपि ग्रामात्त्वरा हन्त पलायते हा।।
यथा व्यवस्था नगरेषु सन्ति ग्रामे तथा सन्ति न काश्चनापि।
तदर्थमेवाद्य पलायमाना ग्रामादहो ग्रामजना अनेके।
सम्मिल्य सर्वेऽपि जना इदानीं भूत्वैकसूत्रे विलिखन्तु नीतिम्।
ग्रामस्थिता एव सुखं स्वकीयं ग्रामस्थले कर्तुमुपायवन्तः।।
विशुद्ध वातावरणं, सुपेयं, सुभोजन जीवनयापनाय।
शांतिः परा स्वादुफलाश्च वृक्षा, एतत्समं ग्रामभुवि प्रभूतम्।।/एकवानरः, जलरक्षा जीवनरक्षा, शैशवस्मरणगीतम्, स्वापगीतम् (लोरी) प्रिया मदीया पाठशाला, वर्षाकालः समागतः, विभाति कृषको भारतपुत्रः,

कीदृशं क्रीडनकम्? मम दिनचर्या, यानं गच्छति शनैः शनैः, बहुसुन्दरं मम पुस्तकम्, सरला संस्कृतभाषा, सूर्यः,वन्दनीयं भारतम्, वदति कोकिलः कुः कुःकुः, देवभाषा संस्कृतम्, मम गुरवः, प्रियं मदीयं क्रीडनकम्, लोकं जागरयति काकः, मैट्रोयानम्, वयं बालकाः, जन्मदिनस्य वर्धापनम्', नमामि वीर–सैनिकम्, कः कमलं बहुकोमलम् आदि के शीर्षकों में स्वतः ही वर्ण्यविषय की नवता झलक रही है।

प्रियो मदीयः पाठ्यक्रमः मेरा प्रिय पाठ्यक्रम में कवि की चमत्कारिक शैली का प्रयोग अपनी मधुरता से मानो गुरुपदेश जैसा तथ्य उपस्थित कर रही है। ऐसा ये श्लोक बता ही रहे हैं। हम क्या पढ़ें ? कैसे पढ़ें ? पढ़कर क्या पाएँ?

प्रथमः पाठो 'मंगलगीतं' द्वितीयपाठो देशवंदना।
तृतीयपाठः सुंदरशाला, प्रियो मदीयः पाठ्यक्रमः।
चतुर्थपाठो वीरवंदना, पंचमपाठो बालकथा।
षष्ठः पाठो धन्यः कृषकः प्रियो मदीयः पाठ्यक्रमः।
सप्तमपाठो भारतनारी, अष्टमपाठो दिनचर्या।
नवमः पाठो मामकजननी, दशमः पाठः प्रियः पिता।

हर्ष देव माधव जी नई उद्भावनाओं को लेकर संस्कृत साहित्य के बड़े चर्चित और मान्य कवि हो चुके हैं। हाइकु, रेडियो रूपक आदि बहुत कुछ लिखे जा रहे हैं। मगर बेलवाल जी कि उक्त संस्कृत कविता में बाल साहित्य के माध्यम से पाठ्यक्रम के क्रम की जो उपस्थापना हुई है, उस स्थापना ने यह बता दिया है कि संस्कृत साहित्य का कवि ब्रह्मा की तरह सृष्टि करता है।

इसी प्रकार आप दिनचर्या के संदेश को इस बाल साहित्य की रचना में देखें। जिसे बेलवाल जी 2022 में ही प्रकाशित बता रहे हैं। उनके कविता संग्रह की पुस्तक से ही यह सब लिया गया है। भारतीय संस्कृति की मूल आचरण प्रक्रिया को इस कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में स्थापित कर दिया है– मम दिनचर्या नामक कविता में क्या सुंदर कहा है–

प्रभातकाले जागरणम् करोमि करदर्शनं सदा।
भूमिवन्दना क्षमाप्रार्थना, दिनचर्या मम सुनिश्चिता
स्नानं ध्यानं देवपूजनम्, बन्धुजनेभ्यो नमो नमः।
कवितापाठो गीतापाठः, दिनचर्या मम सुनिश्चिता।
जनकं नत्वा जननीं नत्वा, स्वपाठशालां गच्छामि।
पठामि पाठं नव्यं नव्यं दिनचर्या मम सुनिश्चिता।
सायंकाले मित्रैः साकं यामि खेलितुं सानन्दम्।
करोमि गृहकार्यं पूर्ण दिनचर्या मम सुनिश्चिता।
निश्चितसमये भवति भोजनं, निश्चितसमये मम शयनम्।
वारं वारं पठामि पाठं, दिनचर्या मम सुनिश्चिता।।

इस वर्ष इनकी अन्य रचनाओं में जैसे : –

त्वां नमामः सादरम्, नमामि नित्यं भारतराष्ट्रम्,
गंगा मम भारते
भारतभूमिः सुशोभते, भगवति! नमो नमस्ते,
मम जन्मभूमिरयं शुभा,
वसति सैनिकः सीमायाम्, पिपीलिके! हे पिपीलिके !, भारतमाता वसति ग्रामे, विभाति लोके भारतनारी, सुपूजनीयः तरुदेवः।

एवं सुखद बचपन के बाद जो अभी अपने बाल्यकाल में हैं, ऐसे समस्त बालमति को समर्पित यह संस्कृत–बाल–कविता–संग्रह। सत्यम पब्लिशिंग हाउस दिल्ली से प्रकाशित यह कविता संग्रह संस्कृत सीखने, बोलने तथा संस्कृत माध्यम से अपनी परंपराओं से जुड़े रहने में बाल मति के लिए कारगर है। बहुत प्रशंसनीय प्रेरणा है कवि की। मेट्रो की कविता द्वारा बालकों को कैसे संस्कृत भाषा कवि द्वारा सिखाई जा रही है, सहज ही देखिए –

चलत चलामः दिल्ली नगरम्, दिल्ली नगरे मैट्रोयानम्।
मैट्रोयाने जना अनेके, अनेकभाषा अनेकवेशाः।
मैट्रोयाने शिशवो बालाः, युवका वृद्धा महिलाः पुरुषाः।
लसतु स्वकीये भारतराष्ट्रे। चलत चलामः, दिल्लीनगरे, मैट्रोयानम्।

आधुनिक संस्कृत कविता समकालीन युग के अनुरूप अपने को सार्थवती बनाने के प्रयासों में अनुदिन अन्य भारतीय भाषाओं के समकक्ष नवीन अन्वेषण की ओर उन्मुख है और 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपेति तदैव रूपं रमणीयतायाः' की उक्ति को चरितार्थ करती है।

साहित्य में नवीनता अपने समकालिक संदर्भों की अभिव्यक्ति और कवि के तद्गत संदर्भों के साथ तादात्म्य भाव के कारण ही आती है। आधुनिक संस्कृत कविता अपनी पूर्ववर्ती विरल गत्यात्मकता के साथ सर्वथा नए अनुबंधों, नए प्रतिमानों को समेटने वाली नई भावभूमि के साथ अपना परिचय

देती है। परंपरा और आधुनिकता को समाहित करती समकालीनता अपना स्वरूप स्वयं स्थापित कर लेती है। यह क्रम चिरकाल से चला आ रहा है। शास्त्रीय बंधयुक्त परंपरीण और नवीन प्रतिमानों के साथ–साथ अभिनव काव्य के शास्त्रीय मानदंड के समानांतर समकालिक काव्यशास्त्र भी अपना महत्व प्रख्यापित कर चुके हैं। महाकाव्य, खंडकाव्य सहित अन्य विविध काव्य रूपों (मुक्तककाव्य, रागकाव्य, दूतकाव्य, विमानकाव्य, स्तोत्रकाव्य, शतककाव्य, समस्यापूर्ति, नभोनाट्य (रेडियो रूपक), गीतिकाव्य, अनुकृतिकाव्य (पैरोडी), हास्य–व्यङ्यकाव्य, अन्योक्तिकाव्य, बिल्वपत्रम् (हाइकू), लघुबिंबकाव्य, लिपिरूपककाव्य (टाइपोग्राफी), लघुवर्णकाव्य, गलज्जलिका, लहरीकाव्य, मुक्त छंदोविधान काव्य, अवधान काव्य आदि) में नवीन संस्कृत लेखन के अनामय स्वरूप के दर्शन होते हैं। रचनाकारों ने इन नवीन काव्य विधाओं, काव्य प्रवृत्तियों और शिल्परूपों की व्यापक परिवीक्षा में नवीन संस्कृत कविता की समकालीन प्रतिबद्धता की शास्त्रीय व्याख्या की है। 'युगान्तरनारी' और 'मतान्तरं शतपत्रम्' (आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी) जैसी कई रचनाओं के माध्यम से कवियों ने अणुयुग का साक्षात्कार कराती कविताओं और नवयुग के निर्मम साक्षात्कार का और विश्वजनीन काव्य–सत्य के मर्म को भी उद्घाटित किया है।

भारतीय सांस्कृतिक भक्ति परंपरा में प्रातः कालीन स्तोत्र–वंदन की परंपरा प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में चिरकाल से विद्यमान रही है। 21वीं सदी संगणक युग तकनीकी युग में भी धर्म–भीरु समाज की आस्था भक्ति–प्रवण रूप में निर्बाध देखी जा सकती है। देव–मंदिरों तीर्थ–क्षेत्रों की संस्कृति के विभिन्न अंश ये रचनाएँ विविध स्तोत्र काव्यों और शतक काव्यों के रूप में विरचित थीं।

नई सदी में परम वैष्णव साक्षात् भागवतावतार आचार्य इच्छा राम द्विवेदी 'प्रणव' की गीत मंदाकिनी में सुप्रभातम् के अंतर्गत परम प्रिय देव सुमंगल स्तोत्र आदि में प्रायः सभी देवों के मंगल स्तोत्रों का सुंदर संगीतमय सुप्रभात वर्णन का समुच्चय सुसज्जित है। इसी परंपरा में डॉ. राम विनय सिंह द्वारा विरचित 'प्राभातिकशतकम्' है जिसे सूर्य स्तवन की परंपरा के साथ समकालीन संवेदना और समाज में व्याप्त दैन्य के पराभव से मुक्ति की कामना हेतु 'प्राभातिकशतकम्' डॉ. राम विनय सिंह की उस सरस प्रखर सार्थक रचनाधर्मिता का प्रमाण है जहाँ रचनाकारों ने नई सदी की प्रवृत्ति के अनुरूप जीवन और समाज में परिवर्तन लाने के लिए वैश्विक परिवर्तनों के मध्य साहित्य की सार्थकता और सामाजिक स्थितियों की चिंताओं और प्रतिबद्धताओं के साथ विलक्षण जीवन शक्ति का परिचय देने के लिए भी स्वयं को तैयार किया है।

'प्राभातिकशतकम्' में सूर्यदेव से सुमनोहर प्रभात करने को पारंपरिक रूप से निवेदन करते हुए विशिष्ट भंगिमा के साथ लोकहित में स्वर्णिम प्रभात करने की प्रार्थना कर रहे हैं–

'मन्ये प्रभातसमये शिशिराहतेऽस्मिन्
नो त्यक्तुमिच्छति मनश्शयनं कदाचित्।
किंतु त्वमर्क! भुवनस्य विधानभूतो
निद्रां विसृज्य कुरु लोकहिते प्रभातम्।।'

सूर्य से आलस्य त्यागने का निवेदन और हिम्मत करके उठने का आग्रह, अथच शीत में प्रातःकालीन अन्यमनस्कता का उपालंभ जिस वैदग्ध्यपूर्ण भाव की अभिव्यक्ति करता है वह कवि की नितांत अभिनव कल्पना की परिणति है।

विगत वर्षों में कोरोना वायरस पूरे विश्व में त्रासद दृश्यों का चलचित्र लेकर प्रकट हुआ। सूर्य की रोगापहारी शक्ति और पूर्व दिशा का अधिपति सूर्य भारतवंशी होने के कारण तेजस्विता को प्रकट करते हुए इस महामारी से मुक्ति दिलाने वाली सहयोगी शक्ति बना है। इसका संदेश प्राभातिकशतकम् में कवि की स्वतःस्फूर्त वाणी में मर्मपूर्ण किंतु दैन्यरहित रूप के साथ स्पष्ट है–

'चीनांशुकावृतरुजं सहसा निरुद्ध्य
योद्धेव जागृहि कुरुष्व नवप्रभातम्।।'

चीन से आए कोरोना के लिए 'चीनांशुका–वृतरुजं' शब्द की भंगिमा से काव्य की वैदग्ध्यपूर्ण भणिति और समकालीन प्रसंग की अर्थगर्भिता को द्विगुणित कर

इस प्रकार हम निसंकोच कह सकते हैं कि जिस ढंग से पंजाबी, गुजराती, ओड़िया, बांग्ला से

लेकर के हिंदी साहित्य आदि सभी में नई–नई प्रवृत्तियों को लेकर काव्य धारा चल रही हैं उसी प्रकार संस्कृत साहित्य की काव्य धारा भी नए–नए प्रतिमानों को खड़ा कर रही है। प्रस्तुत लेख में लेखक ने उद्धृत सभी कवियों से वार्ता करके प्रामाणिक सूचना के आधार पर ही तथ्यों का उल्लेख किया है। साहित्य सतत प्रवाही है। शाश्वत और सारस्वत है। हिंदी–संस्कृत–अंग्रेजी के रूप में उसका अपना प्रवाह कवियों की लेखनी का विषय बना करता है।

❑❑❑

18

हिंदी आलोचना

आलोक रंजन पांडेय

आलोचना शब्द जब किसी भी माध्यम से हमारे मस्तिष्क तक पहुँचता है, तो विचारों में उसका नकारात्मक रूप सामने आ जाता है। लेकिन साहित्य के क्षेत्र में ऐसा नहीं है, यहाँ आलोचना का सीधा अर्थ किसी भी कृति के मूल्यांकन से है जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में हो सकता है। वस्तुतः साहित्य में आलोचना का अर्थ होता है समीक्षा करना। जो मूलतः दो पक्षों पर आधारित होती है– सैद्धांतिक और व्यावहारिक। जब उन प्रतिमानों का निर्माण किया जाता है जिनके आधार पर साहित्य के स्वरूप एवं उससे जुड़े मूल प्रश्नों के साथ किसी कृति के मूल्यांकन को आधार बनाया जाता है, तो यह सैद्धांतिक आलोचना है। लेकिन जब उन प्रतिमानों के आधार पर रचना का मूल्यांकन किया जाता है तो यह व्यावहारिक आलोचना है।

हिंदी आलोचना भी उन सभी विधाओं की ही तरह नवीनीकृत हुई है, जिनके नवीनीकरण की जिम्मेदारी भारतेंदु और उनके युग के अन्य साहित्यकारों ने उठाई थी। देश में नए–नए विचारों और भावनाओं का संचार हो रहा था, लेकिन साहित्य उनसे दूर था। परंतु भारतेंदु–मंडल ने समय की माँग को देखते हुए यथार्थवाद की ओर रुख किया और साहित्य–लेखन की दृष्टि काफी हद तक वैज्ञानिक रखी। हिंदी आलोचना भी उसी यथार्थवादी दृष्टिकोण और वैज्ञानिकता की देन है। आलोचना को रीतिबद्ध ढाँचे से निकालकर आधुनिक ढाँचे में ढालने का पहला कदम भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने 'नाटक'(1883) नामक निबंध से उठाया जिसमें उन्होंने नाटक लिखने के प्रतिमान गढ़े, हिंदी में सैद्धांतिक आलोचना की शुरुआत इसी निबंध से मानी जाती है। भारतेंदु जी हिंदी आलोचना के प्रवर्तक हैं लेकिन अखंड परंपरा को चलाया उन्हीं के मंडल के दो महानुभावों ने, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन और बालकृष्ण भट्ट। 'लाला श्रीनिवासदास', जिनको हिंदी का पहला उपन्यासकार माना जाता है, उनके नाटक 'संयोगिता स्वयंवर' की प्रथम आलोचना बालकृष्ण भट्ट जी ने अपनी पत्रिका 'हिंदी प्रदीप' में 'सच्ची समालोचना' (1886) नाम से की, जो कि जितनी सच्ची थी उतनी ही कटु भी थी। साल 1886 में ही प्रेमघन जी ने भी अपनी पत्रिका 'आनंद कादंबिनी' में 'संयोगिता स्वयंवर' की आलोचना की, इन्होंने भी उस रचना पर कई कटाक्ष किए। हिंदी आलोचना का व्यावहारिक पक्ष यहाँ से शुरू होता है। आचार्य शुक्ल भारतेंदु के 'नाटक' को आलोचना की श्रेणी में नहीं रखते, वे इन्हीं दो महानुभावों को हिंदी आलोचना का जनक मानते हैं। इस युग में भारतेंदु–मंडल के अन्य विद्वानों ने भी आलोचना की हैं, जिनमें प्रतापनारायण मिश्र का नाम उल्लेखनीय है।

जिस प्रकार भारतेंदु युग की आलोचना पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से विकसित हुई, उसी प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी व उनके युग के अन्य आलोचकों ने भी पत्रिकाओं के माध्यम से आलोचनाएँ कीं। इस युग की आलोचना में इतिवृत्तात्मकता और नैतिक आदर्शवादी मान्यताओं को अधिक महत्व दिया गया, साथ ही साथ द्विवेदी जी ने भाषा को परिष्कृत करने की पहल की। वर्ष 1907 में पद्मसिंह शर्मा ने सरस्वती पत्रिका में 'बिहारी और सादी' की तुलनात्मक समीक्षा की जिसके बाद तुलनात्मक समीक्षाएँ भी लगातार होने लगीं, जिसमें मिश्रबंधुओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और उनके हिंदी नवरत्नों में 'देव बड़े या बिहारी' विवाद चला, जिसमें इन्होंने देव को बड़ा माना।

शुक्ल युग के केंद्रीय समीक्षक आचार्य रामचंद्र शुक्ल हैं, साथ ही बाबू गुलाबराय और बाबू श्यामसुंदर दास का बड़ा योगदान है। यहाँ छायावाद पर कई आलोचनाएँ हुईं जिसके बाद छायावादी कवि भी इस बहस में भाग लेने को मजबूर हो गए और अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से अपना पक्ष रखा। आचार्य शुक्ल ने हिंदी में वैज्ञानिक आलोचना पर बल दिया। बाबू श्यामसुंदर दास को अध्यापकीय आलोचना का जनक माना जाता है। शुक्लोत्तर युग की शुरुआत स्वच्छंदतावादी समीक्षा से शुरू हुई, जो कि मोटे तौर पर, शुक्ल जी की धारणाओं का प्रतिपक्ष है। इसके बाद विभिन्न विचारधाराओं के आगमन के साथ–साथ नई समीक्षा पद्धतियाँ प्रचलित होती गईं जिनमें प्रगतिवादी समीक्षा, मनोविश्लेषणवादी समीक्षा और नई समीक्षा प्रमुख हैं। जिनमें शांतिप्रिय द्विवेदी, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह, रामविलास शर्मा, अज्ञेय और मुक्तिबोध जैसे बड़े नाम हैं।

सन् 1970 के बाद की समीक्षा समकालीन समीक्षा कहलाती है। जिसमें नामवर सिंह, मलयज, मैनेजर पांडेय, नंद किशोर नवल, नित्यानंद तिवारी, विश्वनाथ त्रिपाठी आदि शामिल हैं। ये समीक्षक वस्तुवादी धारा में आते हैं। इस युग में भाववादी धारा भी प्रमुख है, जिसके प्रतिनिधि अशोक वाजपेयी हैं। साथ में विष्णु खरे, मदन सोनी, ध्रुव शुक्ल आदि महत्वपूर्ण हैं।

जब यह सवाल सामने आता है कि आलोचना की आवश्यकता क्या है तो बाबू श्यामसुंदर दास का यह कथन उल्लेखनीय है कि यदि हम साहित्य को जीवन की व्याख्या मानें तो आलोचना को उस व्याख्या की व्याख्या मानना पड़ेगा। अर्थात् साहित्य जीवन से संबंधित और जीवन का विवरण है, तो वहीं आलोचना उस साहित्य का विवरण है। ऐसे में अच्छे, योग्य साहित्य को चुनने में आलोचना मदद कर सकती है। रचनाकार का परिचय तथा उसकी रचना का संक्षिप्त ज्ञान आलोचना के द्वारा संभव है। अतः रचना का स्वयं परीक्षण कर उसके गुण दोषों को प्रस्तुत करना मार्गदर्शन के समान है। इतना ही नहीं आलोचना पाठक की अभिरुचि को भी परिमार्जित कर सकती है।

हर वर्ष की तरह पिछले वर्ष भी कोरोना की महामारी के बावजूद आलोचना को लेकर कुछ शानदार आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। जिनका ज़िक्र करना आवश्यक है। वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से अरुण कुमार जी की प्रकाशित आलोचनात्मक पुस्तक 'ग्रियर्सन भाषा और साहित्य चिंतन' भाषा और साहित्य को लेकर गंभीर पुस्तक है। जॉन अब्राहम ग्रियर्सन मूल रूप से भारतीय नहीं थे इसके बावजूद उन्होंने भारतीय साहित्य के लिए जितना कार्य किया वह सराहनीय है। उन्होंने आधुनिक भारत में भाषाओं का सर्वेक्षण किया। सिविल सेवक के रूप में वे 1870 के आसपास भारत आए और तीन दशक तक कई उच्च पदों पर बंगाल और बिहार में कार्य किया। जॉर्ज ग्रियर्सन पहले ऐसे अंग्रेजी विद्वान और भाषाविद थे, जिन्होंने मध्यकाल के कवियों के महत्व को प्रतिपादित किया और साहित्य में इनके स्थान को निर्धारण करने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया है ।

भाषा वैज्ञानिक जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन हिंदी क्षेत्र की बोलियों का विस्तृत अध्ययन, लोकसाहित्य के संकलन और विश्लेषण करने वाले विद्वानों में शुमार थे। ग्रियर्सन ने हिंदी भाषा और साहित्य के इतिहास की अनेक पुस्तकें लिखीं एवं साहित्य के

विभिन्न दृष्टिकोण को वैज्ञानिक तरीके से जनमानस के समक्ष रखा। उन्होंने अनेक शोध कार्य किए और आज भी उनके शोध कार्य हिंदी भाषा और साहित्य के इतिहास के लिए मील का पत्थर हैं। उनके द्वारा स्थापित दृष्टिकोण में विद्वानों में मतभेद तो रहे, परंतु उनकी वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित शोध प्रवृत्ति आज भी कई आलोचकों को दिशा निर्देशित करती है। सुप्रसिद्ध आलोचक अरुण कुमार ने अपनी पुस्तक 'ग्रियर्सन भाषा और साहित्य चिंतन' में आलोचना और वैचारिक विविधता के अनेक पक्षों को हमारे समक्ष रखा। साथ ही उन्होंने ग्रियर्सन की विभाजित दृष्टि और नीति को भी हमारे सामने ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया। हिंदी प्रदेश को बाँटने और उसे एक ना मानने के पीछे ग्रियर्सन की समझ काम कर रही थी। सुपरिचित आलोचक अरुण कुमार ने इस प्रकार से विभिन्न आयामों, विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से ग्रियर्सन के संपूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व की आलोचना बड़ी समग्रता के साथ की है। विजय बहादुर सिंह की पुस्तक 'जातीय अस्मिता के प्रश्न और जयशंकर प्रसाद' में लेखक ने जयशंकर प्रसाद के समस्त रचना कौशल के महत्व को बताया है। जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य में सुप्रसिद्ध नाटककार, सर्वस्वीकृत कवि एवं रचनाकार के रूप में एक विशेष स्थान रखते हैं। उनका संपूर्ण लेखन समस्त रचना कौशल हिंदी साहित्य जगत की अमूल्य निधि है। परंतु कुछ वैचारिक आग्रहों और दुराग्रहों में भी रहे हैं। उनके साहित्य के बारे में उल्लेख आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा या गजानन माधव मुक्तिबोध अपनी आलोचना में करते हैं। आलोचना की परंपरा में उनका नाम एक प्रतिष्ठित साहित्यकार के रूप में लिया जाता है। जयशंकर प्रसाद ने अपनी रचनात्मकता के द्वारा हिंदी भाषा, समाज और साहित्य को गंभीर सांस्कृतिक दृष्टि, क्रांतिकारी जीवनबोध साथ ही उदात्त विश्वबोध का भी उपहार दिया। जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटकों में वैदिक, बौद्ध और ब्राह्मणकाल का जो आख्यान पर्व रचा है, वह वही है, जिसे हम अपने नवजागरण में खोज रहे थे। उनकी इस प्रतिभा और विशेष दृष्टि पर साहित्यकारों और आलोचकों ने विशेष ध्यान नहीं दिया।

जयशंकर प्रसाद के समस्त रचना कौशल समस्त लेखन में देश की जातीय अस्मिता, उसकी खोज, उसकी पहचान, तत्व और प्रक्रिया बड़े विस्तृत रूप से हमारे सामने आई है। किसी देश की जातीय अस्मिता के पीछे क्या सपने होते हैं, जिन्हें साकार होना होता है, इसकी भरपूर चिंता हमें प्रसाद के समस्त लेखन में मिलती है। विजय बहादुर सिंह ने अपनी पुस्तक जातीय अस्मिता के प्रश्न और जयशंकर प्रसाद में भारत के इन्हीं सपनों के चरित्र और आज के समय में उनकी प्रासंगिकता और औचित्य के महत्व को रेखांकित किया है। लेखक ने जयशंकर प्रसाद को एक धर्मनिरपेक्ष विचारक और इतिहास शोधक माना है। साथ ही अतीत के प्रति प्रेम और अपने समय की मुख्य चिंताओं का समावेश जयशंकर प्रसाद ने अपने साहित्य में बखूबी ढंग से किया है। हिंदी आलोचना के आधारभूत शब्दों को लेकर अरुण कुमार की पुस्तक 'हिंदी साहित्य : परंपरा और प्रयोग' भी महत्वपूर्ण है। 'परंपरा' और 'प्रयोग' शब्द हिंदी आलोचना के महत्वपूर्ण और आधारभूत शब्द हैं। 'परंपरा' और 'प्रयोग' शब्द के आस–पास ही संपूर्ण हिंदी आलोचना के कई आधारभूत और बुनियादी सूत्र रचे गए हैं। सुप्रसिद्ध आलोचक अरुण कुमार ने प्रस्तुत पुस्तक 'परंपरा और प्रयोग' के बहाने हिंदी साहित्य के विभिन्न रूपों के विकास को केंद्र में रखकर लिखी है। सबसे महत्वपूर्ण बात इस पुस्तक को लेकर यह है कि हिंदी साहित्य की परंपरा और उसके प्रयोगों के बारे में सुपरिचित आलोचक अरुण कुमार ने जो भी आलोचकीय टिप्पणियाँ की हैं, उसके केंद्र में डॉ. नामवर सिंह और उनका संपूर्ण और आलोचकीय कृतित्व है।

नामवर सिंह जिस दूसरी परंपरा की खोज करते हुए अपनी आलोचकीय यात्रा आगे बढ़ाते हैं, प्रयोगधर्मी कविता की व्याख्या करते हैं, इस पुस्तक के केंद्र में यही मूल तत्व के रूप में सम्मिलित है। आलोचक की दृष्टि में वर्तमान का रचना संसार भी है, और अपभ्रंश के कवि भी। हिंदी साहित्य

परंपरा और प्रयोग पुस्तक सात अध्यायों में विभक्त है। सातों अध्याय पाठक को एक नई दृष्टि की तरफ ले जाते हैं, और उनके समक्ष नए प्रश्न खड़े करते हैं। आलोचक ने इस पुस्तक में पूरी हिंदी आलोचना की परंपरा और प्रयोग को समग्रता के साथ देखा है। इस पुस्तक के साथ गुजरना आलोचना की एक समृद्ध यात्रा के साथ गुजरना है।

भारत जैसे विशाल देश में उसके विशाल साहित्य पर विभिन्न विचार, प्रसंग समाहित हैं। इसके विशाल साहित्य में अनेक विषयों पर अनेक प्रकार का चिंतन है। पर भारतीय साहित्य में विभिन्न प्रकार की बातें बार–बार दोहराई जाती हैं, जिन्हें भारतीय चित्त और काल की सहज वृत्तियों की उपज माना जा सकता है। वास्तव में भारतीय चित्त और मानस की सहज प्रवृत्तियाँ समन्वय की प्रक्रिया से गुजरते हुए आत्मसातीकरण की रही हैं। भारतीय साहित्य नाना प्रकार के गुण–दोष, संघर्षों के उपरांत भारतीय लोक चित्त में बसे उसके समर्पित जीवन बोध को अभिव्यक्त करता रहा है। यहाँ के दीर्घकालीन साहित्य सर्जन में जो अभिव्यक्त रहा है लेखक ने उसको यहाँ सबके सामने लाने की सफल कोशिश की है। लोक चित्त भारतीय साहित्य को आकार देता है एवं सृजन के समय लोकवृत्त ही भारतीय साहित्य को एक दिशा देता है। राम, कृष्ण, शिव के जन्म, विवाह आदि से जुड़ी चीजें हमारे सांस्कृतिक पहलू को दर्शाती हैं। उनका हमारे समाज में बृहत्तर स्थान है। ऐसा स्थान बड़ा शासक या अन्य कोई भी नहीं ले सकता। वह हमारी संस्कृति का आधार नहीं हो सकता। पुस्तक भारतीय मानस तथा साहित्य समय–समय पर कुछ अंतराल में विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न लेखों का सम्मिलन है, जो भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में साहित्य के स्वधर्म तथा प्रकृति को बखूबी ढंग से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है। यह अनेक नए आयामों का उद्घाटन करते हुए नज़र आती है।

'स्वयंप्रभा मूल्यांकन के नए आयाम' डॉ. अनिल सिंह द्वारा रचित है जो अमन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में विभिन्न लेख हैं जिनमें कवि उद्भ्रांत के संपूर्ण रचना विधान को व्यापक रूप से चित्रित किया गया है। स्वयंप्रभा के चरित्र के तमाम पहलुओं को बताते हुए यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक और स्रोत है। किसी भी कवि और उसके रचना विधान पर इतने व्यापक स्तर पर कार्य अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलते हैं। यह काव्य रचना नौ सर्गों में विभाजित है। रामायण और तुलसीदास द्वारा भी इसका चित्रण किया गया है। जबकि उद्भ्रांत कहते हैं इस चरित्र के बिना संपूर्ण रामायण ही अधूरी है। इन तमाम अध्ययनों के द्वारा समाज के समस्त पहलुओं का चित्रण हुआ है जिससे काव्य के क्षेत्र में भी वृद्धि हुई है। तमाम मिथकीय पात्रों और चरित्रों द्वारा समकालीन समाज की तमाम समस्याओं को भी मुखर अभिव्यक्ति मिली है। स्वयंप्रभा के चरित्र में उन सभी प्रश्नों को उठाया गया है जो इनसानियत के विरुद्ध खड़ी हैं। यह पुस्तक विभिन्न विद्वानों के विद्वत सुदीर्घ लेखों का सम्मिलन है। प्रस्तुत पुस्तक में तैंतीस विद्वानों के लेख हैं। कवि उद्भ्रांत की काव्य यात्रा से लेकर खंडकाव्य के परिप्रेक्ष्य में कृति के विभिन्न पहलुओं के विवेचन, रचना के संरचनागत स्थापत्य आदि पर गहन अध्ययन तथा विचार विमर्श कर विश्लेषण किया गया है। स्वयंप्रभा के चरित्र, उसके मूलाधार ग्रंथों अन्य संबद्ध कथाओं, प्रस्तुत 'खंडकाव्य' पर हर दृष्टिकोण से लिखी गई महत्वपूर्ण सामग्री है। शोध और कल्पना से कवि ने पूरी कथा के चरित्र का, समाज की समस्याओं का निर्माण किया है। कवि ने अपने रचनात्मक औचित्य को संदर्भ देने की एक सार्थक कोशिश की है। इसमें सफलता के साथ–साथ उन्होंने काव्य रचना के कितने पक्षों को हमारे सामने रखा। स्वयंप्रभा के चरित्र को स्वरूप देने के साथ–साथ कवि उद्भ्रांत समकालीन जीवन जगत की बहुत–से प्रासंगिक और महत्वपूर्ण प्रश्नों और समस्याओं को भी पाठकों के समक्ष उजागर करते हैं। उन्होंने स्वयंप्रभा के चरित्र पर लिखने के साथ ही साथ पर्यावरण की भी समस्याओं पर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है, जो आज

के मानव की सबसे बड़ी चुनौती है। इस प्रकार विविध प्रसंगों और विविध पक्षों में लिखी गई यह पुस्तक स्वयंप्रभा के चरित्र के विभिन्न आयामों को खोलती है ।

'बाहरी–भीतरी स्वतंत्रता का रूपक' पुस्तक के संपादक नरेंद्र मोहन जी हैं जो एकेडमिक पब्लिकेशन से प्रकाशित हुई है। प्रसिद्ध साहित्यकार नरेंद्र मोहन जी का निधन कोरोना के कारण हाल ही में हुआ है। अपनी रचनात्मक विविधता के आधार पर वह हमेशा याद किए जाएँगे। तमाम विरोध के बावजूद उन्होंने साहित्य की तमाम विधाओं के बने बनाए नियमों को कई बार टूटते बनते देखा है और इससे प्राप्त अनुभव को ही उन्होंने इस पुस्तक में व्यापक रूप से बताया है। यह पुस्तक बताती है कि समकालीन दौर में कवि किन स्थितियों से गुजरते हुए अपनी रचनात्मक प्रस्तुति दे रहा है। उसके अपने अनुभव एकदम नए हैं। वह अब मात्र पुराने अनुभवों के सहारे कविता नहीं लिख रहा है। नरेंद्र मोहन जी ने कविता के बने बनाए नियमों से मुक्त करने का प्रयास किया है और इसके साथ ही साथ यथार्थ को भी देखने की कोशिश की है। वह मानते हैं कि बीसवीं शताब्दी में लंबी कविताएँ आलोचकों के चंगुल में फँसी हुई हैं। इस पुस्तक में प्रसिद्ध साहित्यकार जैसे आलोक धन्वा, अनामिका, सविता सिंह इत्यादि की कविताएँ हैं। इन कविताओं को पढ़ते हुए अभिव्यक्ति और अनुभूति दोनों पक्षों से पाठक वर्ग का सामना होता है और साथ ही साथ आलोचना की समझ भी विकसित होती है। यह पुस्तक हिंदी कविता की आलोचना को समझने–समझाने का एक सुंदर प्रयास है।

साहित्य की भारतीय परंपरा श्रीभगवान सिंह द्वारा रचित है जो सामयिक बुक्स प्रकाशन से प्रकाशित है। श्रीभगवान सिंह एक प्रसिद्ध चिंतक हैं और वह स्वतंत्र चिंतन करते हैं। जब वह इस पुस्तक के बारे में लिखते हैं तब वह दिखाते हैं कि किस तरह भारत का साहित्य विश्व के अन्य साहित्य से अलग है। भारतीय साहित्य की अपनी अलग विशेषताएँ हैं और उन विशेषताओं में भारत की आत्मा तथा भारतीय विमर्श एवं अस्मिता व्यापक रूप से दिखती है। वह मनुष्य से मनुष्य के साथ के संबंध को वृहद स्तर पर दिखाते हैं। वह भारत के सामाजिक जीवन के साथ–साथ उसकी संस्कृति का भी चित्रण प्रस्तुत करते हैं एवं भारतीय साहित्य का भी चित्रण करते हैं। यह सभी क्षेत्र किस तरह से एक–दूसरे में समन्वय बनाकर रखते हैं इसको भी उन्होंने व्यापक तौर पर बताया है। साहित्य और लोकसाहित्य के बीच में किस तरह से अंतर रहा है इसको भी उन्होंने व्यापक तौर पर दिखाया है। रामचंद्र शुक्ल के तमाम प्रश्नों को हल करते हुए वह कबीर और तुलसी पर भी विचार करते हैं। इस पुस्तक में गांधीवादी विचारधारा, गांधीवादी दर्शन और कामायनी आदि पर भी गंभीरता से विचार किया गया है । कुबेरनाथ राय, निर्मल वर्मा या अन्य गद्य विधाओं में समस्त प्रसिद्ध साहित्यकारों और उनकी सभी की हिंदी नवजागरण से संबंधित विचारधारा को इन्होंने एक व्यापक रूप दिया है और उस पर संपूर्णता से विचार किया है।

'समकालीन कहानीकार नया विधान' पुस्तक मोहन कृष्ण बोहरा जी द्वारा लिखित है जो कौटिल्य बुक से प्रकाशित हुई है। हिंदी में कहानी के आलोचना क्षेत्र में जो नवीनता आई है उसमें मोहन कृष्ण वोहरा जी का महत्वपूर्ण योगदान है। वह व्यावहारिक आलोचना को एक नए स्तर पर लेकर गए हैं। जनसत्ता आदि अखबारों में पिछले कई सालों से साहित्य की सभी विधाओं पर उनके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। कहानी पर उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक अत्यंत ही महत्वपूर्ण है और हिंदी शोध के क्षेत्र में भी अग्रणी स्थान रखती है। नई कहानी और जनवादी कहानी के कथाकारों जैसे– कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, स्वयं प्रकाश आदि पर मोहन कृष्ण वोहरा जी का व्यापक काम इस पुस्तक में देखा जा सकता है। इसके साथ ही साथ स्त्री कथाकारों और राजस्थानी कहानियों पर भी इस पुस्तक में बड़े स्तर पर कार्य किया गया है। पिछले दो दशकों में इस तरह की किसी भी पुस्तक का अभाव था और उसी अभाव को इस पुस्तक ने पूर्ण किया है। हिंदी कहानी की समझ और उसके संपूर्ण क्षेत्र को व्यापक स्तर में बताने में यह पुस्तक सफल है।

'कथा साहित्य का पुनर्पाठ' प्रोफ़ेसर करुणाशंकर उपाध्याय की एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पुस्तक हैं जिसमें उन्होंने हिंदी कथा साहित्य के पुनर्पाठ की आवश्यकता पर बल दिया है। इस पुस्तक में लेखक एक नई दृष्टि से हिंदी कथा साहित्य की पूरी परंपरा पर विचार करते हैं। उन्होंने लिखा है कि कथा साहित्य की अब तक की उपलब्धियों और संभावनाओं को सही ढंग से विश्लेषित करने के लिए यह आवश्यक है कि हम वर्तमान समय में उत्तर आधुनिक पाठ केंद्रित आलोचना पद्धतियों के आलोक में उसका वस्तुनिष्ठ पाठ तैयार करें। इसके लिए वर्तमान पाठ केंद्रित आलोचना पद्धतियाँ हमें मूल्यांकन का नया औज़ार उपलब्ध कराती हैं। इस पुस्तक में उन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों से हिंदी कथा साहित्य के पूरे इतिहास को देखने और समझने की कोशिश की है। हिंदी कथा साहित्य आधुनिक शिक्षा की देन है। इसके विकास में पाश्चात्य प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता है। यूरोप से आधुनिकता की जो समझ विकसित हुई धीरे–धीरे उसका प्रसार यहाँ देखा गया। इसमें परंपरागत व रूढ़िगत तथा सामाजिक वर्जनाओं का प्रतिरोध, अतीत के चित्र, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक, आर्थिक और वैश्विक बदलाव का अत्यंत सूक्ष्म चित्रांकन हुआ है। उपन्यास और कहानी के रूप में विचार दर्शन, आदर्श, यथार्थ, समय समाज, अतीत–वर्तमान, व्यष्टि–समष्टि के जटिल अंतर्जालों का यह एक समुच्चय है और उसमें विगत 150 वर्षों में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिले हैं। इस पुस्तक के विस्तृत विवेचन में हिंदी नवजागरण और आरंभिक दौर के कथा साहित्य पर विस्तार से चर्चा की गई है। हिंदी की पहली कहानी पर लेखक ने अपने नज़रिए से बात करने की कोशिश की है। प्रसाद की कहानियों को देखने एवं समझने के लिए उन्होने एकदम नई दृष्टि प्रस्तुत की है। उन्होंने प्रेमचंद के लेखन को दलित वैचारिकी से जोड़कर बेहद सुंदर तरीक़े से प्रस्तुत किया है। फणीश्वरनाथ 'रेणु', राहुल सांकृत्यायन आदि अन्य महत्वपूर्ण रचनाकारों पर लेखक ने अपनी दृष्टि दी है। स्वतंत्रता के बाद के हिंदी उपन्यासों के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश पर इस पुस्तक में बातचीत की गई है। उपन्यासों में मनोविज्ञान, स्त्री विमर्श पर अलग से अध्याय, चित्रा मुद्गल के उपन्यास पर उन्होंने एकदम नूतन दृष्टिकोण से अपनी बातें कही हैं। हिंदी कहानी के 'सौ वर्ष' शीर्षक से इस पुस्तक में संकलित अध्याय बहुत महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक में हिंदी साहित्य के कुछ अनछुए कहानीकारों, रचनाकारों पर भी लेखक ने बातचीत की है। उन्होंने 21वीं शताब्दी के हिंदी उपन्यासों एवं कहानियों तक अपनी दृष्टि इस पुस्तक में डाली है जो अधुनातन है। इतना ही नहीं प्रवासी कथा साहित्य पर भी इस पुस्तक में एक सार्थक हस्तक्षेप दिखाई देता है।

लोकभारती प्रकाशन से प्रकाशित 'नई परंपरा की खोज' पुस्तक के लेखक डॉ. शिवकुमार यादव हैं। उसमें वर्तमान दौर की रचनाधर्मिता व परंपरागत मूल्यों का भी विश्लेषण किया गया है। इस पुस्तक के वर्तमान समय के बोध के अनुसार प्रतिमान निर्मित करने का सार्थक प्रयास किया गया है। समकालीन यथार्थ व सौंदर्यबोध को इस पुस्तक में रेखांकित किया गया है। 'पितृवध' आशुतोष की एक अलग क़िस्म की सार्थक पुस्तक है जिसकी शुरुआत में अशोक वाजपेयी जैसे लोग प्रशंसा में शब्द लिखते हैं या शीर्षक ही प्रभावित करता है। यह पुस्तक मोटे तौर पर दो हिस्सों में है जहाँ प्रारंभिक हिस्से में हिंदी के कुछ साहित्यकारों पर एक नज़र है तो आखिरी हिस्से में कुछ रचनाकारों से संवाद किस्म का रूप दिखाई देता है। 'छायावादोत्तर हिंदी कविता' सुमन जैन की पुस्तक है। इस पुस्तक में छायावाद के बाद की हिंदी कविता पर एक गंभीर विश्लेषण दिखाई देता है। यह पुस्तक इस रूप में पठनीय है कि इसमें बड़े सिलसिलेवार तरीक़े से रचनाकार व उनकी कृतियों का विश्लेषण साफ़गोई से मिलता है। 'उदय प्रकाश : एक कवि का कथादेश' विनय कुमार मिश्र की पुस्तक है जो वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उदय प्रकाश के कवि पक्ष के साथ–साथ उनके रचनात्मक कहानीकार पक्ष को

भी बड़ी सूक्ष्मता से देखने की सफल कोशिश की गई है। 'रंगमंच की कहानी' देवेंद्रराज अंकुर की पुस्तक है जो वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में लेखक स्वयं कहते हैं। "यह सही है कि पिछले तीन हज़ार से पाँच हज़ार वर्षों के बीच अलग–अलग देशों में जिस रंगमंच की परंपरा का जन्म, आरंभ और विकास हुआ, वह कई मायनों में यदि एक समानता लिए हुए है तो अपनी–अपनी विशिष्ट भौगोलिक व ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण उसमें एक–दूसरे से बहुत से अलगाव भी दिखाई पड़ते हैं। ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि रंगमंच के इस इतिहास की कहानी को कैसे प्रस्तुत किया जाए।" इसमें रंगमंच के आलोचनात्मक इतिहास को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। इन पुस्तकों के अतिरिक्त भी कुछ और आलोचनात्मक पुस्तकों का प्रकाशन इस साल हुआ जो आलोचना के फलक को आगे बढ़ाती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि 2021 भी कोरोना महामारी के बावजूद आलोचना के लिए प्रमुख रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ग्रियर्सन भाषा और साहित्य चिंतन ; अरुण कुमार; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

2. जातीय अस्मिता के प्रश्न और जयशंकर प्रसाद; विजय बहादुर सिंह; साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद।

3. हिंदी साहित्य : परंपरा और प्रयोग; अरुण कुमार; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

4. भारतीय मानस तथा साहित्य; श्री भगवान सिंह; हर्ष पब्लिकेशन, दिल्ली।

5. स्वयंप्रभा मूल्यांकन के नए आयाम; डॉ. अनिल सिंह; अमन प्रकाशन, नई दिल्ली ।

6. बाहरी–भीतरी स्वतंत्रता का रूपक; संपादक– नरेंद्र मोहन; एकेडमिक पब्लिकेशन, दिल्ली।

7. साहित्य की भारतीय परंपरा; श्री भगवान सिंह; सामयिक बुक्स प्रकाशन; दिल्ली।

8. समकालीन कहानीकार नया विधान; मोहन कृष्ण बोहरा; कौटिल्य बुक।

9. कथा साहित्य का पुनर्पाठ; करुणाशंकर उपाध्याय; यश पब्लिकेशंस, दिल्ली।

❑❑❑

19

हिंदी उपन्यास

तरसेम गुजराल

साल 2021 में भी महामारी कोरोना ने विश्वभर में आतंक मचाए रखा। भारत भी इस महामारी के व्यापक नुकसान से नहीं बच पाया। लाखों बेशकीमती जानें चली गईं। लाखों लोगों का रोजगार छिन गया। मजदूर वर्ग पर भी मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। जब सब कुछ बंद था, उनकी रोजी–रोटी का संकट गहराना ही था। यों आपदाएँ और महामारियाँ आती रही हैं, परंतु सभ्यता संस्कृति भारी नुकसान उठाकर भी आगे ही बढ़ती रही है। जैसा कि सुधा ओम ढींगरा के 2021 में ही छप कर आए उपन्यास 'दृश्य से अदृश्य का सफर' में दर्ज है, उपन्यास के पात्र डॉ. रवि, डॉ. लता जो कि उनकी पत्नी हैं, से कह रहे हैं– ऐसा संकट ऐसी महामारी, ऐसी संकटकालीन परिस्थितियाँ पहले भी आई थीं, जिन्होंने मनुष्य जीवन को झकझोर कर रख दिया था। चौदहवीं सदी में इंग्लैंड की 'ब्लैक डेथ' जिसमें एक तिहाई आबादी मारी गई थी। सोलह सौ सैंतालीस सदी में 'पीला बुखार' का प्रकोप, इसी तरह 1878 में अमरीका की मिसीसिपी नदी की घाटी में बीस हजार लोगों का मरना। हैजा, इन्फ्लूएंजा से हुए भारी नुकसान आदि। परंतु मनुष्य ने सदा साहसपूर्वक ऐसे बड़े हादसों का सामना किया है और जीवन पथ पर आगे बढ़ा है। सौ साल पहले (1918–20) में फैले 'स्पेनिश लू' में पूरी दुनिया में पाँच करोड़ लोग मरे थे।

कोरोना महामारी ने तो विश्वव्यापी गैरबराबरी को भी उजागर कर दिया है। लॉकडाउन में हालात और भी बदतर हुए। साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन भी प्रभावित हुआ। लिहाजा जिस मात्रा में उपन्यास पहले छप कर आते थे उस तरह नहीं आ पाए। रचनाकार अपने समय, अपने समाज के दुख दर्द का साक्षी होता है। हिंदी उपन्यासकारों ने कभी भी अपने दायित्व से मुँह नहीं चुराया।

सुधा ओम ढींगरा का उपन्यास 'दृश्य से अदृश्य का सफर' भी इस महामारी से उत्पन्न हुई परिस्थितियों पर केंद्रित है। सुधा जी अमरीका से हैं परंतु उनका पूरा ध्यान भारत की तरफ रहता है। मूलतः वे भारतीय ही हैं सो इस उपन्यास में भी भारतीय पात्रों का आना–जाना चलता रहता है। उपन्यास की मुख्य पात्र डॉ. लता है। जिसे पूँजीवादी प्रलोभनों और लालसाओं ने खंडित नहीं किया। वह पहले एक संवेदनशील इनसान है फिर कुछ और। उसे सुधा जी ने एक लेखक का मन दिया है। वह कुदरत से प्रेम करने वाली, अपने मरीजों के दर्द की पड़ताल कर हमदर्दी से उनका उपचार करने वाली डॉक्टर के रूप में सामने आती हैं। कुछ विशेष मरीजों की केस हिस्ट्री डायरी के रूप

में अंकित करती हैं। उपन्यास कोरोना के हालात के बीच भारत से विभिन्न परिस्थितियों में अमरीका गई महिलाओं की पीड़ा से साक्षात्कार करवाता चलता है। इसके लिए डॉ. लता मनोविज्ञान का सहारा भी लेती हैं। महिलाओं का वास्तविक दर्द जानने के लिए उनके भीतरी अंधेरे कोने का साक्षात्कार अनिवार्य हो जाता है। सो उपन्यास कोरोना महामारी, स्त्री उपेक्षा, मनोविज्ञान के तनाव बिंदुओं से टकराता चलता है। यह जीवन का अनुभवजन्य प्रस्तुतिकरण है, इस जटिल यथार्थ से जूझते हुए वन डायमेंशनल नहीं रह पाता।

भारत से आई स्त्रियाँ पुरुष आखेटक की शिकार होती हैं। वे भाँति–भाँति के तरीके से शिकार करते हैं। जैसे स्त्री देह से आगे कुछ भी नहीं। प्रलोभन से, छल से, डराकर मार–पीटकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं, इस तिरस्कार से आहत हुई स्त्री के मन की भीतरी तह तक पहुँच कर डॉ. लता उन्हें जीवन संग्राम में जूझने के लिए पुनः तैयार करने में मदद करती हैं, जो कि एक गंभीर, समर्पण और मानवीय कर्म है। डॉ. लता ने सदा परिवार को एक यूनिट माना। बेशक उसका जीवन जीने का अपना तरीका होता है।

डॉ. लता उन्हीं केसों के बारे में नोटस लेती हैं, जो विशेष और अलग हों, जिनसे उन्हें अद्भुत अनुभव हुए हों। पहला केस डाली पार्टन का ही डायरी में खुला, जो नब्बे के दशक तक अमरीका के लोक संगीत की गायिका थीं। वह बेहद खूबसूरत थीं। उसके पति को बाहर भेजकर डॉ. ने उसे अपनी बहन या दोस्त मानकर सहजता का व्यवहार करने का अवसर दिया। जिसने कहा कि उसे बचा लिया जाए, पागलखाने भेज दें या अस्पताल में दाखिल करवा दें किंतु पति के साथ न भेजें। डॉ. ने मामले की तह तक जाने की कोशिश की तो पता चला कि उसकी हालत बहुत खराब है। उससे बार–बार सामूहिक बलात्कार किया गया है। मार–पीट भी हुई है। मिस्टर हुड्डा उसके पति हैं जो पत्नी पर कम परिवार के लोगों पर अधिक विश्वास करते हैं। डॉ. के बहुत पूछने पर ही बताया कि उससे रेप किया जाता रहा है, और उसके जेठ तथा दो देवर इसके लिए जिम्मेदार हैं। इसी तरह दूसरा केस सायरा का है और तीसरा एक अनाम महिला का। पहले दोनों नाम वास्तविक नाम नहीं है। डॉ. लता द्वारा चेहरे–मोहरे की कुछ मिलती–जुलती खूबियाँ देखते हुए ये नाम दिए गए। महिला नंबर एक जिसकी इज्जत उसके जेठ और देवरों ने लूटी, का चेहरा अमरीका की प्रसिद्ध गायिका से मिलता–जुलता लगा सो उसे डाली पार्टन का नाम दिया। दूसरी महिला उन्हें हिंदी फिल्मों की सायरा बानो जैसी लगी तो उसे सायरा नाम दे दिया गया। वैसे कहा भी गया है कि नाम में क्या रखा है। महिलाएँ पितृसत्तात्मक कारणों से अपना–अपना अभिशाप ढो रही हैं। बलात्कार का तो मतलब ही यही है कि सामने वाले को अपनी क्रूरता से कुचल देना, उसे गया –गुजरा साबित करना। बेशक इस दमन की प्रतिक्रिया बहुत खतरनाक स्तर की होती है, जो या तो महिला को पत्थर बना देती है या प्रतिकार करने के लिए हिंस्र। व्यक्तित्व का विघटन तो होता ही है, संतुलन भी नहीं रह पाता। जैसा कि उपन्यास में पहली महिला का व्यवहार दिखाया गया है, जिसने अमानवीय हरकतों को अपनी देह, अपनी आत्मा, अपने पूरे वजूद पर झेला है। वह अपना संतुलन खो बैठती है। लता ने उसकी खामोशी तोड़ने के लिए पहले ही कह दिया था– "जब तक तुम अपनी तरफ की कहानी नहीं बताओगी, वह ऐसा करता रहेगा। तुम कटघरे में खड़ी रहोगी। सदियों से आदमी यही करता आया है। औरत उसके पाप ढकती है और वह सच्चा, साफ़, सुथरा होकर निकल जाता है। कठघरे में औरत खुद आ जाती है।" औरत की मजबूरी यह भी होती है कि किस बिरादरी के पास जाए? बिरादरी उसे ही दोषी ठहराने वाली है। सायरा की फाइल जब सामने आई थी तब वही लिखा था– बदले की भावना बड़ी उग्र है। कारण? मानसिक और शारीरिक आघात। वह भी भारत से आई थी। दिल्ली में जन्मी इस लड़की को पापा के दुलार ने बिगाड़ दिया था। जिसे कॉलेज में जाकर सहेली ने ही धोखा दिया। और चुनाव जीतने के बाद गंदी राजनीति के कारण एसिड अटैक झेलना पड़ा।

डॉ. लता ने ऐसी पीड़ित महिलाओं को उनके मानसिक अंधकार से निकालकर उन्हें नए सिरे से जीवन जीने को प्रेरित किया। दूसरी गाथा कोरोना के कारण बिगड़े हालात की है। वह उपन्यास का वर्तमान है। उसके पति रिटायर होकर भी इस संकट में भारी संख्या में आ रहे रोगियों के उपचार हेतु अस्पताल जाते हैं। डॉ. लता खुद सक्रिय रह कर कोरोना के कारण परेशान लोगों की मदद करने को हर वक्त तैयार रहती हैं।

उपन्यास का मानवीय पक्ष छुपा नहीं रहता। स्त्री उपेक्षा, स्त्रियों का दर्द समय की चीख बन कर सवाल पूछता है। इन दोनों सूत्रों को संतुलित ढंग से प्रस्तुत करना उपन्यासकार की सफलता है, जिसे अंकित करने में आलोचना का कोई नुकसान नहीं होगा।

अजय शर्मा का उपन्यास 'कमरा नम्बर 909' भी 2021 में ही प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास भी कोरोना महामारी पर केंद्रित है। परंतु सुधा जी के उपन्यास, 'दृश्य से अदृश्य तक का सफर', से अलग यह भारतीय जमीन पर भारतीय माहौल में रचा गया है।

अजय शर्मा के नए उपन्यास 'कमरा नंबर 909' पर कुछ कहने से पहले दो बातें कहना जरूरी लग रहा है। एक तरफ आत्मसंयम और दूसरी तरफ रचनात्मकता तथा संजोई विरासत की सत्यनिष्ठा और एकाग्रता से जुड़ी हुई हैं।

अजय पहले कहानी भी लिखा करते थे परंतु अपनी दिशा का बोध होने पर उन्होंने एक ही विधा को चुन लिया और वह विधा है उपन्यास। उपन्यास में शायद उन्हें विराटता और विविधता का फलक नजर आता है और अपनी मानसिक पीड़ा से मुक्ति भी। उपन्यास विधा में सामाजिक चेतना, जीवन की नियति और परिणति तो व्यक्त की ही जा सकती है, उत्पीड़न के कारकों का पोस्टमार्टम भी।

उन्होंने कहा कि उनकी कलम उनके साथ है, जिसे कोई नहीं छीन सकता। जो पढ़ेगा, वही बचेगा। जो बचेगा वही रचेगा। यह उनकी संपादित पत्रिका साहित्य सिलसिला की टैगलाइन है।

उपन्यास 'कमरा नंबर 909' पहले कवि मोहन सपरा के घर अजय शर्मा से पूरा सुनने को मिला। कमरा नंबर 909 किसी होटल का कमरा न होकर एक अस्पताल का कमरा है, जहाँ वाचक का कोरोना का उपचार चल रहा है। उपन्यास की मुख्य कथा कोरोना महामारी ही है। उसके विस्तार, उसकी भयानकता, डर और उपचार सभी पक्षों को खंगालने की कोशिश की गई है।

उपन्यास के मुख्यतः तीन सूत्र हैं। पहला कोरोना महामारी और उसके व्यापक कुप्रभाव। दूसरा पति–पत्नी संबंध (भारतीय पृष्ठभूमि में) और तीसरा मैत्री और मित्रतावश उदारता।

उपन्यास में विधागत जकड़बंदी कम और पंख पसारने का स्पेस अधिक है। किंतु एक बात कहनी होगी कि सामाजिक लगाव और जटिल अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की अंतर्निष्ठा अनिवार्य रहती है। यह सच मूल संवेदना और रचनात्मक तनाव में ही संभव हो पाता है। कमरा नंबर 909 सामाजिक दायित्व तो निभाता ही है।

डॉक्टर आकाश जो कोरोना पीड़ित होने के कारण अस्पताल में दाखिल है। एक अन्य मरीज गुप्ता जी से मिलता रहता है। कोरोना के विस्तार से पैदा हुए मृत्यु बोध ने उनकी आपसी बातचीत को प्रभावित किया है। गुप्ता जी कहते हैं– सच में जिंदगी में जीवन और मृत्यु हम लोग हमेशा साथ लेकर चलते हैं।...जब हम लोग साँस अंदर लेते हैं, हम तो वह जीवन है और जब हम लोग साँस बाहर छोड़ते हैं, तो वह मृत्यु है। युद्ध, अकाल और महामारी के समय जब हम रोज मृत्यु का समाचार सुनते रहते हैं, तब निराशा का बादल हमें जीवन दर्शन के रूप में आवागमन पर विचार करने के लिए विवश करता है। इनमें पहले दोनों प्रारूप पूँजीपति व्यवहार से सीधे प्रभावित हैं और महामारी थोड़े अमूर्त रूप में।

मयंक पांडेय ने अपनी किताब पलायन पीड़ा प्रेरणा में कोरोना काल की पचास सच्ची कहानियों का उल्लेख किया है और सच्ची कहानियों को पीड़ा का इंद्रधनुष कहा है। परंतु 'कमरा नंबर 909' का वाचक मृत्यु को सामने देख रहा है। (मैंने

तो यही सुना था कि जब इनसान की मृत्यु होती है तो सबसे पहले उसका नाम छिन जाता है। वह केवल एक शव बनकर रह जाता है। जब भी उसके बारे में कोई बात करता है तो यही कहता है कि शव को साइड पर कर दो, शव को बाहर निकाल दो...)

उपन्यास में एक ऐसा व्यक्ति भी है जिससे वाचक ने जिंदगी को खुशहाल कैसे रखा जाता है का कोर्स किया था। अब वक्त की मार में वह बदल चुका है। वह कहता है– जीवन को खुशहाल कैसे रखा जाता है सिखाते–सिखाते खुद का जीना भूल गए। दर्शन वही होता है जो व्यवहार में उतर सके। दुःख–सुख सम करके जीना मुश्किल है। कहना–सुनना आसान है लेकिन व्यावहारिक स्तर पर कठिन।

डॉक्टर आकाश की विपदा के समय उनकी पत्नी का भी सद्भावना, चिंता और संवेदना के जैसा रूप उपन्यास में उद्घाटित हुआ है, प्रशंसनीय है। अस्पताल का भारी बिल चुकाने के लिए अपने आभूषण तक बेचने को तैयार है। मित्र के रूप में गुप्ता जी भी परोपकारी मित्र सिद्ध होते हैं। वाचक की भरपूर मदद करने को तैयार हैं।

कोरोना काल में काफी निराशाजनक खबरें हमने सुनीं परंतु जनहित को ध्यान में रखते हुए मददगार भी प्रकट हुए, जिन्होंने धन की परवाह नहीं की। मयंक पांडेय शायद उसी की पीड़ा को इंद्रधनुष के रूप में रखते हैं।

कोरोना काल में हमने बहुत नुकसान उठाया। बहुत से लोगों की नौकरियाँ चली गईं। कुछ लोगों को आधे वेतन पर काम करना पड़ा। जान–माल का नुकसान भी हुआ। परंतु 'कमरा नंबर 909' उपन्यास का वाचक रोग मुक्त होकर घर लौटा और अब सृजन कार्य की तरफ कदम बढ़ाने वाला है। यह भी इंद्रधनुष जैसा ही है जो बारिश के बाद नजर आया है।

रणेंद्र का उपन्यास 'गूंगी रुलाई का कोरस' भी 2021 में ही छपकर आया, जिसे हिंदुस्तानी संगीत के आसपास ही बुना गया है। कलाएँ निःसंदेह जादू का काम करती हैं। संगीत भला इससे अलग कैसे हो सकता है! परंतु सांप्रदायिक उन्माद ने इसकी पवित्रता, इनसानी जज्बात को कर्कशता में बदलने की हर कठोर कोशिश का उपयोग किया है कुछ इस तरह कि, 'साझी संस्कृति' 'साझी विरासत' को प्रश्नांकित कर दिया गया।

'गूंगी रुलाई का कोरस' उपन्यास कहने को उस्ताद महताबुद्दीन की चार पीढ़ियों की गाथा है, परंतु परिवार के आगे जाकर हिंदुस्तान की गंगा –जमुनी संस्कृति पर राजनीति, वर्चस्ववादियों के प्रलोभन, हिंसा, सांप्रदायिकता के मंडराते घने बादल हैं, जिनसे तड़–तड़ करती बिजली किसी के भी झोंपड़े को तबाह कर सकती है, जो यह नहीं देखती कि घर हिंदू का उजड़ा है या मुसलमान का।

आज जबकि लोकतांत्रिक देशों में भी असहमति प्रकट करने का मौलिक अधिकार छिनता जा रहा है, इस उपन्यास की समय और समाज की गहरी चिंता इसे एक जरूरी उपन्यास बना रही है। ऐसे में मौसिकी मंजिल से उठती स्वर लहरियाँ व्यापक अर्थवत्ता का काम करती हैं कि न तो चेतना में दीवारें होती हैं, न ही संगीत के व्यापक प्रभाव में, जो हमें मानवीय संसार की मौजूदगी का एहसास करवाती रहती हैं। कला की जरूरत यह भी तो है कि मानवीय दुनिया पशुसम्मत व्यवहार न करके मानवीय गरिमा को बनाए रखे। 'गूंगी रुलाई का कोरस' उपन्यास में नानू सोचते हैं– "ये दंगे, ये कत्लोगारत, ये ख़ूरेजी कुछ–कुछ उस जमाने की महामारियों की तरह हैं। प्लेग– चेचक–हैजा की तरह रह–रहकर उभर आने वाले, वे बीमारियाँ बाहरी कारणों से फैलतीं, साइंस ने उनकी काट खोज ली। किंतु यह जाति–धर्मों का अलगाव, कट्टरता, घृणा–हिंसा सब दिमागी कीड़ों के कारण, न जाने कब इनका इलाज हो!"

पिछले कुछ वर्षों से इस परिवार की विपदाएँ थम नहीं रहीं थी पहले नानू, अब्बू फिर कमोल बाबा!

शायर वली दकनी सभी के प्रिय शायर थे। उनकी नेस्तानाबूद मजार के पास ही शाहीबाग में स्टेडियम था। ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी के बहाने

हर दिल अजीज शायर और उनके उजड़े मजार को याद करना था। हवा में धुल गए तेजाबी शहर की तासीर को गायन की चाँदनी से ठंडा करना था। इन इरादों में सुंदरता थी, पाकीजगी थी। शरारती तत्व कुछ और ही ठान कर आए थे। बिखराव, तोड़–फोड़, हमला सब तय कर रखा था। वली की गज़ल का मिसरा गुनगुनाते ही बवाल हो गया। काले रंग के गुब्बारे, सैंकड़ों ईंट–पत्थर एकदम से तो नहीं चले। 'पिछले तीस–बत्तीस वर्षों में सामईन ने जो इज्जत बख्शी थी वह अजीम शायर की मजार की तरह जमींदोज हो गई। जो जज्बात के स्तर पर जितना जुड़ा होता है, चोट पहुँचने पर आहत भी वही अधिक होता है। मंच पर ही अम्मू जो शॉक्ड हुईं, लंबे इलाज के बाद चलने–फिरने लगीं, लेकिन गाना तो दूर, सामान्य बातचीत भी उनसे छूट गई, लगा कि आवाज ही गुम हो गई हो। दशकों जिनका रियाज किया, वे राग–रागनियाँ कपूर की तरह उड़ गई हों। उपन्यासकार के निम्न शब्द सामान्य नहीं हैं, शूल बनकर दिल में चुभते हैं– "रूह से रूह तक उतरने वाली हिंदुस्तानी मौसिकी, जो कभी इबादत हुआ करती थी, अब डेसिबल युद्ध की रणभूमि में तब्दील होती जा रही थी।"

जिस परिवार की कथा उपन्यासकार प्रस्तुत कर रहे हैं, उस परिवार में सांप्रदायिकता तो क्या, सांप्रदायिकता के चिह्न तक नहीं हैं। है तो बस संगीत कला के प्रति समर्पण। अब्बू खुर्शीद जोगी नाथ पंथ के जोगी हैं। उनके ससुर उस्ताद अय्यूब खान उस्ताद महताबुद्दीन खान साहब के सुपुत्र हैं। दोनों का संगीत की दुनिया में नाम, सम्मान है। उस्ताद अयूब खान की बेटी नानू। अम्मू–सुर–सरावती रागेश्वरी देवी जिनका विवाह अब्बू खुर्शीद जोगी से हुआ। अब्बू खुर्शीद जोगी हैं, जो गुरू गोरखनाथ और भरथरी के पद गाते हैं। शबनम खान इनकी बेटी युवा पीढ़ी की गायिका है, जिनका विवाह हुआ बांग्ला के मशहूर बाउल मदन बाबा के सुपुत्र कमल बाउल से। वह भी कलाकार हैं। खुर्शीद जोगी भगवे वस्त्र धारण करते हैं। यहाँ सांप्रदायिकता की गंध तक नहीं है परिवार में संगीत, कविता, चित्रकला कभी सांप्रदायिक नहीं होते। यह परिवार तो भारतीय संस्कृति का चित्रित परिवार नज़र आता है। संगीत पर खलील जिब्रान के एक लेख का अंश है– "संगीत! प्रेम और रूह की संतान, शहद और आवेश से भरा जाम, मानवीय हृदय के स्वप्न, दर्द का फल और खुशी के फूल, जज़बात की महकती कलियाँ, प्रेमी और प्रेमिकाओं के मीठे बोल, दर्द से पैदा हुए आँसू, कवियों की प्रेरणा और गीतों की सरगम–तुम्हारे सरूर में मनुष्य ईलाही नूर से रू–ब–रू होता है। हे संगीत! तुम ऐसी शराब हो, जिसे पीकर आदमी उस संसार में पहुँच जाता है, जहाँ सौंदर्य किलोल करता है और तुम बहादुरों को फौलादी बना देते हो और साधक की रूह को निर्मल कर देते हो।"

उपन्यास में अब्बू हैं कि खुर्शीद शाह जोगी के कदम दर कदम साथ हैं कि दंगे–बलवे कितने भी बड़े हों, कोई अब्बू को छीन नहीं पाएगा।

यह उपन्यास विश्वभर के अमन पसंद, शांति में जीने वालों पर कट्टरपंथियों के कारनामों की बेबाक पड़ताल कर रहा है। संतुलित कदम यह है कि धार्मिक जुनून की पड़ताल एकपक्षीय नहीं है। न्याय का तराजू बराबर तौल रहा है।

उस्ताद महताबुद्दीन ने तो बचपन में ही दक्षिणेश्वर मंदिर में रहते हुए हिंदू परिवारों की संगत में रहकर संगीत सीखा। माँ काली के बिना उनका कोई साज सजता नहीं था। गदाधर गदोई महाराज (रामकृष्ण परमहंस) के साथ पंगत में भोजन किया। इतना ही नहीं राजपूत घराने पर उनकी प्रतिभा का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनसे अपना पारिवारिक रिश्ता जोड़ा तथा अपनी बेटी का विवाह कर दिया। उपन्यास में एक और परिवार है– बाउल कलाकारों का परिवार। स्मरण रहे कि बाउल पश्चिमी बंगाल का प्रसिद्ध आध्यात्मिक लोक गीत है, जिसका जन्म बंगाल की माटी में हुआ। मदन बाउल बड़े बाउल गायक हैं, उनके सुपुत्र हैं कमल कबीर, जो शायद बांग्ला उच्चारण के कारण 'कमोल दा' हुए। इस गायक परिवार से रिश्तेदारी है। अब्बू खुर्शीद जोगी और मदन बाउल में महकते मैत्री संबंध हैं। अब्बू की बेटी शबनम से कमोल ने प्रेम विवाह किया है। गोया एक ही घर में नमाज और पूजा का घर भी है।

"हुआ कुछ ऐसा कि अब्बू की बेचैनी और संग–साथ चलने वाली बद्दुआ से नानू भी कम परेशान नहीं रहते। एक सिलसिला था जो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। साल–छह महीने पर देश में कहीं न कहीं अनहोनी होती रहती। अब्बूजान और उनके संगी–साथी, जोगियों की टोली वहाँ पहुँचती। घृणा की आँधी और हिंसा की आग पर न जाने कितना असर इनके जोगिया बाने, मौसकी और निरगुन बानी का असर पड़ता। हाँ, इनके वजूद पर पड़ा असर महीनों परेशान करता।।"

'गूंगी रुलाई का कोरस' उपन्यास सांप्रदायिकता जैसी विष भरी हवा के विरुद्ध एकता, सद्भाव और मानवीय चेतना का उपन्यास है।

'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' उपन्यास का पेपरबैक संस्करण पिछले साल आया परंतु कोरोना महामारी के कारण यह उपन्यास चर्चित न हो पाया। उपन्यास प्रसिद्ध उपन्यासकार अलका सरावगी द्वारा रचित है।

इतिहास विशेष व्यक्तियों/राजाओं/महाराजाओं की गाथा को ही इतिहासबद्ध करता है या करवाया जाता है। तब जरूरत होती है इतिहास के भस्मकाल से मामूली आदमी के इतिहास को पुनर्जीवित करना। एक साहित्यकार को यह रुतबा हासिल है कि वह किसी साधारण व्यक्ति को इतिहासबद्ध कर दे। अलका सरावगी का उपन्यास 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' इसी लक्ष्य को समर्पित है जो विभाजनकारी स्थितियों के बीच मनुष्य के विस्थापन का दर्द दर्ज करता है। तब मनुष्य मनुष्यता खोकर हिंदू–मुस्लिम होकर रह जाता है और जितना अधिक वह हिंदू–मुस्लिम होता जाता है उतनी ही उसमें मानवता कम होती जाती है और निर्दयता अपना मकसद पा जाती है। तत्कालीन ईस्ट पाकिस्तान की सीमा पर विभाजन हुआ और दंगों का विकराल रूप सामने आता रहा। मुक्ति वाहिनी का संघर्ष अपनी जगह था और विस्थापन की त्रासदी की नई घटनाएँ सामने आती चली गई।

उपन्यास में भूषण सुंदर नहीं है। बचपन में ही अपना चेहरा देखकर मायूस हो गया था। अपने भाई–बहनों में उसका रंग मटमैला तो था ही तिस पर नाक नक्श भी या तो चिपके हुए थे या फूले हुए। बचपन में गुस्सैल भी था। माँ की हर बात से चिढ़ थी पिता से इसलिए कि उनकी बदसूरती विरासत में मिली थी। किशोरावस्था में श्यामा धोबी मिला। उसे इतना बदसूरत पाया कि उससे ज्यादा बदसूरत इनसान होगा ही नहीं। तवे जैसी रंगत, चेहरे पर चेचक के दाग। मात्र आँखों की सफेदी से पता चले कि आँखें हैं। परंतु वह सदा खुश नजर आता था। इस श्यामा धोबी ने कुलभूषण को भूलने के बटन के बारे में बताया जो उसे तेरह साल की उम्र में एक जोगी ने बता दिया था। कभी भी मन पर कोई परछाईं घिरने लगे तो बस बटन दबाना और चमत्कार देखना।

प्रशांत और उसकी पाली हुई बेटी मालविका के आपसी संबंधों के प्रश्न से टकराते हुए वह बार–बार भूलने का बटन दबाता है परंतु प्रश्न टलते नहीं। प्रश्न हैं क्या वे। संबंध समाज के बनाए हुए दायरे के बाहर के थे? क्या मालविका ने इसलिए ही जीने के बजाय मरने की राह चुनी?

कुलभूषण रो रहा था। यदि माँ–पिता जी देखते तो शायद सोचते कि वह अपने काम–काज, घर–द्वार छूटने और भाइयों–भाभियों के साथ जीवन के बारे में सोचकर रो रहा है। परंतु कुलभूषण को पता था कि वह सिर्फ ईस्ट बंगाल की अपनी गंगा–गोराई नदी के लिए रो रहा है। गोराई के बिना उसे अपना जीवन वैसे ही सूना लगा जैसे ढाका पट्टी की तंग गलियाँ बिना पेड़ों की हरियाली के निपट सूनी हैं यह प्रेम संबंध आभूवर्णनीय है। आप अपनी नदियों, पहाड़ों, यहाँ तक कि रास्तों से इतना बँध जाते हो कि छुटकारा संभव नहीं होता। पता तब चलता है जब आप वह सब छोड़कर जाने को विवश होते हैं।

पत्रकार पूछता है– तो तुम कहना चाहते हो कि ईस्ट बंगाल को छोड़ने में सबसे ज्यादा तकलीफ गोराई नदी के छूटने में हुई? कुलभूषण ने मुस्कुरा कर कहा– यही बात तो किसी को समझाना मुश्किल है। गंगा कलकत्ता में भी बहती है, पर यह बात लोगों को तभी याद आती है जब कभी हावड़ा से गंगा पारकर उधर जाना होता है। लोग

शहर में नदी से बेखबर जीवन जीते हैं। पत्रकार सीधे प्रश्न पर आया– "अच्छा तो आजादी के सत्रह साल बाद आपने पाकिस्तान को पूरी तरह छोड़ दिया? फिर कभी गए नहीं वहाँ?" कुलभूषण ने बड़बड़ाकर उत्तर दिया– कश्मीर में हजरत बल में मोहम्मद साहब का बाल चोरी हुआ था न?

बस उसी कारण घर बार छोड़ना पड़ा। कभी वापस नहीं गया। "उसके पास पासपोर्ट नहीं था। फिर लौटने के बाद ही इंडिया–पाकिस्तान की लड़ाई हो गई। नोआखली के दंगे सभी को याद थे। फिर तीन साल बाद बरिसाल के दंगे। खुलना के दंगों से सभी घबरा रहे थे। पिता जी की राय अलग थी। कहते थे कि मियाँ लोगों का काम उनके बिना चलने वाला नहीं। माँ का अनुभव अलग था। उनके बाप–भाइयों को बीस कमरों की हवेली, आम के बगीचे, घोड़ा–गाड़ी सब छोड़कर भागना पड़ा था। पिता इसीलिए उन्हें कायर कहते थे।

उपन्यास में दर्ज है– "प्रशांत को क्या मालूम कि देश और काम छिन जाना क्या होता है? बिना एक तिनके के सहारे जीना क्या होता है। गांधी की हर बात को ससम्मान सुना जा रहा था। वह तख्त पर रखी एक लकड़ी की कुर्सी पर ऊँचे बैठे बोल रहे थे– तुम मुसलमान हो तो मुस्लिम लीग की तरफ मत देखो। तुम हिंदू हो तो हिंदू नेताओं की ओर मत देखो कि ये लोग तुम्हारी तकलीफ मिटा सकते हैं। वे लोग तुम्हारी रोज की जरूरतों के बारे में क्या जानते हैं? सिर्फ तुम जानते हो कि किस चीज से तुम्हें तकलीफ है। तुम ही उसकी छोटी– छोटी बातें समझ सकते हो।" (पृष्ठ–49)

कोई भी व्यक्ति अपना घर, रोजी–रोटी का साधन छोड़कर पलायन क्यों करना चाहेगा? इसीलिए कि अब उसके पैरों तले की जमीन के नीचे सांप्रदायिकता का बारूद बिछने ही वाला है। जान की हिफाजत तो उसे करनी ही होगी, सांप्रदायिकता की आड़ में जमीन हड़पना भी एक मकसद हो सकता है क्योंकि दहशत तो वातावरण में घुल ही चुकी होती है।

उपन्यास में मुख्य है वह इतिहास दृष्टि जो घटनाओं को सूक्ष्मता से देखती है, जो अमानवीय, दंगे और विस्थापन के जख्मों को पहचानती है। अलका सरावगी ने विडंबनापूर्ण समाज में दर्द सहते लोगों को चिह्नांकित करने में कोई कमी नहीं की।

व्यंग्य का जन्म असहमति से होता है। आक्रोश की भाषा व्यंग्य को सफलता का रास्ता देती है। अलविदा तिवारी का उपन्यास, एक व्यंग्य उपन्यास है, जो कि उनकी स्वर्गीय पत्नी गिरिजा तिवारी को समर्पित है। उपन्यास व्यंग्य के मार्ग से उन कवि सम्मलेनों पर निशाना साध रहा है, जिन्होंने कविता के सारत्व को तबाह कर कविता को चुटकुले या हुल्लड़ में परिवर्तित कर दिया है। इसमें बाजारवादी पहलकदमी हो तो हो, उस गहरे नैतिक बोध का सिरे से हनन है जो कविता को कविता बनाता है। यदि नारे उछालने से कविता की मृत्यु नहीं हुई तो ऐसे हो, है वाले निम्नस्तरीय कवि सम्मलेनों से जरूर होगी, जो काव्य की गरिमा, गुणवत्ता से बेखबर धन की महिमा में डूब रहे हैं। शुक्ल जी कविता से मनुष्य भाव की रक्षा कर पाते हैं। परंतु, लिफाफे में कविता, के कवि मूल्यहीनता में भटकते हुए विलास भाव से कविता के क्षेत्र में उतर रहे हैं। रचनाकार ने कवि–सम्मेलनों की विद्रूपताओं को निकट से देखा और महसूस किया है। उनके अनुसार 'लिफाफे में कविता' आज के कवि–सम्मलेनों का एक्सरे है। इस एक्सरे का डायग्नोसिस बताता है कि कवि–सम्मेलन लाइलाज बीमारी से पीड़ित हो चुके हैं। साहित्य की चिड़िया अब इस पेड़ पर घोंसला बनाने से डरती है। यह पेड़ चाहता ही नहीं कि साहित्य की चिड़िया वहाँ बसेरा करे।

"उपन्यास के परसादी लाल बाईस वर्ष के हो चुके थे, लेकिन छोटा–मोटा तीर भी नहीं मार पाए थे।" उनके नाम एक रिकार्ड जरूर बना कि वह हर क्लास दो वर्षों में उत्तीर्ण करते हैं। सत्रह वर्ष की उम्र में जो कविता लिखी उसमें बेतरतीब तुकबंदी थी, जिसे वह वीररस की कविता कहते थे। कविता तभी सुनी जाती जब वह चाय की व्यवस्था कर देते। उन्हें समझाने के लिए फूफा आगे आए। बताया कि कविता दोयम दर्जे का काम है। कविता से आज तक किसी कवि का पेट

नहीं भरा। एक चुटकुले के मुताबिक मित्र के पाँच बेटे थे परंतु वह चार गिन रहा था, क्योंकि एक कवि हो गया था।

अपने समझाने वालों को उसका जवाब था कि यह निराला का जमाना नहीं है। आज मंच का कवि लाखों कमा रहा है। हालात लगातार बदल रहे थे। पतनशीलता हावी हो रही थी। पैसा सबसे बड़ी विवशता बनता चला गया। फूकोयामा इतिहास के अंत की घोषणा कर चुके थे। पूँजी के वर्चस्व ने जिस समय पर पदचाप छोड़ी वह उत्तर आधुनिक समय कहलाया। सत्य और आभासी सत्य के बीच न खत्म होती लड़ाई के आसार नजर आने लगे।

अधिकारी वर्ग कवि सम्मलेनों का ठेका उठाने लगे थे। उच्च अधिकारी अपने पी.ए. को कह रहे हैं– जयपुर के जिस कवि को हमने कवि–सम्मेलन का ठेका दिया है, वह दो लाख रुपयों के ठेके में इस कवि को एडजस्ट नहीं कर पा रहा। इस कवि के मार्ग व्यय और संतोषजनक पारिश्रमिक की व्यवस्था आपको करनी है। आप किसी भी अधिकारी को पकड़ो... आखिर डी.एम. के पी.ए. हो, किसी लल्लू–पंजू अधिकारी के नहीं।

यह लोमड़ कवि हैं जिसका विचार है कि न तो परिवार के पुरखों पर परिवार गर्व करता है और न जमीन–जायदाद या गाँव पर। देशभक्ति पर गर्व करने की परंपरा भी अब रस्मी हो चुकी है।

सारे मान–मूल्य धन केंद्रित हैं। कविता से अगर धन आता है, ऐशो–आराम के साधन उपलब्ध होते हैं, तो कविता गर्व करने लायक बन जाती है। उनकी पत्नी को अब कविता से 'एलर्जी' नहीं रही। अलबत्ता अपने पति पर गर्व है। इस कवि का पूरा ध्यान चुटकुलों पर रहता है। 'चुटकुलों पर किसी का कॉपीराइट तो होता नहीं, जो कवि पहले पढ़ दे, चुटकुला उसी के नाम दर्ज हो जाता है।

परसादी लाल को कोई ढंग का उपनाम रखने की सलाह दी गई। क्योंकि 'उग्र', प्रेमचंद, 'अश्क', निराला, धूमिल उन्हें लगता है कि उपनाम के कारण ही प्रसिद्ध रहे। वे यह नहीं समझना चाहते कि इन सभी ने अपनी कलम की ताकत के लिए कितनी साधना, कितना संघर्ष किया है। जीवन की गहराई और समय के यथार्थ को किस दक्षता और प्रामाणिकता से प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं। सुविधाओं का कभी लोभ नहीं किया। प्रतिरोध की आवाज को बुलंद रखा है। परसादी लाल अब 'ज्वलंत जगतपुरिया' के नाम से जाने जाएँगे। 1990 के बाद जो मंचीय कवियों की नई खेप आई, मंचों पर मिलने वाले लिफाफों ने मंचीय कविता का क्रेज बढ़ा दिया। अब जुगाड़तंत्र चल निकला। उपन्यास में दर्ज है– "इस दौर में मंच पर निराला को ढूँढ़ना मृग–मरीचिका के अलावा कुछ नहीं है। अंगद कवि ज्वलंत जगतपुरिया से कह रहे हैं– यह व्यवस्था है। व्यवस्था जब भ्रष्ट हो जाती है, तो सियासत दुष्ट हो जाती है। फिर कोई भी इस स्थिति से उभरना नहीं चाहता.... जहाँ तक मंच की बात है, मंचीय कवि तभी तक कवि है, जब तक वही मंच पर बुलाया जा रहा है। बुलाया जाना बंद होते ही मंच का कवि मर जाता है... साहित्यिक कवि मर कर भी जिंदा रहता है।" अवसरवादी राजनीति का धन–वैभव, सुविधा से कितना मिलता है, यह भी अंगद से कहलवाया गया है, "तुलसी ने राम पर पोथे–के–पोथे लिख डाले लेकिन रहे कंगाल के कंगाल। हमारे दौर में कवियों ने 'राम लला' पर दो कविताएँ लिखीं और करोड़पति हो गए। 'मंदिर वहीं बनाएँगे 'जैसी कविताएँ लिखकर लोग विदेश में कवि–सम्मेलन पढ़ आए।"

अरविंद तिवारी के उपन्यास, 'लिफाफे में कविता' पर दो तरह के विचार सामने आए। पहला यह कि यह उपन्यास जीवन को प्रस्तुत करता है। उसमें सामाजिक शास्त्र, सभ्यता, मानव स्वभाव और जीवन की खोज होनी चाहिए। गोया उपन्यास बड़े तनाव, बड़े सवालों, समूचे अस्तित्व के साथ जुड़ा होना चाहिए। ऐसे में मंचीय कवियों के निम्नस्तरीय काम पर उपन्यास का लिखा जाना महत्वपूर्ण नहीं है। दूसरा यह कि विघटनकारी स्थितियाँ, भ्रष्ट तंत्र, मूल्यों की गिरावट, समाज में व्याप्त पतनशीलता, धन के सामने जीवन मूल्यों का तिरस्कार होना क्या लेखक के बाहरी आचरण से संबंधित हैं? इस कसमसाहट में लेखक का अंतर्मन कोई निर्णय नहीं ले सकता? मेरी सहमति

दूसरे पक्ष पर है। जिस पर व्यंग्य ही किया जा सकता है।

अमिता नीरव का उपन्यास 'माधवी, आभूषण से छिटका स्वर्ण कण' 2021 में ही आया। 631 पन्नों का यह उपन्यास पाठक से धीरज, तन्मयता की माँग करता है, जो कि रचनाकार के धैर्य, रचनाशीलता, मानसिक उथल–पुथल और चेतना का परिणाम है। 'माधवी' उपन्यास स्त्री उपेक्षा, स्त्रियों की अस्मिता, चेतना के आस–पास बुना गया है सदियों से स्त्रियों को उपभोग का तत्व ही समझा गया, जैसे लूटी हुई या कब्जा की गई जमीन और जिंदा जागती स्त्री में कोई अंतर न हो। अमिता नीरव वैभव, विवाह के सिस्टम, प्रेम प्रदर्शन, स्त्री अस्मिता सभी पर वाजिब प्रश्न चिह्न खड़े करती हैं और कथात्मक धरातल पर यही जाहिर करती हैं कि हर स्थिति में जीवन के मूलभूत मूल्यों की रक्षा ही मानवता है अन्यथा मानव और जीवजंतु का भेद ही मिट जाएगा। उन्होंने मिथकैतिहासिक जमीन को चुना और माधवी की आंतरिक वेदना को अभिव्यक्ति देने के लिए पूरा रचनात्मक सौंदर्य कागज पर उतार दिया। संवाद इस कौशल से उभारे हैं कि पात्रों का अंतर्मन, तनाव, दर्द सब मूर्त हो जाते हैं। माधवी का जीवन पीड़ा का पिटारा तो है ही अनेक विरोधाभास भी हैं। ययाति एक मात्र अपने दैहिक सुख, उपभोग, वासना के लिए जीने वाला ; दूसरों के जीवन, क्षति, सहजता पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देने वाला पात्र है जो उपन्यास के आरंभ में ही उपस्थित है। सत्ता का उपयोग, पुरुष प्रधान समाज की निरंकुशता उसी के हिस्से में आती है। देवयानी माँ के अभाव को गहरे से महसूस करती है और अनेक प्रश्नों से घिरी है। 'स्त्री का जीवन क्या है? माँ होने के दायित्व और पत्नी के दायित्व क्या हैं? क्या स्त्री दायित्वों को पूरा करने के लिए, उनका वहन करने के लिए ही जन्म लेती है? ... क्या स्त्री के जीवन में दायित्व ही दायित्व हैं? पुरुष को स्त्री की आवश्कता उसकी दैहिकता के कारण ही है..? "कच के साथ बातचीत में वह व्यवस्था को प्रश्नांकित करती है" व्यवस्था.... कच, सारी व्यवस्था किसी न किसी योजना के तहत हुआ करती है, क्या अब ये भी मुझे तुम्हें बताना होगा! सभ्यता के न जाने किस समय से इस तरह की व्यवस्था ने आकार लिया होगा। सत्ता पुरुष की, शासन,...समाज, नियम, विधान सब कुछ पुरूष का हो तो फिर गृह स्त्री का कैसे हो सकता है?, वो, वह इस परिणाम तक पहुँच रही है कि स्त्री का कोई गृह नहीं होता या तो पिता का गृह होता है या फिर पति का वह गृह विहीन ही रहती है। भगवान राम इसलिए भगवान हुए कि वह कई आदर्श स्थापित कर पाए। उनमें से एक–एक पत्नी व्रत था, जिसने परिवार को बाँधा। उनसे पूर्व ऐसा नहीं था। महाराज ययाति किसी आदर्श का पालन नहीं करते। देवयानी उनकी पत्नी है, शर्मिष्ठा से, मुकुलिका से उन्होंने संबंध स्थापित किया, जिसमें उनके महाराज होने का प्रभाव रहा। मुकुलिका महसूस करती है कि राजमहल की दीवारें न जाने कितने षड्यंत्रों की साक्षी हुआ करती हैं। यदि ये दीवारें कुछ कहतीं तो न जाने कितने राजघरानों की नीवें हिल जातीं। वह भी षड्यंत्र की पीड़ित थी।

माधवी की पीड़ा को अमिता नीरव ने बड़ी हुनरमंदी से अंकित किया है। गालव दो तरह से विवश है। एक अपनी निर्धनता से, दूसरे गुरु विश्वमित्र को गुरु दक्षिणा नहीं दे पाने से। गुरु ने आठ सौ अश्वमेधी अश्व माँगे हैं 'वेतवर्णी' यामकर्णी। महाराज ययाति ने ब्राह्मण विद्यार्थी को, निराश न करते हुए अपनी दत्तक पुत्री, जो कि उनकी ही पुत्री है गालव को सौंप दी कि उस नरेश को सौंप दे जिसके पास वैसे अश्व होंगे। उसका सवाल गूँजता रहा कि सत्ता जिसके पास होती है, जय पराजय उसी की होती है। स्त्री के पास कभी सत्ता नहीं रही। तीन बार माधवी प्रजनन का यंत्र बनी। तीन पुत्र राजवंशों को सौंपकर विलाप करती महलों से बाहर आई। गालव को छह सौ अश्व मिले, दो सौ शेष अश्वों के लिए माधवी गुरु के पास रह गई। उपन्यास यह से महसूस करवाता है कि पति यदि स्वामी है तो स्त्री दास हुई, जैसे धरती का खंड। स्त्री जगत की विवशता को लेकर

अनेक तीखे सवाल उपन्यास में हैं, जिनसे उपन्यास प्रभावित करने वाला बन पाया है।

विनोद शाही का उपन्यास 'ईश्वर के बीज' का आरंभ हरमन हेस के उपन्यास 'द ग्लास बीड गेम्स' के जिक्र से होता है वाचक कहता है– 'हिंदी में ऐसी महाकाव्यात्मक ऊँचाई वाला कोई उपन्यास लिखा गया हो, मुझे नहीं पता। इसे पढ़ते हुए बार–बार यही लगता है कि यह लेखक जर्मनी में पैदा हो गया है। वह उपन्यास नहीं अध्यात्म की प्रयोगशाला है, जहाँ से लेखक यथार्थ में सीधी छलांग लगाता है। इसे पढ़ते हुए कभी गांधी याद आए, तो कभी अरविंद। हिंदी के पास अब काफी गंभीर पाठक हैं जो उपन्यास के बीच भी पढ़ लेते हैं, जान लेते हैं। साहित्य चेतना के लिए वही हमारी ताकत है, जो साहित्य के शिवम तक पहुँचते हैं परंतु विवाद खड़े करने वालों पर बलिहारी, जो तुरंत ऐसे उपन्यास गिनवाएँगे जो उनके लिए 'द ग्लास बीड गेम्स' से भी बेहतर या टक्कर के लगें। वे यह सुनने को तैयार नहीं कि, उत्तर आधुनिकता एक गैरजरूरी आफत है और 'ईश्वर के बीज' कुदरत के फैसले को मानने पर जोर देने वाला उपन्यास है।

उपन्यास में स्वराजबीर ने स्वप्न देखा है– "एक नीलवर्ण भव्य आकृति। समाधि में लीन एक पुरुष। एकदम निरभ्र आकाश के सामान।" तभी अचानक उसे स्मरण हुआ कि बरसों हो गए ऐसा स्वच्छ नीला आकाश देखे। अब तो सब धुआँ–धुआँ हो गया है।

अवश्य पृथ्वी जल रही होगी कहीं धीरे–धीरे। एक आग है जो सब तरफ लगी है और देर –सबेर हमें घेर लेने की तैयारी कर रही है। इसीलिए ऐसे प्रकृति पुरुषों ने अब पृथ्वी पर जन्म लेना बंद कर दिया है।

उपन्यास की जमीन पंजाब है। कथा पंजाब की विसंगतियों, कमियों, इतिहास, राजनीति के साथ दार्शनिक पाप की तरफ भरपूर संकेत करती हैं, जिसे हमने न टटोला न पहचाना। इसके लिए गंभीर कोशिश की जरूरत थी और हम अपने सामने घटती बनती चीजों के प्रति बेखबर रहे, जिनका उपन्यास पुनः स्मरण करवाता है, क्योंकि जीवन का पुनः सृजन हमारे उपन्यास का महत्वपूर्ण लक्ष्य रहा है, आज भी है।

वाचक का मित्र सेवानिवृत्ति के बाद किसी एनजीओ से जुड़ गया था। वे लोग पंजाब के मालवा क्षेत्र के एक खास इलाके को जैव खेती की ओर मोड़ने के प्रयास में जुटे हैं। वह विश्व स्वास्थ्य संगठन के बुलावे पर आया। बता रहा था कि वहाँ की जमीन और उसके नीचे तक का पानी, कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से जहरीला हो गया है, इसलिए वहाँ इतनी बड़ी तादाद में लोगों को कैंसर हो रहा है कि वह क्षेत्र ही कैंसर की राजधानी के नाम से मशहूर हो गया है (पृ.सं.13)

"जब से पंजाब में हरित क्रांति हुई है, कुछ लोग नीति आयोग में चले गए हैं। वे यह जानते हुए भी कि देश की अर्थव्यवस्था किसी बाबा के आशीर्वाद से नहीं सुधरेगी, यहाँ इस उम्मीद से चले आते हैं कि ऐसा करके लोगों की निगाह में उनकी छवि शायद सुधर जाए।"

उपन्यास में स्थानिकता का उपयोग माइक्रो स्टडी के लिए भी किया जाता है, परंतु उसका व्यापक संवेदन, बड़े सरोकार, जीवन शक्ति सीमा तोड़कर पहुँच बनाती है। राही मासूम रजा के अंतर्मन में गाजीपुर पर एक एपिक लिखने की इच्छा थी, फिर उसे 'समय की कहानी' कहा।

'ईश्वर के बीज' उपन्यास में जीवन की कुदरत और बीज को सँभालने, सहेजने की चाहत, जीवन की समझ की व्यापकता, गहराई और गतिशीलता देने के लिए है। ज्ञानी जी को जंगल ने खुद से मुखातिब होने का अवसर दिया है और स्वरूपानंद कह रहा है– "हम सब कभी पशु थे, या कभी पक्षी, या कीड़े–मकोड़े। हम आदमी होते हैं, पर किसी न किसी पशु को अपने भीतर बचाए रखते हैं। आदमी, आदमी तभी बनता है, जब वह अपने भीतर बचे हुए आख़िरी पशु को पहचान लेता है और उस पर सवारी करने लगता है देवताओं के चित्र देखे होंगे आपने। सब किसी न किसी पशु पर सवार हैं। देवताओं ने पशु की सवारी बहुत कर ली। अब आदमियों की बारी है।"

उपन्यास पढ़ते हुए विकास की अंधी दौड़ पर सोचना पड़ेगा, नहीं तो कुदरत का अस्तित्व तक अंधकार में रहेगा।' बाबा जी से कहलवाया गया है– "तुम जिसे विकास और प्रगति कहते हो, वह कुदरत के नियमों के उलट चलना है। वापस मुड़ना उसी सिक्के का दूसरा पहलू है। इन दोनों बातों में बहुत फर्क नहीं है। पार जाना बस कुदरत के मुताबिक चलना है। कुदरत को बाँधने की कोशिश करोगे, तो वह तुम्हें बाँध लेगी। हमने जंगल खो दिए, तालाब खो दिए।

पक्षियों का संगीत मय स्वर सुनकर कहा गया कि आज महसूस हो रहा है कि मानव समाज ने सभ्य होने के सिलसिले में तरक्की जरूर की है पर अपना संगीत खो दिया। पीपल को कहा गया कि वह आदमियों जैसा है। "मुझे लगता है कि इसका मतलब यह है कि पीपल का संबंध हमारे अवचेतन से है। जो लोग वहाँ भूतों को देखते हैं, वे दरअसल पीपल के बहाने अपने अवचेतन को देखते हैं।"

"ईश्वर के बीज" उपन्यास इसलिए भी उल्लेखनीय है कि यह नामुमकिन की जगह मुमकिन है। कलाम को बाबा कहते हैं– यह अस्तित्व की कुँजी है। दूसरों पर राज करने का मतलब है अराजकता। हम आपसदारी की तहजीब को नहीं जानते, बस उससे बेवजह डरते हैं। 'ईश्वर के बीज' उपन्यास को भीतर जाकर देखना होगा, बाहर से नहीं। जब चिंतन का सूर्योदय हो रहा हो तो कई बार कथा की लाइट्स डिम रखनी पड़ती हैं।

इन पंक्तियों के लेखक का उपन्यास 'पंथ निहारि–निहारि' स्त्री चेतना का उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका अर्चना के निजी जीवन का संघर्ष दरअसल सामाजिक व्यवस्था के संजाल से मुक्ति पाने का संघर्ष है। आलोचक इसे 'स्त्री की अजेय जिजीविषा के आत्मसंघर्ष की एक 'मार्मिक कथा' के तौर पर देख रहे हैं। विवाह के बाद अर्चना को कोई दिन चैन की साँस लेने को नहीं मिली। ससुराल में उसका जीवन भी खतरे में आ गया था, जहाँ से मुश्किल से जान बचाकर मायके में लौट पाई। ऐसी अनेक कहानियाँ हमारे आसपास हैं, जहाँ दैहिक, मानसिक, आर्थिक शोषण जीवन का एक हिस्सा बन जाता है, जिससे छुटकारा पाने के लिए पुलिस, न्याय तंत्र की पेचदार गलियों से नंगे पाँव चलना होता है, वह भी तपती दुपहर में। जिसे भारतीय समाज की उस मानसिकता से जूझना पड़ता है, जो सामंतीय अवधारणा से संचालित है। इस संघर्ष में असहनीय तनाव अर्चना को बीमार बना देता है। उसकी सहेली के चेहरे पर तेजाब डाल दिया गया। उसे लड़ने की ताकत अर्चना से भी मिलती है, जिसने घर में घुस आए गुंडे को तलवार के वार से भगा दिया था। परिवार का हमदर्द साथी बताता है कि अदालत में इस तरह के केस का जाना, सबसे गलत काम है। आपको याद होगा कि मैं अपनी बहन के लिए लड़ चुका हूँ। तारीख पर तारीख पड़ती रहती है और आदमी अपनी आशा अगली तारीख पर टाँग कर कागजात का लिफाफा झुलाता निराश हो कर लौट आता है। अदालत की लड़ाई, और बिगड़ी व्यवस्था से ऊबकर अर्चना को लगने लगा कि– "जिन खिड़कियों को वह बंद करती है, चिटकनी भी लगाती है, आगे पर्दा भी खींच देती है, वे तेज हवा से झटाक से खुल जाती हैं और आँखों में धूल भर देती हैं। असफल विवाह, मुर्दा शब्द नहीं है, जिन्हें वह कंधे पर ढोकर श्मशान पहुँचा दे। इसके आगे–पीछे बहुत कुछ होता है, जब बच्चों की किलकारियाँ नीचे दब जाती हैं।" उधर पति चुनौती देते हुए कहता है– "अदालत के चक्कर काट–काटकर बूढ़ी हो जाओगी, छुटकारा नहीं मिलेगा।" अर्चना जीवन को मूल्यवान मान कर हर दीवार से टकरा रही है और स्त्री विमर्श को परिभाषित करती मालूम होती है।

महेश दर्पण का उपन्यास 'दृश्य–अदृश्य' भी 2021 में ही प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास भी कोरोना महामारी प्रभावित जिंदगी पर आधारित है। जिसने हजारों घरों से जीवन का उजाला छीन कर घरों में अंधेरा भर दिया। इनमें हिंदी साहित्य जगत के महत्वपूर्ण रचनाकार भी शामिल हैं। 'दृश्य–अदृश्य' उपन्यास के विचंश भी हिंदी के

जाने–माने लेखकों में से एक थे। समाज के सांस्कृतिक जीवन में भी उनका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। विचंश का पूरा नाम विष्णु चद्रं शर्मा ही है। जिन्होंने समाज को सजग बनाए रखने के लिए वैचारिक पहरेदारी का काम किया है। इस महामारी में जब निकट के लोग भी बीमार के करीब आने से कतराते हैं, महेश दर्पण उनके हर पल प्रतिपल साथ रहे, और उस कष्ट साध्य अनुभव को उपन्यास के रूप में उतार दिया। उपन्यास के आरंभिक पृष्ठों पर दर्ज है– "सुनसान गलियाँ कोरोना बंदी की देन हैं। लॉकडाउन, आइसोलेशन, सेनैटाइजेशन और सीलिंग, सब कोरोना वायरस की वजह से ही तो है। गली, सड़क, दुकान, बाजार, माल, स्कूल, दफ्तर, मंदिर, फैक्ट्री, खेल, फिल्म हाल, सब बंद।"

ओरहान पामुक ने कहा है कि जीवन छोटा है इसके हर पल का सम्मान करना चाहिए। परंतु इस महामारी ने तो जीवन को और भी अनिश्चित बना दिया है। विचंश विश्वभर की ऐसी घटनाओं के बारे में बहुत चिंतित हैं, परंतु अफवाहों के बारे में सजग। गणेश से कहते हैं कि सावधान तो खैर रहना ही है, लेकिन इतना डराओ तो मत कि इनसान दहशत से ही मर जाए। ये जो बेपैर की बातें हर आदमी जानकार बनकर उड़ाने में लगा है, उससे तो बचना और भी जरूरी है। वह नाविक विद्रोह को याद करते हैं– "सिंगापुर से कराची तक तिल रखने की जगह नहीं थी। सारे के सारे जहाज रुके पड़े थे। लार्ड माउंटबेटन को कहना पड़ा था कि अब अंग्रेजों को बोरिया–बिस्तर बाँध लेना चाहिए।" वह पत्रिका का संपादन करते रहे हैं। जिसका एक अंक निकला था। देशभर से नाविक विद्रोह के बारे में प्रतिक्रियाएँ आई थीं। विद्रोह उनकी फितरत में रहा है। वर्तमान दौर में जो हर बात को दरगुजर कर देने की बात है, उस पर नाराज हो कहते हैं कि अब लोगों में विद्रोह का जज्बा ही नहीं रहा। महेश दर्पण महामारी के संकट के साथ–साथ उनके साहित्य के क्षेत्र में अपनी तरह के काम को उद्घाटित करते जाते हैं। विष्णु जी डायरी भी लिखते रहे हैं। डायरी का मूल अर्थ बताते हैं–अपने आप को उलीचना। डायरी लेखन डूबकर करते रहे हैं। गणेश को बताया– "डायरी लिखते वक्त मैं अपनी भी नहीं सुनता था। यहाँ तक कि पारिवारिक तनाव तक उसमें दर्ज कर देता था।" कोई उनको पूरा जानना चाहे, तो उसे उन तमाम डायरियों से गुजरना होगा, ऐसा उनका सुझाव है। विचंश से गणेश को उनके संपादन में आईं पत्रिकाओं की भी जानकारी मिली। सन् 1857 में उन्होंने 'कवि', नामक पत्रिका की शुरुआत की। उनकी मंशा थी कि 'यह समय की कविता सभ्यता के परिवर्तन की पहचान का माध्यम बनेगी। बताया कि हिंदी में पाब्लो नेरुदा, नाजिम हिकमत और वादलेयर की कविताएँ सामने आईं, जिसमें 'कवि' का बड़ा हाथ था।

प्रेमचंद हर दिल अजीज रहे हैं। उनके बारे में बताया– 'क्रांति मोहन' प्रेमचंद और दलित पर काम कर रहे थे। मैंने उनसे कहा– "ये काम करना है तो पहले प्रेमचंद के गाँव की यात्रा करो। मैं खुद उनके साथ गया। वहाँ एक पान वाले से पूछा–प्रेमचंद की कुछ कहानियाँ याद हैं?" उसने एक साँस में आठ–दस कहानियों की चीजें हू–ब–हू सामने रख दीं।

चाय पीते–पीते उन्हें कुछ समय पहले मिलने आए एक लेखक की बात याद आई, जिसने उनसे पूछा था– 'जीवन में आखिर आपने कमाया क्या? कुछ भी तो नहीं मिला आपको। मुझे देखिए, हर वर्ष दो–ढाई लाख की रायल्टी आती है मेरी। 'लेखक को रायल्टी जरूर मिलनी चाहिए। परंतु हिंदी के औसत लेखक, जेनुईन लेखक की जबरदस्त परेशानी है कि वह धन से वंचित रह जाता है। आज विचंश से ऐसा प्रश्न पूछने वाला आपको नजर भी नहीं आए परंतु विचंश अपने महत्वपूर्ण काम और इस उपन्यास की वजह से भी सदा दिलों में रहेंगे।

स्मरण रहे कि विचंश, सर्वनाम' जैसी बढ़िया पत्रिका भी निकालते रहे हैं। परंतु खेदजनक है कि वह बच नहीं पाए। उपलब्ध दवाएँ उन्हें बचा न पाईं। परंतु वह अपनी किताबों में सदा मौजूद रहेंगे।

महेश दर्पण कुशल कथाकार हैं, उपन्यास में उन्होंने महामारी के संकट तथा विचंश के जीवन को ठीक से पकड़ा है। उपन्यास में उनके चरित्र चित्रण को व्यापकता देने में थोड़ा संपादन की तरफ भी ध्यान देते तो उपन्यास और भी चर्चित रहता। परंतु कथा कहने का अंदाज बेहतर ही है।

हरिसुमन बिष्ट का उपन्यास 'अपने अरण्य की ओर' भी इसी वर्ष प्रकाशित हुआ। उपन्यास में मनीष सचेत, संवेदनशील, जिम्मेदार पात्र हैं। परंतु आस–पास घटते बेरहम अत्याचारों, व्यवस्था, आधे–अधूरे लोकतंत्र, समाज के अनेक संवेदनशील मुद्दों पर लापरवाही को लेकर क्षुब्ध हैं, और गुस्से में हैं। हाशिए पर धकेल दिए बच्चों के प्रति भेदभाव, उपेक्षा, उसे आहत करती है और इस निर्ममता पर उसे बेहद अफसोस है। बच्चों के प्रति बेरहम, निंदनीय व्यवहार उसकी पीड़ा का केंद्र हो जाती है, जिसमें जबरदस्त बदलाव की गुंजाइश साफ नजर आती है। आपको फ्राँसीसी लेखक अल्बेयर कामू का यह कथन याद आता है– एक बंदिश भरी दुनिया से निपटने के लिए इस कदर स्वतंत्र हो जाना ही एकमात्र रास्ता है कि आपका अस्तित्व ही विद्रोह बन जाए। 'रेमंड विलियम्स लोकतंत्र को एक लंबी क्रांति कहते हैं।

उपन्यास के आरंभ में माजुली मनीष की प्रतीक्षा कर रही है। कहती है कि वह जीरो पांइट का मतलब समझ चुकी है। उसे इसके मायने मौत नजर आती है। परंतु मनीष को इस बात से इनकार है। कहता है– "जीरो पांइट के मायने मौत नहीं होता, शून्य होता है। शून्य का बोध होना स्वयं शून्य नहीं होता...तन भौतिक प्रकृति का प्रतिफल है। मन उसी प्रकृति का हिस्सा–वह कभी मरता नहीं।" उसे आधी–अधूरी आजादी से भी परेशानी है। माजुली मेट्रो स्टेशन पर अंतिम मेट्रो का जिक्र कर रही है और स्टेशन की लाइट्स बंद हो रही हैं, सशंकित है कि गार्ड उन्हें देख न ले। तब मनीष कहता है कि अब उन्हें अपनी आजादी के मायने मालूम हो जाएँगे। उसे लगता है कि हमारी आजादी के मायने पाँवों पर पड़ी जंजीरों की लंबाई से अधिक नहीं रहेगें। उसे जे.एन.यू का माहौल भी ठीक नहीं लगता। माजुली के साथ संवाद से पता चल जाता है कि मनीष समय, समाज, राजनीति, संस्कृति को ठीक से समझ रहा है और उसका दृष्टिकोण व्यापक है। उसके सामने जीवन असुरक्षित है। न्यायशीलता को अशिक्षा और संस्कृति हीनता से जूझना पड़ रहा है। जब वह रेल पटरी के पास पाँवों को सँभालते–सँभालते औंधे मुँह गिर जाता है, तब उपन्यासकार की टिप्पणी है कि अंधेरे में गिरना, उसके लिए कोई नई बात नहीं थी, गिरने के बाद सँभलना उसे आता था।

उसकी परदुखकातरता, हृदय की कोमलता का तब भी पता चलता है जब वह उन बच्चों को देखता है, जो ढोलक, मजीरा और एल्युमिनियम का फरुआ लिए जीवन की उठा–पटक से बहुत दूर–एकदम बेखबर, अपना नंगा बदन रंगने में तुले हुए बच्चों को देखता है। ये बच्चे सोच में अपनी उम्र से बड़े थे। अपनी मेहनत की कमाई खाते, पसीना पीते। होली–दीपावली में मन को मारते और तन को पसीने में रंगते रहना उनकी आदतों में मिश्रित था। उन्हें तन ढकने की जरूरत नहीं होती। मनीष का कहना है कि इन बच्चों में पेट भरने का हुनर गजब का है, जो जन्मजात होता है। उसे लगता है कि पालने में पलने वाले बच्चों से कहीं अधिक मजबूत ये फुटपाथी बच्चे होते हैं। मनीष को कमल किशोर ने जैसा बताया था वैसे उसे बच्चे लगे नहीं। घृणित और कठोर। उसे उनके काम भी बताए गए– चुनाव, जुलूस, चोरी–चकारी और शनिमहाराज के नाम और काम मनीष को उनके जीवन को माँझने की जरूरत महसूस होती है, परंतु कमल किशोर की धारणा विपरीत है– "ये न काम न काज के–क्यों पेट लात देने की ठानी है दोस्त? बीसियों योजनाएँ बनी हैं। बीसियों बार पुलिस इन्हें उठाकर सामाजिक सुधार तथा उत्थान गृह भेज चुकी है। ये जैसा काम कर रहे हैं, करने दो।" परंतु परिवर्तनकामी चेतना के लोग बदलाव का स्वपान हाथ से नहीं जाने देते। मनीष की सोच है कि जब तक ये साधन संपन्न लोगों की प्रतिकृति रचते रहेंगे, तब

तक, इनके भीतर दुबका हुआ कलाकार बाहर नहीं निकल सकेगा। हरि सुमन बिष्ट का उपन्यासकार इन आवारा मान लिए गए बच्चों के प्रति फिक्रमंद है। बड़ा बदलाव यहीं से हो सकता है। हम कृष्ण चंद्र (23 नवंबर,1914– 8 मार्च, 1977) के उपन्यास 'दादर पुल के बच्चे' याद कर सकते हैं। वह उपन्यास भी समाज के फेंके गए बच्चों पर था। परंतु हरि सुमन बिष्ट इस समस्या को ज्यादा गहराई से देख रहे हैं। फिर चार दशक से ज्यादा का अंतर भी है। तब पतनशीलता इस कदर गहरी न थी।

तब बच्चों को अपराध कर्म में डालने वाले तत्व इतने सक्रिय न थे। कमल किशोर को मनीष की सोच पागलपन की सोच लगती है, जिससे मनीष तिलमिला उठता है– "हाँ, मैं पागल हो चुका हूँ मान्यवर! आप की जैसी सोच नोएडा शहर के भीतर बदतमीजी की हद तक इस कदर फैल चुकी है कि पूरा शहर खानों में विभाजित हो चुका है। ऐसे खाँचे स्वस्थ समाज और उसके रहवासियों के लिए ठीक नहीं।" उसे यह सब भारत के सविंधान की आत्मा के भी अनूकूल नहीं लगता। इस उपन्यास को पढ़ते हुए सवाल सामने आता है कि क्या सुरक्षित, संरक्षित और समानुरूप वातावरण पर इन हाशिए पर पटक दिए गए बच्चों का कोई हक नहीं। क्या अनैतिक जीवन शैली, सामाजिक तनाव, संकीर्णता, वातावरण का अवसाद और निराशा इनकी बिगड़ी परिस्थितियों के लिए भी जिम्मेदार नहीं? फिर सुरक्षा का अर्थ केवल शारीरिक सुरक्षा नहीं होता, मानसिक सुरक्षा भी होता है। उपन्यास में एक बच्चे की मौत पर किसी को अफसोस नहीं होता जैसे वह मरनेवाला जीव नहीं था, शनिश्चरी था, सभी के कष्टों के निवारण के लिए फरुवा उठाकर, दुआ करता हुआ, एक अदद बहुरूपिया था। वह उनकी तरह इनसान कैसे हो सकता था (पृ.सं 45) पन्नों का विलाप अह्म है। मनीष व्यंग्य से कहता है कि उसे अफसोस इस बात पर था कि वह बच्चा अपनी उम्र तक मरने की कला को नहीं सीख पाया। संवेदनशील मनीष समझ रहा है कि उन फुटपाथियों के कायदा–ए–कानून अलग, उनकी बोली–भाषा और जीवन शैली में संवाद का रंग–ढंग अलग। लोकतंत्र के कानून की भाषा तो सबसे अलग। फिर उस लाठी धारी बापू को याद किया गया जिसको समाज के अंतिम व्यक्ति का भी ध्यान था। क्या वह कर पाए निर्माण ऐसे मनुष्य का–नहीं; क्या बचा पाए गांधी उसकी मनुष्यता को...गांधी को कौन मार सकता है? गांधी एक व्यक्ति कैसे हो सकता है? (पृ.सं 78) वे समाज बहिष्कृत बच्चे असहनीय सर्दी में चौराहे पर खड़े रहते हैं। मनीष सोच रहा है कि बेशक वे भिखारी हैं, ठंड भी उन्हीं की है। उसे वे कमजोर नहीं, शोषित और पीड़ित नजर आते हैं। वे भीख नहीं, अपना हक माँगते हैं। हमने क्या कभी उनके हक के बारे में सोचा? कमल किशोर को लगता है कि उन बच्चों का शोषण कर रहा है, वह हफ्ता आगे बढ़ा रहा है। मनीष यह जानकर हैरत में रह जाता है।

उपन्यास का विषय विस्तृत है। हाशिए पर धकेले गए लोगों की पीड़ा जिस तरह यह अनुभव करवाता है, वह सार्थक लेखन का प्रमाण है। हरि सुमन बिष्ट अनुभव संपन्न उपन्यासकार हैं। जगह–जगह उपनिषदों, वेदों जैसे परंपरागत महान ग्रथों के अध्ययन का प्रभाव मुनासिब स्पेस में नजर आता है। कथा कहने का अंदाज बेहतर ही है। अपने अरण्य की ओर भी हमें संवाद के जरिए हमारे कठोर यथार्थ का बोध करवा रहा है।

'स्वांग' उपन्यास ज्ञान चतुर्वेदी का 2021 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास एक गाँव की कथा के बहाने पूरे देश के बनते–बिगड़ते हालात का जायजा लेता है। जिसमें भ्रष्ट राजनीति, अपराध जगत का महिमा मंडन, न्यायालय के आगे–पीछे का अंधेरा, पाखंड, झूठी शान, मूल्यों की गिरावट, विखंडन कितना कुछ सिमटता चला गया है। ज्ञान चतुर्वेदी हिंदी साहित्य में अपने तीखे व्यंग्य से जाने जाते हैं। परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले व्यंग्य लेखकों में से एक हैं।

उपन्यास 'स्वांग' बुंदेलखड के जीवन पर केंद्रित है। यदि तरतीब दी जाए तो यह उपन्यास

'बारामासी', 'हम न मरब' की अगली कड़ी माना जा सकता है। ट्रायलाजी रचने/होने को हमारे यहाँ अलग पहचान और महत्व मिलता है। उपन्यासकार जगदीश चंद्र को इसकी शोहरत हासिल है। 'हम न मरब'(2015) में उन्होंने असाधारण विषय अपने उपन्यास के लिए चुना था। हम आमतौर पर जीवन–लीला में इतना डूबे रहते हैं कि हमें मृत्यु जो कि अंततः सुनिश्चित ही है, का कभी ध्यान नहीं आता। पूरे उपन्यास में मृत्यु की अवहेलना को ही सूत्रबद्ध करना सहज नहीं होता। स्थगित जीवन या फिर स्थगित मृत्यु के आस–पास कथा बुनना आसान नहीं होता। कबीर ने भी कहा था 'हम न मरब मरि है संसारा' जो कि उपन्यास के आरंभ में ही छपा था। स्वांग' उपन्यास की बात करते हुए 'हम न मरब' की भूमिका में कहीं इन पंक्तियों की तरफ ध्यान देना जरूरी लगा– "व्यंग्य का मूल उत्स इसी करुणा में है, और दूसरा यह कि मेरे निकट व्यंग्य अपने आप में एक बेहद गंभीर कर्म है... मेरी भाषा और शैली में सर्वत्र एक खिलंदड़ापन है।" यही व्यंग्य की रचनाशीलता, यही खिलंदड़ापन 'स्वांग' उपन्यास में विकासमान है।

बुंदेलखंड उनके लेखन का प्रेरक तत्व है। कहते हैं– "मेरे लेखन का बुंदेलखंड नास्टेल्जिया और यथार्थ के बीच में कहीं बसी हुई अद्‌भुत–सी दुनिया है। इसी दुनिया से चलकर अनेक कहानियाँ लगातार उनका पीछा करती रही हैं। बताया कि कथाओं और चरित्रों की एक सोने की खदान है उनके पास फिर भी दरिद्र बने घूमते रहे हैं। हमारा निकट हमसे दूर रहता है और दूर को निकट लाने की उत्कट इच्छा हमें भटकाती है कथा की वीथियों में। इन्हें भी जीवन की आपाधापी में वह समय ही नहीं मिला कि उन कथाओं का बक्सा खोल पाते।" ले देकर एक 'बारामासी' और एक 'हम न मरब' बस, दो उपन्यास, जबकि वहाँ तो कथा चरित्रों का जखीरा था। इसी उपन्यास में कोटरा तो बस एक गाँव है परंतु पूरे हिंदुस्तान में वह क्या है जो इस गाँव में नहीं है। जैसे महाभारत में सब कुछ है, और जो महाभारत में नहीं, वह कहीं नहीं। इस उपन्यास में घोषित है कि यह उस कोटरा की भी कहानी है जिसे हम हिंदुस्तान कहते हैं। हेमिंग्वे से एक बार पूछा गया था कि 'आइडिया कहाँ से मिलते हैं?' उन्होंने कहा– "मेज पर बैठ कर नहीं मिलते... मिलते हैं लोगों के बीच जाकर। लोगों के पास जाकर मैं उनके साथ एकरस हो जाता हूँ। उनकी आशाएँ, निराशाएँ, अनुभूतियाँ मेरी अपनी हो जाती हैं।" ज्ञान चतुर्वेदी भी अपने चरित्रों को बाहर से ही नहीं भीतर तक समझते हैं इसलिए "वे जीवंत लोग हैं। ये सब आपके आस–पास मौजूद हैं।" एक और 'स्वांग' की बात खोलनी अनिवार्य लगती है। यह एक लोकप्रिय विधा रही है भारत में कई जगह, बुंदेलखंड में खास तौर पर। नाटक, नौटंकी, रामलीला के आस–पास। किताब में स्पष्ट है कि इस फारमेट से थोड़ा इतर। न मंच, न परदा, ना ही कोई विशेष वेशभूषा। बस अभिनय। स्वांग का मज़ा इसके असल लगने में है, जो कि वहाँ सब नकली होता है नकली राजा, नकली सिपाही, नकली जेल, नकली साधु, नकली काठ की तलवार, नकली दुश्मन और नकली लड़ाइयाँ। सब जानते हैं कि अभिनय है, नकली है सब, नाटक है यह, पर उस पल कितना जीवंत प्रतीत होता है।

समय की तेज धारा में बहुत कुछ बह गया। जहाँ स्वांग खेला जाता था, वहाँ ऐसा कुछ नहीं होता। आर्थिक साम्राज्यवाद, उपभोक्तावाद, अप संस्कृति ने हमारी दुनिया पर बड़ा हमला किया है। परंतु यह किताब दावेदार है कि अब पूरा समाज ही स्वांग खेलने में व्यस्त है। "सामाजिक, राजनीतिक, न्याय और कानून, इनकी व्यवस्था का सारा तंत्र ही एक विराट स्वांग में बदल गया है।"

एक तरफ विश्व के गाँव में बदल जाने का दावा है, दूसरी तरफ यहाँ एक गाँव में विश्व दिखाने का आग्रह है, जिसे उपन्यास के विस्तार, घटनाओं को पाठ के आधार पर रद्‌द नहीं किया जा सकता।

साल 2021 में प्रकाशित उपन्यासों में कोरोना महामारी फैलने से समाज में आए बदलाव पर मुख्यतः तीन उपन्यास हैं। सुधा ओम ढींगरा का

उपन्यास, अजय शर्मा का उपन्यास तथा महेश दर्पण का उपन्यास। 'गूंगी रुलाई का कोरस' उपन्यास सांप्रदायिक सद्भाव के लिए संघर्षरत उपन्यास है। 'कुलभूषण का नाम दर्ज करो' उपन्यास विभाजनकारी स्थितियों का विरोध करता है। 'माधवी' तथा 'पंथ निहारि निहारि' उपन्यास स्त्री उपेक्षिता तथा स्त्री पीड़ा से लबरेज उपन्यास है।

'ईश्वर के बीज' उपन्यास कुदरत की तरफ लौटने का आग्रह करता है। अपने अरण्य की ओर उपन्यास हाशिए पर धकेल दिए जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया है। इन उपन्यासों में जीवन संघर्ष, जीवन राग प्रमुख रहा है। अनेक बाधाओं को पारकर इन उपन्यासों की रचना हुई है। एक तरह से मुक्ति विकल्प से जाकर जुड़ते हैं। हमारा विसंस्कृतिकरण चरम पर पहुँच गया है उसकी तरफ संकेत जरूर करते हैं। 'स्वांग' उपन्यास पूरे भ्रष्ट तंत्र पर कटाक्ष करता है। प्रेमचंद ने जो यथार्थवादी उपन्यास की आधारशिला रखी, उस पर भवन निर्माण के काम में उपन्यास सफल कार्य कर रहे हैं।

❑❑❑

20

हिंदी कहानी

अवध किशोर प्रसाद

कहानी का प्रवाह जन के संततवाही प्रवाह की तरह अविरल, अनंत और अविराम है। ऋग्वेद से लेकर आज की कहानियों तक इसका अविरल प्रवाह जन–जन के मानस को आप्लावित करता अच्छुन्न है। कहानियों के वर्षवार पर्यवेक्षण–मूल्यांकन से इसमें परिष्कार आता है। ऐसे में किसी वर्ष विशेष की कहानियों के पर्यवेक्षण का विशेष महत्व होता है। इसी महत्व को दृष्टिपथ में रखकर वर्ष 2021 की कहानियों का पर्यवेक्षण करना यहाँ हमारा अभीष्ट है। यद्यपि संचार माध्यमों के विकास के फलस्वरूप आज अनेक माध्यमों से कहानियों का प्रकाशन हो रहा है, तथापि हम दो माध्यमों– कथाकारों के संकलन एवं कुछ पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों का अध्ययन करेंगे।

वर्ष 2021 में वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का चौदहवाँ कहानी संग्रह 'रेत घर' बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित हुआ है। इसमें पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं। गोविंद उपाध्याय की कहानियों का पाट बड़ा ही विस्तृत और व्यापक है। संकलन की कहानियों में भी विषय वैविध्य है।

वर्तमान समय में कोरोना भारत ही नहीं, विश्व की सबसे बड़ी दारुण समस्या है। कथाकारों ने इस पर बहुसंख्यक कहानियों का प्रणयन किया है। इस संकलन की 'छाले','सुबह का इंतजार', 'क्या फिर लौटेगा रामबुझावन' तथा 'हौसलों की उड़ान' कोरोना से संबधित कहानियाँ हैं। इन कहानियों में कोरोना कालीन स्थितियों, लॉकडाउन से उत्पन्न असुविधाओं एवं दिल्ली नगर से घर–वापसी करते कामगारों की कठिनाईयों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन क्रमशः भग्गन, वयोवृद्ध मनीष शर्मा, रामबुझावन एवं नीलेश जैसे पात्रों के हवाले से किया गया है।

'मलदहवा वाला खेत' ग्रामीण परिवेश की यथार्थपरक कहानी है। इस कहानी में भी अमरहवा गाँव के बृज मोहन और रामेंद्र के बीच गिरवी रखा जमीन का टुकड़ा, जिसमें मालदह आम के पेड़ होने के कारण सभी उसे मलदहवा वाला खेत कहते हैं, के लिए झगड़ा होता है। छीना–झपटी में बंदूक से गोली चल जाती है और रामेंद्र की मौत हो जाती है। पुलिस बृज मोहन समेत अनेक लोगों को पकड़ लेती है। मुकदमा चलता रहता है और वह खेत सालों–साल परती पड़ा रह जाता है। 'यही सच है' कृतघ्न संतति की कहानी है। कहानी में अम्मा अपने चार बच्चों की भली–भाँति परवरिश करती है। किंतु जब अस्सी पार अम्मा के सीने में दर्द होने लगता है तो कोई भी बेटा इलाज कराने के लिए उसे शहर नहीं ले जाता है और एक दिन उसकी मौत हो जाती है। इस कहानी में बेटों की लालची वृत्ति एवं बहुओं के उपेक्षित रवैए का बड़ा ही यथार्थ चित्रण हुआ है। आज के टैलेंटेड महत्वाकांक्षी युवक जब विदेश चले जाते हैं तब वे अपने माता–पिता की ओर से उदासीन हो जाते हैं। बहुत हद तक यह उनकी बाध्यता भी होती है। फलतः माताओं–पिताओं को एकाकी जीवन जीना पड़ता है। 'एक उदास शाम' शीर्षक कहानी में इसी तथ्य की अभिव्यक्ति हुई है। कथानायक समृद्धशाली, ऐश्वर्यवान व्यक्ति चंद्र मोहन

सिंह के पास सब कुछ है, पर उसका जीवन बिल्कुल एकाकी है। मिलने आए लेखक जय नंदन से वह इस दर्द को बड़ी ही मायूसी से व्यक्त करता है– "एक बेटा और एक बेटी–बेटा फ्राँस में है बेटी कनाडा.... बस वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए उनसे बात होती है।.... पत्नी के लिए घर बनाया लेकिन वह ज्यादा दिन साथ नहीं दे पाई... सब कुछ है पर कुछ भी नहीं है।" 'गुनहगार' शीर्षक कहानी में अपनी पुत्री के प्रति पैंसठ वर्षीय पिता देव मुखर्जी के अपराधबोध की अभिव्यक्ति हुई है, जो बैंक कर्मी पुत्री दीपाली के लिए हमेशा चौकन्ना तो रहता है, किंतु अपने एकाकीपन के भय से उसके विवाह के प्रति उदासीन रहता है... किंतु जब पिता के परामर्श' ''बेटा अपने लिए कोई लड़का ढूँढ़ लेती'' पर दीपाली कहती है... ''बाबा बहुत देर हो चुकी! मैं फोर्टी फाईव की होने जा रही हूँ '' वह स्तब्ध रह जाता है और अपराधबोध से ग्रस्त होकर कह उठता है... ''मुझे माफ़ करना मेरी बच्ची, मैं तेरा गुनहगार हूँ।" 'कैसे हो' शीर्षक कहानी में किसी सरकारी कार्यालय में होने वाली गतिविधियों का वर्णन किया गया है। स्टाफ में कामचोर, कामकरिंदे, जिम्मेदारी पसंद या गैरजिम्मेदार कर्मचारियों की स्थितियों का वर्णन कहानी में संजना मैडम,गोपाल राम, समीर, तारक बनर्जी, नरेंद्र और अंकुर के हवाले से किया गया है। 'मधुर ध्वनि' दांपत्य प्रेम की सरस और रोमांचक कहानी है। जयनाथ की पत्नी इंदुमती की खर्राटे की कर्कश आवाज़ की मधुरता का बड़ा ही हृदयहारी चित्र खींचा गया है। प्रारंभ में पत्नी के जिस खर्राटे के स्वर से पति जयनाथ को क्रोध और पीड़ा होती थी, अब वही इस बात की आस्वस्ति थी कि उसकी पत्नी इंदुमती ठीक है। 'मुझे नहीं मालूम' वर्णनात्मक कहानी में छोटी– छोटी घटनाओं की कड़ी के बीच एक रोचक कहानी की रचना की गई है। शीर्षकनामा संकलन की अंतिम कहानी 'रेत घर' पारिवारिक कहानी में दानेश्वर सिंह और विशाखा के सुखी दांपत्य जीवन की अभिव्यक्ति हुई है। संपूर्ण कहानी में दोनों के बीच होने वाले हास–परिहास एवं प्यार भरे नोंक–झोंक का वर्णन हुआ है। किंतु यही हास–परिहास, जो उनके दांपत्य को पुष्टता प्रदान करता है, कालक्रम से उनके दुःख का कारण बन जाता है। पत्नी की मृत्यु पर दानेश्वर सिंह को बेटे–बहू के पास जाना पड़ता है और उसका घर उसके लिए रेत घर में तब्दील हो जाता है।

गोविंद उपाध्याय की कहानियों में वर्तमान जीवन अपने मूर्त रूप में विद्यमान रहता है। कथाकार मनुष्य, समाज और परिवार की ज्वलंत समस्याओं को अपनी कहानियों के वर्ण्य के रूप में व्यक्त करते हैं। काव्यमयी, चुटीली और सरस भाषा में लिखी गई कहानियों में रोचकता है।

समीक्ष्य वर्ष में नीरज नीर का कहानी संकलन 'ढुकनी एवं अन्य कहानियाँ' प्रभात प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें चौदह कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों के संबंध में प्रसिद्ध कथाकार पंकज मित्र ने कहा है– ''नीरज नीर की कहानियों की डीटेलिंग कभी–कभी चमत्कृत कर देती है कि लेखक अपने पात्रों के जीवन तल में कितने गहरे उतरा है और पाठक को भी हाथ पकड़कर उन गहराईयों में ले जाने को बाध्य भी करता है।''

शीर्षकनामा संकलन की पहली कहानी 'ढुकनी' में कथाकार ने सामाजिक अंधविश्वास की शिकार वैसी नारी की दर्दभरी जिंदगी का चित्र खींचा है, जो समाज में रहने, जीने एवं सामाजिक मांगलिक कार्यों में प्रवेश से निषिद्ध मानी जाती है। कथा नायिका पार्वती,जो समाज में ढुकनी, यानी बिना विवाह के किसी के घर में घुस जाने वाली, के दुर्नाम से जानी जाती है, लखन के साथ पति–पत्नी के रूप में रहकर दांपत्य जीवन जीती है। उसकी दो संतानें भी हैं। पुत्री लक्ष्मी गाँव के लड़के भुनेसर से प्रेम करती है। किंतु अपना विवाह करने से पहले वे माता–पिता ढुकनी तथा लखन का विवाह करवाना चाहते हैं ताकि उन्हें सामाजिक मान्यता मिल सके। विवाह के बाद ढुकनी पार्वती बन जाती है और सामाजिक अवरोध से मुक्त हो जाती है। अनूठी कथावस्तु पर विन्यस्त यह एक अनूठी कहानी है। 'कोयला चोर' शीर्षक कहानी में कोयले की दलाली का चित्रण किया गया है। कथाकार ने कथानायक गणेश महतो के माध्यम से कोयले की चोरी और उसकी बिक्री के बीच होने वाली दलाली का वर्णन किया है। 'दिल्ली का धोबी' एक ऐसे युवक की कहानी है, जो बेरोजगारी, अभावग्रस्तता एवं पत्नी, पुत्र की परवरिश के लिए पिता की प्रतिष्ठा को दाँव पर लगा देता है। कथानायक दिनकर एक प्रतिष्ठित पिता का पुत्र है। अभावग्रस्तता से तंग आकर वह दिल्ली चला आता है, जहाँ वह एक ड्रायक्लिनिक में काम पकड़ लेता है। इस काम से उसके पिता की प्रतिष्ठा पर आँच तो आती है पर उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़

हो जाती है। बाद में वह अपना ड्रायक्लिनिक का काम शुरू कर लेता है। 'दलितों का देवता' दलित विमर्श की कहानी है। जबकि आधुनिक विकासवादी युग में अनेक रूढ़ियों, धर्मगत मान्यताओं, जातीय बँधनों आदि का अंत हो गया है, इस कहानी में दलित और ब्राह्मण के बीच के संघर्ष को व्यक्त किया गया है। 'कहीं तो होगा ऐसा देश' शीर्षक कहानी में हरेंद्र नामक प्रवासी मजदूर की व्यथा कथा के माध्यम से कथाकार ऐसे मुल्क की कल्पना करता है, जहाँ मजदूरों का शोषण, उत्पीड़न न हो। 'शोक' शीर्षक कहानी में अभावग्रस्त जीवन जीने वाले मनुष्यों की दीनता, हीनता एवं विवशता का वर्णन किया गया है। 'सभ्यता के अँधेरे में' शीर्षक कहानी में ग्रामीण भोली–भाली लड़कियों को फुसला– बहलाकर उनकी खरीद–बिक्री एवं यौन शोषण की अभिव्यक्ति हुई है। इस घिनौने कार्य में उनके सगे– संबंधी भी लिप्त रहते हैं। इस कहानी में कथानायिका पुरनी ऐसी ही लड़की है, जो इस कुरीति का शिकार होती है। किंतु वह इसकी शिकार लड़कियों को बचाने का संकल्प लेती है। संकलन की अन्य कहानियाँ 'पिंजड़े की पंछी', 'प्रतिष्ठा', 'सेवईयाँ', 'मियाँ मिसिर', 'यात्रा' आदि ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखी गई हैं। इनमें निम्न मध्यवर्गीय जीवन को उजागर किया गया है।

'हमेशा देर कर देता हूँ मैं' पंकज सुबीर का सातवाँ कहानी संग्रह है। यह शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित हुआ है। इसमें दस कहानियाँ संकलित हैं। पंकज सुबीर एक बहुपठित एवं खोजी कथाकार हैं। इनकी कहानियों में समय के यथार्थ की अभिव्यक्ति उसके व्यापक परिवेश के साथ होती है। अपनी खोजी वृत्ति से अनुप्राणित हो कहानियों में नवीनता का अवगाहन करते हैं। संकलन की कहानियाँ इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं।

मुनीर नियाजी के नज़्म पर आधारित शीर्षक 'हमेशा देर कर देता हूँ मैं' संकलन की शीर्षकनामा पहली अनूठी कहानी है। इसमें आज के विकसित संचार माध्यमों के युग में मोबाइल की भूमिका को व्यक्त करते हुए कथाकार ने कंपनियों में कार्यरत कर्मचारियों की तुलना अतीत के बंधुआ मजदूरों से की है। 'बेताल का जीवन कितना एकाकी' कॉमिक्स पर आधारित कहानी है। इसमें संदीप और बूढ़े की लंबी बातचीत में मनुष्य के जीवन में घटने वाली विभिन्न घटनाओं से उत्पन्न परिस्थितियों का वर्णन हुआ है। एक पिता के दायित्व, संतति की स्वार्थी वृत्ति, माँ की ममता आदि मानवीय वृत्तियों का खुलासा हुआ है। 'मर नासपीटी' दो औरतों हनीमा और जरीफा के बीच वर्षों से चली आ रही दुश्मनी की कहानी है, जो सुबह–सुबह एक–दूसरे को गाली–गलौज करती उठती हैं, जबकि उनके परिवार वालों के बीच काफी मेल–जोल है। उनकी दुश्मनी का कारण वैवाहिक संबंध है। जिस लड़के मंसूर का निकाह जरीफा से होने वाला था वह जरीफा से न होकर हरीना से हो जाता है और ज़रीफा का निकाह रिजवान से होता है। यह उलटफेर उनकी दुश्मनी को पराकाष्ठा पर पहुँचा देती है। 'खोद–खोद मरे उदराँ बैठे आन भुजंग, उर्फ़ भावांतर' रोचक शीर्षक की तरह कहानी भी रोचक है। इसमें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा किसानों के हित के लिए संचालित भावांतर योजना की कार्य प्रणालियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि मेहनत करके किसान अन्न उपजाता है, किंतु उसे अन्न का उचित मूल्य नहीं मिलता है। यह राशि भावांतर योजना में लगे पदाधिकारियों और व्यापारियों के बीच बंदर–बाँट हो जाती है, जैसे चूहा मेहनत करके बिल तो खोदता है पर सर्प उस पर कब्जा कर लेता है। 'मुंडवेवालों का जलवा' और 'चर्च–ए–गुम' अतीतकालीन परिवेश पर लिखी गई ऐतिहासिक कहानियाँ हैं। 'मुंडवे वालों का जलवा' में अंग्रेज़ द्वारा मुंडवा से लाकर छावनी में बसाए गए छज्जूमल के कई पीढ़ियों के व्यापारिक उत्कर्ष के आलोक में जलवा पूजन कार्यक्रम एवं बूढ़े छज्जूमल की मृत्योपरांत अंतिम यात्रा की भव्यता का अद्भुत वर्णन किया गया है। 'चर्च–ए–गुम' शीर्षक कहानी में भारत में फ्राँसीसी काल में निर्मित एक चर्च की वर्तमान में खोज और उसके मिट जाने का वर्णन हुआ है। 'वास्को–डी–गामा और नील नदी' पुर्तगाल कालीन भारत में वास्को–डी–गामा की समुद्री यात्राओं को केंद्र में रखकर भारत में बहने वाली नील नदी से उसके साहचर्य का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। 'पत्थर की हौदें और अगन फूल' अनोखी कथावस्तु पर लिखी गई मार्मिक कहानी है। पत्थर की हौदें और अगन फूल की वास्तविकता का उल्लेख उस डाक बंगले के चौकीदार मोन्या द्वारा कही गई एक रोमांचक कहानी से हुआ है। संपूर्ण कहानी में स्थानों, पेड़ों, फूलों आदि की रमणीयता का मनोभावन वर्णन हुआ है। 'कैद पानी' शीर्षक कहानी में प्राचीन गाँवों में होने वाले जल संकट एवं एक नारी की सशक्तता का

रोमांचक वर्णन हुआ है। सार्वजनिक पोखर को जब गाँव का दबंग व्यक्ति कैलाश राठौर जाल लगाकर व्यक्तिगत बना लेता है, तब गाँव वाले उसका विरोध करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं। यहाँ तक कि कलक्टर के समक्ष भी कोई बोलने का साहस नहीं करता है, तब गाँव की एक औरत रमेश की पत्नी सुनीता न केवल विरोध में बोलती है, बल्कि जाल पर लगे ताले को तोड़कर पानी को कैद मुक्त करती है। 'ईलोई! ईलोई! लामा सबाख्तानी?' संकलन की सर्वोत्कृष्ट एक कालजयी कहानी है। यह कहानी अतीत के वर्णन एवं इतिहास के शोध का समन्वय है। कहानी की मुख्य नारी पात्र शुभांगी की नब्बे वर्षीय नानी है। वह ऐसे नारी विमर्श का प्रतिनिधित्व करती है जो ममता, त्याग,समर्पण और संघर्ष का प्रतीक है। संकलन की कहानियों में प्रकृति की रम्यता के मध्य अतीत और वर्तमान की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

'मेरी चुनिंदा कहानियाँ' बहुमुखी प्रतिभा के धनी अशोक गुजराती का कहानी संग्रह है। यह शिवना प्रकाशन सीहोर से प्रकाशित हुआ है। इसमें बारह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की पहली कहानी 'भड़ांस' में एक अपाहिज किशोर की मानसिकता की अभिव्यक्ति हुई है। यद्यपि वह सर्वतोभावेन सक्रिय,कर्मठ और सुखी है, किंतु उसके भीतर अपाहिज होने की हीनता उसका दामन नहीं छोड़ती है। 'कस्टमर केयर उर्फ़ दूसरा झूठ' शीर्षक कहानी में कथानायक अवधेश के चरित्रांकन के माध्यम से इसी सच को उजागर किया गया है। अवधेश बिल्कुल ईमानदारी से कार्य करता है, किंतु उससे अनायास एक बेईमानी हो जाती है, जिससे वह व्यथित रहता है। किंतु उसकी पत्नी महिमा कहती है– "इसको झूठ नहीं कहते, ईंट का जवाब पत्थर से देना अपराध नहीं है। .....उसका झूठ निरस्त करने के लिए आपने असत्य का औजार चलाया, यह कोई गुनाह नहीं है", उसे सांत्वना दे जाती है। आतंकवाद की पृष्ठभूमि पर लिखी गई 'भगदड़' शीर्षक कहानी में किसी के आतंकवादी बनने की मजबूरी और उसके द्वारा किसी प्रियजन की मृत्यु पर उसकी मानसिकता का वर्णन किया गया है। 'परख' दलित विमर्श की उत्कृष्ट कहानी है। इसमें दलितों से घृणा करने वाली कौशल्या अपने पुत्र सक्षम के दलित लड़की मेहा से विवाह पर मेहा को स्वीकार नहीं करती है। किंतु जब बीमारी की स्थिति में मेहा छद्म वेष में नर्स बनकर उसकी अहर्निश सेवा करती है, तो वह प्रसन्न होकर कह उठती है– "माही बहुत सुघड नर्स थी ...उसने जी जान से मेरी सेवा की,मेरा बस चलता तो मैं उसे अपनी बहू बना लेती"। मध्य प्रदेश के व्यापम घोटाले की पृष्ठभूमि पर लिखी गई 'तालीम–ताल' में शिक्षा जगत में व्याप्त भ्रष्टाचार की अभिव्यक्ति उमेश की जीवनी के माध्यम से हुई है। 'ये नहीं कि गम नहीं' कहानी में लिव इन की प्रासंगिकता–अप्रासंगिकता का विवेचन किया गया है। 'मंदी' वैश्वीकरण के दुष्परिणामों को व्यक्त करती कहानी है। 'बेध्यानी' शीर्षक कहानी में निर्भय नामक लड़के के जीवन में घटने वाली घटनाओं का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। 'जिजीविषा' निर्धन किंतु उद्यमी डोम की कहानी है, जो अपनी माँ की चिता की अधजली लकड़ियों को इकट्ठा करता है, ताकि अगली सुबह उन्हें बेचकर बीबी–बच्चों के लिए भोजन का प्रबंध कर सके। 'उठे हुए हाथ' शीर्षक कहानी में कथानायक, जो शहर के विशाल ग्रंथागार का सचिव है, बाबरी मस्जिद के ढहाने से उत्पन्न अफरा–तफरी के बीच अपनी जान की परवाह किए बिना पुस्तकों को आगजनी से बचाने के लिए अकेले निकल पड़ता है। 'मैं ज़िंदा रहना चाहता हूँ' खालिस्तान आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखी गई कहानी है। इसका कथानायक एक सिख ज़िंदा रहकर भी गुमनाम रहना चाहता है, ताकि आंदोलनकारी उसे और उसके परिवार को नष्ट न कर सके। संकलन की अंतिम 'लैंडस्लाईड' शेगाँव के धौंडीराम दलित की कहानी है। इस कहानी में कथाकार ने धौंडीराम के जीवन में आने वाले असंख्य उतार–चढ़ावों के साथ धौंडी के दुखद अंत का वर्णन किया है।

संग्रह की सारी कहानियाँ वर्णनात्मक हैं, जिसमें कहानियों का कथ्य ओझल–सा हो गया है। कहानियों में अनावश्यक वर्णन विस्तार नहीं होता तो भी कहानियाँ रोचक और मर्मस्पर्शी होतीं।

'खसरा नंबर 84/1 रकबा पाँच डिसमिल' संजीव बख्शी का पहला कहानी संग्रह है। यह अमर सत्य प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। इसमें सात कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की अधिकांश कहानियों में छतीसगढ़ के आदिवासी अंचलों में रहने वाले आदिवासियों के जीवन संघर्ष को अभिव्यक्त किया गया है। आदिवासी अंचलों के निवासियों की समस्याएँ, प्राथमिकताएँ एवं उनके जीवन जीने का ढंग आम गाँवों एवं नगरों के निवासियों से भिन्न होता है। यही भिन्नता उन्हें आम आदमी से भिन्न कर देती है,

जिसका अनुभव साधारणतः लोग नहीं कर सकते हैं, जिस कारण आदिवासी लोग विकास के उपकरणों एवं संसाधनों के उपयोग से वंचित रह जाते हैं। संकलन की कहानियों में इस तथ्य का समायोजन हुआ है।

संकलन की कहानियों 'अहा बिजली' में झुलनातेंदू नामक आदिवासी गाँव की बिजली की समस्या और 'महानदी का पानी' में देवगाँव नामक आदिवासी गाँव की सिंचाई की समस्या का वर्णन किया गया है। इन कहानियों में आदिवासी जनजीवन, सरकारी तंत्र की उपेक्षावृत्ति आदि का वर्णन हुआ है। 'डॉक्टर मिश्रा' शीर्षक कहानी में कथाकार ने डॉक्टर मिश्रा और चेतूराम के माध्यम से सरकारी अस्पतालों में होने वाली लापरवाही, अव्यवस्था आदि का वर्णन किया है।

संकलन की शीर्षकनामा 'खसरा नंबर 84/1 रकबा पाँच डिसमिल' एक दिलचस्प कहानी है। इसमें एक साधारण किसान के संघर्ष और सरकारी तंत्र की संवेदनशून्यता की अभिव्यक्ति हुई है। इस लंबी कहानी में आदिवासी बोईरगाँव के किसान ढालचंद की जमीन खसरा नंबर 84/1 रकबा पाँच डिसमिल से संबधित समस्या को बड़े ही व्यंग्यात्मक ढंग से उजागर किया गया है। ढालचंद इस जमीन से संबधित आवेदन लेकर बीस वर्षों से तहसील कार्यालय का चक्कर लगाता रहा किंतु पटवारी से लेकर तहसीलदार तक किसी ने उसकी कोई सुनवाई नहीं की। एक अखबार के संवाददाता की पहल पर प्रशासन हरकत में तो आता है किंतु गाँव दो गुटों में बँट जाता है और हिंसक घटनाओं के कारण पुलिस को गोली चलानी पड़ती है। अंत में गाँव वाले ढालचंद को उतनी जमीन दे देने का फैसला करते हैं। तभी किसी दूसरे गाँव का एक वृद्ध अपनी पाँच डिसमिल जमीन के खो जाने की सूचना संबंधी आवेदन लेकर आता है। यह एक मार्मिक कहानी है। संकलन की अन्य कहानियों– 'टिकरापारा', 'सादगी' और 'चेहरे की बनावट में मुस्कान', में भी ग्रामीण परिवेश और ग्रामीण समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। कहानियों की भाषा सरल, सहज बोधगम्य है। आदिवासी क्षेत्र के गाँवों,पात्रों और कहीं–कहीं बोली के शब्दों का बहुल प्रयोग हुआ है।

'मगर, शेक्सपीयर को याद रखना' संतोष चौबे का कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन आईसेक्ट प्रकाशन, भोपाल से हुआ है। इसमें सात कहानियाँ संकलित हैं।

शीषर्कनामा संकलन की पहली कहानी 'मगर शेक्सपीयर को याद रखना' एक भिन्न प्रकार की अनूठी कथावस्तु पर लिखी गई कहानी है। इसमें एक सेलिब्रेटी रंगकर्मी के अहंकार को खंडित किया गया है। बड़े–बड़े रंगकर्मी कलाकार अपने बड़े होने का अहंकार पाल रखते हैं। किंतु छोटे कलाकार का भी उनसे कम महत्व नहीं होता है, क्योंकि छोटे कलाकारों की अवस्थिति पर ही उन्हें बड़े कलाकार होने का गौरव प्राप्त होता है। कलाकार अरुण एवं प्रवीण के वार्तालाप के माध्यम से इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है। 'गरीबनबाज़' शीर्षक कहानी में व्यक्ति, संस्था, पुलिस, प्रशासन एवं राजनीति में व्याप्त छद्म रूप को उजागर किया गया है। कथाकार की बहुज्ञता को अभिव्यंजित करती 'नौ बिंदुओं का खेल' शीर्षक कहानी में एक साथ ज्योतिष, गणित, अंकज्योतिष विज्ञान, मनोविज्ञान के सिद्धांतों की अभिव्यक्ति हुई है। इस कहानी को पढ़ने से वैज्ञानिक रोमांस की अनुभूति का भ्रम हो जाता है। कथाकार ने अपने वर्णन कौशल से ज्ञान की इन रश्मियों को विकीर्ण कर एक अद्भुत कहानी की रचना की है। 'सतह पर तैरती उदासी' शीर्षक कहानी में मिलों के बंद होने पर उत्पन्न बेरोजगारी की स्थिति से जूझते मिल कर्मियों के दर्द एवं मालिकों के व्यवहार की अभिव्यक्ति हुई है। 'रेस्ताराँ में दोपहर' कहानी में युवाओं के सामूहिक आनंदोल्लास का वर्णन हुआ है। जैसे शहर–बाज़ारों में तरह–तरह की दुकानें होती हैं वैसे ही लेखक बनाने के नाम पर लेखकों के शोषण करने वालों की भी दुकानें सजी होती हैं। 'लेखक बनाने वाले' शीर्षक कहानी में इसी सच को उजागर किया गया है। आज के समय में बड़े–बड़े साहित्यकार नए लेखकों को दिकभ्रमित कर उनका शोषण करते हैं। इस कहानी में यथार्थ भी है और व्यंग्य भी 'रामकुमार के जीवन का एक दिन' कहानी में ज्ञान–विज्ञान और मनोविज्ञान से संबधित तथ्यों एवं पर्यावरण, परिवेश की स्थिति की अभिव्यक्ति हुई है। सात विभिन्न रंगों के रंग में रंगी सप्तरंगी कहानियों का यह संकलन कथाकार की बहुज्ञता का परिचय तो देता ही है,पाठक को भी अपने रंगों से सराबोर कर देता है।

'शह और मात' मंजूश्री का शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित दूसरा कहानी संग्रह है। इसमें बारह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की शीर्षकनामा पहली कहानी 'शह और मात' में व्यवस्था के खिलाफ होने वाली हड़तालों के दुष्परिणामों का वर्णन किया गया है। कहानी में जनार्दन का बढ़ता हुआ कद छोटे

मालिक मुन्ना सिंह के लिए ख़तरा उत्पन्न करने वाला लग रहा था। उसको प्रभावहीन करने के लिए मुन्ना सिंह जाल बिछाता है और जनार्दन सिंह को मोहरा बनाकर ऐसी चाल चलता है कि जनार्दन सिंह उसमें फँसकर मात हो जाता है। कहानी का कथ्य कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करता है। 'एक नई सुबह' शीर्षक कहानी में विवाह की आयु सीमा पार कर जाने वाली प्रिया दो बच्चों, अंकजा और प्रणव, वाले विधुर अविनाश से विवाह करती है। प्रणव मंद बुद्धि का बालक है और पंकजा प्रिया को माँ के रूप में स्वीकार नहीं कर समस्या खड़ी कर देती है। फिर भी बड़े बच्चों के साथ प्रिया और अविनाश के दांपत्य जीवन में संतुलन और सामंजस्य रहता है। 'आओ हमरी सोन चिरैया..... उड़ जाओ आकाश' शीर्षक कहानी में दादी और पोती के हास्य–विनोदी एवं परिहासपूर्ण रिश्ते की मनोरंजक अभिव्यक्ति हुई है। दादी अपनी पोती को पचास वर्ष पूर्व की उस जिंदगी में विचरण कराती है, जहाँ उसे एक छोटा सा आकाश मिला था, जिसमें वह खुशीपूर्वक विचरण करती थी। 'शीशों की कैद में' शीर्षक कहानी में शिकागो जैसी खुशहाल जगह में भी शुभांगी के जीवन के अकेलेपन के दंश की अभिव्यक्ति हुई है। 'गिद्ध' शीर्षक कहानी में वैसे पुरुष चरित्रों का उल्लेख हुआ है, जिनकी दृष्टि नारी देह पर गिद्ध की तरह टिकी रहती है। 'गिन्नी का बस्ता' शीर्षक कहानी में बचपन की स्मृतियों का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है, जिसमें पाठक स्वयं अपने बचपन की सुनहरी यादों में खो जाता है। 'महाकुंभ' शीर्षक कहानी में अस्पताल की दुनिया में जिंदगी और मौत के बीच झूलते मनुष्यों की स्थितियों के वर्णन के माध्यम से जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है, तो 'गुत्थियाँ' शीर्षक कहानी में रुग्णालय में आए मानसिक रोगियों की गुत्थियों का उल्लेख हुआ है। 'मुट्ठी में बंद जिंदगी' मजहब के नाम पर गुमराह किशोरों की कहानी है। 'चौड़ी होती दरारें' कहानी में हिंदू–मुस्लिम के बीच बढ़ते वैमनस्य की अभिव्यक्ति हुई है। कहानी में आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य का वर्णन हुआ है। 'गिरगिटी चेहरे' शीर्षक कहानी में जॉब की तलाश में भटकते तीस साल की आयु के एक बेरोजगार युवक के चिंतन के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि आज हर आदमी के चेहरे पर मुखौटे लगे होते हैं, जो गिरगिट की तरह अपने चेहरे का रंग बदलते नजर आते हैं। 'आतिश–ए–चिनार' एक असफल प्रेम की कहानी है। इसमें मजहब की ऊँची होती दीवार के कारण प्रेम करने वालों का मिलन संभव नहीं हो पाता है। संकलन की कहानियों में मानव मन की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई है। कहानियों की रचना सरल, सहज और बोधगम्य भाषा में हुई है।

समीक्ष्य वर्ष 2021 में नीलम कुलश्रेष्ठ का कहानी संग्रह 'तर्नेत्तर ने रे अमे मेड़े ग्याता' वनिका पब्लिकेशन, बिजनौर से प्रकाशित हुआ है। इसमें बारह कहानियाँ संकलित हैं। गुजरात की पृष्ठभूमि पर लिखी गई इन कहानियों में गुजराती जन–जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है। संकलन की पहली कहानी 'गांधी की स्मृति' में यह स्पष्ट किया गया है कि राजनीति में अपने फायदे के लिए तो गांधी जी का इस्तेमाल किया जाता है, किंतु उनकी विचारधारा का अनुसरण नहीं किया जाता है। इसलिए आज गांधी जी मंच, अखबार और फोटो चित्रों तक ही सीमित होकर रह गए हैं। 'तू पन कहाँ जाएगी' कचरा बीनने वाली सामान्य औरतों की कहानी है, जिनका शोषण उनके पुरुषों के साथ–साथ सारे समाज के द्वारा होता है। उनके प्रति समाज के लोगों की दृष्टि संवेदनहीन होती है, जबकि वे भी महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। 'जगत बा' गाँव में रहने वाली एक अशिक्षित महिला सरपंच की कहानी है, जो अशिक्षित होते हुए भी गाँव की खुशहाली के लिए शिक्षा का प्रचार करती है एवं सड़क निर्माण के लिए पहल करती है। 'रेस्क्यू' शीर्षक कहानी में डैम से अचानक पानी छोड़ दिए जाने के कारण होने वाली जनहानि पर प्रश्न उठाया गया है। शीर्षकनामा 'तर्नेत्तर ने रे अमे मेड़े ग्याता' कहानी में आदिवासियों की सांस्कृतिक विशेषताओं की झाँकी प्रस्तुत की गई है। संकलन की अन्य कहानियाँ 'सफाई', 'छना..क', 'रिले रेस', 'आप ऊपर ही बिराजिए', 'झुकी हुई फूलों भरी डाल' आदि में लोक जीवन की अभिव्यक्ति हुई है। इनमें गुजरात की खूबियों तथा व्यवस्था की खामियों की अभिव्यक्ति हुई है। इस वर्ष नीलम कुलश्रेष्ठ का एक और कहानी संग्रह 'हरे स्कर्ट वाले पेड़ों के तले' शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित हुआ है। इसमें दस कहानियाँ– 'पकड़कर चलो तो', 'दीव के तट पर', 'कसकता असोनिया', 'तीस बरस पहले की पदचाप', 'बस एक अजूबा', 'आर्तनाद','तोड़','अल्युमनी मीट', 'जीवन/शट डाउन' तथा 'हरे पेड़ों वाले स्कर्ट के तले' संकलित हैं। संकलन की इन कहानियों में जन–जीवन की सामान्य घटनाओं की झाँकी प्रस्तुत

की गई है। सामान्य–सी विषय वस्तु पर महत्वपूर्ण, रोचक और ज्ञानवर्धक कहानियों की रचना हुई है।

'रज्जो मिस्त्री' प्रज्ञा का तीसरा कहानी संग्रह है। यह शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित हुआ है। इसमें दस कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की कहानियों के संबंध में कथाकार लिखती हैं– "रज्जो मिस्त्री संग्रह में स्त्री के जीवन के विविध रूप आप पाएँगे। इन कहानियों की स्त्री एक नहीं है, ये शहरी, ग्रामीण और कस्बाई स्त्रियाँ हैं। इनकी वर्गीय छवियाँ भी एक–सी नहीं हैं, इसलिए संघर्ष और चुनौतियाँ भी भिन्न हैं।" संग्रह की सभी दसों कहानियों में स्त्री पात्रों की ही प्रमुखता है। इन्हीं स्त्री पात्रों के जीवन संघर्ष को रूपायित किया गया है।

शीर्षकनामा 'रज्जो मिस्त्री' एक संघर्षरत स्त्री रज्जो की कहानी है, जो पुरुषों की तरह मिस्त्री के काम में दक्ष है और मिस्त्री का काम करती है। ठेकेदार रज्जो के श्रम का अपमान करता है, किंतु वह अपनी दक्षता एवं परिश्रम से ठेकेदार का मुँह बंद कर देती है। इस कहानी में कथाकार ने स्त्री श्रम को भी पुरुष श्रम के बराबर समझे जाने की वकालत की है। 'धर्राख अपनी धरमशाला' शीर्षक कहानी में भी घरेलू स्त्री–श्रमिक की सेवाओं के लिए उचित पारिश्रमिक प्राप्ति के लिए संघर्षरत नारी अमृता का चित्रण हुआ है। वह अपनी सेवाओं के लिए उचित पारिश्रमिक नहीं दिए जाने का विरोध करती है। 'मौसमों की करवट' शीर्षक कहानी में भी संघर्षशील नारी का चित्रण हुआ है। कथानायिका संजू न केवल पति के उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष करती है, बल्कि बच्चों के अधिकार के लिए एवं माता–पिता की रूढ़िवादी सोच के विरुद्ध भी संघर्ष करती है।

पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियाँ प्रायः विवश होती हैं। 'तस्वीर का सच' शीर्षक कहानी की राजी दीदी और 'फ्रेम' कहानी की राखी ऐसी ही स्त्री पात्र हैं, जिनकी आज़ाद मानसिकता पर चतुर्दिक पहरे लगे होते हैं। 'ईमेज' शीर्षक कहानी में अंतर्विरोधों के बीच स्त्री चरित्र की दृढ़ता एवं राजनीति के क्षेत्र में एक स्त्री की महत्वाकांक्षा की अभिव्यक्ति रुपस दी के माध्यम से हुई है। साधारणतः यह देखा जाता है कि स्त्री के संघर्ष में पुरुष उसका विरोध करता है, अगर नहीं तो तटस्थ रहता है। किंतु संकलन की 'परवाज़' शीर्षक कहानी में इसके विपरीत खुशबू के संघर्ष में उसका सौतेला विकलांग पिता पूर्णरूपेण उसका साथ देता है। पिता की सहायता से ही खुशबू अपने उद्देश्य की सिद्धि में सफल होती है। 'पाप, तर्क और प्रायश्चित' शीर्षक कहानी में लव, जिहाद और धार्मिक संकीर्णता के कारण एक चंचल, चुलबुली और सब तरह से समर्थ लड़की मीनू को उसकी इच्छाओं के विरुद्ध, दीक्षा दिलाई जाती है। 'उलझती यादों के रेशम' शीर्षक प्रतीकात्मक कहानी में समय परिवर्तन के दौर में वृद्ध लोगों के अचानक गायब हो जाने पर चिंता व्यक्त की गई है। 'स्याह घेरे' शीर्षक कहानी में पत्रकार अनुभा चौधरी के माध्यम से अभिव्यक्ति के संकट को उजागर किया गया है, तो 'बतकुच्चन' शीर्षक कहानी में स्त्रियोचित त्याग एवं संबंध निर्वाह की कर्तव्य भावना की अभिव्यक्ति हुई है।

संकलन की कहानियों के पर्यवेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि इनमें स्त्री चरित्र के उत्कर्षापकर्ष का वर्णन हुआ है। सरल भाषा में लिखी इन कहानियों में बिंबों एवं प्रतीकों का बहुल प्रयोग हुआ है।

'अपनी सी रंग दीन्ही रे' शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित सपना सिंह का चौथा कहानी संग्रह है। इसमें सात कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की शीर्षकनामा पहली 'कहानी अपनी सी रंग दीन्हीं रे' में ठाकुर घराने की एक सशक्त, दृढ़ चरित्र और निष्ठावती वृद्धा सुचि बुआ के दीर्घ पारिवारिक जीवन में होने वाले उतार–चढ़ाव, दुःख–दर्द आदि का वर्णन हुआ है। इसमें सुचि बुआ के रूप में एक दृढ़ निश्चयी और आत्मनिर्भर नारी का चित्रण किया गया है। वह अपने पति द्वारा लगाई गई झूठी लाँछना पर उसे छोड़कर अपना अलग अस्तित्व कायम करती है और अंत तक उसका निर्वाह करती है। पति का घर औरत का अपना घर होता है, किंतु एक बार उस चौखट को लाँघ जाने के बाद उसमें पुनर्प्रवेश संभव नहीं होता है। 'गटई के घेंघ' शीर्षक कहानी में इसी सच को सरोज के माध्यम से उजागर किया गया है। सरोज अपने पति–पुत्र और भरे, पूरे परिवार को छोड़कर एक रेलवे कर्मचारी शादीशुदा कन्हैया के प्रेम में फँसकर उसकी पत्नी सुधा की अनुपस्थिति में उसके क्वार्टर में चली आती है। इस दर्द से पीड़ित सुधा को उसका अनुभवी ससुर उसे यह सीख देकर कि– "कन्हैया कुछु कहे, बोले, तुमको लौटना नहीं है। जी कड़ा करके जाओ, लड़ना पड़े, लड़ लियो, रोवे पड़े रो लियो, मिन्नत करनी पड़े, पैरों गिरना पड़े, सब करना, बस्स लौटना नहीं बच्ची", कन्हैया के पास भेजता है। सुधा कन्हैया के पास

जाती है, संघर्ष करती है और अपना लक्ष्य हासिल करती है। हार कर सरोज वहाँ से चली जाती है। किंतु तब तक उसके बच्चे बड़े हो जाते हैं, जो उसे स्वीकार नहीं करते हैं। अंत में वह पुनः कन्हैया के घर सुधा के लिए गटई के घेंघ बनकर उसके पास आ जाती है। 'पवित्रा' त्रिया चरित्र का उदघाटन करती घर–घर काम करने वाली मेड पवित्रा की कहानी है। 'दुधाः' नारी मनोदशाओं का चित्रण करने वाली एक वर्णनात्मक कहानी है। इसमें एक लंबे संयुक्त परिवार में उत्सव के अवसर पर घटने वाली घटनाओं का यथातथ्य चित्रण हुआ है। प्राचीन भारतीय गाँवों में भूत–प्रेतों के अस्तित्व पर विश्वास किया जाता था। यह विश्वास कमोबेश आज भी विद्यमान है। 'पत्नी का भूत' ऐसी ही कहानी है। 'एक नई कशमकश' नारी मन की व्यथा कथा है। कथाकार ने मृणाल के चिंतन के माध्यम से ढेर सारी स्त्रियोचित तथ्यों का खुलासा किया है। मृणाल को एक बेटी है। वह दूसरा बच्चा नहीं चाहती है। इस चिंतन प्रधान कहानी में मृणाल के चिंतन के माध्यम से समाज में बहु संतान, एक संतान, एक बेटी या एक बेटा के संबंध में होने वाली अटकलबाजियों का खुलासा हुआ है। कथाकार का नारी विषयक चिंतन अद्भुत है– चाहे वह सेक्स संबंधी हो, बीमारी संबंधी हो, स्त्री के गर्भावस्था का हो इन सबका खुलासा इस कहानी में एक स्त्री विशेषज्ञ सर्जन के रूप में किया है। संकलन की अंतिम कहानी 'बहुत से कुछ ज्यादा' जुलॉजी विभाग की प्राध्यापिका, तलाकशुदा सुरेखा शर्मा की कहानी है, जिसकी दिनचर्या और जिसके आत्मचिंतन को व्यक्त किया गया है। इस कहानी में नारी पात्रों की गहमागहमी के बीच नारीगत प्रवृत्तियों, उनके चिंतन एवं बहुत हद तक उनके क्रियाकलापों का वर्णन हुआ है संकलन की कहानियों में जीवन जगत की अलग–अलग छवियों को उद्भाषित करती ये नारियाँ समाज से उठाई गई हैं, जो आम आदमी की संवेदनाओं, व्यवहारों एवं जीवन जीने की शैलियों को व्यक्त करती हैं।

'द–देह, दरद और दिल' शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित विभा रानी का छठा कहानी संग्रह है। इसमें ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की पहली कहानी 'पीर पराई' प्रतीकात्मक कहानी है। एक हिरनी के पुत्र शोक के आलोक में राम जन्म से लेकर राम वन गमन तक की स्थितियों का वर्णन करते हुए कथाकार ने हिरनी के पुत्र शोक, कौशल्या के पुत्र वियोग और हिरनी तथा कौशल्या के सम्मिलित पुत्र वियोग के कारण धरती के दर्द की अभिव्यक्ति की है। संपूर्ण कहानी में प्रसंगानुकूल पदों, चौपाईयों एवं गीतों का प्रयोग हुआ है। '11 से 13 के बीच' शीर्षक कहानी में देश में होने वाले दंगों को केंद्र में रखकर नवीला के चिंतन के माध्यम से आतंकवादी गतिविधियों का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। 'मीडियम वेव दो हज़ार...पर...!' शीर्षक कहानी में आकाशवाणी केंद्र पर होने वाले प्रायः प्रत्येक स्थितियों, परिस्थितियों, घटनाओं एवं गतिविधियों के आँखों देखे हाल का वर्णन हुआ है। केंद्र में आई नई उद्घोषिका अथवा काम करने वाली महिला कामगारों के साथ होने वाली ज्यादतियों को भी उकेरा गया है। कहानी का अंत इस बात का उद्घाटन करता है। 'कहो डॉक्टर, ऐसा क्यों?' आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई एक मरणासन्न रोगी की कहानी है, जिसे एक डॉक्टर लापरवाही से एचआईवी पोजिटिव संक्रमित खून चढ़ा देता है,जिससे उसकी मौत होने वाली है। वह मरने से पहले डॉक्टर को हिदायत देती है कि वह अपने पेशे के प्रति लापरवाही नहीं बरते, अगर कोई जिद्दी मरीज उस पर केस– मुकदमा कर उसे सज़ा दिला देगा तब उसे भी जान की भीख माँगनी पड़ेगी, इस कहानी में कथावाचिका एक नारी के संपूर्ण जीवन चक्र का वर्णन प्रस्तुत करती है। 'दिल चाहता है !' पत्रात्मक शैली में लिखी गई कहानी है। इसमें एक तलाकशुदा औरत के दर्द की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। 'अभिनेत्रियाँ' बिना किसी कथावस्तु के प्रवाहमयी भाषा में लिखी गई राजनीति प्रेरित कहानी है। इसमें एक राजनीतिज्ञ, एक कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारी और एक मेड के जीवन की रोजमर्रा की कहानी की अभिव्यक्ति हुई है। 'लाल बिंदी' मनोविश्लेषणात्मक कहानी है। इसमें भावों की कमनीयता, कल्पना की उड़ान एवं तथ्यों का संतुलित समायोजन हुआ है। राधारमण बाबू की दायित्व भरी जिंदगी में प्यार और प्रेम की संजीवनी का प्रवाह उनके जीवन को रसमय एवं कहानी को रोचक बना देता है। कहानी में गीतों, कविताओं, सुक्तियों की भरमार है। 'अक्से वजूद' पुरुष की इच्छाओं पर चलने को बाध्य एक विवश औरत की कहानी है। कथानायिका नसीबा खुले ख्याल की सुशिक्षिता लड़की है। किंतु एक आईपीएस पति की इच्छाओं, बल्कि आदेशों के समक्ष उसकी सारी इच्छाएँ दमित हो जाती हैं।

'बर्फ के फूल' शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित जया जादवानी का कहानी संग्रह है। इसमें बारह कहानियाँ संकलित हैं। इसका संपादन प्रसिद्ध कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ ने किया है। संकलन की कहानियों को प्रेम कहानियाँ करार देते हुए संपादिका मनीषा कुलश्रेष्ठ लिखती हैं "जया जादवानी की कहानियों में प्रेम के बरस्क प्रकृति का आलंबन अद्‌भुत रूप से अभिव्यक्त हुआ है। प्रेम की सारी सहज कोमलता में प्रकृति की उपस्थिति रहती है"। संकलन की कहानियों के अवगाहन से यह स्पष्ट होता है कि इन कहानियों में किसी न किसी रूप से प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है।————कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं परोक्ष और कहीं प्रेमाभास मात्र, आलोचक यह मानते हैं कि सफल प्रेम कहानी सिर्फ वह नहीं होती, जो विवाह तक पहुँचकर परिणति को प्राप्त कर ले, बल्कि सफल प्रेम कहानी में असफल प्रेम का होना भी अनिवार्य तत्व है। संकलन की अधिकांश कहानियों में प्रायः इसी तथ्य की अभिव्यक्ति हुई है। 'मेरी तस्वीर आधी रह गई है' एक अधूरे प्रेम की कहानी है। इसमें प्रेमी प्रेमिका मिलते हैं, साथ–साथ चलते बतियाते हैं, पर मिलते नहीं हैं। 'हम सफर' कहानी में दो विवाहार्थियों के बीच लंबी वार्ता होती तो है किंतु उनकी सहमति, असहमति का संकेत नहीं मिलता है। इसमें भारतीय, अमरीकन एवं अन्य देशों की संस्कृतियों का तुलनात्मक विवेचन हुआ है। 'इसे ऐसा ही रहने दो' प्रेम की कहानी है। इसमें शिरीन नाम की एक छात्रा एक प्रोफ़ेसर से प्रेम कर बैठती है। किंतु जब उसे ज्ञात होता है कि प्रोफ़ेसर शादीशुदा व्यक्ति है तो उसे निराशा होती है। 'उससे पूछो' कहानी में भी प्रेमाभास का चित्रण हुआ है। प्रसिद्ध कवि एवं आलोचक संजय मूर्ति से कथावाचिका की लंबी वार्ता का वर्णन हुआ है। 'मितान' शीर्षक कहानी में शिमला की ग्रीन वैली होटल में छतीसगढ़ की लड़की कपिंजला और शेखर एक साहित्यिक गोष्ठी में मिलते हैं, दोनों की लंबी वार्ता के क्रम में जीवन–जगत की सचाईयों, अनुभूतियों का वर्णन होता है,जो किसी अव्यक्त प्रेम का आभास दे जाती है। कुछ कहानियों में सफल प्रेम की भी अधिव्यक्ति हुई है। शीर्षकनामा 'बर्फ के फूल' कहानी में पति शाश्वत पत्नी सहर के साथ अतीत की यादों,घटनाओं के संबंध में मधुर वार्तालाप करता है। संपूर्ण कहानी में प्रेम की अभिव्यक्ति उनके वार्तालाप के द्‌वारा हुई है। 'सिर्फ एक दिन' कहानी में गिरीश की कविता की कुछ पंक्तियों को पढ़कर दीवानी बनी ऋतु की गिरीश के साथ एक दिन व्यतीत करने की अनुभूतियों, मनोगत भावों और दिल में उठते प्रेम की लहरियों का वर्णन बड़े ही रोमांचक ढंग से हुआ है। 'घाट' शीर्षक कहानी में लोक–परलोक, जीवन–मृत्यु और पुनर्जन्म की चर्चा हुई है। यह कहानी कम, दर्शन ज्यादा है। कोई कथ्य या कथावस्तु विहीन 'आखिरी बार से पहले' शीर्षक कहानी पाठक को कपोल कल्पित दुनिया में भटकाती–भरमाती चलती है और कहानी का अंत हो जाता है। नवीन शैली में लिखी संकलन की इन कहानियों में कथोपकथन का आधिक्य,कल्पना की उड़ान, फंतासी और भाषा में प्रवाह है,जो पाठकों को बहाए चलता है। किंतु अंग्रेजी भाषा के शब्दों, वाक्यों के अत्यधिक प्रयोग से कहानियाँ भाषा बोझिल हो गई हैं।

'कुहासा छँट गया' अमरीका की धरती पर भारतीय साहित्य और संस्कृति की अलख जगाने वाली ममता त्यागी का कहानी संग्रह है। यह शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित हुआ है। इसमें ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की इन कहानियों में किसी न किसी तरह से कुहासा ही छँटता है। कहीं माता–पिता के मन का कुहासा छँटता है, तो कहीं दो प्रेम करने वालों के बीच का कुहासा, तो कहीं दो दोस्तों के बीच का कुहासा, तो कहीं पिता और पुत्री के बीच का कुहासा छँटता है और वे मिलन का सुख सहेजते–भोगते हैं। शीर्षकनामा संकलन की पहली कहानी 'कुहासा छँट गया' कृतघ्न संतति की कहानी है। इसमें श्याम तिवारी और रमा दंपत्ति मेहनत करके अपने बेटे मधुर को डॉक्टर बनाते हैं। किंतु जब वे वृद्‌धावस्था में मधुर के पास रहने अमरीका जाते हैं तो वह उनकी अधोगति कर देता है। शाकाहारी दंपत्ति की परवाह किए बिना मधुर की पत्नी पराग मांसाहारी भोजन पकाती है। शीघ्रता से अमरीका से लौटकर जब वे अपने घर आते हैं और अपनी सारी जायदाद को बेचकर ट्रस्ट बनाने का निर्णय लेते हैं तो उन्हें लगता है– "मानो सारा कुहासा छँट गया और एक नई रोशनी उनका स्वागत करने को आतुर हो रही है।" 'लॉकेट' अधूरे प्रेम की मार्मिक कहानी है। माधुरी और सूरज एक दूसरे से प्रेम करते हैं, उनके बीच विवाह का रिश्ता भी तय हो चुका होता है, किंतु सूरज मुंबई चला जाता है और फ़िल्मी रंगीनियों में खो जाता है। माधुरी अनब्याही रहकर सूरज के नाम का लॉकेट पहनकर एक स्कूल में अध्यापनरत होकर जिंदगी गुजारती है।

किंतु वर्षों बाद उसके स्कूल के फंक्शन में सूरज एक फ़िल्मी कलाकार के रूप में उपस्थित होकर उसकी तंद्रा भंग कर जाता है। मर्माहत माधुरी सूरज के नाम का लॉकेट उसे सौंपकर चिंतामुक्त हो जाती है, जैसे उसके भीतर का कोई कुहासा छँट गया हो। 'पुनर्जन्म' शीर्षक कहानी में परिस्थितियों और घटनाओं का मिलान बड़े ही रहस्यात्मक ढंग से हुआ है। हरदीप अपने पुत्र मनिंदर को जन्म के बाद ही अपनी निःसंतान जेठानी को गोद दे देती है, जिसे लेकर वह कहीं दूर चली जाती है। वर्षों बाद हरविंदर की पुत्री वानी की पुत्री परी कैंसरग्रस्त हो जाती है, जिसके इलाज के लिए आया हुआ डॉक्टर हरदीप हरविंदर का ही गोद दिया हुआ पुत्र होता है। हास्पिटल में दोनों की अप्रत्याशित मुलाक़ात होती है। हरविंदर इसे अपना पुनर्जन्म कहता है। 'तिरस्कार की भरपाई' शीर्षक कहानी में दहेज़ के कारण जब रेणु का संबंध अमीत से टूट जाता है तो वह टूटती नहीं है, बल्कि एक सशक्त नारी की तरह अपने पैरों पर खड़ी होती है। हिमाचल के एक छोटे से गाँव में स्कूल का संचालन करती है। सरकारी अफसर के रूप में स्कूल की जाँच करने आया अमीत रेणु के सम्माननीय जीवन को देखकर लज्जित हो जाता है। वह अनुदान के रूप में एक लाख रुपए का चेक देकर चला जाता है। रेणु इसे तिरस्कार की भरपाई मानती है। 'ममता की कशिश' मातृत्व की कहानी है। इसमें एक अनजानी माँ को एक अनजाना पुत्र अपना खून देकर जैसे जन्मदात्री जननी का कर्ज चुकाता है। स्त्री और पुरुष का एकांतिक साहचर्य हमेशा वासना पूर्ति का प्रतीक नहीं होता है, बल्कि वह संबल बनकर जीवन में गतिशीलता उत्पन्न करता है। 'संबल' शीर्षक कहानी में अमरीका के एकांतिक जीवन में सुगंध के लिए नवीन जी का साहचर्य उसके जीने का संबल बन जाता है। नवीन जी की प्रेरणा से सुगंध के भीतर की सूख गई कविता की स्रोतस्विनी का प्रवाह फूट पड़ता है। 'और वह लौट ही आया' अनूठी कथावस्तु पर लिखी गई अनूठी कहानी है। इसमें प्रेम, प्रेम की पीड़ा, मातृत्व, सरोगेट मदर की मिली–जुली स्थितियों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। 'ब्रांडेड कपड़े' दो हमजोलियों– कृति और नलिनी की कहानी है। कृति सादा जीवन उच्च विचार की हिमायती है, वहीं नलिनी उसके विपरीत ब्रांडेड कपड़ों, ब्रांडेड वस्तुओं के उपयोग की हिमायती दिखावापरस्त लड़की है। किंतु यह दिखावापन नलिनी को पति से अलग करवा देता है और उसका बोझ उसे इस मोड़ पर खड़ा कर देता है कि होटल के बिल के भुगतान के पैसे भी उसके पास नहीं रहते हैं। मौका–ए–वारदात पर कृति उसे मिल जाती है और वह उसकी समस्या का समाधान करती है। नलिनी की आँखें खुल जाती हैं और पाश्चाताप के आँसू में उसका सारा अहम बह जाता है। 'पुनर्मिलन' और 'अमावास का चाँद' दो घनिष्ठ मित्रों के मिलन की कहानियाँ हैं। 'पुनर्मिलन' में बचपन के दो दोस्त शिवम और परम का आकस्मिक मिलन होता है। जब शिवम डॉक्टर बनकर मनोरोगियों के अस्पताल में रोगियों की जाँच हेतु जाता है तो वहाँ उसकी मुलाक़ात मनोरोगी के रूप में यातना झेल रहे बाल मित्र परम से होती है। 'अमावास का चाँद' में आठवीं कक्षा के विद्यार्थी रहे समीर और अलका का चालीस वर्षों के बाद आकस्मिक मिलन अमरीका के एक समारोह में होता है, जहाँ अलका मंच संचालिका होती है और समीर एक प्रतिष्ठित लेखक प्रोफ़ेसर के रूप में सम्मानित होता है। संकलन की अंतिम 'पितृऋण' उस पिता की कहानी है, जो अपनी नशाखोरी के कारण अपनी पत्नी, पुत्री और अपने पुत्र से बिछुड़ जाता है। अपने कुकर्मों की सज़ा जेल में रहकर भुगतता है और उसी स्थिति में मृत्यु को भी प्राप्त करता है। पिता के कुकृत्यों को जानती हुई भी उसकी पुत्री नाशा, पत्नी और पुत्र से मिलने की उसकी अंतिम इच्छा को पूर्ण कर जैसे पितृऋण चुकाती है। संकलन की सभी कहानियों में जिज्ञासा और कौतुहल का भाव भरा है।

'कोई खुशबू उदास करती है' नीलिमा शर्मा की ग्यारह कहानियों का संकलन, शिवना प्रकाशन, सीहोर से प्रकाशित पहला कहानी संग्रह है। जैसे कोयले के खादान के गर्भ में हीरा छिपा होता है, सागर के अंतस्तल में मोती छिपा होता है, वैसे ही नीलिमा शर्मा की कहानियों के वर्णनों, घटनाओं और चिंताओं के मध्य में कहानी की कथावस्तु अनुस्यूत होती है। चाहे 'उत्सव' हो, 'इत्ती सी खुशी' हो, 'उधार प्रेम की कैंची' हो या शीर्षकनामा 'कोई खुशबू उदास करती है' हो इन कहानियों में चुटकी भर धूप की तरह वर्णनों के बीच कथावस्तु छिपी है।

संकलन की पहली 'टुकडा.–जिंदगी' शीर्षक कहानी में कथानायिका उर्वशी को अपनी बहन के घर दुबई से दिल्ली लौटते समय भारत में फैले कोरोना के कारण दिल्ली एअरपोर्ट पर चौदह दिनों के लिए

क्वारंटाईन किया जाता है। चौदह दिनों का यह एकांतिक जीवन उसके लिए दुखदाई हो जाता है। इस अवस्था में वह अपने घर के हाईफाई से जुड़े कैमरे से अपने घर का निरीक्षण करती है, जहाँ उसकी मेड नसरीन उसकी अनुपस्थिति में नित्य–प्रति उसके कपड़े पहनकर नृत्य करती मस्त दिखती है। उसे देखकर उर्वशी भी अपने एकांतिक जीवन को ज़िंदादिली के साथ व्यतीत कर लेती है। उर्वशी नसरीन के इस व्यवहार पर रुष्ट नहीं होती है, बल्कि खुश होकर उत्साहपूर्वक उससे कहती है। ''नसरीन, माँगो तुम जो चाहती हो, आज मैं तुमको वह सब दूगी।'' भारतीय परिवार व्यवस्था में युग–युगांतर से बेटे और बेटी के बीच भेद की भावना चली आ रही है, यह सोचकर कि बेटी पराई संपत्ति होती है और बेटे से वंश की वृद्धि होती है। संकलन की 'कोई रिश्ता ना होगा तब' कहानी में इसी सत्य को सुमन के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। 'उत्सव' शीर्षक कहानी में खजुरी अंकल की मृत्यु पर उपस्थित परिवार के सारे सदस्यों के समक्ष कथानायिका शीना पंद्रह साल पूर्व की घटना का जिक्र कर सबको स्तब्ध कर देती है और फ्यूनरल पर चलने के लिए फैशन के कपड़े पहनती है। विरोध करने पर वह अपने दर्द का खुलासा करती है और आज वह उसकी मौत का उत्सव देखना चाहती है। शीर्षकनामा 'कोई खुशबू उदास कर जाती है' दो प्रेमियों ईशीता और शेखर के अधूरे,बल्कि एकतरफा प्रेम की कहानी है। अपने भाई की शादी में शेखर भाभी की बहन ईशीता के प्रति आकृष्ट होता है। ईशीता भी शेखर के प्रति आकृष्ट होती है, किंतु किसी ग़लतफ़हमी के कारण ईशीता का ब्याह अभिनव से हो जाता है और शेखर ईशीता के प्रेम में तड़पता ही रह जाता है। यह एक अनूठी प्रेम कहानी है। पुरुष की ज्यादतियों का खामियाजा स्त्री के रूप में पत्नी को झेलना पड़ता है। इस दारुण स्थिति में मायका ही स्त्रियों का सहारा होता है। 'मायका' शीर्षक कहानी में इसी तथ्य की अभिव्यक्ति हुई है। पति के व्यवहार से तंग आकर जब रेखा मायके आ जाती है तो उसकी दर्द भरी कहानी सुनकर निशा उसे सांत्वना देती हुई कहती है "दीदी यह घर उतना ही आपका है जितना आपके भाई और मेरा। आज से आप पुरे आत्मसम्मान के साथ यहीं रहेंगीं, जब तक जीजा जी आपका हक़ आपको वापस नहीं करते, आप वापस नहीं जाएँगी"। 'इत्ती सी खुशी' संवेदनात्मक कहानी है। पति गुप्ता जी की शुष्कता और रुक्षता से चंचल तितली सी थिरकती मीनू की जिंदगी वीरान हो जाती है। किंतु बाल्यकाल में मेरठ की गली में रहने वाले सुधांशु, जिसे लड़कियाँ शाहरुख कहा करती थी, के आगमन की सूचना पर मीनू के परिवर्तन को देखकर उसके पति गुप्ता जी को अपनी गलतियों का अहसास होता है और वह भी अपने आचरण में परिवर्तन लाता है और मीनू पर अपने प्यार का गागर उड़ेल देता है। पति का बदला हुआ रूप मीनू के जीवन में खुशियाँ भर देता है। 'अंतिमयात्रा और अंतर्यात्रा' अपराधबोध की कहानी है। उत्तम पुरुष में लिखी गई इस कहानी में मेदांता हॉस्पिटल की आईसीयू में जीवन और मौत के बीच संघर्ष करती पत्नी शारदा के समक्ष आत्मचिंतन करते पति की मनोदशा का चित्रण हुआ है। एक दुर्धर्ष अहंकारी पुरुष द्वारा पत्नी को सताए जाने की जितनी भी स्थितियाँ हो सकती हैं, इस कहानी में उन सब का वर्णन हुआ है। अपनी भूलों का अहसास करता हुआ पति पत्नी की मृत्यु पर अपना न केवल अपराध स्वीकारता है, बल्कि पत्नी से क्षमा प्रार्थना भी करता है। 'लम्हों ने खता की' शीर्षक के अनुकूल एक दर्द भरी कहानी है। अपनी अफसर पत्नी मनीषा की उपेक्षा का शिकार मनोज और अपने शराबी पति अनुज के प्यार की प्यासी सरोज एक–दूसरे के निकट आते हैं और उनके बीच प्रेम के साथ–साथ दैहिक संबंध भी स्थापित होता है, जो लंबे अरसे तक चलता रहता है। किंतु जैसा कि कथाकार ने लिखा है, ''अवैध रिश्तों की उम्र चाहे जितनी भी होती है परंतु उनका होना हमेशा दर्द जरूर देता है'', दोनों का दैहिक संपर्क एक दर्दनाक अंत को प्राप्त करता है। अतृप्त प्यार की बुझती प्यास की भित्ति पर खड़ी यह एक दर्दनाक कहानी है। 'मन का कोना' नारी जीवन की त्रासदी की कहानी है। एक औरत गर्भ में आने से जन्म लेने, जीवन धारण करने, कर्म क्षेत्र में प्रवेश करने और जीवनयापन करने तक किस–किस प्रकार का कष्ट झेलती है, क्या–क्या सुनती और सहन करती है, उन सबका सटीक वर्णन हुआ है। यह एक गर्भस्थ बालिका का आत्मकथ्य है। 'आखिर तुम हो कौन?' पुरुष की शंकालु प्रवृत्ति को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानी है। इस कहानी में कविता के पति अविनाश की निराधार शंका से कविता का जीवन दर्दनाक हो जाता है। कहानी का प्रारंभ मार्मिक है किंतु अंत दर्दनाक संकलन की अंतिम कहानी 'उधार प्रेम की कैंची है' प्रेम कहानी है।

लंबे–चौड़े वर्णन, संबंधों के घेरे एवं घटनाओं की गहमागहमी के बीच शीरीं और फहीम के अधूरे प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। संकलन की कहानियों में नारी जीवन की संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हुई है।

'हवेली' बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित उषा राय का पहला कहानी संग्रह है। इसमें, ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की पहली 'एक और सुनामी' शार्षक कहानी में अंतर्जातीय विवाह एवं उससे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण जापान में आए सुनामी के परिप्रेक्ष में हुआ है। कथानायिका प्रियम एक विजातीय लड़के कबीर से विवाह कर लेती है, जिससे उसके परिवार में भूचाल सा उत्पन्न हो जाता है। इस कहानी में जापान में आने वाली सुनामी के हादसे से उत्पन्न विस्फोटक रूप के साथ परिवार में होने वाले विस्फोट का समानांतर एवं साम्य के साथ वर्णन किया गया है। 'डबरे का पानी' शीर्षक कहानी में एक साथ तीन पीढ़ियों पोती, बहू और दादी की अवस्थिति दर्ज की गई है। ससुराल से लौट आई पोती फुलगेनवा पर दादी, जिसे सब देवेन जी कहते हैं, पहले तो खफा हो जाती है किंतु बाद में उसकी स्थिति को समझकर उसे अपने गूंगे प्रेमी मोहन को बुलाने,यह कहते हुए ''जा उसे घर ले आ, फिर मैं सब देख लूँगी'', भेज देती है। इसमें प्रेम एवं ग्रामीण परिवेश की रोमांचक अभिव्यक्ति हुई है। 'गुंजाइशें तो थी मगर' बीते दिनों के चिंतन की कहानी है। इसमें कथानायिका निशा अपनी सहेली से अतीत की घटनाओं का जिक्र करती है। उनकी बातचीत के केंद्र में नीली आँखों वाला मनु नाम का लड़का होता है। जबकि मनु निशा की सहेली के संपर्क में रहता है, विवाह का प्रपोजल वह निशा को देता है, जिसे निशा अपनी सहेली का प्यार समझकर अस्वीकार कर देती है। शीर्षकनामा 'हवेली' कहानी में कथाकार ने हवेली की जर्जर अवस्था के चित्रण के साथ–साथ तत्कालीन जमींदारों की गिरती स्थिति एवं उनके द्वारा किए गए अनाचार, अत्याचार एवं दुराचार का बड़ा ही यथार्थ चित्रण किया है। अतीतकालीन घटनाओं पर आधारित इस कहानी में अंग्रेजों के शासनकाल में देश में पनपते जमींदारों की चाटुकारिता एवं उनके द्वारा अपने अधीनस्थों के शोषण को उजागर किया गया है। पत्नी के समक्ष अपनी नामर्दी छिपाने के लिए पुरुष तरह–तरह के हथकंडे अख्तियार करता है। उन्हीं हथकंडों में से एक अनोखे हथकंडे का अख्तियार 'खेल' शीर्षक कहानी में कार्तिक अपनी पत्नी मुग्धा के साथ अपने बचपन के मित्र सुबोध को उसके करीब लाकर करता है। जब सुबोध के मुखातिब मुग्धा को अपने पति की सच्चाई का पता चलता है, तो वह अपनी कोमलता, विनम्रता और पतिपरायणता को भुलाकर कुछ संकल्प लेती है। कहानी की अंतिम पंक्तियाँ– "यह खेल है पुराना.....बहुत पुराना....न जाने कब से चल रहा है। अब वह इस नए खेल में है" मुग्धा के संकल्प को संकेतित करती है। 'नमक की डली' शीर्षक कहानी में लेस्बियन संबंध की दुखद परिणति का वर्णन कथानायिका रेबिना के माध्यम से किया गया है। इस कहानी में रेबिना के सम लैंगिक प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। 'षष्ठी' पत्रात्मक कहानी है। एक भाभी, पाँच बहनों के बाद छठी होने के कारण जिसका षष्ठी नामकरण किया गया था, अपनी ननद को पत्र लिखकर जीवन जीने, लड़कर अपने अधिकार लेने की सीख देती है। प्रवाहमान भाषा में सिद्धांत वाक्यों से लैस इस कहानी में "चाहे लड़ाई महत्व की हो या हक की, हमें लड़ना ही होगा" शिक्षा दी गई है। 'छप्पनछुरी' सुगना की दर्द भरी कहानी है। अपनी सुंदरता के कारण बाल्यकाल में छप्पनछुरी के उपनाम से जानी जाने वाली सुगना का जीवन दर्दनाक हो जाता है। वह आखिरी दिनों में अपनी दर्दभरी कहानी अपने बचपन की सहेली वनस्थली को सुनाती है। संकलन की अंतिम 'तन चंदन मन हरसिंगार' शीर्षक की तरह ही खुशबू से ओतप्रोत रसमय कहानी है। इसमें कथानायिका संजीवनी की कटु–मधु जीवनचर्या के माध्यम से ग्रामीण जीवन, खेत–खलिहानों और ग्राम विकास की स्थितियों का मार्मिक वर्णन हुआ है। संकलन की 'सिगरेट', 'गोखरू' आदि वर्णनात्मक एवं कल्पनाप्रशूत कहानियाँ हैं। संकलन की कहानियों में भाव, भाषा एवं कल्पना का त्रिवेणी संगम है।

इन कहानी संग्रहों के अतिरिक्त समीक्ष्य वर्ष में अन्य कथाकारों के कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। मनोज कुमार शिव का 'घर वापसी', उषा किरण खान का 'गीली फाँक', डॉ.यमुना वीवी का 'अयाचित अतिथि एवं अन्य कहानियाँ', मीरा कांत का 'ताले में शहर', सीनी वाली का 'गुलाबी नदी की मछलियाँ', गीताश्री का 'वलम कलकत्ता' आदि के नाम उल्लेख्य हैं।

देशभर से प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं में बड़ी संख्या में कहानियों का प्रकाशन होता है। ये कहानियाँ कहानी विधा की समृद्धि एवं परंपरा निर्धारण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। प्रस्तुत है थोड़े में कुछ

कहानियों का विश्लेषण 'हंस' जन चेतना का प्रगतिशील कथा–मासिक है। इसके प्रत्येक अंक में पाँच–छह कहानियाँ होती हैं। दीर्घकायिक कलेवर की इन कहानियों में पारिवारिक,सामाजिक, समसामयिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का पृष्ठप्रेषण होता है। प्रस्तुत है कुछ कहानियों की संक्षिप्त मीमांसा, अजय नावरिया की 'संक्रमण' शीर्षक कहानी में जापान की राजधानी टोक्यो की भव्यता, सुंदरता, वहाँ के रहवासियों की प्रवृत्तियों एवं उनके रहन–सहन का व्यापक वर्णन हुआ है। दलितों की समस्या सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि जापान में भी व्याप्त है। मिलिंद के प्यार में खोई आत्मसमर्पण के लिए तत्पर स्वेता जब मिलिंद के मुख से उसका दलित होना सुनती है तो वह विक्षुब्ध हो जाती है। किंतु बाद में अपने लंबे पत्र में इस संक्रमण के लिए अपने पूर्वजों एवं उनके संस्कारों को दोषी ठहराते हुए भारत लौट रहे मिलिंद से लाईट पर मिलने की अनुमति माँगती है, मिलिंद ओके का मैसेज देकर मानो स्वेता को स्वीकार लेता है। अनिल प्रभा कुमार का 'ईंद्रधनुष का गुम रंग' रंगभेद पर लिखी एक वर्णनात्मक कहानी है। रंगभेद के कारण ही आलीजाह के छोटे भाई कोफी को पुलिस पकड़कर ले जाती है और हिरासत में ही उसकी मृत्यु हो जाती है। कोफी का यही अपराध था कि वह अश्वेत था। इस छोटी–सी थीम पर कथाकार ने कहानी की भव्य इमारत खड़ी कर दी है। रजत रानी मीनू की 'दहेज़ में आए कोरोना में गए' मार्मिक कहानी है। इसमें विक्रम नामक एक ऐसे व्यक्ति की जीवन गाथा का वर्णन हुआ है, जो किसी वस्तु की तरह बहन के साथ दहेज़ के रूप में उसकी ससुराल में भेजा जाता है और जीवनपर्यंत वहीं का होकर रह जाता है। अपनी बहन के घर में रहते हुए तरह–तरह की कठिनाईयों को झेलते हुए कोरोना से संक्रमित होने के दौरान उसकी दर्दनाक मौत हो जाती है। मनोज कुमार की 'शहर में' शीर्षक कहानी में गाँव से दिल्ली शहर आए भुलक्कड़ वृद्ध दीनानाथ की परेशानियों के बीच दिल्ली की व्यस्त जिंदगी, लोगों की मानसिकता एवं बहुमंजिली इमारतों की भव्यता आदि का बड़ा ही सुंदर वर्णन हुआ है। भावना शेखर ने कोरोना जैसे समसामयिक विषय को केंद्र में रखकर 'सोशल डिसटेंटिंग' शीर्षक से मार्मिक कहानी की रचना की है। इस कहानी में कथाकार ने कोरोना काल में उभरती मानवीय संवेदनाओं, महामारी के दौरान मरने वालों के परिजनों की पीड़ा आदि की अभिव्यक्ति की है। संजय कुमार कुंदन की 'डस्टबिन के पीक' शीर्षक कहानी में आज की विषम परिस्थितियों में जीवन जी रहे एक अल्प वेतनभोगी कर्मचारी की अजीबोगरीब स्थिति का वर्णन हुआ है। वैसे कर्मचारी के यथार्थवादी एवं ईमानदार होने की स्थिति में उसके अंतर्मन में चतुर्दिक पसरे भौतिक सुखों की चाहत के द्वंद्व की अभिव्यक्ति हुई है। सामान्य जन–जीवन में किसी बच्चे के गोद लेने का प्रचलन है, राजनीतिक व्यवस्था के तहत गाँव या नगर के गोद लेने की परिपाटी है, किंतु किसी जीव–जंतु के गोद लेने के स्कीम की कल्पना निराली है। अविनाश अमन की 'शेर का अहसास' अनूठी कथावस्तु पर लिखी गई ऐसी ही दिलचस्प एवं रोमांचक कहानी है, जिसमें चिड़ियाखाने की ओर से निकाले गए चिड़ियाखाने के किसी जीव. जंतु को गोद लेने की अनूठी स्कीम का वर्णन हुआ है। हंस के अंकों में प्रकाशित रजनी गुप्ता की 'खंडहर', विनोद साही की 'बाघा बोर्डर',गीताश्री की मत्स्यगंधा', सुषमा गुप्ता की 'मरीचिका की गंध', कैलाश वनवासी की 'दाग अच्छे हैं' आदि कहानियाँ भी मार्मिक एवं रोचक हैं।

'विभोम स्वर' पंकज सुबीर के संपादन में सीहोर, मध्य प्रदेश से प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय स्तर की कथा केंद्रित त्रैमासिकी है। इसमें भारतीय मूल के विदेशी कथाकारों की कहानियाँ भी होती हैं। इसके जनवरी, मार्च 2021 अंक में ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। आधुनिक कहानियों के विकास के दौर में बिना किसी थीम के कहानियाँ लिखने के प्रचलन का तेज़ी से विकास हो रहा है। अनघ शर्मा की 'जहाँ हवाओं की पीठ पर छाले हैं' तथा डॉ. उमा शर्मा की 'फूलों के आलते में रेत की दीवार' ऐसी ही कहानियाँ हैं। शीर्षक के अनुकूल इन कहानियों में बिना किसी कथावस्तु के कल्पना की उड़ान भरते कथाकार किसी अदृश्य लोक में विचरण करते प्रकृति की रम्य–सुरम्य दृश्यावलियों का मनोहारी चित्रण करते हैं। पुष्पा सक्सेना की 'सपने का वादा' अधूरी प्रेम कहानी है। रमेश खत्री की 'देहरी छुआई' चिंतन प्रधान कल्पनाप्रशूत कहानी है। इसमें कथावाचक की बहन कर्णिका के पति की मृत्यु की अप्रत्याशित खबर और कर्णिका की देहरी छुआई के प्रसंग की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। 'बेटियाँ परिवार के लिए अनवांछित संतान होती हैं' जैसी छोटी सी थीम पर लिखी गई नीलिमा शर्मा की 'मन का कोना' एक चिंतनशील कहानी है। जबकि आज भारतीय

समाज में बेटे और बेटी का फर्क लगभग समाप्त हो गया है, बेटी की उपेक्षा करती यह कहानी अप्रासंगिक है। फिर भी कथाकार की कल्पना की उड़ान एवं तथ्यों का समायोजन काबिले तारीफ़ है। अभिज्ञात की 'मुझे विपुला नहीं बनना' वैश्याओं के जीवन पर आधारित कहानी है। गरिमा संजय दुबे की 'महकती मुहब्बतों के मौसम' शीर्षक की तरह ही मुहब्बत की खुशबू से महमह करती एक प्रेम कहानी है। इसमें सुगंधा के प्रति अबीर के एकतरफा प्रेम की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। अर्चना मिश्रा की 'घायल पंखों की उड़ान' बाल्यकाल में बलात्कारित लड़की अनन्या की कहानी है। अंक की अन्य कहानियाँ भी अच्छी और रोचक हैं।

अप्रैल–जून अंक में सात कहानियाँ संकलित हैं। 'भ्रम' कविता शर्मा की नारी विमर्श की कहानी है इसमें कथानायिका मेघना के चिंतन के माध्यम से माँ, सास और जेठानी के रूप में नारी मन की कुत्सा की अभिव्यक्ति हुई है। 'पानी की परत' चौधरी मदन समर की हाई प्रोफाईल कल्चर में पगी जिंदगियों की लंबी कहानी है, जहाँ दांपत्य और वात्सल्य की सारी हदों को पार कर वस्त्र बदलने की तरह जोड़ों में बदलाव फैशन बन गया है। इला सिंह की 'मास्टरनी का जादू मंतर' जाति और धर्म के आडंबर में लिप्त कठोर हृदया ताई के,उसकी नव विवाहित बहू नीरू के व्यवहार पर हृदय परिवर्तन की कहानी है। अंक की अन्य कहानियाँ 'फटा हुआ बस्ता,' 'छतरी' आदि भी अच्छी हैं।

जुलाई–सितंबर अंक में दस कहानियाँ संकलित हैं। अदीति सिंह भदौरिया की 'आखिरी खत' किन्नर के जीवन पर लिखी एक अनूठी कहानी है। जबकि परिवार के सदस्य किन्नर के रूप में जन्मी संतान को अपने से दूर कर दुर्भाग्य के थपेड़े खाने के लिए छोड़ देते हैं,इस कहानी में माँ संध्या किन्नर के रूप में जन्मी दिव्या की हिफाज़त करती है। पति, पुत्र और परिवार से दूर रखकर उसकी परिवरिश करती है और उसे आत्मनिर्भर बनाती है। 'देवता' अरुण अर्णव खरे की दलित विमर्श की कहानी है। इसमें एक दलित ही अपने निहित स्वार्थ के लिए दूसरे दलित के विकास का मार्ग अवरुद्ध कर देता है। विवेक रिझावन की 'उनकी मौत' किस्सागोई की शैली में लिखी एक यथार्थपरक कहानी है। इसमें कथावाचक अपनी जुबानी अपने पिता की कारस्तानियों का वर्णन करता है। प्रज्ञा पांडेय की 'जूठा सेव',कादंबरी मेहता की 'कौन सुने' आदि कहानियाँ भी संकलित हैं। विभोम स्वर के अक्तूबर–दिसंबर अंक में आठ कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई मुरारी गुप्ता की 'कजरी' प्रेम कहानी है। द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश सेना में भर्ती भारतीय सैनिकों की एक टोली का नेतृत्व करने वाले प्रेम सिंह की नवोढ़ा पत्नी कजरी के अनन्य प्रेम की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। जवानों के शहीद होने की सूचना तथा लंबे अरसे तक पति प्रेम सिंह की कोई खबर नहीं मिलने पर भी कजरी विश्वस्त रहती है कि उसका पति अवश्य लौटकर आएगा। कजरी का आत्मविश्वास खंडित नहीं होता है और एक रात को ब्रिटिश फौजी भेष में राम सिंह लौट आता है। 'पत्ते और डालियाँ' चीन की धरती पर भारतीय साहित्य और संस्कृति की अलख जगाने वाली अनिता शर्मा की प्रेम रस में भीगी एक प्रेम कहानी है। 'झड़ते सिर्फ पत्ते हैं डालियाँ झड़ती नहीं' की भित्ति पर खड़ी इस कहानी में चीनी लड़के तावेई के हृदय परिवर्तन को स्पष्ट किया गया है। वह अपनी प्रेमिका 'स्नो' की बेवफाई से टूटकर बिखर जाता है। किंतु अपने जन्म दिन पर लगाए गए पेड़ से सीख लेकर अपने को संयमित करता है और अपनी सहकर्मी 'यू' नामक लड़की से मिलकर नए सिरे से जीवन जीना शुरू करता है। कहानी में यत्र–तत्र चीनी भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। ज्योत्स्ना सिंह की 'नाईंटी नाईन रोजेज' भी एक प्रेम कहानी है। इसमें राजन और इंदिरा तिवारी के कॉलेज के दिनों के बाल प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है,जो कॉलेज के स्थापना दिवस समारोह में मिलने के बाद परिणति प्राप्त करता है। अंक की अन्य कहानियाँ– दर्शना जैन की 'वाईड इफेक्ट', अनिता पाठक की 'पिल्लू', सरस दरबारी की 'मोंटू' आदि भी अच्छी हैं।

शिवकुमार शिव के संपादन में भागलपुर से कथा केंद्रित मासिकी 'किस्सा' का प्रकाशन होता है। इसकी कहानियों में जीवन जगत में व्याप्त समस्याओं, मानवीय संबंधों,पारिवारिक रिश्तों, सामान्य घटनाओं आदि का विश्लेषण होता है। किस्सा के अंकों में कहानियों की संख्या की अधिकता होती है। कुछ कहानियों की संक्षिप्त मीमांसा प्रस्तुत है।

'सास कभी माँ नहीं हो सकती' के आरोप के सामानांतर 'बहू कभी बेटी नहीं बन सकती' की उक्ति को सिद्ध करती प्रेम प्रकाश व्यास की 'मोहभंग' एक अच्छी कहानी है। कहानी के मुख्य पात्र वयोवृद्ध प्रो. बैकुंठ दत्त ग्रोवर जिस ललक और उत्साह को

लेकर अपने बेटे बीरू से मिलकर अपने एकांतिक जीवन को सरस बनाने वर्षों बाद अमरीका जाते हैं, वह दो सप्ताह बाद ही बहू की बातों– "तुम्हारे पापा की क्या प्लानिंग है,कब तक रुकेंगे अभी.....सारे बूढ़े अकेले रहते हैं।....पता है अनन्या और श्रद्धा कितनी बार पूछ चुकी हैं। ग्रेंड पा वापिस कब जा रहे हैं इंडिया.." को सुनकर कपूर गंध की तरह उड़ जाता है और वे यथाशीघ्र अपने घर लौट आते हैं। यह एक यथार्थपरक कहानी है। प्रसिद्ध कथाकार जयनंदन की 'तेरह दिनों की यंत्रणा' पाठक के मन में औत्सुक्य जगाने वाली कहानी है। कहानी की शुरुआत– "जो पैंतालिस वर्षों तक जीवन साथी रही, उसका गुमशुदा हो जाना मर जाने से भी असहनीय, पीड़ादायक और तड़प पैदा करने वाला बन गया था" और अंत– "हम उसे देखकर विस्मित रह गए कि उसके चेहरे पर पश्चाताप के कोई भाव नहीं है। कह रही थी कि चले गए तो क्या हुआ, ट्रेन में घुम रहे थे", बड़ा ही मार्मिक है। पत्नी के गुमशुदा होने और तेरह दिनों के बाद घर लौट आने के बीच की घटनाओं का वर्णन भी बड़ा ही औत्सुक्यपूर्ण है। 'बच्चा' दिनेश प्रताप सिंह की एक मार्वेलस कहानी है। उम्र ढल जाने या विवाह के लंबे अरसे के बाद भी बच्चा नहीं होने पर औरतों में व्याप्त बौखलाहट एवं बच्चे के जन्म पर उत्पन्न औत्सुक्य, आयोजन एवं नेग देने आदि का बड़ा ही रोमांचक वर्णन हुआ है। नारीगत भावों का चित्रण करती यह एक अनूठी कहानी है। कथावाचन की शैली में लिखी मृत्युंजय तिवारी की 'वह कौन थी' एक निम्नवर्गीय चंपा की कहानी है, जो बेटियाँ पैदा करने के कारण अपने पति की यंत्रणा का शिकार होती है। 'औड़म–बौड़म का तिकड़म' रहस्यात्मक कहानी है। इसमें गाँव के मंदिर का पुजारी एक हत्यारा और चोर सिद्ध होता है। इस कहानी में छद्मवेशी बाबाओं की असलियत और पुलिस की तत्परता को उजागर किया गया है। प्रमोद भार्गव की 'पूर्ण बंदी' शीर्षक कहानी में अविवाहित प्रज्ञा और विधुर मिश्रा जी के वार्तालाप के क्रम में भारतीय विवाह प्रक्रिया, कुंवारावस्था में भी गर्भ धारण के औचित्यानौचित्य एवं ढलते उम्र में जीवन साथी की अहमियत का बड़ा ही तर्कपूर्ण विवेचन हुआ है। डॉ. मृदुला शुक्ला की 'दम्मो चली गई' विधवा नारी जीवन की त्रासदी को व्यक्त करती एक दर्द भरी कहानी है। चंद्रकांत राय की 'मटमैला पता' मानसिक अंतर्द्वंद्व की कहानी है। वृद्ध माता–पिता को अकेले गाँव में छोड़कर विदेश चला जाने वाला पुत्र नरेन तीस वर्षों के बाद पत्नी के दबाव पर अपनी पुश्तैनी जायदाद बेचकर पैसे लेने की मन्सा से गाँव तो आता है, किंतु माता– पिता एवं घर की स्थिति को देखकर अपनी बात प्रकट नहीं कर सकता है और यूँ ही लौट जाता है। कहानी का अंत मार्मिक है। इसमें एक पुत्र की मानसिकता एवं एक बहू की खुदगर्जी का वर्णन हुआ है। अजिताभ मिश्रा की 'ये आल इंडिया रेडियो है' कहानी में एक साधारण शिक्षक की अस्त–व्यस्त जिंदगी में पुत्र द्वारा उसकी इच्छाओं पर लगाई गई पाबंदी एवं शिष्य की अनन्य गुरुभक्ति का वर्णन हुआ है।

प्रसिद्ध कथाकार संजीव की 'प्रार्थना' शीर्षक कहानी में अंग दान तथा अंग प्रत्यारोपण की विकसित आधुनिक तकनीक को घटनाग्रस्त आनंद के अंगों को दूसरे व्यक्तियों में ट्रांसप्लांट किए जाने की घटना का वर्णन हुआ है। 'ठाकुर का नया कुआँ' प्रेमचंद की 'ठाकुर का कुआँ' की तर्ज पर लिखी गई महाबीर राजी की कहानी है। ठाकुर का कुआँ में जोखू की पत्नी गंगी वर्जना के कारण ठाकुर के कुएँ से पानी नहीं ले सकती है, किंतु महाबीर राजी की इस कहानी में कॉलोनी के गिरधर बाबू के बंगले में काम करने वाली छोटी दलित बच्ची हीरामणि मालकिन मृणाल की वर्जनाओं के बावजूद बाहर के ट्वायलेट में न जाकर घर के बने ट्वायलेट में ओकी कर मृणाल के दंभ का दलन करती है। यह दलित विमर्श की सार्थक कहानी है। 'सतनाम का नाम सत्य है' राजकुमार सिंह की कहानी है। इसमें समलैंगिकता को उजागर किया गया है। इस कहानी में पुलिस, पत्रकार और डॉक्टर की भूमिका का वर्णन हुआ है।

धीरेंद्र अस्थाना की 'पराधीन' मनोविश्लेषणात्मक कहानी है। प्रेमचंद ने जिस मनोविश्लेषणात्मक कहानी के बीज बोए और जिसे जैनेंद्र कुमार ने वृक्ष का रूप दिया, धीरेंद्र अस्थाना की यह कहानी उसका पुष्पित, पल्लवित रूप है। इसमें राजीव निगम की मानसिकता का चित्रण हुआ है। प्रकाश मनु की 'जंगल हँस रहा है' बाल मनोविज्ञान की कहानी है। इसमें देबू के चिंतन एवं क्रिया कलाप के माध्यम से एक बालक का मनोविश्लेषण हुआ है। गोपाल निर्दोष की 'चल घर चल' कोरोना काल में अचानक महामारी फ़ैल जाने के बाद काम करने के लिए घर से दिल्ली गए मजदूरों के दिल्ली से घर लौटने के क्रम में रास्ते में होने वाली परेशानियों, मजदूरों के साथ होने वाली पुलिसिया

नृशंसता, घर वापसी करने वालों के बीच की दोस्ती एवं मंगरू के घर–परिवार की चिंता आदि का यथार्थपरक चित्रण हुआ है। हरी दिवाकर की 'आकर्षण' प्रेम कहानी है। बैंगन बेचने वाली राधा के प्रति कार्यालय में कार्यरत छोटे बाबू भोलेनाथ का आकर्षण प्रेम में परिणत होता है और राधा की फुसफुसाहट– "यदि तुम मेरे लिए आते रहे हो तो आगे बढ़कर मेरा हाथ थाम क्यों नहीं लेते। लोगों के मुँह बंद क्यों नहीं कर देते? साहस है तो आगे बढ़ो, गाँव के लोग सामने आए तो मैं देख लूँगी", पर प्रेम परिणति को प्राप्त करता है। रूप सिंह चंदेल की 'वर्षों बाद' भी प्रेम कहानी है। इसमें कथानायक सयस और सौदामिनी के युवा प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। चालीस वर्षों के बाद एक हॉस्पिटल में अचानक दोनों की मुलाक़ात होती है, दायित्व मुक्ति की स्थिति में दोनों युवा काल के प्रेम को स्वीकार कर नए सिरे से जीवन जीने का संकल्प लेते हैं। रतन वर्मा की 'कबाब' कृतघ्न संतति की कहानी है। इसमें जीवन भर जिस पुत्र सुजीत की अमरनाथ ने परिवरिश की वही उसकी मौत का कारण बनता है। किंतु पिता अपने ममत्व का त्याग नहीं करता है और पुलिस को अंतिम बयान," नशे की हालत में सीढ़ियों से फिसलकर गिर गया" देकर पुत्र को बरी करा देता है। फिर भी पुत्र के मन में अपराध बोध नहीं होता है। संतोष दीक्षित की नवीन शैली का अवगाहन करती 'काल कथा' कहानी में कहानी विधा को नया आयाम प्रदान किया गया है। खंड–खंड में लिखी इस कहानी में शहर के दो टुकड़ों– उच्चवर्गीय और निम्नवर्गीय वासिंदों, क्रमशः वासुदेव श्रीवास्तव एवं ममता दंपत्ति तथा कृष्णा विंड एवं सुंदरी दंपत्ति, के जीवन क्रम के माध्यम से कोरोना काल की स्थितियों का यथार्थ चित्रण हुआ है। 'और शिलाखंड पिघलने लगा...' पूरन सिंह की अप्रतिम प्यार की अनूठी कहानी है। इसमें पति प्रोफेसर प्रदीप सर के प्यार को बरकरार रखने के लिए पत्नी यशोधरा अपने मातृत्व का सहजता से त्याग कर देती है। यह जानते हुए कि प्रदीप सर विधुर हैं, उनको एक पुत्र भी है, यशोधरा उनसे प्रेम विवाह करती है। किंतु उसके गर्भधारण पर जब वे अपने पुत्र का यशोधरा से दुराव करने लगते हैं तो वह चुपके से एबॉर्शन करा लेती है। 'कजरी' अवधेश प्रीत की पशु प्रेम की अनूठी कहानी है। इसमें फजलू मियाँ और उसकी पत्नी सईदा के कजरी नामक एक गाय के प्रति अटूट प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। भावना शेखर की 'सुअरी' एक वर्णनात्मक किंतु मार्मिक कहानी है। कहानी का प्रारंभ मालती की मृत्यु की खबर पर रमा और देवीदयाल के आर्त होने और चंद्रकांत की फुसफुसाहट– "अरे तेरी सुअरी भाभी" पर सोनू के असमंजस से देवीदयाल की पनियाती आँखों से अंत बड़ा ही मार्मिक है इन दोनों घटनाओं की कड़ी को जोड़ती बीच की घटनाएँ भी दिलचस्प हैं। किस्सा के अंकों में अन्य अनेक कहानियाँ भी प्रकाशित हुई हैं।

दयानंद जायसवाल के संपादन में भागलपुर से प्रकाशित 'सुसंभाव्य' त्रैमासिक पत्रिका है। इसके अप्रैल–जून 2021 अंक में चार कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। मनोरंजन सहाय सक्सेना की 'लम्हों ने खता दी ' नारी मनोविज्ञान की कहानी है। इसमें रिया एवं मिसेस राय के हवाले से कथाकार ने नारी की मानसिकता, उनके अंतर्द्वंद्व और मातृत्व की भावना एवं पिऊ के माध्यम से बालमन की जिज्ञासा और पीड़ा की अधिव्यक्ति की है। डॉ. पूरण सिंह की 'मैं तेरा शहर छोड़ जाऊँगा' मार्मिक कहानी है। पूरी कहानी में दर्द छलकता है– एक पितृहीन बालक का दर्द, पतिविहीना स्त्री का दर्द, पति की कुरूपता के कारण पत्नी के छोड़ जाने का दर्द और सबसे बढ़कर पत्नी से एक मजदूरिन के रूप में आकस्मिक पुनर्मिलन का दर्द. कहानी में कथानायक रामावतार अपनी पुत्री रामा से अपने जीवन की दर्द भरी दास्तान सुनाता है। "पैसा भी रिश्तों की डोरी को बाँधने के लिए मजबूत गाँठें बाँधने के काम आ सकता है" की भित्ति पर लिखी 'बुढ़ापे का दर्द' एक रिटायर्ड फौजी शेर सिंह की कहानी है, जिसके दो बेटे अपने बीबी–बच्चों के साथ अन्य शहरों में चले जाते हैं। अंत में शेर सिंह के दोस्त की पहल पर छोटा बेरोजगार बेटा पेंशन के पैसों के लालच में पिता के पास आता है। 'सीट नंबर 37 के सामने' नीति–नैतिकता की शिक्षा देने वाली अच्छी कहानी है। अपनी बेरोजगारी के दर्द से बोझिल ग्रेजुएट अजय घर छोड़कर चला तो जाता है, किंतु ट्रेन में अपनी सीट के सामने के बच्चे को मुट्ठी में धूप को बंद करने के खेल से प्रभावित होकर अपना इरादा बदल लेता है और कुछ संकल्प लेकर घर लौट आता है। बालक के कथन– "बंद मुट्ठी में वही होता है जो हम सोचते हैं। मैं सोचता हूँ कि मेरी मुट्ठी में धूप है जो मेरे लिए है। आप अंधेरा सोचते हैं, इसलिए आपको मुट्ठी में अंधेरा लगता है" अजय को रास्ता दिखाता है। सुसंभाव्य के जुलाई–सितंबर अंक में दो कहानियाँ– डॉ. रंजना

जायसवाल की 'वजूद' तथा विवेक रिझावन का 'जीवन का दर्द' प्रकाशित हुई हैं। 'वजूद' की सुधा लड़के वाले के द्वारा बार–बार नकारे जाने पर पिता द्वारा पसंद किए गए लंगड़े लड़के को अस्वीकार कर अपना वजूद कायम करती है। 'जीवन का दर्द' में पिता की मृत्यु के बाद छोटे बेटे अतुल के दर्द की अभिव्यक्ति हुई है। सुसंभाव्य के अक्तूबर–दिसंबर अंक में तीन कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। मदन गुप्ता सपाटू की 'वसीयत' कहानी में मित्तल साहब की पारिवारिक स्थिति का वर्णन प्रस्तुत करते हुए कथाकार ने मित्तल साहब की मृत्यु पर विदेश से आए उनके पुत्रों,पुत्र वधुओं एवं बेटी की मानसिकता का वर्णन किया है। डॉ. नीरजा हेमेंद्र की 'कोरोना–कोरोना...लॉकडाउन' कहानी में सोवरही गाँव के मजदूर बेचालाल के माध्यम से रोज कमाने रोज खाने वाले मजदूरों की लॉकडाउन के कारण उपस्थित दुखद स्थिति का सजीव एवं मार्मिक वर्णन हुआ है। 'द मेकिंग ऑफ द नेताईन' शीर्षक कहानी में विमलेश कुमारी की उभरती हुई जिंदगी की दास्तान को कथाकार ने बड़ी ही साफगोई के साथ व्यक्त किया है कि किस तरह एक औरत अपनी देह को औजार बनाकर ठेकेदारनी और ठेकेदारनी से नेताईन बन जाती है।

इन पत्रिकाओं के अतिरिक्त समीक्ष्य वर्ष में कहानी केंद्रित अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ है, जिनमें बड़ी संख्या में कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं।

वर्ष 2021 की कहानियों के पर्यवेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि जग–जीवन के जितने भी पहलू हो सकते हैं, कथाकारों ने उन सब पर कहानियाँ लिखी हैं। इसलिए ये कहानियाँ बहुआयामी और बहुसंदर्भी हैं। वर्तमान समय में कोरोना एक बड़ी समस्या और चुनौती बनकर व्याप्त रही है। वैसे तो कोरोना ने हर वर्ग के मनुष्य के जीवन को प्रभावित किया है किंतु रोज कमाने और रोज खाने वाले मजदूर वर्ग के लिए यह भयंकर संत्रास रहा है। इस त्रासद स्थिति को कथाकारों ने कहानियों में चित्रित किया है। गोपाल निर्दोष की 'चल घर चल', गोविंद उपाध्याय की 'छाले', 'सुबह का इंतजार', 'क्या फिर लौटेगा राम बुझावन', 'हौसलों की उड़ान', संतोष दीक्षित की 'काल कथा', भावना शेखर की 'सोशल डिसटेनटिंग' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। किन्नरों के जीवन को केंद्र में रखकर पिछले वर्षों भी छिटपुट कहानियाँ लिखी गई हैं .किंतु समीक्ष्य वर्ष में किन्नरों के जीवन पर लिखी गई कहानियों में विशेष दृष्टि अपनाई गई है। अदीति सिंह भदौरिया की 'आखिरी ख़त' में किन्नर के रूप में जन्मी संतान को माँ अपनी बेटी के रूप में सुरक्षा प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाती है। विभारानी की कहानी 'ट्रांस.... ट्रांस....ट्रांस' में किन्नर के रूप में जन्मी सुनिधि न केवल आत्मनिर्भर बनती है, बल्कि वैवाहिक जीवन यापन करती है, किन्नर बच्चे को गोद लेती है और अन्य ऐसे बच्चों के भविष्य का निर्माण करती है। वर्ष की ये अनूठी कहानियाँ हैं।

पिछले वर्षों से 'समलैंगिकता' कहानी का वर्ण्य विषय बन गया है। इस वर्ष भी इस पर कहानियाँ लिखी गई हैं, इसमें नवीन दृष्टिकोण अपनाया गया है। सागर सियालकोटी की 'जब इश्क कहीं हो जाता है' एवं राज कुमार सिंह की 'सतनाम का नाम सत्य है', में जहाँ पुरुष समलैंगिकता है,वहाँ उषा राय की 'नमक की डली' शीर्षक कहानी में स्त्री समलैंगिकता दिखलाकर प्यार में तड़प की अद्भुत अभिव्यक्ति हुई है। नारी और दलित विमर्श कहानी विधा में लंबे अरसे से अभिव्यक्ति पा रहा है। समीक्ष्य वर्ष में भी इन पर अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं। अर्चना मिश्र की 'घायल पंखों की उड़ान', विभा रानी की 'ददेह, दरद और दिल', महाबीर राजी की 'ठाकुर का नया कुआँ' नारी सशक्तिकरण की कहानियाँ हैं। समीक्ष्य वर्ष में अजय नावरिया की 'संक्रमण', अरुण अर्णव खरे की 'देवता' दलित विमर्श की कहानियाँ हैं। प्रेम मानव जीवन का एक शाश्वत सत्य है। साहित्य और मुख्यतः कहानियों में इसकी अभिव्यक्ति होती रही है। समीक्ष्य वर्ष में भी प्रेम संबंधी कहानियाँ लिखी गई हैं। पूरण सिंह की 'और शिलाखंड पिघलने लगा', हरी दिवाकर की 'आकर्षण', नीलिमा शर्मा की 'उधार प्रेम की कैंची है' प्रेम पर लिखी गई वर्ष की उत्कृष्ट कहानियाँ हैं।

आज के भारतीय समाज की ज्वलंत समस्या है संतति की कृतघ्नता– इसे केंद्र में रखकर समीक्ष्य वर्ष में अनेक कहानियों का प्रणयन हुआ है। ममता त्यागी की 'कुहासा छँट गया', प्रेम प्रकाश राय की 'मोहभंग', रतन वर्मा की 'कबाब', संदीप वर्मा की 'बुढ़ापे का बँटवारा' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। समीक्ष्य वर्ष में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी कहानियाँ लिखी गई हैं। अतीत के धुंधलके में ओझल तथ्यों को मुरारी गुप्ता की 'कजरी',पंकज सुबीर की 'गुम–ए–चर्च' तथा 'मुंडवे

वालों का ज़लवा' शीर्षक कहानियों द्वारा उजागर किया गया है। 'कजरी' में द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजों की ओर से भारतीय सैन्य टुकड़ी के नेतृत्व की, 'गुम–ए–चर्च' एवं 'मुंडवे वाले का ज़लवा' में क्रमशः रांसीसियों एवं अंग्रेजों के जमाने के भारत की तस्वीर खींची गई है।

इस प्रकार वर्ष 2021 की हिंदी कहानियों में वह सब कुछ है,जो वर्तमान समय और समाज में घटित हो रहा है। कथाकारों ने इसका सूक्ष्म पर्यवेक्षण कर कहानियों में इसको अभिव्यक्त किया है। कहानियों में शिल्पगत बनावट का अपना महत्व होता है। परंतु अंततः यथार्थपरक मूल्य ही उसे प्रासंगिकता प्रदान करते हैं। यह अपने समय और समाज की समझ और सूक्ष्म पर्यवेक्षण से ही संभव होता है। वर्ष 2021 की कहानियाँ इस तथ्य पर खरा उतरती हैं।

❑❑❑

21

हिंदी कविता

कृष्ण कुमार 'कनक'

'काव्य' शब्द स्वयं में अनेक अंतर्भूत मर्यादाओं, मानवीय मर्यादाओं, मानवीय संवेदनाओं, मानवीय विकास तथा मानव की चिंतनशील प्रज्ञा के विविध प्रकोष्ठों में पल्लवित हो रही देदीप्यमान एवं ज्वलंत तथा सारगर्भित विप्लव भावना का साकार स्वरूप है। जब मानव मन अति आनंद के क्षणों से गुजर रहा होता है या फिर वह किसी गहरी वेदना को सहनकर रहा होता है, तब सहसा ही हृदय में एक संगीत सा गुँजित हो उठता है। यह संगीत केवल अनुभूतियों का ही संगीत होता है जिसमें कोई शब्द नहीं होता, सिर्फ और सिर्फ ध्वनियों की झंकार ही झंकृत हो रही होती है। ये झंकृत ध्वनियाँ प्रत्येक मानव को सुनाई देती हैं, किंतु इन ध्वनियों पर शब्दों को गढ़ देने की दैवीय प्रतिभा वाला मानव कवि कहलाता है। अनुभूतिजन्य इन ध्वनियों पर गढ़े गए इन शब्दों की सुगंधित एवं मनोहारी शृंखला को ही काव्य कहा जाता है। जहाँ एक ओर कुछ विद्वानों का मत है कि कल्पना ही काव्य की जननी है या फिर यूँ कहें कि कवि कल्पना को साकार स्वरूप प्रदान करते हुए काव्य का सृजन करता है तो दूसरी ओर कुछ विद्वान यह भी कहते हैं कि यह काव्य तो वास्तविकता में अनुभूतियों से ही जन्म पा सकता है। जब मानव विविध प्रकार की अनुभूतियों का साक्षी होता है तो वह उन्हें सीधे सपाट स्वरूप में संसार के समक्ष प्रस्तुत न करते हुए अपनी कल्पना शक्ति के प्रयोग से जिस रसमय स्वरूप में ढालकर जगत हितार्थ बनाने का उद्योग करता है, वही काव्य है। वह चाहे आलेख, निबंध, नाटक, एकांकी, कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण हो या फिर गीत, ग़ज़ल, छंद, मुक्तक, नवगीत, नई कविता या अतुकांत। यह सब कुछ काव्य ही तो है जो कवि के हृदय से निकलकर सामान्य जन–मानस के हृदय तक पहुँचकर मानवीय संवेदना को छूने का प्रयास करता है।

यहाँ हम काव्य के संपूर्ण विस्तृत स्वरूप का चिंतन तो नहीं किंतु वर्ष 2021 में कोरोना काल की विषम परिस्थितियों के बीच संपूर्ण भारतवर्ष में किस प्रकार की हिंदी कविता का सृजन हुआ, इस पर एक चिंतन दृष्टि डालने का प्रयास अवश्य करेंगे, ताकि हम यह जान सकें कि वर्तमान समय में किस प्रकार की कविताओं ने मानव हृदय पर अधिकार किया है।

प्रस्तुत शृंखला में प्रज्ञा शर्मा की काव्य कृति लॉकडाउन के दौरान 'मौत का जिंदगीनामा' एक अनुभवजन्य कृति है। कोरोना महामारी के कारण पूरे विश्व ने एक भयावह समय का दिग्दर्शन किया। ऐसे में रचनाकार जिन परिस्थितियों को देख रहा था, उन्हें वह अपने–अपने ढंग से काव्यमय करता रहा। ऐसे ही भावों तथा विचारों का संकलन

'मौत का जिंदगीनामा' नामक कृति में है। कवयित्री कहती हैं–

कण–कण में ईश्वर व्याप्त है
यह बात
बोलने के ही साथ
समझ भी ली गई होती
तो आज
इन धार्मिक स्थलों को बंद होने की खबर
यूँ खबर न बनती...

चारों ओर पसरा सन्नाटा एक कवि के हृदय पर कितना गहरा प्रभाव डालता है इसे इन पंक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता है–

इन दिनों क्या उठाती हूँ
सुबह होते ही
जिस्म को उठाती हूँ
उसे उसके काम याद दिलाती हूँ
वह अपने काम निपटाता है
और मैं,
तनहाई की आँच पर
बेचैनी के पतीले में
कोई नया ख्याल पकाती हूँ

जहाँ चारों ओर सब कुछ बंद पड़ा था, वहाँ एक उम्मीद की नई किरण पढ़ाई के ऑनलाइन माध्यम के रूप में अवश्य दिखाई दी किंतु यह भी क्या बाल मनोविज्ञान के प्रश्नों का सहज हल बन सकी?

स्कूल बंद है
बच्चे
फिर भी पढ़ रहे हैं
ये रात–दिन
अपने दिल की कॉपी में
आँखे गड़ाए
उन सवालों के जवाब लिख रहे हैं
जो इनके कोर्स में
बस अभी ही शामिल हुए हैं

'मेरे गीत मीत जीवन के' रामस्वरूप साहू 'स्वरूप' जी का गीत संग्रह है जिसमें वह कहीं प्रभाती गाते नजर आते हैं तो कहीं अपनी आरजू रखते हैं। एक ओर दिल के सारे भेद खोलकर रख देने वाले गीत रचे जाते हैं तो वहीं दूसरी ओर वे दूसरों के भावों को भी अपने गीतों में पिरोते हैं। नारी की महत्ता, आजादी की खातिर, जिंदगी ओर जिंदगी, फसाद की जड़, मजूदर आदि विविध शीर्षकों से लिखे गए गीत कवि के सहज हृदय का परिचय देने हेतु पूर्णतः समर्थ हैं किंतु इन गीतों को सामान्य श्रेणी के अंतर्गत ही स्थान देना समीचीन है। खुशियों का त्योहार शीर्षक से कवि लिखता है–

खुशियों का त्योहार है होली
रंगों की बौछार है होली
प्रेम से सभी को गले लगाओ
आदर सम्मान वचार है होली।

यद्यपि कवि की लय, यति, गति आदि पर अच्छी पकड़ है तथापि गीतों के भाव को अति गंभीर अर्थबोधक तथा तात्कालिक परिस्थितियों के अनुकूल स्थापित करना अभी भी शेष है।

'हर माल बिकाऊ है' डॉ. अरविंद श्रीवास्तव जी का हास्य व्यंग्य काव्य संग्रह है जिसमें कवि की हास्य व्यंग्य प्रधान रचनाओं का संकलन किया गया है। 'खाली हाथ' शीर्षक से कवि लिखता है–

वे
राजनेताओं के
चक्कर में पड़कर
उनकी भाषा में
गुनगुनाते गीत गाते हैं।
हाथ तो
कुछ नहीं आता
उनके खेत भी
पक्षी
चुग जाते
पशु हानि
पहुँचाते
वे
खाली हाथ ही
रह जाते हैं।

वर्तमान समय की राजनीतिक, सामाजिक तथा स्वार्थपूर्ण भावनाओं से परिपूर्ण आचरण से

व्यथित होते हुए 'असलियत' शीर्षक से कवि लिखता है–

वे
समाजसेवा
राष्ट्रभक्ति
आशीर्वाद की
ऊँची–ऊँची
बातें करते हुए
एक दूसरे को
तौल रहे थे,
चेहरे पर चेहरे
चढ़ाकर
बोल रहे थे।

'बाबुल तेरे गाँव' डॉ. ज्योत्सना शर्मा का रसमय अनुभूति से सुसंपन्न गीत संग्रह है जिसमें कवयित्री की कोमलकांत भावनाओं को साकार स्वरूप मिला है। कवयित्री काव्य कर्म में तो कल्पना और विचार के ताने–बाने से कविता बनाती ही हैं साथ ही दैनिक जीवन में कल्पना से अधिक यथार्थवादी होकर कुछ कर गुजरने का संदेश देती हैं यथा–

स्वप्नों के खंडहरों में क्या तलाशते हो तुम
इमारतें यथार्थ की बनाओ तो कोई बात बने
सीपियाँ ही गिनते रहने से कुछ नहीं होगा
कुछ मोती भी ढूँढ़ पाओ तो कोई बात बने

आज की निराश–हताश युवा पीढ़ी यहाँ से यथार्थ जीवन में सफलता का मंत्र भी ले सकती है–

शून्य में निहारने से कुछ नहीं होगा
जीवन से शून्य को निकालो तो कोई बात बने

संग्रह के शीर्षक गीत 'बाबुल तेरा गाँव' में भी नर के नारायण होने पर कवयित्री द्वारा क्षोभ व्यक्त किया गया है–

मैं नारी, नारायण तू, ये पदवी क्या पाई
छीन लिया अस्तित्व मेरा क्यों लाज नहीं आई।

यथार्थवादी दृष्टिकोण से भरा हुआ कवयित्री का अंतर्मन अपनी अनुभूतियों की संचेतना को दृढ़ आधार प्रदान करते हुए गीतों का सृजन कर रहा है। भाव की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट संग्रह है।

'जाने क्या–क्या खो गया' डॉ. युवराज सिंह 'युवा' जी का काव्य संग्रह है। युवराज सिंह मूलतः गीतकार हैं। वह गीत लिखने में माहिर हैं। साथ ही वह एक संवेदनशील व्यक्तित्व भी हैं। आज के दौर में संवेदनशील होना सहज नहीं है। क्योंकि कई बार संवेदना मानव को संकट में भी डाल देती है। उनकी संवेदनाओं का साकार स्वरूप उनके गीत और कविताएँ हैं। संग्रह का शुभारंभ वे देवी–देवताओं की आराधना के साथ करते हैं। राष्ट्र के प्रति उनका गहरा लगाव है। वे लिखते हैं–

मैं भारत माँ का बेटा हूँ
सदा बेटा ही कहलाऊँ
मरूँ सौ बार मैं लेकिन
जन्म फिर से यहीं पाऊँ

'रूह के रंग' डॉ. अशोक विज जी की अंतश्चेतना से उत्पन्न भावों का संग्रह है। यद्यपि वे एक श्रेष्ठ चिकित्सक हैं तथापि उनकी रचनाओं को पढ़ने पर यह स्पष्ट होता है कि कविता का किसी के व्यावसायिक जीवन से कोई संबंध नहीं होता। वह तो कभी बाल्मीकि के कोख से उत्पन्न होती है, तो कभी आइंस्टीन के मस्तिष्क से। अतीत और वर्तमान के विभिन्न अनुशासनों में भी कवियों ने कविता को अपनी अस्थिमज्जा से सींचा और पल्लवित किया है। अशोक विज भी इसी समर्पण के कवि हैं। वे प्रकृति के व्यवहार से भी मानव के लिए आदर्श खोज लेते हैं यथा–

तुम आसावरी हो
भोर होने पर पल्लवित पुष्पा की
सुगंध उड़ाती तुम पवन यायावरी हो

कवि भय जैसे भयावह विषय को भी जिस संजीदगी के साथ प्रस्तुत करता है वह अकल्पनीय सा प्रतीत होता है यथा–

मुट्ठी भींच ली है मैंने!
जन्मते ही भींची थी,
पहली नैसर्गिक सहज क्रिया थी वह
क्योंकि भय था मेरे अंदर

अनदेखे, अनुसने अद्‌भुत संसार में
पदार्पण था मेरा
मेरा प्रथम परिचय था भय से।

'सफर कविताओं का' कुमार ललित के संपादन में प्रकाशित श्रीमती नीलू चड्‌ढ़ा जी की कविताओं का संग्रह है। रचनात्मक अभिव्यक्ति की इस समस्त सामग्री को चिरकाल तक सहेजकर रखना एक विशिष्ट उपलब्धि स्वीकारा जा सकता है। लयबद्‌धता के विस्तृत आकाश में सृजित इन कविताओं में ह्रदय की अनुपम उदारता विद्‌यमान है। वे लिखतीं हैं–

शांत सा
बह रहा था पानी
उफ़!
एक कंकर ने बदल दी
पूरी कहानी

विलक्षण मानव जीवन की भटकन को काव्य का स्वरूप प्रदान करते हुए वे लिखती हैं–

जो होता है
पहुँच से दूर
चाहत मिलती
उसे भरपूर
नजर को रहती
उसकी तलाश
दिखाई न देता
जो आसपास

जीवन की मुश्किलों और कठिनाइयों को प्रत्येक मानव को स्वीकारना ही पड़ता है इन्हीं भावों तथा विचारों को कुछ इस प्रकार व्यक्त किया गया है–

सरलता से
शांत जीवन बिताना
बहुत है मुश्किल
रंग बदलती दुनिया से
बच पाना
बहुत है मुश्किल

"कैसा पुण्य कैसा पाप" प्रमोद बाबू दुबे "आमोद" जी का द्‌वितीय गीत संग्रह है। आमोद जी सहज भावों की अभिव्यक्ति के कवि हैं। उनकी कविताओं में मानव जीवन के यथार्थ को आध्यात्मिक दर्पण से देखने का प्रयास किया गया है। वे लिखते हैं–

ग्राहक नए, नई दूकानें लेकिन माल पुराना है।
मन तो एक कर्मचारी है केवल उसे दिखाना है।

आमोद जी स्वाभिमान तथा स्वयं की शक्ति पर ही जीवन यात्रा को उचित स्वीकार करते हैं। वे लिखते हैं–

अपनी वाणी खुद ही बोल
नहीं और को यहाँ टटोल
उम्र–घड़ी गतिमान अनवरत
प्राणों में स्पंदन है रत
संकल्प–सान बिन चढ़े न चमके
हीरा जन्म तेरा अनमोल

'कोई हो मौसम मितवा' *कुमार ललित के* गीतों का संग्रह है। मृदुभाषी एवं सरल व्यक्तित्व के धनी कुमार ललित के गीतों की कहन, सरलता, तरलता, मधुरता ही उनके गीतों के कथ्य को ह्रदयग्राही बनाती है। शब्द चयन इतना सुकुमार है कि पाठक रस दशा को अनायास ही प्राप्त कर लेता है। उनके गीतों का बिंबधर्मा होना उन्हें श्रेष्ठ गीतकारों की श्रेणी में खड़ा होने योग्य बनाता है। प्रतीकों के अन्यतम प्रयोग भी गीतों की विकास प्रक्रिया में सहयोग करते नजर आते हैं। कुमार ललित के गीतों में लालित्य, संजीदापन, प्रसाद गुण और अपनापन उन्हें टटका और अद्‌भुत बनाता है। कुमार ललित के गीत मूलतः प्रेम और शृंगार को वाणी देते नजर आते हैं। तथापि उनकी कविताओं में देश प्रेम को भी पूरे मनोयोग से स्थान दिया गया है। गीतों का कथ्य, शिल्प, शैली एवं प्रतीक, लालित्य, कहन, गति, लय आदि उन्हें एक अविस्मरणीय गीतकार बनाती हैं। यथा–

क्यों नदी भागे समंदर से मिलन के वास्ते
क्यों तलाशे देह स्नेहिल छुअन के रास्ते
बर्फ जैसी रात सुलगे क्यों अगन के वास्ते
गोपियाँ क्यों रात को चल दीं किशन के वास्ते
जानता हूँ प्रीत है, पर

प्रीत समझाना कठिन है
गीत लिख पाना कठिन है

वर्तमान परिस्थितियों में सामान्य जनजीवन किस प्रकार प्रभावित हुआ है इसे कुमार ललित की निम्नलिखित पंक्तियों से समझा जा सकता है–

ऊपर चढ़ने को अपनों का हाथ नहीं मिलता
मुश्किल वक्त पड़े तो कोई साथ नहीं मिलता
दिखता है अक्सर ही अपनेपन का नकलीपन
कोलाहल में कल–कल सा अब बहना मुश्किल है

इसी शृंखला में होम्योपैथी के चिकित्सक पंडित ज्वाला प्रसाद पांडेय 'दिव्य' जी की पुस्तक 'कुंडली मनका 108' देखने को मिली। यह पुस्तक कुंडलिया छंद में लिखी गई है। इस पुस्तक में दिव्य जी ने 108 कुंडलियों के माध्यम से जीवन के विविध स्वरूपों का वर्णन किया है। एक कुंडलिया देखें–

नाता विधिवत सास का, सुंदर इसका रूप।
निशि–दिन हो आनंद तब, रुचिकर होय स्वरूप।।
रुचिकर होय स्वरूप, इसे हम कंठ लगावें!
तनिक उगे ना कष्ट, निरंतर लाभ कमावें।।
कहे दिव्य कविराय, चेहरा हो मुस्काता।
निज माता के तुल्य, बहू अपना ले नाता।

वर्ष 2021 में डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी की तीन काव्य पुस्तकें देखने को मिलीं। जिनमें 'अक्षर कालातीत' एक कुंडलिया संग्रह है। इस संग्रह में कवि ने जीवन के विविध पहलुओं को भिन्न–भिन्न शीर्षकों के माध्यम से पाठकों के समक्ष रखा है। वह 'पानी की चिंगारियाँ' शीर्षक से वर्तमान परिस्थितियों का निरूपण करते हैं, वहीं 'प्रलय काल भरपूर' और 'बिकने को तैयार' शीर्षकों से वर्तमान परिवेश में व्याप्त विद्रूपता का वर्णन करते हैं। यह एक उत्कृष्ट भाव तथा शिल्प की दृष्टि का संग्रह है। 'मन है' शीर्षक से एक कुंडलिया देखें।

शक्ति प्रचंड अपार, भले ही रखता तन है।
तभी मिलेगी जीत, शक्तिशाली यदि मन है।

इसी वर्ष में प्रकाशित कवि की दूसरी रचना 'जलती रेत : दहकता मरुथल' एक सजल संग्रह है, जिसमें कवि ने अपनी कुछ पुरानी सजलें तथा कुछ नई सजलों को एकत्र कर एक पुस्तक का आकार दिया है। सजल हिंदी की अपनी एक निजी विधा है जिसमें हिंदी के पारंपरिक छंदों को एक विशिष्ट शैली में लिखकर एक स्वरूप प्रदान किया जाता है। देखने में यह उर्दू की विधा ग़ज़ल के समान दिखाई देती है किंतु शिल्प की दृष्टि से यह विधा ग़ज़ल विधा से पूरी तरह भिन्न है। कवि की एक सजल देखें–

दर्द दे गए जाते–जाते
रोता है दिल गाते–गाते
मन कहता है लौटेंगे वे
समय लगेगा आते–आते
बूँद न बरसी प्यासी भू पर
सिमट गया घन छाते–छाते

डॉ. यायावर की तीसरी प्रकाशित कृति 'भक्ति–विवेकामृतम्' में आदिगुरु शंकराचार्य कृत 'मोहमुंदर' का पहले तो हिंदी अनुवाद किया गया है फिर उसका कुंडलिया छंद में अनुवाद और उसके बाद उसी का गीत में अनुवाद किया गया है। इस प्रकार से काव्य अनुवाद की शृंखला में यह कृति 'भक्त–विवेकामृतम्' अपने आपमें अद्‌वितीय कृति है, जिसमें हिंदी अनुवाद, कुंडलिया अनुवाद और गीत अनुवाद तीनों एक साथ दिए गए हैं। निःसंदेह संस्कृत साहित्य की इन विख्यात कृतियों का काव्यानुवाद सभी काव्य प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करेगा। 'अष्टावक्र महागीता' का कवि ने दोहों में अनुवाद किया है, वह भी पाठकों को रुचिकर लगेगा।

डॉ. सतीश चंद्र शर्मा 'सुधांशु' जी की वर्ष 2021 में दो काव्य कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं, जिनमें 'यत्र–तत्र–सर्वत्र' दोहा संग्रह है। इस संग्रह में कवि ने विविध शीर्षकों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने दोहे कहे हैं। एक दोहा देखें–

राजनीति है कोठरी, काजल के अनुरूप।
फँसकर इसके जाल में, दागी होता रूप।।

वहीं कवि की दूसरी कृति 'प्रश्न हुए आदमकद सारे' एक नवगीत संग्रह है। इस नवगीत संग्रह में कवि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से वर्तमान राजनीति, समाज, सामाजिक परिवेश, मानवीय संघर्ष आदि पर चिंतनपरक गीत लिखे हैं। एक नवगीत देखें–

सुनी बात सच,
आँखों देखी
झूठ बताते हैं।
कहते लोग बुरा
अपने मुँह मिट्ठू बन जाते।

'नन्ही टोली' डॉ. सतीश चंद्र भगत जी का वर्ष 2021 में प्रकाशित बाल काव्य संग्रह है। इसमें कवि ने बाल मनोविज्ञान को बड़ी बारीकी से जाँच कर उसके अनुरूप बड़ी मनोहारी रचनाएँ लिखी हैं। निःसंदेह ये रचनाएँ बालकों को अतिशय प्रिय लगने वाली हैं। इस संग्रह की एक रचना देखें–

मुझे उठाते मेरे दादा
कहते झटपट कर तैयारी
चलो घूमने को फुलवारी
खुली हवा में साँसें लेना
भूखे को तुम भोजन देना

'इतनी सी फरियाद' कवि राजपाल सिंह गुलिया जी का कुंडलिया संग्रह है। इस संग्रह में कवि ने मानव जीवन की विषम परिस्थितियों, सामाजिक सहचर, राजनीतिक परिवेश, मानवीय संवेदना आदि विषयों पर अपनी दृष्टि डाली है। वह मानव की मानवीय चेतना का सुंदर चित्र खींचते हैं। उनकी काव्यमयी चिंतन दृष्टि का एक उदाहरण देखें–

जिनकी नीयत नेक है, बरकत होय अपार।
इच्छा होती बलवती, कहता यह संसार।।
कहता यह संसार, मिले जैसे को तैसा।
सभी करें तारीफ, कर्म कुछ करना ऐसा।।
कह गुलिया कविराय, बात ना इसकी उसकी।
नेक वही इनसान, साफ है नीयत जिसकी।

इसी वर्ष में प्रकाशित डॉ. सतीश चंद शर्मा 'सुधांशु' जी के संपादन में एक समवेत संकलन 'सरसों फूली खेत' दोहा संग्रह भी पढ़ने का अवसर मिला। इस संग्रह में कुल 24 कवियों के 45–45 दोहों को संकलित किया गया है। इस संग्रह में सभी कवियों के दोहे शिल्प एवं भाव की दृष्टि से अत्यधिक मनोहारी हैं। निःसंदेह सभी कवियों ने अपनी अंतश्चेतना में व्याप्त व्यावहारिक चिंतन को दोहों के रूप में ढाला है।

युवा कवयित्री डॉ. संध्या द्विवेदी जी की द्वितीय प्रकाशित काव्य कृति 'चाँद तुम जरूरी नहीं' एक अतुकांत रचनाओं का संग्रह है। इस संग्रह में कवयित्री द्वारा नारी मन की अभिव्यक्ति को बड़ी ही सहजता के साथ व्यक्त किया गया है। संबंधों की परंपरा की यह विस्मृति संबंधहीनता को जब जन्म देती है तो वह मानव समाज में विद्रूपता पैदा करती है। कवयित्री इसे अपना केंद्रीय विषय बनाते हुए लिखती है–

भौतिकता की चकाचौंध अंधी दौड़ भाग रहा हर आदमी.... भौतिकता का एक पर्याय है अपरिचित संबंधहीनता संवादहीनता।

गोरखपुर के युवा कवि केतन यादव की प्रथम प्रकाशित काव्य कृति 'अंत्याभिसार' अपने आप में एक अद्वितीय कृति है। इस कृति में उसी 'मानव' छंद को लिया गया है जिस छंद में लगभग 100 वर्ष पूर्व प्रसाद जी ने 'आँसू' नामक काव्य की रचना की थी। केतन यादव की इस कृति में यद्यपि वही छंद प्रयोग में लिया गया है किंतु इस कृति का शिल्प और भाव दोनों ही भिन्न हैं। इस कृति को पाँच खंडों में लिखा गया है। इस प्रकार यह खंड–काव्य सी लगती हुई कृति वास्तव में एक गीतिकाव्य है, जिसमें कवि ने मानव के मनोविज्ञान को एक सशक्त स्वर प्रदान किया है। इस कृति का एक छंद दृष्टव्य है–

फिर कभी रात में नभ से
खिड़की–खिड़की पर मैं आऊँगा
कुछ पल अठखेली करके
फिर ओझल हो जाऊँगा।

कुलभूषण कालड़ा जी का कविता संग्रह 'लड़ाई जारी है' अतुकांत कविताओं का संग्रह है। कवि ने आज के इस भयावह माहौल में अपना सातवाँ कविता संग्रह प्रकाशित किया है। वर्तमान समय में

जहाँ संपूर्ण विश्व महामारी के दौर से गुजर रहा है, वहीं कवि अपनी कविताओं के माध्यम से सामान्य जनजीवन में ऊर्जा का संचार करने का कार्य कर रहा है प्रस्तुत संग्रह में 65 कविताएँ संकलित हैं जो कि समय के सरोकारों से संघर्ष करती हैं और फिर शांति के सूत्रों सहित पाठक के सम्मुख उपस्थित होती हैं। यह कविताएँ संपूर्ण जीवन के निष्कर्ष का प्रतीक हैं। 'दुनिया बाजारवाद की' इस शीर्षक से कवि की कविता की कुछ पंक्तियाँ देखें–

आज बाजारवाद की
ओर से प्रायोजित
सुविधाओं में
हम होते जा रहे
पागल
विज्ञापनों के मायाजाल में
कहीं फँसता जा रहा
जीवन

नई दिल्ली निवासी कवि आमोद कुमार जी की कृति 'परिणति' एक गीत संग्रह है। वास्तव में भौतिकता से परे प्रेम तत्व ही जीवन का प्राण है। करुणा, दया, क्षमा, संवेदना, नम्रता, त्याग एवं मृदु व्यवहार यह सब प्रेम रूपी वृक्ष की ही शाखाएँ हैं। कवि ने पाठकों के समक्ष इन्हीं भावों को प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास किया है। निःसंदेह यह कृति कवि के प्रेम गीतों का संग्रह है, जिसके माध्यम से वह मानव मन की अभिव्यक्ति को स्वर देता है। इसी संग्रह में संकलित एक गीत की कुछ पंक्तियाँ देखें–

हमसे खफा हुए तो वो अच्छा ही ये किया
उनको तो मंजिलें मिली हम राह में तो क्या
आँखो में आपकी जो मेरी आँखों का अक्स था
खुद मेरी ही निगाहों ने धोखा मुझे दिया
एक अजनबी–सी बस्ती में क्यों कोई मिलता
क्यों कोई आके पास क्यों यूँ दूर हो लिया

श्रीनाथ संस्कृति महाविद्यालय, हाटा, कुशीनगर के आधुनिक विषय के प्राध्यापक, पत्रकार एवं अनेक ज्ञान शाखाओं में अच्छी गति रखने वाले पंडित मोहन पांडेय द्वारा रचित 'प्रतीक्षा' एक चिंतनपरक रचना है। इसे दो खंडों में विभाजित किया गया है। प्रस्तुत रचना कवि के सुदीर्घ अध्यापन अनुभव, कवि गोष्ठियों और पत्रकार सम्मेलनों की सहभागिता से उत्पन्न गहन अध्ययनगत ज्ञान, परंपरागत संस्कार, सरलता, विद्वता, लेखनधर्मिता, वर्तमान एवं जन्मांतरीय मेधा आदि का परिचायक है। काव्यशास्त्रीय परंपरा की रूढ़ियों से अलग हटकर कवि ने अपना स्वतंत्र चिंतन बड़ी ही बेबाकी से प्रस्तुत किया है। इस काव्य कृति का प्रतीक्षा खंड भारत माता की भक्तिमय वंदना से आरंभ होकर मन के समर्पण तक गया है। 'राह तेरी बैठे मोहन, आस तेरी करते प्रतिक्षण' जैसी मनमोहक पंक्तियों के प्रणेता ने अपना संपूर्ण अनुभव अपनी रचनाओं में पिरोया है। वे कहते हैं–

मैं अंजाना राही हूँ, अनजानी मेरी राहें।
काव्य कलम से मिलने को, अकुलाई थी मेरी आहें।

'दराँती के दाँतों पर' शीर्षक बेहद आकर्षक लगा। यह एक गीत संग्रह है जो कि उत्तराखंड निवासी विवेक बादल 'बाज़पुरी' द्वारा रचित है। रचनाधर्मिता में पद्य अर्थात् कविता अत्यंत संवेदनशील और भावात्मक प्रस्तुति को कहा जाता है। यह उदार संवेदनशील व्यक्ति के अंतःकरण से प्रस्फुटित होते हैं, तब कविता आकार लेती है। जब मनुष्य के अंदर संवेदना उसके चेतन मस्तिष्क को झकझोर देती है, तब कविता का जन्म होता है। प्रफुल्लता, वेदना, प्रेम, बिछोह, समर्पण अथवा मिलन के परिप्रेक्ष्य में तो भीतर से शब्दों को चुनती हुई एक ध्वनि निकलती है और वह कहलाती है कविता। विवेक का संवेदनशील मन और मस्तिष्क हर छोटी बड़ी चीज पर ध्यान केंद्रित करता है। जैसे–

भूखे पेट पिया है पानी जुल्म किया है आँतों पर।
हमने अपना जीवन काटा, दराँती के दाँतों पर।

'धानी चुनर' भोपाल निवासी अंजना छलोत्रे 'सवि' जी द्वारा रचित अत्यधिक मन को आकर्षित

करने वाली कृति है। इस रचना में कवयित्री ने अपने संपूर्ण जीवन के मौलिक अनुभवों को प्रस्तुत किया है। वे स्वयं कहती हैं "ईश्वर की महती कृपा से और कल्पनाशक्ति से रचनात्मकता प्राप्त हुई है, जिससे उत्पन्न संवेदना की नाव पर सवार होकर, संपूर्ण ब्रह्मांड में विचरण करने, विविध प्रकार से बिखरी पड़ी प्राकृतिक संपदा का संवरण करने तथा संवेदना को कागज पर उतारने की कला प्राप्त हुई है।'' कवयित्री लिखती हैं–

मोहब्बत का रोशन सितारा हुआ।
मिलन जो हमारा तुम्हारा हुआ।
हम्हीं ख्वाब में बात करते रहे,
न तेरी तरफ से इशारा हुआ।

अविभाजित भारत के जेहलम में जन्में वर्तमान चंडीगढ़ निवासी राजेंद्र कुमार सभरवाल जी की 'कभी ऐसा भी' काव्य कृति एक अनोखी रचना है। कवि की रचनाओं में कवि का चिंतन स्पष्ट रूप से मुखरित हुआ है। यह काव्य कृति कवि के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालती हुई–सी प्रतीत होती है। एक रचना के कुछ अंश दृष्टव्य हैं–

पनघट ने खामोशी की चादर ओढ़ ली है
चहकते चेहरे कहीं जा छुपे हैं
और उदास मछलियों ने
छोड़ दिया है उछलना
सपने में भी कोई जादुई परी नहीं उतरती
आकाश से
नटखट सपनों को
न जाने किसकी नजर लग गई है
अनायास

'गीतों की बारात' हाड़ोती की अन्नपूर्णा धरती बाराँ के रहने वाले हरि अग्रवाल जी द्वारा रचित गीतों का संग्रह है। इस गीत संग्रह में विभिन्न भाव भंगिमाओं से सुसज्जित लगभग अस्सी गीत हैं, जिनमें श्रृंगार का आधिक्य है। इस गीत संग्रह का प्रारंभ वाणी वंदना से होकर कवि की कल्याणमयी सृष्टि की कामना से होता हुआ, स्वयं के उद्धार की कामना लेकर प्रेयसी के स्मृति सागर की ओर आगे बढ़ा है। कवि नितांत वैयक्तिक अनुभूतियों के साथ तो कभी सृष्टि के साथ एकाकार होकर प्रेम के आध्यात्मिक स्वरूप की यात्रा करता है। 'तुम्हारे ही लिए' गीत छायावादी रहस्यमयता से ओतप्रोत हैं। कवि का विश्वास है, एक दिन मिलन यामिनी उसका वरण अवश्य करेगी और वांछित अनुराग भी प्रदान करेगी। 'कामसूत्र की बनी प्रेरणा', 'नियति नटी ने', 'कनक देह सोपान तुम्हारी', 'स्वागत की तैयारी', 'मधुमास का मौसम' आदि शीर्षकों से कवि ने अपने पवित्रतम मनोभावों को व्यक्त किया है। एक गीत का मुखड़ा देखें–

जब से मैंने मन आँगन में चंदन बोया है।
तब से मेरी गोदी आकर विषधर सोया है।

चंपावत उत्तराखंड निवासी डॉ. कीर्ति वल्लभ शक्टा जी ने अपनी काव्य साधना से उत्तराखंड को गौरव प्रदान किया है। डॉक्टर शक्टा जी द्वारा प्रणीत 'वसुदेव चरणामृतम्' महाकाव्य कवि की काव्य साधना का शुभ मधुर फल कहा जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का सहज संधान श्रीमद्भागवत में वर्णित है। मानव का परम धर्म भागवत के अनुसार कामना रहित भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति करना ही है। वेद सनातन धर्म के प्राचीनतम ग्रंथ हैं, परंतु वेदार्थ का सरलीकरण करने से पुराण वेद का पूरक है। पुराणों में श्रीमद्भागवत श्रीकृष्ण भगवान का प्रत्यक्ष रूप है। दशम स्कंध भागवत का फल। शक्टा जी द्वारा दशम स्कंध का काव्यात्मक रूप पद्यानुवाद की तरह प्रतीत होता है। प्रत्येक सर्ग में भिन्न–भिन्न छंदों का प्रयोग हुआ है। मंगलाचरण से लेकर 19वें सर्ग के सभी छंद शिल्प की दृष्टि से दोष विहीन हैं किंतु छंदों की बनावट को साधने, मात्रा गणना और गण विधान को सटीक बिठाने पर ही ध्यान केंद्रित रखने के कारण रसात्मकता कमजोर पड़ गई है यथा–

मालिनी छंद
अति कठिन समस्या आ गई देवकी को
पद युगल बँधे थे आज कैसे अनोखे।
यह गति पति की थी जेल में वे पड़े थे
सहम–सहम रोते देख दोनों विचारे।

मुजफ्फरपुर बिहार निवासी डॉ. आरती कुमारी द्वारा रचित 'धड़कनों का संगीत' कृति मानवीय

चेतना, आत्मानुभूति तथा संवदेनशील व्यक्तित्व का परिचायक है। उनकी संवेदनाओं में अंतरंगता के साथ सामाजिक सरोकारों के स्वर बहुमुखी होकर प्रस्तुत हुए हैं। उनके विचार से स्वर्ग वहाँ है जहाँ उनकी तरह कवयित्रियाँ केवल कल्पनाओं में उसे पाती हैं। किंतु वे यह भी मानती हैं कि वर्तमान समय में कवयित्रियों के द्वारा अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से स्वर्ग रचने का प्रयास भी किया गया है। इसी प्रकार की अवधारणा का दर्शन उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से किया जा सकता है। उनकी कविताओं ने अपने रचाव, स्वभाव और प्रभाव की दृष्टि से अनन्यता सिद्ध की है। इस अनन्यता में वे विलक्षण प्रतीत होती हैं–

एहसासों से बाँध के मुझको ले चल ऐसे गाँव
ताल, तलैया, पंछी, पर्वत हो पीपल की छाँव
बादल की एक नाव बनी हो, तारों की हो डोर
सागर से भी गहरी हो ये जिसका ओर न छोर

महासमंद छत्तीसगढ़ निवासी श्रीमती सुकमोती चौहान 'रुचि' जी की दो कृतियाँ वर्ष 2021 में प्रकाशित हुई हैं। जिनमें 'तेरी आवाज हूँ' कृति में अतुकांत रचनाओं की मिली जुली रचनाएँ संकलित हैं। इस कृति में शीर्षक के अनुरूप ही कवयित्री ने सामान्य जनजीवन की आवाज बनने का प्रयास किया है। उनकी रचनाएँ संकलित हैं। इस कृति में शीर्षक के अनुरूप ही कवयित्री ने सामान्य जनजीवन की आवाज बनने का प्रयास किया है। उनकी रचनाएँ मानव चेतना, प्रकृति चेतना तथा सामाजिक चेतना का जीवंत प्रतिरूप हैं। वे प्रकृति का चित्रण करते हुए अति सहज होती हैं तो वहीं युवा शक्ति को सचेत करते हुए उत्साहित भी होती हैं। उनकी दूसरी कृति 'छप्पय माला' छप्पय छंदों का संग्रह है। इस कृति में कवयित्री ने विविध विषयों को शीर्षक बनाकर छप्पय लिखे हैं। इनमें राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सद्भाव, माननीय संवेदना तथा संसार के विभिन्न ज्वलंत मुद्दों पर लिखे गए छंदों के साथ ही भारतीय जनजीवन का अंग कहे जाने वाले त्योहारों तथा ऋतुओं का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है। एक छप्पय दृष्टव्य है–

शरद पूर्णिमा रात्रि, चंद्रमुख अनुपम परिमल।
चारुचंद्र रमणीय, चांदनी छाई अविरल।
श्वेत रश्मि की छाँव, झूमता ये मन पुलकित।
हँसती प्रकृति बहार, सजी वसुधा अति कुसुमित।
सुधा बरसती रात भर, वर देती दीर्घायु का।
पावन मनभावन निशा, शीतलता भर वायु का।

देवरिया उत्तर प्रदेश निवासी रीना विनय मिश्रा की कृति 'स्त्री का आकाश' स्त्री जीवन के विविध पहलुओं पर दृष्टिपात करती हुई एक अप्रतिम कृति है। इस कृति में कुल पचानवे कविताओं के माध्यम से कवयित्री ने स्त्री के विविध मनोभावों को अपनी कलम से उतारने का प्रयास किया है। इनकी कविताओं को पढ़ने और पंक्तियों पर ध्यान देने पर यह स्पष्ट होता है कि आखिरकार एक स्त्री चाहती क्या है? नारी के सम्मुख खड़ा होने पर स्वयं के अस्तित्व का ज्ञान स्वतः ही हो जाता है। मरुस्थल से तात्पर्य हृदय का ज्ञान कराने से है जिससे परिस्थितियों का उत्तम स्थल प्राप्त करना ही नारी की संवेदनास्थली है। उदाहरणार्थ वे कहती हैं–

नितांत जरूरी जीवन में स्थान बनाया जाए।
सर के ऊपर अपने आसमान बनाया जाए।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा साहित्य–भूषण सम्मान से सम्मानित कोटा, राजस्थान निवासी रघुराज सिंह कर्मयोगी जी का गीत संग्रह 'नैनों की मत सुनियों' संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का परिचायक है। कवि रघुराज सिंह कर्मयोगी ने यादों की सीपी से मोती चुन–चुनकर कविता कामिनी को सजाया है। इसमें सभी रंग के मोतियों की आभा है। कहीं वीरता के रंग, कहीं प्रेम के रंग, कहीं हास्य के रंग, तो कहीं होली जैसे त्योहारों के शहरी और ग्रामीण रंगों की निराली छटा है। एक क्षण के लिए ही सही किंतु वर्तमान परिस्थितियों में निराशा मानव को घेर ही लेती है परंतु जब मानव इस प्रकृति के

सौंदर्य को निहारता है तो उसमें पुनः जीवन के प्रति आशा जाग जाती है। जब तक मंजिल न मिले, तब तक न रुकने की अभिप्रेरणा उसे पुनः जीवंत बनाती है। वर्तमान समय में पारंपरिक संस्कारों से युवा पीढ़ी दूर होती दिखाई दे रही है। टूटते हुए परिवार, घटते हुए नैतिक मूल्य तथा भारतीय संस्कृति के विद्रूपता के घने कुहासे में भटकती युवा पीढ़ी को देखकर कवि के हृदय में जो क्रंदन होता है उसे वह निम्न पंक्तियों में व्यक्त करता है–

केक न काटा साथ–साथ
ताऊ, ताई, बुआ, दादी
बैठ कार में चले गए,
होटल में नकदी बरसा दी

हाटा, कुशीनगर निवासी कृष्ण कुमार श्रीवास्तव 'कृष्णा' जी का दोहा संग्रह 'दोहा पुँज' कवि के काव्य कौशल तथा दोहा छंद पर उनकी गहरी पकड़ का परिचायक है। काव्यगत गहराई और भावों के प्रस्फुटित स्वर की उच्चता से सुसज्जित उनकी प्रथम प्रकाशित काव्य कृति तत्सम शब्दावली से युक्त, प्रांजल और प्रौढ़ अभिव्यक्ति से आपूरित मानवीय संचेतना का साकार स्वरूप है। निःसंदेह यह कृति संग्रहणीयता तथा पठनीयता के साथ गंभीर विमर्श की भी आकांक्षी है। कवि के अनेक दोहों में उर्दू व भोजपुरी के शब्दों का प्रयोग भी हुआ हैं किंतु भाषा के सौष्ठव को बनाए रखने का सफलतम प्रयास इस कृति को उत्कृष्ट बनाता है। एक दोहा दृष्टव्य है–

नींद न आई रातभर, मन भी रहा उदास।
निर्मोही की याद में, मध्यम होती श्वास।।

कानपुर, उत्तर प्रदेश निवासी ब्रजनाथ श्रीवास्तव जी की चार नवगीत कृतियाँ समीक्ष्य वर्ष में प्रकाशित हुई हैं। 'अभी उजेरा है', 'धुंध में लिपटे हुए दिन', 'बदला नहीं आदमी' तथा 'मायाजाल कबीरा' इन चारों कृतियों में कवि ने अपने नवगीतों में वर्तमान समय की विध्वंसकारी परिस्थितियों, समसामयिक घटनाक्रमों के पीछे के रहस्य, समाज में विकसित होती अराजकता, राजनीति का ओछापन तथा डिग्रियाँ लिए घूमती युवा पीढ़ी की वेदना को स्वर दिया है कवि की माने तो नवगीत अपने समय का प्रामाणिक दस्तावेज होता है जो आने वाली पीढ़ियों को यह पढ़ाने में सक्षम होता है कि तात्कालिक समाज का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक पर्यावरण कैसा था और समाज के विभिन्न वर्गीय लोगों पर उसका क्या प्रभाव पड़ा। बेशक महाभारत एक महाकाव्य अथवा प्रबंध काव्य है, इसके समानांतर नवगीत प्रबंध–काव्य अथवा महाकाव्य कहलाने का अधिकारी तो नहीं, किंतु जिस तरह महाकाव्य का एक छंद उसे महाकाव्य की संज्ञा नहीं देता, बल्कि उसकी समग्रता ही महाकाव्य होती है, ठीक उसी प्रकार किसी भी नवगीत संकलन की विभिन्न रचनाएँ, जो समाज और उसके बहुआयामी जीवन की सच्चाइयों को बयान करती हैं, अपनी संपूर्णता में किसी भी महाकाव्य से कम नहीं। कवि ने अपने सभी संग्रहों की भूमिका स्वयं ही गढ़ी है। कवि एक कुशल नवगीतकार हैं इसमें कोई संदेह नहीं। एक नवगीत के कुछ अंश दृष्टव्य हैं–

जिसकी लाठी/उस की भैंस/अब भी चलता है/कहने को तो/लोकतंत्र यह/दुनिया का न्यारा/लेकिन घूमे/आम आदमी/जैसे बंजारा/गाँव नगर में/सभी जगह यह/मौसम पलता है

कोटा, राजस्थान निवासी गिर्राज प्रसाद खंडेलवाल 'आनंद' जी द्वारा 'गीत गीता' नाम से श्रीमद्भागवद् गीता का पद्यानुवाद किया गया है। यह कार्य भले ही कोई नई बात न हो, किंतु आनदं जी ने अपने शब्द भंडार का उपयोग करते हुए श्रीमद्भागवद् गीता का जो पद्यानुवाद प्रस्तुत किया है वह अनुपमेय है। कवि ने पद्यानुवाद करते समय इस बात का भली–भाँति ध्यान रखा है कि इस लोक का वास्तविक अर्थ पद्यानुवाद के कारण विकृत न हो सके और कोई तथ्य भूलवश छूटे भी नहीं, इस दृष्टि से आनंद जी अपने प्रयास में पूर्ण रूप से सफल प्रतीत होते हैं। यद्यपि कवि ने संपूर्ण भाव को पिरोने का एक सफल प्रयास किया है। कहीं–कहीं वे सटीक तुकांत बिठाने में असफल रहे हैं तथापि एक उत्कृष्ट कोटि का पद्यानुवाद कहना अतिशयोक्ति नहीं है।

मथुरा निवासी अटल राम चतुर्वेदी कृत 'सर्वानंद' काव्य संग्रह में कवि ने 218 शीर्षकों में विविध विषयों पर काव्य रचनाएँ की हैं। यह कवि की प्रथम प्रकाशित पुस्तक है। प्रस्तुत कृति में कवि का मौलिक चिंतन अभिव्यक्त हुआ है। कवि के दृष्टि पटल पर समाज, राष्ट्र, प्रकृति, राजनीति, वर्तमान परिस्थितियाँ, भारतीय संस्कृति आदि सब कुछ वर्तमान है। कवि का काव्य कर्म तथा कौशल का पूर्ण रूपेण विकास बड़ी ही शुचिता के साथ हुआ है।

आगरा, उत्तर प्रदेश निवासी अलका अग्रवाल जी का काव्य संग्रह 'इंद्रधनुष' सात प्रकार की काव्य विधाओं से सुसज्जित है। वे कहती हैं कि कविता कल्पना की एक उड़ान होती है। चिड़िया की उड़ान की तो सीमाएँ हैं, किंतु कविता की कोई सीमा नहीं। आदिमानव ने जब पहली बार पक्षियों का कलरव सुना होगा, नदियों की कल–कल की ध्वनि सुनी होगी, तब उसके मन में कविता की कल्पना ने जन्म लिया होगा। तभी उसके अंदर कविता का अंकुर फूटा होगा। 'इंद्रधुनष' काव्य संग्रह में अलका अग्रवाल जी की 65 रचनाएँ संगृहीत हैं। अधिकाँश रचनाओं में सामाजिक व राजनीतिक विसंगतियों व विद्रूपताओं पर प्रहार किया गया है। कवयित्री ने समाज में जो देखा और जो भोगा है, उसी को काव्य के रूप में वर्णित किया है। भाषा की दृष्टि से अति सरल, आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है, जिसमें कहीं भी किसी भी प्रकार की चमत्कारिकता उत्पन्न करने का प्रयास प्रतीत नहीं होता। कथ्य की नवीनता, नए बिंब तथा विचारों का नवोन्मेषी आधार 'इंद्रधनुष' काव्य संग्रह के गीत, छंद, मुक्तक आदि को उत्कृष्टता प्रदान करने में सफल हुआ है। कविता की कुछ पंक्तियाँ देखें–

माँ ही लाई दुनिया में, माँ ने ही बनाया है।
कि जो भोजन लाई है, पहले मुझे खिलाया है।।

सूखा पड़े या कभी बाढ़, आ जाए धरती पर।
खुद को डाल जोखिम में, माँ ने मुझे बचाया है।।

जौनपुर, उत्तर प्रदेश निवासी बृजेश आनंद राय का गीत संग्रह 'कितना सलोना रूप तुम्हारा' कवि की आत्मानुभूति का प्रतिबिंब तथा मौलिक आभास का काव्य है। अनुभूति से गीत विधा का रिश्ता प्रगाढ़ और सघन है। चाहे सुख के श्लोक बनाने की मान्यता हो या वियोगी को पहला कवि मानने की अवधारणा हो, काव्य के केंद्र में किसी अनुभूति से प्रेरित होकर अपने काव्य सृजन का प्रारंभ करता है। बृजेश आनंद राय कृत 'कितना सलोना रूप तुम्हारा' में यदि रूपाशक्ति से उपजे लगाव और बाद में बिछोह मनस्थितियाँ मुखर हैं, तो यह अस्वाभाविक नहीं है। इस गीत संग्रह में कई स्थानों पर संकेत है कि गीत रचना में स्मृति की भूमिका महत्वपूर्ण है। गीतकार की स्पष्ट घोषणा है 'तुम्हारी याद में हम गीत लिखेंगे', याद या स्मृति क्षणिक नहीं है। 'तेरी यादों के पंख लगा कर, जब प्राण पखेरू उड़ जाएँगे', अपने प्रिय पात्र की निठुराई पर गीतकार स्तब्ध है कि राग पल भर में ही विराग में कैसे परिवर्तित हो गया–

तुम मेरी मुस्कान की, करते थे हर पल प्रतीक्षा।
फिर अब क्यों विमुख हो, तुम हो चाहते कैसी परीक्षा।

जांजगीर, छत्तीसगढ़ निवासी विजय राठौर की तीन कृतियाँ समीक्ष्य वर्ष में प्रकाशित हुई हैं। जिनमें यह 'समय कितना कठिन है' समकालीन गीत संग्रह है। इस संग्रह में कवि के लगभग सवा सौ गीत संकलित हैं, जिनमें कवि ने सामाजिक, राष्ट्रीय तथा आत्मानुभूति परक गीतों को स्थान दिया है। कवि कहता है–

दिन भारी–भारी है
अंतहीन रात लगे
संशय में जीत फँसी
पग–पग ही मात लगे

दूसरी कृति 'छंद अनुशासन' एक छंद संग्रह है जिसमें कवि ने लगभग सभी पारंपरिक छंदों को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया है। इस संग्रह में मात्रिक तथा वर्णिक सभी छंदों को उनके लक्षणों सहित प्रस्तुत किया गया है। इसी क्रम में कवि की

तीसरी काव्य कृति 'बात करो तो मिश्री घोलो' एक 'सजल संग्रह' है। इस संग्रह में कवि ने प्रारंभ में सजल के व्याकरण को स्पष्ट किया है कवि कहता है कि 'सजल विशुद्ध हिंदी की काव्य विधा है।' कुछ लोगों को यह भ्रम है कि यह ग़ज़ल के हिंदी रूपांतरण को ही सजल कह दिया गया है, तो इस बात को समझ लेना आवश्यक है कि यह तथ्य कदापि उचित नहीं है। क्योंकि सजल का उद्भव तो हिंदी के आदि छंदों से हुआ है जैसे दोहा। हिंदी के पारंपरिक छंदों पर सजल का व्याकरण आरोपित करके उसे सजल के रूप में परिवर्तित किया जाता है। एक सजल का उदाहरण देखें–

अभी हम पास आकर क्या करेंगे
तुम्हें अपना बना कर क्या करेंगे
तुम्हें सुरताल से मतलब नहीं है
तुम्हें गाना सुना कर क्या करेंगे
अभी है अपशकुन भारी यहाँ पर
अभी दीपक जला कर क्या करेंगे

उपरोक्त सजल 'सुमेरू छंद' में निबद्ध है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वास्तविकता में 'सजल' हिंदी की ही नवीन विधा है, जिसका उदय हिंदी के पारंपरिक छंद विधान से ही हुआ है।

जबलपुर, मध्य प्रदेश, निवासी सलप नाथ यादव 'प्रेम' जी ने एक नया तथा प्रशंसनीय प्रयास हिंदी साहित्य के क्षेत्र में किया है। उनके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय तथा श्लाघनीय है। उन्होंने ग़ज़ल के वर्तमान स्वरूप को 'पूर्णिका' कहा है। अब प्रश्न यह है कि किसी पुरानी विधा को नया नाम देने में ऐसा बड़ा काम क्या हुआ? तब मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जितनी भी साहित्य की विधाएँ हैं, उन सब में हम पाते हैं कि यदि वे थोड़ी बहुत भी एक दूसरे से भिन्न हैं, तो वे एक नया नाम पा लेती हैं। ठीक इसी प्रकार सलप नाथ यादव जी ने ग़ज़ल के वर्तमान हिंदी रूप को 'पूर्णिका' कहा है। उनकी मानें तो वे कहते हैं कि "ग़ज़ल अब उस रूप में नहीं रही जिस रूप में पहले हुआ करती थी।" अर्थात् प्रारंभ में ग़ज़ल का अर्थ होता था, प्रेमालाप। यानी कि नायक–नायिका के प्रेम के विविध स्वरूपों का वर्णन ग़ज़ल का मुख्य विषय–वस्तु हुआ करती थी। किंतु वर्तमान समय में ग़ज़ल के उसी शिल्पगत स्वरूप ने मानव चेतना, राष्ट्रीय चेतना, समाज चेतना, सामाजिक विद्रूपता, राजनीतिक विद्रूपता, शोषित व पीड़ित समाज की संवेदना आदि को अपने आप में समाहित किया है। तब उसे ग़ज़ल कहा जाना उचित नहीं है। सलप नाथ जी मानते हैं कि जिस प्रकार ग़ज़ल में प्रत्येक शेर अपने आप में पूर्ण होता है। उसी आधार पर वर्तमान समय की ग़ज़ल रूपी उस रचना को पूर्णिका कहा जाना अधिक उचित है, जिसमें ग़ज़ल की पुरानी विषय वस्तु को त्यागकर वर्तमान समय की माँग के अनुसार विषय वस्तु को स्थान दिया जाता है। निःसंदेह सलप नाथ यादव 'प्रेम' जी द्वारा दिया गया यह नाम उचित ही है। यद्यपि नाम पर अन्य विद्वानों को आपत्ति भी हो सकती है, किंतु यह कहना कदाचित अनुचित न होगा कि वर्तमान समय में ग़ज़ल जिस रूप में लिखी जा रही है, उस काव्य को ग़ज़ल कहना अब समीचीन नहीं है। क्योंकि विषय वस्तु बदली है, तो नाम भी बदला जाना चाहिए। अतः इसी अवधारणा को चरितार्थ करते हुए सलप नाथ यादव 'प्रेम' जी ने ग़ज़ल के वर्तमान स्वरूप को पूर्णिका नाम दिया है। मेरे मतानुसार इस नाम को स्वीकार लेने में भी कोई कठिनाई नहीं है जब तक कि कोई अन्य उपयुक्त नाम न सामने आए। सलपनाथ जी ने उर्दू वालों को भी ग़ज़ल के वर्तमान स्वरूप को नया नाम देने का सुझाव देते हुए ग़ज़ल के स्थान पर 'कामिल' शब्द का प्रयोग करने को कहा है। यह बात भिन्न है कि उर्दू वाले इस सुझाव को स्वीकार करें या न करें।

सलप नाथ जी ने पूर्णिका के विषय में अपना मत सर्वप्रथम वर्ष 2017 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'विचार' में आत्मकथ्य लिखते हुए प्रस्तुत किया था। उनकी इसी अवधारणा के आधार पर वर्ष 2021 में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'आह' पूर्णिका संग्रह के रूप में सामने आई है। प्रस्तुत संग्रह में कवि के विविध भावों को प्रस्तुत करती हुई कुल

166 पूर्णिकाएँ संकलित हैं इन रचनाओं में कवि ने रोती हुई मानवता, बिखरते हुए परिवार, निराशा के गर्त में डूबी जिंदगी, बढ़ते हुए प्राकृतिक संकट, बिखरते हुए रीति–रिवाज, मानव का दोहरा चरित्र, झूठी शान–ओ–शौकत, सत्य की प्रवंचना, राजनीति में परिवारवाद का संकट, ज्ञान और विज्ञान का अनैतिक प्रयोग, दुराचरण की पराकाष्ठा, वर्तमान समय की संवेदना, प्राकृतिक चिंतन, स्वानुभूति, मानव प्रकृति, पारिवारिक संबंध, आदि अनेक विषयों को अपने सृजन का आधार बनाया है। सलपनाथ यादव 'प्रेम' की एक पूर्णिका दृष्टव्य है–

साहब, नेता, मंत्री, गाते गान देश का
प्रगति करते सैनिक, श्रमिक, किसान देश का
डॉक्टर, इंजीनियर हैं ताकत बहुत बड़ी
लेखक, कवि, विद्वान लिखते गान देश का
बाबू बनाकर रखते सदा समन्वय
सेवा पुलिस कर रही महान देश का
शिक्षक शिक्षा देने वाला होता है विद्वान
यही सदा बढ़ाया करता ज्ञान देश का

ब्रज–रज की सुगंध में रची–बसी डॉ. रश्मि जी का काव्य संग्रह 'मुट्ठी भर चाँदनी' एक आकर्षक कृति है। कविता कवि के संवेदनशील मन की सहज अभिव्यक्ति होती है। अन्य मुनष्यों की अपेक्षा कवि में संवेदनशीलता अधिक होती है। उसमें अभिव्यक्ति की क्षमता भी अन्य मनुष्यों की अपेक्षा अधिक होती है। कवि अपने परिवेश, पीड़ा, प्रभाव सभी पर गहरी दृष्टि रखता है, उसके पीछे का कारण भी तलाशता है। जो भी मानव और मानवता की व्यष्टि और समष्टि के लिए मंगलकारी है, वह कवि की लेखनी से उतरता रहता है।

'मुट्ठी भर चाँदनी' डॉ. रश्मि जी का प्रथम काव्य संग्रह है। यह विविध विषयाधारित रचनाओं का संकलन है। कवयित्री ने जो व्यक्तिगत जीवन में पीड़ा देखी है अथवा समाज में व्याप्त पीड़ा का अनुभव किया है, उन्हीं सब को अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वे अपने आराध्य के प्रति अत्यधिक आशावान हैं। अतः वे कहतीं हैं–

तेरी रहमत की दीवानी दुनिया है सारी
बोलो रे बोलो कान्हा कब आएगी मेरी बारी
दीनों के नाथ संकट के हारी
कर दो कृपा की कोर मेरी भी सुन लो मुरारी

राधा और कृष्ण दो देह एक प्राण हैं, यह परंपरा से भक्ति का भाग रहा है। डॉ. रश्मि जी ने भी यही कहा है–

कौन है किसका स्वामी और किसकी स्वामिनी है
जान न पावैगौ कोई दोनों की प्रीत इतनी घनेरी है

दिल्ली निवासी, पंकज माला शर्मा जी के संपादन में प्रकाशित 'सोमनाथ' खंडकाव्य सोम तिवारी 'सुधाकर' जी द्वारा रचित है। इस खंडकाव्य में भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परंपरा में सौराष्ट्र स्थित सोमनाथ देव धाम का वर्णन किया गया है। इस पवित्र धाम पर महमूद गजनवी द्वारा किया गया आक्रमण तथा मंदिर के विध्वंस की दुर्भाग्यपूर्ण घटना का वर्णन करते हुए कवि ने भारतीय वीर राजपूतों के शौर्य तथा पराक्रम का वर्णन किया है। इतने वीर राजाओं के रहते हुए भी मंदिर का विध्वंस क्यों हुआ इसका कारण उद्घाटित करते हुए कवि ने भावी युग के लिए राष्ट्रभक्ति का संदेश भी दिया है। प्रस्तुत खंडकाव्य में राजा घोघा, बापा, सोलंकी, सामंतवादी, राजपूत तथा चौहानों के शौर्य तथा पराक्रम का भी वर्णन है, जो भारत देश के धर्म और संस्कृति के लिए सदैव जागरूक प्रहरी के रूप में खड़े रहे तथा आक्रांताओं के विरुद्ध सदैव चुनौती बने रहे। उन्होंने वीरता से लड़ते–लड़ते अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। संपूर्ण काव्य 22 सर्गों में विभाजित है। यूँ तो खंडकाव्य में सामान्यतः चार या पाँच सर्ग ही होते हैं, किंतु सोमनाथ खंडकाव्य में 22 सर्ग विभिन्न दृश्यों के कारण हैं। घोघागढ़ नामक छठे सर्ग से कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

मरुस्थल के नाके पर ऊँचे से टीले पर
घोघागढ़ का दुर्ग खड़ा था सिर उन्नत कर
घोघा बापा करते थे उसकी रखवारी,

समरांगण में ही जिस भट ने उम्र गुजारी।
निष्ठावान अनन्य उपासक सोमनाथ का,
बल विक्रम साकार उम्र में नब्बे बरस का।

हरियाणा निवासी डॉ. कैलाश चंद शर्मा 'शंकी जी की समीक्ष्य वर्ष में दो काव्य कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं जिनमें से प्रथम 'प्राच्य संस्कृति के झरोखे से' तथा द्वितीय 'तरंग तराने जिंदगी के' हैं। 'प्राच्य संस्कृति के झरोखे से' खंड–काव्यनुमा संकलन है जिसमें कवि ने भारत की संस्कृति कितनी महान रही है, इस तथ्य को उकेरने का प्रयास किया है। शिल्प की दृष्टि से यह संग्रह बहुत अच्छा तो नहीं कहा जा सकता किंतु भावों की सशक्त अभिव्यक्ति ने इसे संग्रहणीयता प्रदान की है। भारत की प्राच्य संस्कृति के झरोखे से गुजरने का कवि का उद्देश्य भी यही रहा है कि इस महान भारत भूमि में जन्म पाकर उसके विषय में वह कुछ लिख सके। कवि ने संपूर्ण कृति को सात भिन्न शीर्षकों में विभाजित करते हुए लिखने का प्रयास किया है। बाल संस्कृति शीर्षक से कवि लिखता है–

वो बहुत सुंदर लंबे चमकीले लवादे पहने रहते हैं
कुंड के सिर के चारों तरफ रोशन घेरे झलकते रहते हैं।

'तरंग तराने जिंदगी के' काव्य कृति भी सात खंडों में विभाजित की गई है जिसमें जिंदगी में राष्ट्रहित को सर्वोपरि तथा युगबोध की सूक्ष्मता एवं यथार्थ को अभिव्यक्ति दी गई है। कवि की कलम से भाव संवेदना की अनेक ऐसी पंक्तियाँ निकली हैं जिनमें जिंदगी की सच्चाई को व्यक्त करते हुए 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' का भाव निहित है। यह रचना भी खंड–काव्य शैली में ही लिखी गई है, किंतु शिल्प की दृष्टि से अत्यधिक कमजोर है। यही कारण है कि इस पूरी पुस्तक में से उदाहरण स्वरूप कोई पंक्तियाँ निकाल पाना भी संभव नहीं हो पा रहा है।

रायसेन, मध्य प्रदेश निवासी महेश प्रसाद शर्मा जी का 'सरस्वती शतक' नामक 100 छंदों का काव्य संकलन प्रकाशित हुआ है जिसमें कवि ने विविध प्रकार से माँ सरस्वती की वंदना की है। एक छंद दृष्टव्य है–

कभी गिरेगा कभी उठेगा,
धूल–धूसरित तन होगा।
वसंत धुलाएगी माँ मेरी,
हर्षिता मेरा मन होगा।।

आगरा के सुप्रसिद्ध मंचीय कवि शिवसागर शर्मा जी का एक पद संग्रह 'ब्रह्मचर्य बिन जोग सधै ना' प्रकाशित हुआ है जिसमें कवि ने योगी को योग धारण करने से पहले योग को भली–भाँति समझ लेना आवश्यक बताया है। यम नियम को अपनाने, आसन के माध्यम से शरीर को दृढ़ करने, प्राणायाम से स्वयं को सशक्त करने तथा प्रत्याहार को साधने के पश्चात् ही परम तत्व की प्राप्ति की ओर बढ़ा जा सकता है। कवि लिखता है–

जोगी जोग सुनो फिर ध्याऔ।
जम और नियम महाव्रत इनको जीवन में अपनाऔ।

भाटापारा, छत्तीसगढ़ निवासी इंद्राणी साहू 'साँची' जी का 'साँची सुरभि' नामक दोहा संग्रह भी इस वर्ष की एक उत्कृष्ट रचना है जिसे उन्होंने अपनी वंदनीय माँ स्वर्गीय श्रीमती पीली बाई साहू जी को समर्पित किया है। प्रस्तुत काव्य–संग्रह 'साँची सुरभि' कवयित्री की एक अनुपम कृति है। इसमें गुरुता, सूक्ष्मता, बौद्धिकता, उत्कृष्टता, छंद विधा की श्रेष्ठता आदि सब कुछ देखा जा सकता है। प्रारंभ में विविध देवी–देवताओं की वंदना में लिखे गए दोहे उत्कृष्ट कोटि के बन पड़े हैं। एक दोहा देखें–

सार्थक है वह तूलिका, भरे शब्द में मर्म।
सत्य मार्ग पर ले चले, यही श्रेष्ठ कवि धर्म।।

प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश निवासी डॉ. संतोष कुमार मिश्र 'वत्शेष' जी का काव्य–संग्रह 'कहे कहानी जंगल सारा' भाव की दृष्टि से एक सशक्त संग्रह है। उदाहरणार्थ कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

सोचता हूँ कुछ कहूँ पर क्या कहूँ
तुम हो शब्दों से परे निःशब्द होकर,
उठ रहे हैं स्वर हमारे प्रार्थना के
स्वयं में अस्तित्व और अभिमान को कर।

प्रशासनिक सेवा में उच्च पदस्थ अधिकारी डॉ. ललित नारायण मिश्र जी अपनी कृति 'गीत मेरे मीत मेरे' में एक श्रेष्ठ कवि के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हुए हैं। वर्तमान समय में विसंगतियों, विद्रूपताओं, विभ्रमकारी और विश्वासघाती युग में युगीन चकाचौंध से स्वयं को बचाकर किसी लोक सेवक का जनता जनार्दन की सेवा कर पाना आसान कार्य नहीं होता, मिश्र जी इस बात के विरोधाभास के रूप में दिखाई देते हैं। उन्होंने सिद्ध किया है कि यदि कोई निष्ठा और नैतिकता के एकांत में कार्यरत व्यक्ति धर्म आचरण और न्याय के प्रति पूर्ण सजग हो तो एक समय ऐसा आता है, जब बाधाएँ भी उसके सामने घबराकर पीछे हटने लगती हैं और ईमानदारी स्वयं उससे अपने लिए प्रमाण–पत्र माँगने लगती है। ललित नारायण मिश्र जी ऐसे ही एक आदर्शोन्मुख लोक सेवक हैं। मिश्र जी की भाषा–शैली की विशिष्ट मौलिकता उनकी लयबद्धता और सहजता है। उनके गीतों और ग़ज़लों में बहुत सूक्ष्म अंतर है। इन्हीं मायनों में वे अद्भुत हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

रोशन चराग चाँद और सूरज तुम्हें लिखा।
सितारों के शहंशाह तुझे या खुदा लिखा।
उजड़ी हुई सराय का मालिक तुझे लिखा।
बसती हुई बस्ती का सहारा तुझे लिखा।

कवि अवनीश त्रिवेदी 'अभय' अपनी कृति 'सुहाने अल्फ़ाज' में एक उत्कृष्ट कोटि के कवि के रूप में मुखरित हुए हैं। उनकी भाषा दैनिक जीवन की वह भाषा है, जिसे हम आम जन–मानस के मुख से सुनते ही रहते हैं। इसे हिंदी, हिंदुस्तानी या फिर हिंदवी कहा जा सकता है। उसमें परिनिष्ठित शब्दों के आभिजात्य का अपेक्षाकृत अभाव है, तथापि भाषा भाव के साथ सम्मिलित होकर प्रभावकारी बन पड़ी है। वे लिखते हैं–

मोहब्बत के सभी मसले वफा पर छोड़ देते हैं,
यहाँ के फैसले भी अब खुदा पर छोड़ देते हैं।

उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जनपद में शिक्षा जगत से लेकर व्यापार, समाज सेवा से लेकर मानवीय चेतना तथा लोक जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में समान रूप से पहचान रखने वाली शीलमणि मानसिंह शर्मा जी की कृति 'भावांजलि' उनके 80 वर्षीय जीवन के विविध पहलुओं को समेटे हुए पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हुई है। इस रचना में कवयित्री का भाव–बोध तथा उनके चिंतन की पराकाष्ठा पल्लवित होकर काव्य रूप में परिणित हुई प्रतीत होती है। वे लिखती हैं–

प्रिय जब हम तुम मिले थे
चमकती रात थी
महकती बात थी
झिलमिला रहे थे गगन से धरा तक सितारे
चल रहे थे साथ अपने चाँद और चाँदनी
प्रिय मित्र जब हम बने
साक्षी हवाएँ
थीं– दिशाएँ
चल रहे थे साथ अपने चाँद और चाँदनी

गाजीपुर, उत्तर प्रदेश के मूल निवासी आनंद प्रजापति 'अमित' की काव्य कृति 'आनंद रस' कवि की भावुकता, सहज संवेदना, साहित्यिक निष्ठा तथा लौकिक चिंतन का प्रमाण है। इस कृति को कवि ने शिल्प के आधार पर पाँच खंडों में विभाजित किया है, जिसमें दोहा, गीत, छंद, मुक्तक तथा ग़ज़ल विधाओं को समाहित किया गया है। एक गीत की कुछ पंक्तियाँ देखें–

बिखरा जाने कितनी बार
मेरे सपनों का संसार
जब–जब आया वह तूफान
छप्पर टूटा टूटी छान
टूटा मेरा ही घर बार
मेरे सपनों का संसार

बेबाक जौनपुरी नाम से विख्यात पंडित आदित्य नारायण मिश्र जी का काव्य संकलन 'महा आनंद रामायण' दोहा छंद में प्रकाशित हुआ है। यह एक प्रबंध काव्य है जिसमें छह कांड वर्णित हैं। खंडकाव्य तथा महाकाव्य के कुछ विशेष मानकों का अनुपालन

न हो पाने के कारण इस कृति को उस श्रेणी में तो नहीं रखा जा सकता तथापि दोहा छंद में लिखा गया यह संपूर्ण काव्य अपने आप में पूर्ण है। इस कृति में बीच–बीच में मत्त सवैया भी संकलित हैं। एक उदाहरण देखें–

चलो चलें हरि के नगर, क्षीर सिंधु भव पार।
उनको जाकर अब कहें, लीजै हरि अवतार।।

आगरा, उत्तर प्रदेश निवासी वीना अब्राहम सिंह का काव्य–संकलन 'ख्वाबों के सुनहरे पल' नारी संवेदना का सशक्त दस्तावेज है। इस कृति में छंद मुक्त शैली की रचनाओं का संकलन है, जिसमें कवयित्री का संवेदनशील मन, सामंजस्यवादी चिंतन तथा नारी चेतना की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। एक उदाहरण देखें–

जीवन देना/और लेना/उस अदृश्य/शक्ति के हाथ है/जो समय–समय पर/उसके होने का/हमें एहसास/कराती है

मीना गोदरे 'अवनि' जी के संपादन में प्रकाशित 'नव लोकांचल गीत' नामक साझा संकलन भी इस वर्ष की एक प्रमुख संग्रहणीय काव्य–कृति है। इस कृति में हिंदी भाषा की विविध बोलियों के रचनाकारों की रचनाओं के साथ–साथ अन्य मिलती–जुलती भाषाओं की बोलियों के गीतों को भी संकलित किया गया है। इस कृति में अवधी, बघेली, मिर्जापुरी, छत्तीसगढ़ी, सादरी, गोंडी, हल्बी, बुंदेली, ब्रज, कन्नौजी, खड़ी बोली, हरियाणवी, भीली, भोजपुरी, मैथिली, मगही, बज्जिका, मारवाड़ी, बागड़ी, मेवाती, हाड़ौती, मालवी, निमाड़ी, हिमाचली आदि के अतिरिक्त पंजाबी, गुजराती, मराठी, आदि भाषाओं की बोलियों के गीतों को भी संकलित किया गया है।

वर्ष 2021 में कृष्ण कुमार 'कनक' यानी कि मेरा भी एक गीत संग्रह 'कल्पनाकाश' के नाम से प्रकाशित हुआ है। इसके विषय में, मैं बहुत अधिक कुछ तो नहीं कहना चाहता, किंतु यह अवश्य बता देना चाहता हूँ कि इस संग्रह में कवि की अंतश्चेतना में व्याप्त प्रेम की मिलन एवं बिरह दोनों प्रकार की अनुभूतियों के गीत संकलित हैं। यह संकलन कवि के आत्म अनुभव की परिणिति ही है। उदाहरण के लिए एक गीत की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

मधुमय अनुराग भरा तुमने मेरे गीतों की क्यारी में।
मेरे नैनों में था निर्झर
आशाएँ रहती सिहर सिहर
श्वासों का शुष्क पड़ा उपवन
सूखे पत्तों सा रहा बिखर
हरियाली का मौसम लाए तुम जीवन की फुलवारी में।
मधुमय अनुराग भरा तुमने मेरे गीतों की क्यारी में।

प्रस्तुत संकलन में कुल 84 गीत संकलित हैं जिनमें से अंतिम गीत की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

इस जीवन के इष्ट और उस जीवन के आराध्य तुम्हें।
शेष नहीं अवशेष समर्पित करूँ 'प्राण' कुछ साध्य तुम्हें।

निःसंदेह मेरे द्वारा जिन कृतियों की चर्चा की गई है, उनके अतिरिक्त भी ऐसी अनेक रचनाएँ देशभर में प्रकाशित हुई होंगी जिनके संदर्भ में मुझे भी ज्ञात नहीं है, तथापि उपर्युक्त रचनाओं को देखते हुए यह अवश्य कहा जा सकता है कि वर्ष 2021 में हिंदी कविता को वैभवशाली बनाए जाने का प्रयास हिंदी कवियों ने भरपूर मनोयोग के साथ किया है।

❑❑❑

22

हिंदी ग़ज़ल

रोहिताश्व कुमार अस्थाना

समकालीन हिंदी काव्य के अंतर्गत गीत, नवगीत, दोहा, ग़ज़ल आदि उपविधाओं अथवा काव्य शैलियों की विशेष चर्चा है। इनमें हिंदी ग़ज़ल का तो विशेष रंग है। इधर हमारे कवि एवं ग़ज़लकार बंधु निरंतर हिंदी में ग़ज़लें लिखने अथवा कहने में लगे हुए हैं। परिणाम स्वरूप प्रायः समस्त साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में हिंदी ग़ज़लें पाठकों को आकर्षित करती हैं। हमारे रचनाधर्मी बंधुओं के एकल एवं संपादित ग़ज़ल संग्रह निरंतर प्रकाशित होते रहते हैं। पत्र–पत्रिकाओं में तो ग़ज़लों की धूम रहती है! इस प्रकार हमारे हिंदी वाङ्मय में हिंदी ग़ज़ल संबंधी कृतियों का भंडार बढ़ता जा रहा है। अब तो सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक वर्ष के ग़ज़ल साहित्य का अध्ययन, अवलोकन एवं मूल्यांकन किया जाने लगा है।

वर्ष 2021 में यद्यपि भीषण कोरोना काल रहा है। तमाम लोगों की जाने इस वर्ष महामारी से गई हैं, जिसमें अनेक सुपरिचित ग़ज़लकारों के नाम भी सम्मिलित हैं किंतु इस वर्ष हिंदी ग़ज़ल के अनेक एकल एवं संपादित संकलन भी प्रकाशित एवं चर्चित हुए हैं। इनका मूल्यांकन एवं उल्लेख करना यहाँ समीचीन ही होगा?

वर्ष 2021 में अयन प्रकाशन, नई दिल्ली–30 से संजीव गौतम जी की 90 ग़ज़लों का संग्रह 'बुतों की भीड़ में' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। कवि को ग़ज़ल के शिल्प पर अच्छी जानकारी हासिल है। कवि की इन ग़ज़लों में आधुनिक यथार्थ का सजीव चित्रण मिलता है। उनकी ग़ज़लों से कुछ शेर यहाँ प्रस्तुत हैं–

करिश्मा है कि इन हालात में ज़िंदा है
हम/शहर है पत्थरों का और आईना हैं हम।

हिंदी ग़ज़ल के बारे में कवि का आत्मकथ्य भी दृष्टव्य है–

ग़ज़ल गोई तुम्हारा शौक होगा/मगर यह तो हमारी जान है बस।

निश्चय ही पाठकों के लिए इन ग़ज़लों से गुजरना एक सुखद अहसास होगा?

इसी क्रम में मेधा बुक्स, दिल्ली–32 से हिंदी ग़ज़ल के वरिष्ठ हस्ताक्षर अश्वघोष जी की 100 ग़ज़लों का संकलन 'अंधेरे में शहर' प्रकाशित हुआ है। यह ग़ज़लें पाठकों के दिलों में रच बस जाने वाली हैं। उदाहरणार्थ कुछ शेर देखें–

सत्य अगर दिखलाएगा/क्या जिंदा रह पाएगा? XX कल्पना की इन उड़ानों में/हम ही हम हैं आसमानों में/जिंदगी के सब ठिकानों में/बिक रहे रिश्ते दुकानों में।

निश्चय ही कवि की यह ग़ज़लें अपने आप में असाधारण एवं गागर में सागर भरने वाली हैं। प्रस्तुत कृति पठनीय एवं संग्रहणीय हैं?

इसी वर्ष सम्या प्रकाशन, नई दिल्ली–70 से वरिष्ठ ग़ज़लकार धन सिंह खोवा सुधाकर जी की 102 ग़ज़लों का संग्रह 'बोलती खामोशियाँ अब' प्रकाशित हुआ है। कवि ने इन ग़ज़लों में अपने दीर्घ जीवन के अनुभव साझा किए हैं। इन ग़ज़लों में उर्दू का रंग देखते हुए शमशेर बहादुर सिंह की याद आती है। सुधाकर जी की सभी ग़ज़लें एक से बढ़कर एक हैं। उन्होंने किसी से भी क्रोध न करने का सुझाव दिया है क्योंकि क्रोध पाप का मूल है। जरा देखिए –

सेहत के लिए अच्छा होता न कभी
गुस्सा/समझो ये हकीकत तुम माथे पे शिकन वालो?

इसी प्रकार आम आदमी के जीवन की व्यथा–कथा कवि के एक शेर में देखिए–

दिनभर जो पत्थरों को हाथों से तोड़ता है/शव में जमीं बिछाकर वो अर्श ओढ़ता है?

हिंदी ग़ज़ल के प्रथम शोध अध्येता डॉ. रोहिताश्व अस्थाना की विस्तृत भूमिका संकलन की महत्ता को दो गुना करने वाली है। इन ग़ज़लों का जादू निश्चय ही पाठकों को मंत्र मुग्ध करने में सक्षम है।

वर्ष 2021 में ही समन्वय प्रकाशन, गाजियाबाद से सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार कृष्ण कुमार प्रजापति जी की 90 श्रेष्ठ ग़ज़लों का संग्रह 'धूप ही धूप' प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक ग़ज़ल को शीर्षक दिया गया है। संग्रह की प्रमुख ग़ज़ल का एक शेर उद्धरणीय बन पड़ा है। यथा–

जहाँ भी गए, धूप देखी/मिला बादलों का न साया कही पर?

कवि को ग़ज़ल के शिल्प पर अच्छी पकड़ है। उनकी इन ग़ज़लों में सामाजिक, राजनीतिक एवं नैतिक विसंगतियों, रिश्ते–नातों आदि के बारे में जीवन के परिपक्व अनुभवों को रेखांकित किया गया है। अपने एक शेर में कवि ने 'एक चुप सौ को हरावे' की उक्ति का समर्थन इस प्रकार किया है–

ओछे से क्यूं बात कुमार ओछी करना/ चुप रहने से कद्रो– कीमत बढ़ती है?

इसी प्रकार मजहब को लेकर उत्पन्न झगड़ों और दंगों से बचने की सलाह देते हुए कवि ने कहा है–

फ़ासले बढ़ जाएँगे/लोगों दिलों के दरमियाँ/मजहबी झगड़े न डालो/दोस्तों के दरमियाँ?

हमारे समाज में बहुत लोग दोहरा व्यक्तित्व जीते हैं। मेरे लोगों के प्रति कवि का कथन है–

मेरे हुजूर आप में/ ये खूबी खास है/ दिल जहर से भरा है/लबों पर *मिठास है?*

कवि ने रिश्तों में 'माँ' को सर्वश्रेष्ठ माना है। कवि विशेष रूप से युवा पीढ़ी से पूछना चाहता है कि–

ऐशो–इशरत के लिए/लाखों खजाने हैं
मगर/माँ से बढ़कर कोई/संसार में दौलत है क्या?

समाज में वरिष्ठ नागरिकों के मान–सम्मान की वकालत करते हुए कवि ने कहा है–

बुजुर्गों और अजीजों की/जो दिल से कद्र करते हैं/जमाने में मुहब्बत की/वही पहचान होते हैं?

बुजुर्गो को अपने बच्चों से मान–सम्मान, समुचित खान–पान और समय पर इलाज की अपेक्षा रहती हैं। कवि के शब्दों में–

बुजुर्ग चाह रहे हैं/बस इतना बच्चों से/हमारा पेट भरे/वक़्त पर इलाज मिले?

परंतु आज के बच्चे तो अपने माँ–बाप को भी आधुनिक तकनीक और चलन का पाठ पढ़ाने लगे हैं।

बकौल कवि के

मेरे बच्चे स्कूल जाने लगे हैं/मुझे पाठ क्या–क्या पढ़ाने लगे है?

इसी प्रकार सियासत के बदलते हुए जीवन मूल्यों के प्रति कवि ने अपने अनुभव इस प्रकार साझा किए हैं–

नफ़रत की सियासत से/न टुकडों में बँटेगा/ये मुल्क जो आपस की/मुहब्बत से बना है?

इन ग़ज़लों में कवि के कुछ खूबसूरत प्रेम परक शेर भी उद्धरणीय बन पड़े हैं। यथा–

राह मुश्किल से सरल हो गई/आप जब से मेरे हम सफ़र हो गए? XX कुछ ऐसी बात है दिल

की/जो होठों तक नहीं आती/निगाहों से समझ लो तुम/कि मैं समझा नहीं सकता?

इसी प्रकार कवि ने लोगों से अपने लंबे जीवन के अनुभव साझा करते हुए कहा है–

जो किसी का बुरा नहीं करते/कैसे उनका कभी बुरा होगा? कवि की सलाह है–

आखिरी वक्त है नेकी कर ले/क्यूँ बचाकर ये रकम रक्खा है?

कवि की इन ग़ज़लों में यत्र–तत्र आशावादी स्वर भी मुखरित हुआ है। यथा–

लड़खड़ाकर गिर पड़े/तो इसका गम क्यूँ है 'कुमार'/आप भी सँभलेंगे लाज़िम/है, सँभलकर देखिए?

कृष्ण कुमार प्रजापति जी की इन ग़ज़लों में यत्र–तत्र बोलचाल की उर्दू भाषा का संग भी देखने को मिलता है। ग़ज़ल के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर एवं 'अदबनामा' पत्रिका के सुधी संपादक जनाब नासिर अली 'नदीम' एवं डॉ. विभा माधवी की भूमिकाओं से सुसज्जित ग़ज़ल कृति 'धूप ही धूप' का समकालीन हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में भरपूर स्वागत होगा। कृति पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी है?

वर्ष 2021 में ही अयन प्रकाशन, नई दिल्ली–30 ने शिवपुरी (मध्य प्रदेश) के गोविंद अनुज का दूसरा ग़ज़ल संग्रह 'उम्र के यूँ बिखर गए कतरे' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। उनकी कुछ ग़ज़लों में प्रेम और सौंदर्य के स्वर मुखरित हुए हैं। यथा–

आप जब–जब भी मुस्कुराते हैं/प्यास के पंख फड़फड़ाते हैं।

कवि ने प्रेम के विविध क्रियाकलापों को अत्यंत ही शिष्ट एवं सांकेतिक ढंग से अपनी ग़ज़लों में अभिव्यक्त किया है। उदाहरणार्थ–

हम तुम्हारी गंध के आगोश में डूबा किए/हार–बाजूबंद, कंगन, करधनी को चूमकर

इस संदर्भ में प्रेयसी की आँखों का उल्लेख किए बिना बात पूरी नहीं होती।

बकौल कवि के–

बिन *काजल कजरारी आँखे/हैं कैसी मतवारी आँखें/लगता है इतिहास रचेंगी/मेरी और .....तुम्हारी आँखे?*

हमारे समाज में दहेज प्रथा एक भयंकर समस्या बन गई है। इस प्रसंग में कवि का एक शेर देखिए–

खुद को गिरवी रख बाबुल ने पीले हाथ कराएँ हैं/नई दुल्हनिया का इस कारण घूँघट बहुत उदास है?

हमारी शिक्षा व्यवस्था में नन्हें 'मुन्नों' के कंधे पर बोझिल बस्ता उनके माता–पिता को भी चिंता में डाल देता है। यथा–

बोझिल बस्ता लाद दिया है भोले बचपन पर/मेरी बीबी, मैं खुद, मेरा नटखट बहुत उदास है?

आज बच्चों के हाथों में मोबाइल है। वे इस तकनीक में हम बड़ों से आगे हैं। काश? मोबाइल के अतिवादी दुरुपयोग से हम बच्चों को बचाकर उनके हाथों में वीरों की कहानियों, बाल कविताओं की पुस्तकें दे पाते। बकौल कवि के–

इस कदर मोबाइल में भटका है जीवन आज का/इसको वीरों की शहादत की कहानी दीजिए?

संकलन की शीर्षक ग़ज़ल में कवि ने उम्रभर के समस्त दुःख–दर्द को गीतों–ग़ज़लों की गुणवत्ता का मूल कारण मानते हुए कहा है–

उम्र के यूँ बिखर गए कतरे/गीत बनकर निखर गए कतरे?

कवि की इन ग़ज़लों में हिंदी, उर्दू और यत्र–तत्र अंग्रेजी के दैनिक बोलचाल वाले शब्दों का प्रयोग मिलता है। उनकी भाषा आम आदमी की भाषा है। हिंदी ग़ज़ल के शिल्प पर कवि की

अच्छी पकड़ है। कुल मिलाकर कवि की यह ग़ज़लें मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण करने में सफल हुई हैं। हिंदी ग़ज़ल के अधिकारी विद्वान डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, डॉ. विदुषी एवं डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव जी की सारगर्भित भूमिकाएँ कृति के कलेवर में चार चाँद लगाने वाली हैं। निष्कर्षतः इन ग़ज़लों से गुजरना ग़ज़ल प्रेमी पाठकों एवं मर्मज्ञजनों के लिए एक सुखद अहसास होगा।

इस वर्ष सुपरिचित कवयित्री डॉ. कविता किरण जी की ग़ज़लों का संग्रह 'उफ' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। वर्ष 2021 में ही शारदा नंदन दुबे 'सुबोध' जी की उम्दा ग़ज़लों का संग्रह 'मुसाफिर' जिज्ञासा प्रकाशन गाजियाबाद से आया। हिंदी ग़ज़ल के सशक्त एवं सुपरिचित हस्ताक्षर अनिरुद्ध सिन्हा जी की स्तरीय ग़ज़लों का संग्रह 'तुम भी नहीं' भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित होकर चर्चा में रहा। इसी काल खंड में डॉ भावना जी का ग़ज़ल संग्रह 'चुप्पियों के बीच' तथा आखिलेश श्रीवास्तव चमन जी का ग़ज़ल संग्रह 'रोशनी के वास्ते' प्रकाशित होकर ग़ज़ल प्रेमी पाठकों में चर्चित रहे। इसी क्रम में डॉ. राकेश चक्र जी का ग़ज़ल संग्रह भी उल्लेखनीय बन पड़ा है जो 'मेरी प्रिय ग़ज़लें' शीर्षक से ओम पब्लिशिंग कंपनी प्रकाशन, दिल्ली–32 द्वारा प्रकाशित किया गया है। समस्त ग़ज़लें पठनीय हैं।

इधर डायमंड बुक्स, नई दिल्ली–20 से वरिष्ठ ग़ज़लकार बाल स्वरूप राही जी की 95 ग़ज़लों का संग्रह 'चलो फिर कभी सही' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इन ग़ज़लों का अंदाज गागर में सागर भरने वाला है। एक ग़ज़ल में उनका यह शेर सचमुच उद्धरणीय बन गया है–

सोच बिल्कुल बदल गई यारो/जब से राही की शायरी देखी?

इसी प्रसंग में नंदी लाल जी की 103 ग़ज़लों का संग्रह 'मैंने कितना दर्द सहा है' भी उल्लेखनीय है, जिसे श्वेत वर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली–41 ने प्रकाशित किया है। सियासत पर कवि की एक टिप्पणी उनके इस शेर में द्रष्टव्य है–

वफ़ा सब जानते हैं, बेवफा कोई नहीं होता/करो कितना सियासत में सगा कोई नहीं होता?

अभी हाल ही में दिलीप सिंह 'दीपक' की ग़ज़लों का नया संग्रह 'बात अभी बाकी है' शब्दांकुर प्रकाशन, नई–दिल्ली–62 से प्रकाशित हुआ है। इन ग़ज़लों में कवि ने महानगरीय सभ्यता के साथ–साथ दुनिया जहान के बारे में बहुत कुछ कहा है। कवि का यह शेर तो लोगों को अच्छी सलाह देने में भी सफल हुआ है। यथा–

जो भी दिल के अंदर है/कह दो अच्छा अवसर है।

इसी क्रम में सेवक नैयर जी की ग़ज़लों और नज़्मों का संयुक्त संकलन 'क्या करोगे दिल लेकर' भी चर्चा में है जो यवनिक पब्लिकेशंस, पुणे–40 से प्रकाशित हुआ है। पुस्तक के बाएँ पृष्ठ पर इन्होंने रोमन लिपि में तथा दाएँ पृष्ठ पर देवनागरी लिपि में रचनाएँ प्रस्तुत की हैं ताकि देवनागरी न जानने वाले पाठक भी रचनाओं का आनंद ले सकें। कवि का एक शेर यहाँ उद्धरणीय है–

गमों की दोपहर में काम आया/किसी के रेशमी आँचल का साया?

प्यार मोहब्बत से भरी हुई ये ग़ज़लें पाठकों के दिलों में उतर जाने वाली हैं?

वर्ष 2021 में ही शिवना प्रकाशन, सीहोर (मध्य प्रदेश) से पंकज सुवीर जी का ताज़ा ग़ज़ल संग्रह 'यही तो इश्क है' प्रकाशित हुआ है। इश्क की पहचान कराते हुए कवि ने कहा है–

तू उसको भूलना चाहे, मगर हर बार
बस/अलावा उसके सब भूले, यही तो इश्क है।

इसी प्रकार गाँव–घर में जुड़ा हुआ उनका यह शेर भी दृष्टव्य है–

एक पुराना पेड़ बाकी है अभी तक गाँव में/इसलिए पुरवाई चलती है अभी तक गाँव में।

विश्वास है कि प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह रसिक पाठकों एवं शोध करने वालों में खासा चर्चित होगा?

इसी वर्ष बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस के हिंदी विभाग के प्रोफेसर एवं हिंदी ग़ज़ल पर डी. लिट् स्तर के विद्वान वशिष्ठ अनूप जी का आठवाँ ग़ज़ल संग्रह 'गरम रोटी के ऊपर नमक तेल था' प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। इन खूब–सूरत ग़ज़लों में आधुनिक यथार्थ बोध के साथ–साथ प्रेम और सौंदर्य का भी चित्रण हुआ है। इन ग़ज़लों में कवि ने बचपन की कोमलता, माँ की ममता और ग्रामीण परिवेश के रंग भी भरे हैं। उदाहरणार्थ–

गर्म रोटी के ऊपर नमक, तेल था/मैंने
हँसकर दुलारा तो अच्छा लगा/हर घड़ी
जीतने का चढ़ा था नशा/अपने बच्चों से
हारा तो अच्छा लगा?

निश्चय ही ये संकलित स्तरीय ग़ज़लें कथ्य एवं शिल्प के अनूठेपन से सरस पाठकों के दिलों में गहरे बहुत गहरे तक उतर जाने वाली हैं?

वर्ष 2021 में ही बोधि प्रकाशन, जयपुर से वरिष्ठ कवि एवं ग़ज़लकार हरेराम समीप जी की ग़ज़लों का संग्रह 'यह नदी खामोश है' प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। उन्होंने अपनी इन ग़ज़लों के माध्यम से इक्कीसवीं सदी के दुनिया–जहान में व्याप्त विसंगतियों, विद्रूपताओं एवं विकृतियों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। कवि ने सांस्कृतिक एवं नैतिक अवमूल्यन के संदर्भ में युवा पीढ़ी से प्रश्न किया है–

सौंप कर वह रक्त मज्जा, जिंदगी देती
तुझे/ये
बता क्यों माँ बुढ़ापे में दुखी खामोश है?

समय सदैव परिवर्तन की माँग करता है। ऐसे में कवि की सलाह है कि–

रास्ते में चाहिए गर अब सुकून/काफ़िले का
जल्द तू रहबर बदल?

समीप जी के पास कथ्य का व्यापक कैनवास है। ग़ज़ल के शिल्प की जादूगरी भी उनके पास है। वे लोगों को आईना दिखाना ही शायरी की सबसे बड़ी सफलता मानते हुए स्वीकार करते हैं–

हुकमरानों की नींद उड़ जाए/शायरी की
यही कमाई है?

निश्चय ही समीप जी की यह ग़ज़लें पाठकों की जुबान पर सदैव रची–बसी रहेंगी? हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए वे सदैव जाने–माने और पहचाने जाते रहेंगे?

वर्ष 2021 में ही जाने–माने ग़ज़लकार डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति जी के सुसंपादन में '30 ग़ज़लगो : 300 ग़ज़लें' शीषर्क से ग़ज़ल संग्रह वृहदाकार में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत संग्रह में 30 ग़ज़लकारों की दस–दस ग़ज़लें परिचय एवं चित्र सहित प्रकाशित की गई हैं। संकलित कवि हैं– डॉ. चंद्र त्रिखा, हस्तीमल हस्ती, ज्ञान प्रकाश 'विवेक', डॉ. श्याम सखा 'श्याम', डॉ. विनोद शलभ महेश अश्क, जहीर, कुरेशी, महावीर तन्हा, हृदयेश 'मयंक', प्रेम किरण, रमेश कमल, माधव कौशिक, ओम प्रकाश 'नदीम', अनिरुद्ध सिन्हा, देवेंद्रआर्य, गिरीश पंकज, कृष्ण कुमार प्रजापति, राम गरीब पांडेय 'विकल,' सतीश चंद्र, डॉ. शिव नारायण, सुशील साहिल, महेंद्र अग्रवाल, सुरेंद्र चतुर्वेदी, विनय मिश्र, अशोक अंजुम, सरफराज हुसैन 'फराज', विकास, ज्ञान प्रकाश पांडेय, के.पी. अनमोल, और राहुल शिवाय इन ग़ज़लों का चयन कमाल का है। सभी ग़ज़लें एक से बढ़कर एक सुंदर भाव प्रवण शिल्प की कसौटी पर खरी तथा दिलों तक सीधे संप्रेषित होने वाली हैं।

माँ की महिमा को रेखांकित करते हुए हस्तीमल 'हस्ती' जी कहते हैं–

माँ को देखा तो ये लगा मुझको/जैसे आयत
कोई पढ़ी है अभी?

कवि अशोक अंजुम जी भी सभी रिश्तों में माँ का रिश्ता ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। यथा–

पत्नी, बहिन, भाभियाँ, ताई/चाची, बुआ,
मौसी जी/सारे रिश्ते एक तरफ हैं/लेकिन
माँ का प्यार अलग?

इसी प्रकार विरोधाभास पर आधारित शायर जहीर कुरेशी का एक शेर क्या खूब बन पड़ा है–

मैं बर्फ को कभी मुट्ठी में रख नहीं पाया/अगन से हिम की मेरा हाथ जलता रहता है?

प्रस्तुत संकलन के संपादक डॉ. प्रजापति जी किसानों के सम्मान की बात बड़ी शिद्दत से उठाते हैं–

मिल के मालिक ही को बस मिलता है क्यों प्रमाण–पत्र/हम किसानों का भी कुछ सम्मान होना चाहिए।

इसी प्रकार नई ग़ज़ल के अधिकारी विद्वान एवं कवि डॉ. महेंद्र अग्रवाल जी ग़ज़ल के शिल्प के जादू को साझा करते हुए कहते हैं–

ये ग़ज़ल है इसका जादू सीखिए लहजा उठे/किस तरह मिसरे के ऊपर दूसरा मिसरा उठे।

कुल मिलाकर इन सभी ग़ज़लकारों को एक साथ पढ़ने का अपना अलग ही आनंद है। शोधार्थियों एवं ग़ज़ल प्रेमियों के लिए प्रस्तुत संकलन का अपना विशेष महत्व है।

विद्या प्रकाशन, कानपुर से इसी वर्ष वरिष्ठ ग़ज़लकार हस्तीमल 'हस्ती' जी के व्यक्ति और कृतित्व पर हूबनाथ पांडेय जी के सुसंपादन में 'ग़ज़लकार हस्तीमल हस्ती' नामक ग्रंथ का प्रकाशन हुआ। जिसमें दर्जनों विद्वानों द्वारा हस्ती जी के ग़ज़ल संबंधी योगदान को मूल्यांकित किया गया है। मुझे भी बहुत पहले वरिष्ठ ग़ज़लकार डॉ. हनुमंत नायडू के संयोजन में नागपुर में आयोजित ग़ज़ल विषयक संगोष्ठी में हस्ती जी का सामीप्य लाभ मिल चुका है। एक अरसे तक वे स्तरीय 'काव्या' नामक पत्रिका का संपादन–प्रकाशन करते रहे। उनका एक शेर तो आज तक जुबान पर है– *प्यार का पहला खत लिखने में वक्त तो लगता है/नए परिंदों को उड़ने में वक्त तो लगता है?* ग्रंथ पठनीय एवं संग्रहणीय है?

वर्ष 2021 में ही सुशील कुमार जी समकालीन हिंदी ग़ज़ल विषयक समालोचनात्मक ग्रंथ 'हिंदी ग़ज़ल का आत्मसंघर्ष' प्रलेक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है जिसमें अपने समय की कुछ चुनिंदा ग़ज़लों के विशेष संदर्भ के विषय का मूल्यांकन किया गया है। शोधार्थियों के लिए प्रस्तुत ग्रंथ अत्यंत ही उपयोगी है।

इसी वर्ष समन्वय प्रकाशन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) से हिंदी के यशस्वी ग़ज़लकार जहीर कुरेशी की शोधपरक कृति 'हिंदी ग़ज़ल की अवधारणा' प्रकाशित एवं चर्चित हुई है। निश्चय ही हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में यह एक उपयोगी, पठनीय व संग्रहणीय ग्रंथ है।

इसी वर्ष अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली–2 से डॉ. सायमा बानो का उपयोगी ग्रंथ 'हिंदी ग़ज़ल का सौंदर्य शास्त्र' प्रकाशित हुआ जिसमें विदुषी लेखिका ने चर्चित हिंदी ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में निहित सौंदर्य शास्त्र का निरूपण किया है। आशा है कि यह भी हिंदी ग़ज़ल के शोधार्थियों के लिए एक आवश्यक ग्रंथ सिद्ध होगा।

इसी प्रकार 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए युवा किंतु समर्थ कवयित्री डॉ. सोन रूपा विशाल जी ने वरिष्ठ ग़ज़लकार एवं मनीषी हरे राम समीप जी के प्रेरक मार्गदर्शन में अपने पूज्य पिता यशःकाय डॉ. उर्मिलेश के हिंदी ग़ज़ल विषयक योगदान पर आधारित एक समालोचनात्मक ग्रंथ हिंदी ग़ज़ल और डॉ. उर्मिलेश का सुसंपादन किया जो ऐनी बुक प्रकाशन से इसी वर्ष प्रकाशित हुआ। ग्रंथ के आरंभ में हिंदी ग़ज़ल की अवधारणा पर आधारित उर्मिलेश जी के कई आलेख संकलित हैं। इसी क्रम में 'ग़ज़लकार डॉ. उर्मिलेशः एक विमर्श' स्तंभ के अंतर्गत उन्हीं की ग़ज़ल संबंधी उपलब्धियों पर आधारित डॉ. शैलेंद्र कबीर, डॉ. किशोर काबरा, हरे राम समीप, कमलेश भट्ट 'कमल,' डॉ. मधुकर खराटे, डॉ. शिवओम अंबर, रोहिताश्व अस्थाना, जहीर कुरेशी, डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, डॉ. महेंद्र अग्रवाल, डॉ. ऋषिपाल धीमान, डॉ. नितिन सेठी, रमेश विकट, अशोक अंजुम, डॉ. यायावर, डॉ. रमा सिंह आदि के मूल्यांकन परक आलेख संकलित हैं। उर्मिलेश जी की ग़ज़ल कृतियों पर विद्वत्जनों

की सार्थक समीक्षाएँ भी ग्रंथ में सम्मिलित हैं। अपनी हिंदी ग़ज़ल की विकास–यात्रा पर आधारित डॉ. उर्मिलेश जी का आत्मकथ्य विशेष रूप से प्रेरक व पठनीय बन पड़ा है। ग्रंथ के अंत में डॉ. उर्मिलेश जी की चुनिंदा ग़ज़लें व शेर, जिनमें कुछ उनकी हस्तलिपि में भी हैं, मन को छू लेने वाली हैं। उनका एक आत्मकथ्यात्मक शेर तो उनकी ग़ज़लों की भाषाई विशेषता को स्पष्ट करता है। यथा–

हम न उर्दू में न हिंदी में ग़ज़ल कहते हैं/हम तो बस आपकी बोली में ग़ज़ल कहते हैं?

इसी प्रकार अंतिम कवर पृष्ठ पर डॉ. उर्मिलेश जी के ग़ज़ल साहित्य पर श्रद्धेय कृष्णविहारी 'नूर', गोपाल दास नीरज, डॉ. कुँअर बेचैन, डॉ. अशोक चक्रधर, हरे राम समीप, डॉ. शिव ओम अंबर आदि की संक्षिप्त समीक्षापरक टिप्पणियाँ ग्रंथ की गुणवत्ता में चार चाँद लगाने वाली हैं। वास्तव में 374 पृष्ठीय प्रस्तुत ग्रंथ एक बेटी द्वारा अपने पिताश्री को दी जाने वाली एक सच्ची स्मरणांजलि है। मुख पृष्ठ पर मुद्रित डॉ. उर्मिलेश जी का नयनाभिराम चित्र हम सबके दिलों में रचा–बसा रहेगा। निश्चय ही प्रस्तुत ग्रंथ हिंदी ग़ज़ल से जुड़े हुए प्रत्येक पाठक, कवि एवं शोधार्थी के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है।

पत्र–पत्रिकाओं में इसी वर्ष प्रकाशित ग़ज़लों ने विधा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। 'साहित्य संस्कार' (जबलपुर), 'शुभतारिका' (अंबाला छावनी), 'गोल कोंडा दर्पण' (हैदराबाद), 'शिक्षक प्रभा' (सीतापुर), 'रंग चकल्लान' (मुंबई), 'अभिनव प्रयास' (अलीगढ़) आदि पत्रिकाओं में इस वर्ष उम्दा ग़ज़लों पाठकों द्वारा सराही गईं।

इनके अतिरिक्त विभोम स्वर, 'सोच विचार', 'पुष्पगंधा', 'साहित्य अमृत', 'हरिगंधा', 'समय सुरभि अनंत', 'लोकमत समाचार', 'दि अंडरलाइन', 'अनन्तिम', 'यू.एस.एम. पत्रिका', 'समकालीन त्रिवेणी', 'अर्बावे कलम', 'प्रेरणा', 'इंद्रप्रस्थ भारती', 'पहला अंतरा', 'नवनिकष', 'नारी दर्पण', 'साहित्य समय', 'साहित्य वाटिका', 'प्राची', 'कलम पुत्र', 'गीत गागर', 'साहित्य परिधि', 'शाश्वत सृजन' आदि पत्रिकाओं में भी इस वर्ष ग़ज़लों की धूम रही। इस वर्ष के अंत में हरे राम समीप जी के संपादन में समन्वय प्रकाशन गाजियाबाद से हस्ती मल 'हस्ती' के 'चुनिंदा अशआर' नामक पुस्तक प्रकाशित एवं चर्चित हुई है। इसी प्रकार से वरिष्ठ ग़ज़लकार किशन स्वरूप जी की ग़ज़लों का एक संकलन वर्ष 2021 के विदा होते–होते समन्वय प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है जो इन दिनों खासा चर्चा में है। इनका उल्लेख यहाँ आवश्यक है।

दुर्भाग्यवश वर्ष 2021 के हाहाकारी कोरोना काल में सुप्रसिद्ध कवि/साहित्यकार डॉ. नरेंद्र कोहली, डॉ. कुँअर बेचैन, दरवेश भारती, जहीर कुरेशी, वाहिद अली वाहिद, कुमार शिव, राजेंद्र राजन, कैलाश सेंगर, योगेंद्र मौद्गिल, मंगलेश डबराल, कमलेश द्विवेदी, इशरत रिज़वी, डॉ. वर्षा सिंह, मुकुंद कौशल, राम अधीर, मंजूर एहतेशाम, नेहपाल वर्मा आदि अस्पतालों, बेडों, आक्सीजन, वेंटीलेटर आदि के अभाव में काल के गाल में असमय ही समा गए।

इस प्रकार कोरोना काल में मृत्यु के तांडव नर्तन के चलते हुए भी वर्ष 2021 हिंदी ग़ज़ल की विकास–यात्रा का रथ रुका नहीं? हाँ आत्मीयजनों की जो अपूरणीय क्षति इस वर्ष हुई है, उसकी पूर्ति सर्वथा असंभव है। यह एक अद्भुत रहस्य है कि जाने वाले कभी लौटकर नहीं आते हैं, बस उनकी यादें ही शेष रह जाती हैं। अतः भविष्य के लिए यही प्रभु से प्रार्थना है कि इस वर्ष के अंत के साथ ही दुर्दांत कोरोना का भी समूल नाश हो जाए और वर्ष 2022 का प्रथम सूर्योदय हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में नव आनंद मंगल के साथ हो।

❑❑❑

23

हिंदी निबंध एवं लेख

विदुषी शर्मा

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पिछले दो वर्षों से कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को आहत कर रखा है। रात्रि कर्फ्यू, सप्ताहांत बंदी के कारण सामान्य जन भी अपनी आजीविका और दैनिक कार्य करने के लिए भी किसी न किसी प्रकार से प्रभावित हुआ है तो फिर साहित्य जगत इससे किस प्रकार अछूता रह सकता है। वर्ष 2021 में भी अधिकतर कार्य ऑनलाइन माध्यम से या वर्चुअल मंचों के द्वारा ही संपन्न हुए या संपन्न करवाने पड़े। इस संदर्भ में तकनीकी ने भी हमारा भरपूर साथ दिया। इस साल प्रिंट मीडिया की अनुपस्थिति में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया खूब सक्रिय रहा। सोशल मीडिया की बदौलत हम घरों में बंद रहने के बावजूद एक–दूसरे से जुड़े रहे।

शैक्षिक जगत भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाया। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जहाँ विचार व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है वहीं प्रकाशित सामग्री तथा प्रकाशन विभाग इससे बहुत अधिक आहत हुआ है।

दिल्ली के प्रगति मैदान में प्रतिवर्ष आयोजित 'विश्व पुस्तक मेला' जो हर वर्ष जनवरी माह में आयोजित किया जाता था जहाँ देशभर से प्रकाशक, वितरक, दर्शक, शैक्षणिक संस्थान, विद्यार्थी, लेखक, साहित्यकार, समीक्षक, पत्रकार, शिक्षाविद इत्यादि इस मेले में आकर हर प्रकार से पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं तथा विभिन्न प्रकार की प्रकाशन सामग्री एवं तथा शैक्षिक जगत से संबंधित नए–नए रोचक अनुसंधान एक दूसरे के साथ साझा करते थे और ज्ञानार्जन के लिए नए द्वार खोलते थे। नवांकुरों तथा विद्यार्थियों के लिए यह मेला एक स्वप्न से अधिक सुंदर होता था। परंतु विडंबना देखिए कि इस कोरोना महामारी के कारण इस वर्ष विश्व पुस्तक मेले का आयोजन भी सामान्य रूप से नहीं हो पाया।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के वर्चुअल संस्करण का उद्घाटन किया। कार्यक्रम का आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा किया गया। 2021 नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का विषय 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' था। नई शिक्षा नीति 2020 को पिछले साल केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा पारित किया गया था, जो मौजूदा शिक्षा नीति में कई महत्वपूर्ण बदलावों का प्रस्ताव करता है। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2021 वार्षिक आयोजन का 29वाँ संस्करण है और यह मेला कोविड–19 महामारी के कारण पहली बार वर्चुअली आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन स्वायत्त प्रकाशन समूह है। एनबीटी की स्थापना वर्ष 1957 में हुई थी। ट्रस्ट द्वारा अब तक 37,420 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं एवं 4350 अनुवाद प्रकाशित हो

चुके हैं। हम सभी जानते हैं कि पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी मित्र होती हैं। पर कोरोना महामारी के कारण बच्चे व बड़े सब ऑनलाइन शिक्षा पर निर्भर हो गए। बीते दो वर्षों में उन्हें नई किताबें खरीदने का मौका नहीं मिला। ऐसे में भारत सरकार द्वारा लिए गए एक प्रयास के तहत राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की मोबाइल वैन के द्वारा दिल्ली में द्वारका की विभिन्न सोसाइटियों में घूम–घूमकर बच्चों व बड़ों को किताबें खरीदने का अवसर दिया जिसे लोगों ने बहुत सराहा। यह एक बहुत सार्थक प्रयास रहा।

साहित्य प्रत्येक लेखक के लिए अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करता है। साहित्य मानवता का प्रतिबिंब है।

वर्ष 2021 के दौरान प्रकाशित 'हिंदी निबंध और लेख' पर केंद्रित सर्वेक्षणात्मक लेख के रूप में प्रस्तुत इस आलेख में आकलन वर्ष के दौरान प्रकाशित पुस्तकों का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है। आलोच्य वर्ष के दौरान प्रकाशित सभी कृतियों की विस्तृत चर्चा इसमें शामिल कर पाना संभव नहीं है। इसी के साथ मैं यह भी स्पष्ट करना चाहती हूँ कि इसका यह आशय कदापि नहीं है कि संक्षेप में चर्चित या उल्लिखित निबंध या लेख ही महत्वपूर्ण, प्रामाणिक, पठनीय, संग्रहणीय, प्रशंसनीय अथवा चर्चा के योग्य हैं। निश्चित ही इन सभी ने यथा साध्य हिंदी वांङ्मय की धारा को निरंतरता, गति और शक्ति प्रदान करने में अपना यथासंभव योगदान प्रदान किया है। इसमें दो राय नहीं हैं। इस आलेख में जो प्रस्तुतिकरण प्रदान किया गया है, वह सर्वेक्षण की सुविधा के लिए किया गया वर्गीकरण मात्र है। इस आलेख में शिक्षण प्रशिक्षणपरक कृतियों के वर्ग में जिन कृतियों की चर्चा की गई है, तथा अन्य वर्गों में भी जिन कृतियों की चर्चा की गई है, यह सब सर्वेक्षण की दृष्टि से की गई समीक्षा है। अध्ययन, विमर्श, अनुसंधान, चिंतन, मनन आदि के महत्वपूर्ण प्रासंगिक सर्वेक्षण परंपरा को जीवंत, निरंतर बनाए रखने के लिए यह अपरिहार्य भी है।

वर्ष 2021 में जो सबसे अधिक चर्चित रहा है वह विषय 'नई शिक्षा नीति' 2020 था।

यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है और यह 34 साल पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई), 1986 की जगह लेगी। नई शिक्षा नीति पर बहुत से विचार विमर्श और वेबीनार के माध्यम से बहुत से शोध पत्रों का प्रकाशन संभव हुआ। इसी पर आधारित बहुत सी पुस्तकों में से प्रभात प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित अतुल कोठारी द्वारा लिखित पुस्तक 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020ः भारतीयता का पुनरुत्थान' यह पुस्तक भारतीय ज्ञान परंपरा जो हमारी थाती है उसी के पुनरुत्थान हेतु नई शिक्षा नीति 2020 किस प्रकार प्रासंगिक है इस महत्वपूर्ण विषय पर आधारित यह पुस्तक आने वाली पीढ़ियों को बहुत कुछ सिखाने वाली है। हमारी पुरानी शिक्षा पद्धति, गुरुकुल आधारित शिक्षा किस प्रकार से विद्यार्थियों में संयम, अनुशासन, कर्मठता, ज्ञान, धैर्य इत्यादि का संगम करवाकर उन्हें भविष्य के लिए एक जिम्मेदार नागरिक बनाती थी यह पुस्तक इन्हीं सब बातों का प्रतिनिधित्व करती नजर आती है। डॉ. अतुल किशोर शाही द्वारा लिखित अग्रवाल प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'शिक्षा के मूल तत्व' जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है? शिक्षा हमारे जीवन में क्यों आवश्यक है? जीवन में शिक्षा का क्या महत्व है तथा शिक्षा प्राप्त करने के बाद हमारे कर्तव्य क्या हैं इन्हीं सब बातों का समावेशन इस पुस्तक में किया गया है। इसी क्रम में पूर्व केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा लिखित 'मूल्य आधारित शिक्षा' प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक भी प्रमुख रूप से महत्वपूर्ण रही। 'विद्यालयों के द्वार पर शिक्षार्थ आइए, सेवार्थ जाइए' इस उक्ति के महत्व को इस पुस्तक के माध्यम से बताया गया है तथा निशंक जी ने अपनी ओजपूर्ण लेखनी से यह बताने का प्रयत्न किया है कि शिक्षा केवल शिक्षित होने के लिए नहीं या रोजगार प्राप्त करने के लिए नहीं होनी चाहिए अपितु मानवीय मूल्यों का संरक्षण भी बहुत आवश्यक है। शिक्षा वही सार्थक है जो वास्तव में मानव को मानव बनाती है वही शिक्षा उपयोगी है।

वान्या प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'प्रथमा' जो भारत की उन महत्वपूर्ण प्रथम महिलाओं पर आधारित है जिन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में अपना नाम आगे बढ़ाया और आने वाली स्त्रियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। यह महत्वपूर्ण पुस्तक डॉ. विदुषी शर्मा, वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर और डॉ. विजय कुमार कौशिक वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर द्वारा संपादित है। इस पुस्तक में कुल इकतीस भारतीय महिलाओं पर निबंध प्रस्तुत किए गए हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी रही हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

डॉ. प्रतिभा देवी सिंह पाटिल : भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति, (कंचन चौरसिया), कल्पना चावला : प्रथम भारतीय महिला अंतरिक्ष यात्री (डॉ. विजय कुमार कौशिक), बछेंद्री पालः प्रथम महिला पर्वतारोही (डॉ. नेहा तिवारी), श्रीमति इंदिरा गांधी : प्रथम महिला भारत रत्न (संतोष खन्ना), मायावती : प्रथम महिला दलित मुख्यमंत्री, (डॉ. मनोज अवस्थी), अमृता प्रीतमः साहित्य अकादमी सम्मान पाने वाली प्रथम महिला (डॉ. निर्मला शर्मा) इत्यादि बहुत ही महत्वपूर्ण विषयों का संकलन इस पुस्तक में किया गया है।

'पर्यावरण संरक्षण एवं स्वस्थ जीवन शैली' डॉ. अमित कुमार दीक्षित और डॉ. स्नेह लता शर्मा द्वारा संपादित, केबीएस प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण पुस्तक है जो पर्यावरण संरक्षण और स्वस्थ जीवन के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करती है। कोरोना महामारी में पर्यावरण की महत्ता हम सबने न केवल देखी बल्कि महसूस भी की। उसी के साथ स्वस्थ जीवनशैली, संयमित दिनचर्या, संतुलित आहार, व्यायाम, प्राणायाम आदि का कितना महत्व है ये इस पुस्तक के आधारभूत विषय हैं।

प्रवासी साहित्यकारों से साक्षात्कार रूप में 'प्रवासी साहित्य : विश्व के हिंदी साहित्यकारों से संवाद' दो खंडों में प्रकाशित यह पुस्तक जो डॉ. दीपक पांडे, डॉ. नूतन पांडे द्वारा संपादित स्वराज प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक है जो प्रवासी साहित्यकारों के जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं से अवगत कराती है। इसमें प्रमुख प्रवासी साहित्यकारों जैसे रामदेव धुरंधर, अभिमन्यु अनत, सुषम बेदी आदि के जीवन की प्रमुख घटनाओं और उनके संघर्ष के बारे में उन्हीं की जुबानी बताया गया है।

इसके बाद प्रवासी भारतीयों के जीवन पर आधारित पुस्तक 'प्रवासी साहित्य भाषा और समाज' हंस प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक है जो डॉ. मोनिका देवी द्वारा संपादित है। इस पुस्तक में प्रवासी साहित्य का समाज और भाषा के द्वारा जो अन्योयाश्रित संबंध है उसी के बारे में विभिन्न लेखकों के विचारों का संकलन किया गया है जिनमें से कुछ प्रमुख हैं 'दिन पिघल रहे हैं,' (सुशील कुमार 'आजाद')

बहुसांस्कृतिक और बहुआयामी : 'कनाडा का शहर टोरंटो' (डॉ. हँसा दीप), 'भाषा, संस्कृति और समाज' (डॉ. गंगाप्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'), 'प्रवासी साहित्यकारों की अंतर्थथा का सूक्ष्म अवलोकन' (डॉ. करुणा पांडेय), प्रवासी भाषा साहित्य, (डॉ. अनिता सिंह) आदि।

'आधुनिकता का दर्पण' डॉ. राम सनेही लाल शर्मा द्वारा लिखित निबंध संग्रह है जो इंटरनेशनल प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित है। प्रस्तुत निबंध संग्रह में आधुनिकता आज समाज में किस प्रकार अपने पैर पसार रही है तथा पश्चिमी देशों की जीवन शैली हमारे युवाओं को किस प्रकार अपनी ओर आकर्षित कर रही है जो आने वाले भविष्य की ओर एक चेतावनी है कि पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति उनके देश काल वातावरण के लिए उचित हो सकती है परंतु हमारे भारतवर्ष के लिए भी वह उतनी ही लाभदायक हो ये ज़रूरी नहीं है। यही इस पुस्तक का सार है।

समीर प्रजापति द्वारा संपादित पुस्तक 'हिंदीः विविध संदर्भ' प्रकाशित हुई है हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर ही रुद्रादित्य प्रकाशन, प्रयागराज द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में हिंदी भाषा की सर्वव्यापकता पर प्रकाश डाला गया है। इसमें दो राय नहीं है कि बहुभाषा–भाषी एवं सांस्कृतिक विभिन्नता के बावजूद हिंदी अपने भीतर अनेक विशेषताएँ समेटे हुए है। सशक्त तो इतनी कि बिना उसके संपर्क,

राजनीति, प्रशासन, शिक्षा, मीडिया, सिनेमा, साहित्य एवं कलात्मक अभिव्यक्तियों की कल्पना करना मुश्किल है। लेकिन हिंदी की विडंबनाएँ भी कम नहीं है! आज़ादी के पचहत्तर साल बाद भी हम उसे कार्यान्वयन– क्रियान्वयन, प्रयोग–अनुप्रयोग एवं प्रचार–प्रसार की मुख्य भाषा नहीं बना पाए हैं। एक और महत्वपूर्ण बात, शिक्षा ही संस्कृति की बुनियाद होती है और भाषा उसका माध्यम– हिंदी की उपेक्षा करके हम अपनी बुनियाद और माध्यम दोनों को ही कमजोर कर रहे हैं। पुस्तक में संगृहीत एवं विभिन्न शीर्षकों से लिखित सभी लेख कहीं न कहीं हिंदी की विशेषताओं को उजागर करते हैं, सवालों से जूझते हैं, करीब–करीब उन सारे ही प्रमुख सवालों से, जिनसे आज हिंदी भाषा जूझ रही है। हिंदी लोक की वैचारिक शक्ति को स्वस्थ और समृद्धि प्रदान करने में यह पुस्तक सहायक सिद्ध हो सकती है।

'बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति' डॉ. जगजीवन राम द्वारा लिखित आध्यात्मिक जीवन एवं भारतीय संस्कृति के संबंध को दर्शाने वाली एक पुस्तक है जो रूद्र प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित है। यह पुस्तक बुद्ध के धर्म मध्यम मार्ग और भारतीय संस्कृति पर मुख्यतः आधारित है। बुद्ध ये बताते हैं कि दो अंतों से बचकर रहना चाहिए– कठोर तप तथा अत्यधिक भोग विलास। इन दोनों के बीच की स्थिति (मध्यम प्रतिपदा) श्रेयष्कर है। इस मार्ग का प्रतिपादन उन्होंने इस प्रकार किया "भिक्षुओं, संन्यासी को दो अंतों का सेवन नहीं करना चाहिए"। हमारी संस्कृति की बहुत सी और विशेषताओं के बारे में भी इस पुस्तक में बताया गया है।

तेलुगुभाषी हिंदी साहित्यकार एवं हिंदी भाषा में स्वर्ण पदक विजेता गुर्रमकोंडा नीरजा की पुस्तक 'समकालीन साहित्य विमर्श' पर जो विचार प्रस्तुत हैं वो विशेषज्ञता को रेखांकित करने वाले हैं कि "समकालीन साहित्यकार गति अवरोधक मूल्यों के प्रति सदैव विद्रोही और अपनी रचनाओं में नवीन विचारों की स्थापना कर चेतना भरने वाले रहे हैं। यह उनकी छठी मौलिक पुस्तक है। इस पुस्तक में हरित विमर्श, किन्नर विमर्श, स्त्री विमर्श, लघुकथा विमर्श, लोक विमर्श, दलित विमर्श, विस्थापन विमर्श, आदिवासी विमर्श, वृद्धावस्था विमर्श और उत्तर आधुनिक विमर्श पर केंद्रित चौबीस शोधपूर्ण आलेख शामिल हैं। उनकी रचनाएँ नवीन विषय वस्तु और शैलीय भंगिमा की दृष्टि से अभिनव हैं। उनके प्रयोगात्मक वैशिष्ट्य तथा आधुनिक वैचारिक दृष्टि को अभिव्यंजित करने में यह पुस्तक पूरी तरह सफल हुई है। इस पुस्तक में पाँच खंडों में सम्मिलित चौबीस आलेखों में विभिन्न विमर्शों को पुल के अलग–अलग भागों की तरह एक साथ लाकर इस तरह जोड़ा गया है कि अपने स्वरूप में वे पूर्णता को प्राप्त कर लें। ये सभी लेख अलग–अलग समय में लिखे गए हैं इसलिए इनकी अपनी अलग पहचान तो है ही, लेकिन इस किताब में संकलित हो जाने और इन्हें एक साथ पढ़ने से पाठक इन लेखों के 'तेरहवें स्वाद' से भी परिचित हो सकेंगे।

हेमंत कुमार, शोधार्थी, केंद्रीय विश्वविद्यालय केरल द्वारा संपादित पुस्तक 'समकालीन हिंदी यात्रा–वृत्तांत विविध आयाम' कौटिल्य प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित यह पुस्तक मुख्यतः यात्रा वृत्तांतों पर आधारित है। इसमें कुल इकत्तीस निबंध हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में पर्यटन विषय से संबंधित यह पुस्तक अध्यापन कर रहे शिक्षकों, शोधार्थियों द्वारा शोध–परक आलेखों से समृद्ध है, जो शोधार्थियों/विद्यार्थियों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। किसी भी देश की भाषा साहित्य, संस्कृति को नजदीक से समझने के लिए यात्रा का बहुत अधिक महत्व होता है और यात्रा पर आधारित निबंध यदि उस बारे में प्राप्त होते हैं तो यह बहुत महत्वपूर्ण है जैसे कि कुछ इस तरह के निबंध इस पुस्तक में सम्मिलित हैं जिनके शीर्षकों को देखकर हम इसकी महत्ता का अंदाजा लगा सकते हैं।

'कुछ अलग से' (विश्वनाथ प्रसाद तिवारी), 'सफरी झोले में छह किताबें' (दुर्गाप्रसाद अग्रवाल), 'टूरिज्म नहीं, सोशल टूरिज्म' (असग़र वजाहत), 'यात्रा का आनंद' (हरिराम मीणा), 'यात्रा साहित्य

पर कुछ तथ्य व विचार' (सीमा चंद्रन), 'समकालीन हिंदी यात्रावृतों में पर्यावरणीय बोध का स्वरूप' (हेमंत कुमार), 'हिंदी के यात्रा साहित्य में प्रकृति संपदाः एक अध्ययन' (पार्वती जे. गोसाई), 'जिज्ञासा बौद्धिक प्रगति और यात्राएँ' (दिनेश शर्मा), 'समकालीन हिंदी यात्रा–साहित्यों में आत्मीयता' (अशोक कुमार सखवार), 'यात्रा साहित्य स्वरूप एवं तत्व', (ओम प्रकाश सुंडा), समकालीन हिंदी यात्रा साहित्य में पूर्वोत्तर' (शिवशंकर आर. यादव), 'आजादी मेरा ब्रांड' स्वातंत्र्यबोध का नया स्वर (बिनीता मिश्रा) आदि।

'साहित्य, संस्कृति और भाषा' प्रतिष्ठित साहित्यकार ऋषभदेव शर्मा द्वारा लिखित व अमन प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित एक महत्वपूर्ण पुस्तक है।

प्रतिष्ठित हिंदी सेवी, कवि और समीक्षक प्रो. ऋषभदेव शर्मा (1957) ने अपनी सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'साहित्य, संस्कृति और भाषा' (2021) में बड़े रोचक ढंग से इन तीनों के विविध आयामों एवं चुनौतियों को कुल चार खंडों में सम्मिलित अठारह आलोचनात्मक आलेखों में बखूबी उजागर किया है।

'भारतीय संस्कृति : आज की चुनौतियाँ', 'बदलती चुनौतियाँ और हिंदी की आवश्यकता', 'हिंदी की दुनिया : दुनिया में हिंदी', 'देश और उसकी भाषा', 'विश्वशांति और हिंदी' तथा 'हिंदी भाषा की विश्वव्यापकता' शीर्षक से छह आलेख प्रथम खंड में सम्मिलित हैं। इन आलेखों से पता चलता है कि लेखक की दृष्टि वैश्विक है। उनका मानना है कि "भारतीय संस्कृति मनुष्य के भीतर छिपी हुई उसकी दिव्यता को प्रकाशित करने के प्रयत्नों का सामूहिक नाम है।" (पृ.11)। भारतीय संस्कृति का केंद्रीय मूल्य 'भारतीयता' है। लेखक ने इसे 'अविरोधी भाव' कहा है। हमारी संस्कृति बहुत ही प्राचीन संस्कृति है। इसके अपने मूल्य हैं जो हमारी धरोहर हैं।

लेखिका उर्मिलेश 'ग़ाज़ीपुर में क्रिस्टोफर कॉडवेल' एक अलग से शीर्षकों वाली पुस्तक है जिसमें संस्मरणात्मक निबंधालेख हैं जिसके प्रकाशक, नवारुण, ग़ाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश से हैं। इस पुस्तक में कुल बारह निबंध हैं जो विभिन्न विषयों से संबंधित हैं।

'हमने इस महादेवी को देखा था,' 'प्रेम, करुणा और तकलीफ़ का उमड़ता समंदर,' 'जेएनयू के 'वामाचार्य' और एक अयोग्य छात्र के नोट्स,' 'हिंदी का अनोखा डेमोक्रेट,' 'पत्रकारिता में हमारे पहले दफ्तर के लोग' आदि। एक अनोखे शीर्षक का संग्रह है।

'नारी विमर्शः नए स्वर' समाज में नारियों की दशा को उजागर करती यह पुस्तक डॉ. सपना और अनुराधा कुमारी द्वारा संपादित क्लासिक एरा पब्लिकेशन, चंबा हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रकाशित है। इसमें कुल चौदह निबंधों का संकलन है जो हिंदी साहित्य की प्रतिष्ठित लेखिकाओं की रचनाओं पर आधारित विभिन्न प्रकार के पहलुओं पर चर्चा कर रहे हैं जिनमें से प्रमुख हैं–

'नारी और साक्षरता का अभिप्राय?' (रश्मि अग्रवाल), 'नारीः इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति, कर्म शक्ति' (डॉ. विदुषी शर्मा), 'भारत में महिला अपराध अधिकार' (रीना यादव), 'कानून आज के दौर में महादेवी वर्मा और उनके रेखाचित्र' (सुमन), 'नारीः आज तक क्यों बेचारी?' (डॉ. इला अग्रवाल), 'आधुनिक परिपेक्ष्य और स्त्री धर्म' (श्रीमती रीता), 'विजयदान देथा की कहानियों में नारी का स्वरूप' (अशोक दैय्या), 'गदर की चिनगारियाँ नाटक –संग्रह में चित्रित नारी सशक्तीकरण' (डॉ. सपना), 'उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'शेषयात्रा' में नारी–विमर्श के विविध आयाम' (दीपशिखा शर्मा), 'कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में नारी सशक्तीकरण' (अनुराधा कुमारी) आदि।

'पर्यावरणीय समस्याएँ एवं समाधान' डॉ. सुनीता अवस्थी, डॉ. पूजा वरुण द्वारा संपादित पुस्तक है जो राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर से प्रकाशित है। वर्तमान में पर्यावरण की समस्याएँ कितनी अधिक हो चुकी हैं यह हम सभी जानते हैं और उनका समाधान किस प्रकार किया जाए यह भविष्य के लिए एक बहुत बड़ा प्रश्न है बहुत ही प्रासंगिक विषय पर यह पुस्तक निबंध संग्रह प्रकाशित किया

गया है विषय से संबंधित इस पुस्तक में एकत्र निबंधों का संग्रह है जिनमें से कुछ प्रमुख हैं.... पारिस्थितिकी संतुलन एवं वातावरण परिवर्तन में संगीत की भूमिका (डॉ. दुष्यंत त्रिपाठी) गौरागी परिवर्तन और उसका सामाजिक व आर्थिक प्रभाव (डॉ. शैलजा रानी अग्निहोत्री), प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं जैन संस्कृति (जोशी विगा प्रफुलगाई), हरित विपणन पर्यावरण रक्षक (डॉ. सुलक्ष्मी तोषनीवाल), भारत का संविधान और पर्यावरण संरक्षण राज्य के नीति निदेशक तत्वों का विशिष्ट मूल्यांकन (डॉ. मनोज अवस्थी), गांधी दर्शन में पर्यावरण संरक्षण एक मूल्यांकन (डॉ. ज्योति देवल), जलवायु परिवर्तनः एक वैश्विक चुनौती (डॉ. नीलम जोशी) आदि।

संपादक अमित कुमार दूबे द्वारा संपादित पुस्तक 'भारतीय शिक्षक–शिक्षा में उभरती प्रवृत्तियाँ', जिसके प्रकाशक हैं जे.टी.एस. पब्लिकेशंस, दिल्ली, इसमें कुल अड़तीस निबंधों का संग्रह है। यहाँ मैं कुछ निबंधों के शीर्षक साझा करना चाहूँगी जिससे यह ज्ञात होता है कि यह पुस्तक भारतीय शिक्षण व्यवस्था को उजागर करने में कितनी कारगर सिद्ध हो सकती हैं जैसे, 'सांप्रदायिक और नैतिक शिक्षा' (डॉ. अनुकूल सोलंकी), 'शिक्षक शिक्षा में समतामूलक व समावेशी शिक्षा' (ललिता रानी), 'प्राचीन और आधुनिक शिक्षक–शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन' (डॉ. शिंदे मालती धोंडो पंत), 'व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में परिवार व समाज की भूमिका' (शिल्पी भटनागर), 'कोविड– 19 के दौरान शिक्षण एवं प्रशिक्षण में प्रयुक्त ऑनलाइन अधिगम पद्धति' (डॉ. आर्य कुमार हर्षवर्धन), 'सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के संदर्भ में शिक्षक–शिक्षा हेतु कार्यशाला एवं संगोष्ठी का महत्व, चुनौतियाँ एवं समाधान' (डॉ. रंजीत कुमार), 'वर्तमान समय में ऑनलाइन शिक्षा के सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष' (डॉ. क्षितिज्ञा) आदि।

यह पुस्तक कोरोना महामारी के दौर में अध्यापक शिक्षा की चुनौतियों पर गंभीर अध्ययन करती है। आज के दौर में शिक्षण व अध्यापन के परिवर्तनों को शिक्षक–शिक्षा एवं शिक्षण से जोड़कर अच्छी प्रकार से व्याख्या करती है। पुस्तक में भारतीय शिक्षक, शिक्षण में उभरती प्रवृत्तियों से संबंधित मौलिक, महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक लेख हैं।

अंतिका प्रकाशन, गाज़ियाबाद उत्तर–प्रदेश से प्रकाशित पुस्तक 'रेणु का जनपद' जो गजेंद्र पाठक द्वारा संपादित एवं 'नागार्जुन दबी दूब का रूपक' जो कमलानंद झा द्वारा संपादित है। इसमें प्रसिद्ध साहित्यकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' एवं नागार्जुन के जीवन पर आधारित विभिन्न निबंधों का संग्रह किया गया है जो शोधकर्ताओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इसी के साथ हिंदी के कालजयी साहित्यकार जैसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल, निराला, रामधारी सिंह दिनकर ,जयशंकर प्रसाद आदि पर निरंतर विभिन्न प्रकाशनों द्वारा निबंध प्रकाशित होते रहते हैं। इसी के साथ हमारे देश के प्रतिष्ठित राजनेता, धार्मिक व्यक्तित्व कुछ ऐसे हैं जो हमेशा ही चर्चा में बने रहते हैं उन पर भी विभिन्न विद्वानों द्वारा समय–समय पर निबंध एवं आलेख मीडिया के विभिन्न मंचों से प्रकाशित होते रहते हैं।

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय हिंदी साहित्य जगत का जाना माना नाम है। मनोरमा इयर बुक में इनके द्वारा संपादित 'चित्रा मुद्गल संचयन' को 2021 की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के अंतर्गत स्थान दिया गया है।

बाजारवाद और वैश्वीकरण, नारी अस्मिता की सुरक्षा, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक सहित जीवन के सभी क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों की झलक देखनी हो तो चित्रा मुद्गल को पढ़ना चाहिए। वे नारी जाति को उसका स्वाभाविक अधिकार दिलाने की पक्षधर हैं। वे न केवल स्वतंत्र भारत के परिवर्तनशील दौर को शब्दों में कैद करने में सफल रहीं बल्कि अपनी दृष्टि से विश्व में हो रहे बदलावों को भी ओझल नहीं होने दिया। इस उपलब्धि के लिए प्रख्यात साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुद्गल भी बधाई की पात्र हैं। लेखिका का मानना है कि कोई भी राष्ट्र, कोई समाज अपने अतीत, परंपरा और जड़ों से कटकर अपने भविष्य को बना और संवार नहीं

सकता। इसलिए ये वर्तमान का शब्द–चित्रण करते समय अतीत पर चिंतन करना नहीं भूलती। इसलिए यह कहना उचित ही है कि चित्रा मुद्गल ने दो सदियों के मध्य विचार सेतु की भूमिका बखूबी निभाई है।

इसी के साथ डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी जो इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में अध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। वे बहुत ही सहज, सरल और प्रतिष्ठित लेखक हैं। उनकी बहुत सी पुस्तकें और आलेख समय–समय पर प्रकाशित होते रहते हैं जिनमें से प्रमुख हैं 'पुत्री कामेंष्टि' जो सामयिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है। पुत्रियों की कामना के लिए यज्ञ पर आधारित है। पुत्री भी समाज के लिए, परिवार के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कि पुत्र। वह भी वंश वृद्धि का हेतु बनती है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा भी इसी बात की पुष्टि करता है कि बेटी आज हर परिवार के लिए आवश्यक है। डॉ. सच्चिदानंद जी ने उस भविष्य की कल्पना की है कि जब लोग पुत्री की कामना करेंगे और उसकी प्राप्ति के लिए 'पुत्री कामेंष्टि' यज्ञ का आयोजन करेंगे। यहाँ एक सुंदर स्वप्न की इच्छा की गई है जो सभी के लिए शुभ है।

इसके बाद सिंधुताई सपकाल के निधन पर उन्होंने जो लेख के रूप में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं वह अनुकरणीय हैं। सिंधुताई सपकाल अनाथ बच्चों के लिए कार्य करनेवाली भारत की एक सामाजिक कार्यकर्ता थीं। उन्होने अपने जीवन में अनेक समस्याओं के बावजूद अनाथ बच्चों को सँभालने का कार्य किया। उनके सामाजिक कार्यों के लिए सन् 2021 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। अभी 4 जनवरी, 2022, पुणे में उनका निधन हुआ है।

इसके बाद यदि लेखों के संदर्भ में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं की बात करें तो गगनांचल, आलोचन दृष्टि, आश्वस्त, अधिगम, अक्षरा, अनुवाद, गवेषणा, लमही, परिशोध, हिंदुस्तानी भाषा भारती, जनकृति, पाँचजन्य, प्रतियोगिता दर्पण, आधुनिक साहित्य, हंस, शोध दिशा, गर्भनाल, शोध प्रकल्प समसामयिकी, मुक्तांचल आदि अनेक ऐसी पत्रिकाएँ हैं जो समसामयिक शोध पर आधारित लेखों का महत्वपूर्ण संग्रह कही जा सकती हैं तथा शोध और संदर्भ के क्षेत्र में इनकी विशेष भूमिका है।

आजादी के अमृत महोत्सव, गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'राजभाषा भारती' के सितंबर के अंक में कुछ महत्वपूर्ण आलेख सम्मिलित किए गए जिनमें से प्रमुख हैं– 'हिंदीतर क्षेत्रों में हिंदी की दशा और दिशा तमिलनाडु के संदर्भ में,' (डॉ. पी आर वासुदेवन 'शेष), 'हिंदी वर्तनी के यक्ष प्रश्न' (डॉ. श्रीनारायण समीर), 'भारत में राष्ट्रभाषा का प्रश्न और हिंदी' (डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी), 'भारतीय साहित्य एवं भाषा समन्वय के सेतु शिल्पी' (डॉ. सुधांशु चतुर्वेदी) तथा 'वित्तीय क्षेत्र में हिंदी भाषा की भूमिका' (डॉ. साकेत सहाय) आदि हिंदी भाषा के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा प्रदान करते हैं।

10 जनवरी, 2021 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न संस्थाओं में जो भी कार्यक्रम आयोजित किए गए उनमें विद्वान, मर्मज्ञ विशेषज्ञों के विचार निश्चय ही भविष्य में महत्वपूर्ण लेखों का रूप ले सकते हैं।

2021 में साहित्य अकादमी ने अपनी सक्रियता बनाए रखी और उसकी पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' का प्रकाशन जारी रहा, न केवल जारी रहा वरन् दलित विशेषांक निकला और खूब सराहा गया। संगीत–नाटक अकादमी की पत्रिका 'संगना' निरंतर पाठकों तक पहुँच रही है। वर्धा हिंदी विश्वविद्यालय की पत्रिका 'पुस्तक वार्ता' ने अपना नया संयुक्तांक प्रकाशित किया है और उसका स्वरूप भी बदला है जिससे पत्रिका का क्षेत्र विस्तारित हुआ है।

इस साल साहित्य का नोबेल पुरस्कार उपन्यासकार अब्दुलरजाक गुरनाह को प्राप्त हुआ। तत्काल वरिष्ठ साहित्यकार प्रियदर्शन तथा विजय शर्मा ने गुरनाह के जीवन तथा कार्य पर लेख लिखें जो विभिन्न माध्यमों पर प्रकाशित हुए। विजय शर्मा की 'मृत्युः विश्व साहित्य की एक यात्रा' तथा 'वर्जित संबंध नोबेल साहित्य में' 2021 में प्रकाशित

हुआ। अरविंद दास का 'मीडिया का मानचित्र' हाल में प्रकाशित हुआ है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से प्रकाशित पत्रिका 'गौरवशाली भारत' एक महत्वपूर्ण पत्रिका है जो समसामयिकता की विशेष सामग्री को संगृहीत किए हुए है। इसी में संकलित डॉ. पुनीत बिसारिया द्वारा लिखित लेख 'पर्यावरण साहित्य और सिनेमा' एक आधुनिकता की समस्याओं से समाज को चेतनता की ओर ले जाने वाला तथा इसी के साथ साहित्य और सिनेमा के अन्योन्याश्रित संबंध को प्रदर्शित करता है।

बालेंदु शर्मा दाधीच साहित्य, तकनीकी और इंटरनेट की दुनिया में एक जाना–माना नाम है। आईआईएमसी में 'शुक्रवार संवाद' के कार्यक्रम में अपने व्यक्तव्य में 'भारतीय भाषाओं के संवर्धन में तकनीकी की भूमिका' पर अपने विचार प्रस्तुत किए 'माइक्रोसॉफ्ट इंडिया' के निदेशक (भारतीय भाषाएँ एवं सुगम्यता) बालेंदु शर्मा दाधीच ने भारतीय भाषाओं के विकास में तकनीक की भूमिका को बेहद महत्वपूर्ण बताया। श्री दाधीच के अनुसार तकनीक के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू हैं। यह हमारी जिम्मेदारी है कि तकनीक के सही प्रयोग से भारतीय भाषाओं को ज्यादा सक्षम बनाया जाए। श्री दाधीच ने 18 दिसंबर शुक्रवार को भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी) द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'शुक्रवार संवाद' को संबोधित किया था।

"इस कोरोना ने हमसे हिंदी के कई नायाब रचनाकारों को छीन लिया। मंगलेश डबराल, रमेश उपाध्याय, भारत यायावर, अपराजिता शर्मा, मन्नु भंडारी जैसे साहित्यकार हमसे सदा के लिए दूर चले गए। प्रज्ञा तिवारी की गंगा नदी पर एक कॉफी टेबलबुक 'ओ गंगा तू बहती रहना' अपने तरह की नई कृति है। मन्नु भंडारी के जाने पर विभिन्न मंचों ने उनके रचनाकर्म पर कई कार्यक्रम किए। 'स्त्री दर्पण', 'उजास मायनों का' तथा 'सृजन संवाद' ने मन्नू भंडारी पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किए। 'मधुमति' पत्रिका ने उन पर विशेषांक निकाला। इसी वर्ष 'आजकल' पत्रिका ने 'सोबती की सोहबत में' नाम से साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 1966 में साहित्य अकादमी अध्येतावृत्ति से सम्मानित कृष्णा सोबती पर विशेषांक निकाला गया जो बहुत ज्यादा चर्चा में रहा। 'परिकथा, 'कथन' के विशेषांक रमेश उपाध्याय के अवदान पर केंद्रित रहे। विदु की रचनाकार बुआ रश्मि रावत 'विदु'ज बैटन' नाम से हर माह वेबिनार द्वारा साहित्यिक आयोजन कर रही हैं। 'मेरा रंग' ने श्रद्धा सभाएँ कीं। 'हिमोजी' अपराजिता शर्मा चली गई पर उनके काम को भास्कर आगे बढ़ा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त विदेशों में बसे प्रवासी भारतीय भी भारत की मिट्टी से जुड़े रहने के लिए अपनी भाषा में समय–समय पर अपने विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। हिंदी में भिन्न–भिन्न देशों से निकलने वाली विविध पत्र–पत्रिकाएँ जैसे 'भारत दर्शन' न्यूजीलैंड से प्रकाशित, 'सरस्वती' पत्र कनाडा से प्रकाशित, 'अनुभूति एवं अभिव्यक्ति' संयुक्त अरब अमीरात से प्रकाशित, कर्मभूमि हिंदी यूएसए की त्रैमासिक पत्रिका, 'हिंदी जगत,' 'हिंदी बालजगत' एवं 'विज्ञान प्रकाश' विश्व हिंदी न्यास समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ हैं जिनमें समय–समय पर हिंदी भाषा तथा उससे संबंधित समसामयिक विषयों पर आयोजित देशभर में हुए वेबिनार तथा उन पर आधारित विभिन्न विषय विशेषज्ञों के विचारों का संकलन एवं प्रकाशन भी महत्वपूर्ण लेखों का संकलन किया गया है जिन्हें लेखों की ही श्रेणी में रखा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि ये विचार अनुभवी, विषय विशेषज्ञ, मूर्धन्य विद्वानों द्वारा प्रेषित किए गए हैं।

'उड़ान' पत्रिका में प्रकाशित आलेख हिंदी साहित्य की अमूल्य संपदा है 'चंपारण के रमेश बाबू' राजीव कुमार झा द्वारा लिखित आलेख हिंदी साहित्य के महत्व को दर्शाता है।

प्रोफेसर बीना शर्मा, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में प्रोफेसर करुणाशंकर उपाध्याय, पूर्व विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ प्रोफेसर,

हिंदी विभाग मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा राम कथा पर प्रस्तुत किया गया व्यक्तव्य अपने आपमें अनूठा लेख कहा जा सकता है।

डॉ. सोहन लाल तातेड़ के विचार हैं कि अपनी संस्कृति के कारण ही भारत विश्वगुरु था युवाओं को प्रेरित करता हुआ महत्वपूर्ण लेख है।

डॉ. रमेश चंद्र सिन्हा द्वारा विचार 'भारत एक गुलदस्ते की तरहः लोग सजे हैं फूलों की तरह' भारतीय एकता, अखंडता को प्रदर्शित करता एक आलेख है।

'व्यंग्य श्री' के सम्मान से सम्मानित गिरीश पंकज रायपुर, छत्तीसगढ़ से एक बहुत ही गंभीर लेखक हैं। उनका लिखा हुआ लेख 'ऊँची जाति छोटी जाति', लोक स्वर में प्रकाशित एक महत्वपूर्ण विशिष्ट रचना कही जा सकती है।

❑❑❑

24

हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ

सुनील कुमार तिवारी

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता का एक गौरवशाली अतीत रहा है, पर इसका वर्तमान भी कम समृद्धिपरक नहीं है। आज 300 से अधिक नियतकालीन और अनियतकालीन पत्रिकाएँ भारत के विविध प्रांतों के सुदूरवर्ती अंचलों से प्रकाशित हो रही हैं। ये पत्रिकाएँ अपने वैचारिक तेवर के साथ–साथ अपनी रचनात्मक गुणवत्ता के कारण महत्वपूर्ण बनी हुई हैं। इन पत्रिकाओं में केवल कविता, कहानी, संस्मरण या साहित्य की अन्य विधाएँ ही जगह नहीं पातीं, बल्कि संपादकों ने अपने विजन और अपनी कल्पनाशीलता से इन पत्रिकाओं को बौद्धिक और साहित्यिक बहस के एक मंच के रूप में विकसित किया है और ये पत्रिकाएँ सामाजिक परिवर्तन में उत्प्रेरक की भूमिका निभाती रही हैं। हिंदी की पत्रिकाएँ अब एक ओर विमर्श को व्यापक जगह देती हैं, तो दूसरी ओर राजनीतिक–सामाजिक मुद्दों पर भी खुलकर अपनी राय रखती हैं। यही वजह है कि भले ही इन पत्रिकाओं का पाठक सीमित हो, पर यह पाठक वर्ग अपनी पत्रिकाओं से बेहिसाब प्यार करता है, वह नए अंकों की लगातार प्रतीक्षा करता है। वह पत्रिकाओं के प्रति आत्मीयता और जुनून से भरा हुआ पाठक है।

यह सच है कि कोरोना काल में साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं पर एक तरह से ग्रहण लग गया था। 2020 में लॉकडाउन में प्रकाशन बेतरह प्रभावित हुआ, लेकिन 2021 के उत्तरार्ध में पत्रिकाएँ नियमित निकलनी शुरू हुईं, यद्यपि इसके पहले ढेर सारी पत्रिकाएँ पीडीएफ में निकल रही थीं। आज आर्थिक चुनौतियों के बावजूद हिंदी की साहित्यिक पत्रिकाएँ समय और समाज की तकलीफों को व्यक्त करने में बढ़–चढ़कर भूमिका निभा रही हैं। अपने समय के साथ इनकी मुठभेड़ निरंतर जारी है। इसी कड़ी में इधर साहित्यिक पत्रिकाओं में दलित, आदिवासी और पिछड़े समुदाय के लेखन का दायरा बढ़ा है। रचनात्मक गुणवत्ता और बेहतरीन प्रस्तुति की दिशा में भी साहित्यिक पत्रिकाओं के सजग संपादक लगातार अग्रसर हुए हैं। इस तरह, यह कहा जा सकता है कि 2021 में साहित्यिक पत्रकारिता पटरी पर लौट आई है और उसके सन्नाटे में बँधे हुए छंद खुलने लगे हैं। विविध संदर्भों को लेकर इस वर्ष कई पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित हुए। कोरोना काल में जो लेखक–संपादक दिवंगत हुए उनके ऊपर भी कुछ पत्रिकाओं ने अपने विशेषांक निकाले। रचनाकारों के जन्मशती के अलावा आजादी के अमृत महोत्सव को केंद्र में रखकर भी पत्रिकाओं के महत् अंक संयोजित किए गए।

'देस हरियाणा' कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित द्वैमासिक पत्रिका है, जिसका नवंबर–दिसंबर,

2021 अंक आजादी की कविता पर केंद्रित है। आजादी के अमृत महोत्सव के मौके पर इस अंक में हिंदी साहित्य की विरासत को बड़े यत्न से संजोया गया है। इसमें तैंतालिस महत् कवियों की उन गौरवशाली कविताओं को राष्ट्रीय रिक्थ के बतौर प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने गुलामी के दौर में जनता को मुक्ति के संघर्ष के लिए प्रेरित किया था। स्वतंत्रता आंदोलन की प्रत्येक धारा को अभिव्यक्त करने वाली कालजयी कविताएँ इस अंक की अमूल्य निधि के रूप में संयोजित हैं। दस्तावेज खंड के अंतर्गत इस अंक में बहादुर शाह जफर का घोषणा पत्र, राष्ट्रवाद के संबंध में रवींद्रनाथ टैगोर का विचार, महात्मा गांधी द्वारा राष्ट्रवाद का सच्चा स्वरूप– चिंतन और अंबेडकर के भारतीय समाज, राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता संबंधी सोच को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। कुल मिलाकर, यह एक संग्रहणीय अंक बन पड़ा है।

भारतीय विद्या भवन द्वारा साठ वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रही नवनीत पत्रिका के अक्तूबर 2021 अंक की आवरण कथा के केंद्र में महात्मा गांधी हैं। यशस्वी संपादक विश्वनाथ ने 'सच्चा धर्म' शीर्षक अपने संपादकीय में गांधी को याद करने का मतलब उनके मूल्यों के प्रति विश्वास प्रकट करना उचित ही रेखांकित किया है। 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम' शीर्षक लेख में प्रियदर्शन ने सांप्रदायिकता के दावानल में तब और अब जलते राष्ट्र को गांधी मंत्र की छाया में ही सुकून तलाशने की राह दिखाई है। मधुसूदन आनंद 'सबको सन्मति दे भगवान' शीर्षक लेख में अल्पसंख्यक मन को भयग्रस्त होने से बचाए जाने पर बल देते हैं और रघुपति राघव राजा राम इस गांधी प्रार्थना को आज सबसे अधिक प्रासंगिक बताते हैं। अपूर्वानंद ने अपने आलेख में गांधी को साझा सत्य का साधक सिद्ध किया है। 'आदमी को आदमीयत सिखाते हैं गांधी' लेख में यशपाल अकेला गांधी में अपने यकीन को खंगालने और उसे अधिकाधिक पुख्ता करने की तजवीज देते हैं। गांधी केंद्रित सामग्री के अलावा इस अंक में भारत की सांस्कृतिक विविधता और एकता की दिशा में अनेक प्रेरणाप्रद आलेख, कथा और कविताएँ प्रकाशित हैं। विषयों की विविधता और गहराई के साथ उनका विश्लेषण 'नवनीत' के प्रत्येक अंक की यह विशेषता इस अंक में भी द्रष्टव्य है।

लगभग चार दशक से निरंतर प्रकाशित हो रही 'अक्षरा' मासिक का जून 2021 का अंक सुप्रसिद्ध लेखिका पद्मश्री मालती जोशी पर केंद्रित विशेषांक के रूप में संयोजित है। इस अंक की अतिथि संपादक अनीता सक्सेना हैं, जिन्होंने 'स्त्री विमर्श के बीच मालती जोशी' शीर्षक संपादकीय में यह ठीक ही रेखांकित किया है ''उनकी दृष्टि समन्वय में ही जीवन को विकसित होते देखना चाहती है। जहाँ मानसिकता पर प्रहार करना आवश्यक होता है, वे मर्म पर चोट करती हैं। हर कहानी में परिवार है, पारस्परिक रिश्ते हैं, यह सच है। लेकिन हर कहानी एक नई समस्या से साक्षात् कराती है।'' 'मालवा की हीरा और मालवा की मीरा मालती जोशी जी' शीर्षक लेख में अनीता सक्सेना ने मालती जोशी की कथा संवेदना के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व में रची बसी पारिवारिकता, दया–माया–ममता और संबंधों के प्रति अथाह समर्पण को बखूबी रेखांकित किया है। मालती जी के सुपुत्र और स्वयं प्रसिद्ध लेखक सच्चिदानंद जोशी का संस्मरणात्मक आलेख कथाकार मालती जोशी की रचनात्मकता के विविध आयामों को बड़ी सहजता और सरलता से विश्लेषित करता है। कथा लेखिका सूर्यबाला अपने आलेख 'हिंदी कहानी की ताजदार साम्राज्ञी' में लिखती हैं, "बहुत आधुनिक हैं मालती जी अपने दृष्टिकोण और विचारों में। आज के जीवन की कोई ऐसी समस्या या स्थिति नहीं है,जो उनकी कलम से छूटी हो।" इस अंक में मालती जोशी का आत्मकथ्य, 'सबद बन उर अंतर लागे' शीर्षक उनकी कहानी, उनके द्वारा रचित गीत का नियोजन पत्रिका की रचनात्मक भूमिका को और बढ़ा देता है। 'गाँव के लोग' देश के नब्ज को छूने वाली प्रगतिशील ग्रामीण चेतना की द्वैमासिक पत्रिका के रूप में अपनी अलग पहचान रखती है। डॉ. एन. सिंह और अरुण कुमार के संपादन में इसका जनवरी–फरवरी, 2021 अंक दलित विशेषांक

के रूप में ध्यान आकर्षित करता है। 360 पृष्ठों में विस्तृत इस अंक में आत्मकथ्य, साक्षात्कार, समीक्षा, कहानी, कविता, लघुकथा प्रायः सभी प्रमुख विधाओं में रचनारत सर्जकों को जगह दी गई है। कुछ नए और कुछ स्थापित लेखकों– चिंतकों ने अपनी लेखनी से इस अंक को संग्रहणीय बना दिया है। कँवल भारती, चौथी राम यादव, अजमेर सिंह काजल, अनीता भारती, कर्मानंद आर्य, अनिल चमड़िया के आलेख न केवल पठनीय हैं, बल्कि दलित साहित्य की वैचारिकी को नया आयाम देते हैं। मोहनदास नैमिशराय, मूलचंद सोनकर, बी.आर. विप्लवी, रत्न कुमार संभारिया, मलखान सिंह, मूलचंद सोनकर के साक्षात्कार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। श्योराज सिंह बेचैन, आर.एस. हरनोट, रामजी यादव, दयानंद बटोही, बिपिन बिहारी की कहानियाँ अपने कथ्य और शिल्प में ताजगी से ओतप्रोत हैं। सुमित्रा महरोत्रा और कौशल पंवार का आत्मकथ्य संघर्षधर्मिता के दस्तावेज की तरह है। कुल मिलाकर, दलित साहित्य और दलित विमर्श पर शोध अध्ययन के लिए यह एक महत्वपूर्ण अंक तो है ही, अब तक प्रकाशित पत्रिकाओं के दलित विशेषांकों की श्रेणी में 'गाँव के लोग' के इस अंक की गिनती भी जरूर की जाएगी।

'आलोचना' त्रैमासिक का जुलाई–सितंबर, 2021 अंक कविता, कहानी, आलोचना, शोध आलेखों के संयोजन से समृद्ध बन पड़ा है। प्रख्यात कहानीकार योगेंद्र आहूजा की लंबी कहानी 'डॉक्टर जिवागो' आज के हृदय विदारक दौर में चिकित्सकीय विडंबनाओं का बेहद बेधड़क साक्षात्कार कराती है। युवा कवि उस्मान खान की छत्तीस कविताओं में अपूर्व चमक, ताजगी, आवेग और भाव वैविध्य की अद्भुत अनुगूँजें हैं। वरिष्ठ दलित विचारक सूर्यनारायण रणसुभे ने हिंदी और मराठी के दलित लेखन को आमने–सामने रखकर दोनों के साहित्य प्रभावों की जाँच का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। चाँद पत्रिका के संदर्भ में औपनिवेशिक उत्तर भारत में बाल विवाह विमर्श को तत्सामयिक सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई, राजनीतिक संदर्भों के आलोक में विजय झा ने शोधपरक ढंग से विवेचित किया है। विनोद तिवारी, स्नेह झा, सौरव कुमार राय के शोध आलेख अत्यंत श्रमसाध्य और गवेषणापूर्ण हैं। कुल मिलाकर यह अंक 'आलोचना' की प्रतिष्ठा के अनुरूप है।

जानकी प्रसाद शर्मा के अतिथि संपादकत्व में नवंबर 2021 में प्रकाशित 'उद्भवना' का साहिर लुधियानवी अंक संग्रहणीय बन पड़ा है। हिंदी–उर्दू में अब तक नया–पुराना साहिर पर जो भी आलोचनात्मक और संस्मरणात्मक सामग्री उपलब्ध है, लगभग वे सारे महत् संदर्भ इस अंक में निबद्ध हैं। संपादकीय के अलावा यह विशेषांक आठ खंडों में विभाजित है। साहिर लुधियानवी की मशहूर नज़्म परछाइयाँ की तर्ज पर पहले खंड का शीर्षक 'परछाइयाँ' है, जिसके तहत अली सरदार जाफरी, नसरुद्दीन शाह के आलेख हैं। दूसरे खंड 'साहिरः कुछ यादें कुछ बातें' के तहत सज्जाद जहीर, सरवर शफी, अमृता प्रीतम, कृष्ण अदीब, गोपीचंद नारंग, डॉ. केवल धीर के स्मृतिपरक आलेख संयोजित हैं। खंड तीन और खंड चार में साहिर और उर्दू आलोचना तथा साहिर और हिंदी रचनाकार शीर्षक के तहत महत्वपूर्ण आलोचनात्मक सामग्री शामिल है। खंड सात साहिर की रचनाओं से सुंदर चयन के रूप में है, खंड आठ में साहिर के फिल्मी नगमों का महत्वपूर्ण विश्लेषण किया गया है। कुल मिलाकर यह एक ऐसा मुकम्मल अंक बन पड़ा है, जो साहिर की स्मृतियों को दूर तलक आवाज देता है।

कहानी और उपन्यास दोनों विधाओं में समान रूप से दखल रखने वाले वरिष्ठ ख्यातिलब्ध कथाकार संजीव के कर्मक्षेत्र रहे कुल्टी (पश्चिम बंगाल) से प्रकाशित 'सहयोग' का प्रवेशांक (मई, 2021) संजीव की समग्र सर्जना के मूल्यांकन पर केंद्रित है। निशांत के संपादकत्व में लगभग 580 पृष्ठों में विन्यस्त इस विशेषांक में शोध परक सामग्री प्रभूत मात्रा में संयोजित है। अस्सी से अधिक आलोचकों और शोधप्रज्ञों की लेखनी का समवेत स्वर और संपादकीय टीम के सुदृढ़ संकल्प के बूते यह आयोजन महत्वपूर्ण बन पड़ा है। 'सहयोग' के प्रस्तुत अंक का विभाजन छह खंडों में किया गया है। प्रथम खंड मंगलाचरण में आचार्य हजारी प्रसाद

द्विवेदी का 'प्रेमचंद का महत्व' शीर्षक लेख इस टिप्पणी के साथ प्रकाशित है कि "यदि आप प्रेमचंद की जगह संजीव शब्द रखकर इन अंशों को पढ़ेंगे तो संजीव को प्रेमचंद की तरह ही पाएँगे।" इस अंक में संजीव के प्रसंग में राजेंद्र यादव और नामवर सिंह की बातचीत का अंश पठनीय है। नरेन का आलेख संजीव के व्यक्तित्व और सर्जना को समझने का बेहतर सूत्र देता है। इसी खंड में संजीव के प्रकाशित लेख, नाटक, रिपोतार्ज, अन्य चयनित रचनाएँ, कुछ वक्तव्य, उनका साक्षात्कार और परिचितों, मित्रों, नातेदारों के कुछ लेख भी संकलित हैं। 'संजीव और उपन्यासः आईने के सामने' पत्रिका का दूसरा खंड है, जिसमें संजीव के उपन्यासों पर महत् चर्चा की गई है। 'धार,' 'पाँव तले की धूप,' 'जंगल जहाँ से शुरू होता है' जहाँ संजीव के इन उपन्यासों का बहुत विस्तृत और प्रामाणिक विश्लेषण रणेंद्र ने किया है, वहीं अवधेश प्रधान ने सूत्रधार की विस्तार से चर्चा की है। इतर उपन्यासों पर रोहिणी अग्रवाल, रीता सिन्हा, रामजी यादव, रामकुमार कृषक, महेश दर्पण, विवेक मिश्र, जगदीश भगत, डॉ कृष्ण कुमार श्रीवास्तव के लेख उल्लेखनीय हैं। तीसरे खंड 'संजीव और संस्मरणः दुनिया ऐसे बनती है' को विभूति नारायण राय, मधु कांकरिया, प्रेमकांत झा, अनवर शमीम, मृत्युंजय तिवारी मार्टिन जान के स्मृतिपरक आलेखन ने जीवंत बना दिया है। चौथा खंड संजीव की कहानियों पर केंद्रित है। इसमें विशेषतः राहुल सिंह, अरुण होता, सुधीर सुमन, प्रेमपाल शर्मा, संयोगिता वर्मा ने प्रभूत श्रम एवं पूरे मनोयोग पूर्वक संजीव की कहानियों का विश्लेषण किया है। 'एक कहानी एक आलेखन' में संजीव की चालीस महत्वपूर्ण मानी गई कहानियों को केंद्र में रखकर अलग–अलग आलोचकों की लेखनी चली है। अंतिम खंड 'संजीव और पत्रः एक दुनिया समानांतर' के अंतर्गत संजीव के पत्राचार (संजीव द्वारा और संजीव को लिखे गए पत्र) संकलित हैं, जिनमें मित्रों, परिचितों, घर–परिवार के सदस्यों के साथ उनके आत्मिक रिश्ते का पता चलता है। कुल मिलाकर, यह अंक पत्रिका के संपादक निशांत के श्रम, मनोयोग, जुनून और सर्जक संजीव के प्रति उनके प्रेम का प्रबल प्रमाण बनकर आया है। यद्यपि वे संजीव पर लिखने का पहला हक स्वयं संजीव को देते हैं। यह अंक संपादक की इस आकांक्षा का उचित प्रतिफलन भी है कि अंक को पढ़कर लोगों में संजीव की मूल कृतियों को पढ़ने की उत्कंठा जगेगी। निश्चय ही इस दिशा में 'सहयोग' का यत्न सफल प्रतीत होता है।

साठ वर्षों के प्रकाशन नैरंतर्य के साथ अपनी प्रामाणिक अकादमिक उपस्थिति के साक्ष्य स्वरूप 'अनुवाद' पत्रिका ने 2021 के आरंभिक अंक को पंजाबी अनुवाद विशेषांक के रूप में नियोजित किया है। प्रोफेसर रवि रविंद्र के अतिथि संपादकत्व में इस अंक में पठनीय एवं उल्लेखनीय श्रेष्ठ सर्जनात्मक पंजाबी साहित्य का प्रकाशन किया गया है। 'महिमा अनुवाद की' गुरबचन सिंह भुल्लर का सुचिंतित– सुव्याख्यायित आलेख है, जिसे पूरी तन्मयता और सजगता से पंजाबी से हिंदी में सुभाष नीरव ने अनूदित किया है। 'हिंदी साहित्य का पंजाबी अनुवादः एक सर्वेक्षण' तरसेम का तथ्यसम्मत और शोधपरक लेख है। प्रोफेसर पूरन चंद टंडन के आलेख में भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में पंजाबी–हिंदी–पंजाबी अनुवाद के गौरवशाली अतीत का विस्तृत ढंग से व्याख्यान किया गया है, जो सर्वथा पठनीय और ज्ञानवर्धक है। प्रो. उमा सेठी का आलेख 'पंजाबी कोशकारी परंपरा और विकास' तथ्यगर्भित और बौद्धिक विश्लेषण से ओतप्रोत है। आठ प्रतिनिधि पंजाबी कहानियों के हिंदी अनुवाद के साथ तीस से अधिक पंजाबी कविताओं का भावानुवाद सर्जनात्मक अनुवाद का सबूत तो है ही, सही मायने में अनुवाद के सेतु के पर्याय को सार्थक करता प्रतीत होता है। कुल मिलाकर 'अनुवाद' पत्रिका का यह अंक निश्चित तौर पर भारत की भाषाई एकता की दिशा में सारस्वत अवदान की एक कड़ी के रूप में संयोजित है। सतहत्तर वर्षों से अनवरत प्रकाशित 'आजकल' अपनी स्तरीयता और संपादकीय दृष्टि संपन्नता की वजह से हमेशा ही देशभर के पाठकों की प्रिय पत्रिका रही है। इसी कड़ी में 'आजकल' का

अक्तूबर 2021 अंक महात्मा गांधी को केंद्र में रखकर निकाला गया है। आवरण पृष्ठ पर गांधी सुशोभित हैं। संपादकीय में गांधी के संगीत प्रेम को रेखांकित किया गया है। सुभाष शर्मा का 'महात्मा गांधी के कर्मयोग' शीर्षक लेख सुचिंतित है। 'गांधी से अनुबंध' (संदर्भः प्रार्थना–प्रवचन) में शहंशाह आलम ने गांधी के प्रार्थना सभा के विचारों के संदर्भ में गांधी जी का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन किया है और आज के हालात से जोड़ते हुए बखूबी गांधी विचार की प्रासंगिकता को रेखांकित करने की कोशिश की है। बहुख्यात कथा पत्रिका 'कथादेश' का अगस्त 2021 अंक निर्मल वर्मा पर केंद्रित है। इस अंक का संपादन शंपा शाह ने बड़ी सजगता, उदारता, रुचि और संलग्नता के साथ किया है। हर आलेख, व्याख्यान, संस्मरण, कृति साक्षात् की प्रस्तुति में संपादकीय सचेतता दृष्टिगत होती है। निर्मल के लेखन का विश्लेषण करते हुए शंपा का कहना एकदम उचित है कि निर्मल वर्मा की कहानी या उपन्यास को पढ़ना अपने भीतर की गुप्त या अनजान सीढ़ियाँ उतरना है। संदर्भित अंक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण खंड 'कृति साक्षात' है। इलाहाबाद कुंभ पर कभी 'दिनमान' में धारावाहिक प्रकाशित कथेतर गद्य 'सुलगती टहनीः प्रयाग' पर जयशंकर का विवेचन उल्लेखनीय है। 'रात का रिपोर्टर' पर रामकुमार तिवारी के विचार और 'एक चिथड़ा सुख' पर प्रियदर्शन एवं गोपाल माथुर की चर्चा निर्मल जी की रचनात्मक महत्ता को सामने रखते हैं। मदन सोनी ने 'भाषा की कथा' में निर्मल वर्मा की कथा में भाषा 'कर्म' है, इस बात की स्थापना की है। अमित कुमार शर्मा ने निर्मल के यात्रा वृत्तांतों – 'चीड़ों पर चाँदनी', 'हर बात बारिश में', 'धुंध से उठती धुन' को परंपरा और संस्कृति के साथ आधुनिकता के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया है। प्रियंका दुबे ने निर्मल के निबंध 'जहाँ कोई वापसी नहीं: सिंगरौली' पर महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। रमेश चंद्र शाह, विनोद शाही, और मनोज रूपड़ा के आलेख निर्मल का आत्मीय मूल्यांकन करते हैं। अशोक वाजपेयी, प्रयाग शुक्ल, गौतम चटर्जी के संस्मरण इस अंक के अपूर्व आकर्षण हैं। इस अंक में संकलित कथाकार योगेंद्र आहूजा के नाम निर्मल वर्मा की आधा दर्जन चिट्ठियाँ, निर्मल की संवेदनशीलता, मानवीयता और सहजता को प्रकट करती हैं। कुल मिलाकर यह अंक संपादक के रुचिवृत्त को प्रकट करता है। आद्योपांत यह अंक पठनीय और सुरुचिपूर्ण है।

दिल्ली से प्रकाशित 'सबद निरंतर' त्रैमासिक का प्रवेशांक जनवरी–मार्च, 2021 बहुविश्रुत कथा लेखिका कृष्णा सोबती पर केंद्रित है, जिसमें 340 पृष्ठों में कृष्णा जी के व्यक्तित्व– कृतित्व पर महत्वपूर्ण सामग्री दी गई है। यह अंक तीन हिस्सों में विभाजित है। पहले खंड मूल्यांकन के अंतर्गत उनतीस समीक्षात्मक आलेख प्रकाशित हैं। दूसरा खंड 'स्मृतियों के वातायन से' में सत्रह स्मृति लेख हैं। तीसरे खंड साक्षात्कार में दो बातचीत, 'कृष्णा सोबतीः जीवन परिचय' और 'कृष्णा सोबती के पत्र' संकलित हैं। सविता सिंह ने अपने आलेख में कृष्णा जी को नियमों और अतिक्रमणों के बीच संस्थित बताया है और भारतीय समाज के पितृसत्तात्मक व्यवस्था के खिलाफ प्रश्नांकन में उनकी महत् भूमिका को रेखांकित किया है। कृष्ण कुमार किंबहुणे ने अपने आलेख में कृष्णा जी को स्त्री चेतना की आधिकारिक आवाज बताया है। रेखा सेठी ने सोबती के उपन्यासों में भाषा की लोकतांत्रिकता की व्याख्या की है। डॉ. जसविंदर सिंह ने कृष्णा जी की गद्य शैली पर प्रकाश डाला है। प्रो. चमनलाल ने अपने आलेख में कृष्णा जी के अंतिम उपन्यास 'चन्ना' का सधे अंदाज में विश्लेषण किया है। इस पत्रिका के नौ लेख अंग्रेजी से हिंदी में अनूदित हैं और इन आलेखों के अनुवाद को बेहद सजगता के साथ संपादित किया है जिससे वे मूल का आस्वाद देते प्रतीत होते हैं। इस पत्रिका की गुणवत्तापूर्ण सामग्री और सुंदर प्रस्तुति को देखते हुए इसकी उज्ज्वल संभावनाओं की उम्मीद जगती है।

इस प्रकार, 2021 में प्रकाशित पत्रिकाएँ नई सामाजिक–सांस्कृतिक विचारशीलता की साहित्यिक प्रस्तावना के लिए विशेष रूप से प्रतिबद्ध प्रतीत

होती हैं। सामाजिक बदलाव को वैचारिक नेतृत्व देने के संकल्प के साथ ये पत्रिकाएँ कम साधनों में भी अधिकाधिक उजास देने के लिए प्रयत्नशील हैं। यद्यपि कुछ पत्रिकाओं की अपनी सीमाएँ भी दिखती हैं। कहीं प्रूफ की गलतियाँ, कुछ अन्यान्य त्रुटियाँ भी मिलती हैं, इन सबके बावजूद लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना और सृजनात्मकता के विस्तार की संकल्पबद्धता हिंदी की लघु पत्रिकाओं की प्रकाशन यात्रा को महत्वपूर्ण बनाती है।

❑❑❑

25

हिंदी बाल साहित्य

त्रिभुवननाथ शुक्ल

बाल साहित्य हिंदी साहित्य की ऊर्णनाभि है। अब इसका विकास और प्रसार कल्पनातीत हो चला है। मेरे इस कथन का आधार है –2021 की वे कृतियाँ जो वर्तमान भीषण समय की मार को झेलते हुए भी प्रकाशित हुई हैं। डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल साहित्य की रचनावली निश्चित ही एक उपलब्धि कही जा सकती है। देवपुत्र के संपादन, प्रकाशन और उसके प्रचार–प्रसार में डॉ. गोपाल महेश्वरी का अप्रतिम योगदान है। उनके द्वारा अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित विशेषांक बहुत चर्चित और समादरित रहा है। साहित्य अकादमी, भोपाल के निदेशक और देवपुत्र के परामर्शक डॉ. विकास दवे बाल साहित्य के प्रेरक व्यक्तित्व बन चुके हैं। इसी अवधि में कश्यप पब्लिकेशन, गाजियाबाद से प्रकाशित प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल की पुस्तक 'भारतीय बाल साहित्य का इतिहास' भी इस दिशा में किया गया एक बड़ा प्रयास कहा जा सकता है। इसमें असमिया, ओड़िया, उर्दू, अंग्रेजी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगु, नेपाली, पंजाबी, बांग्ला, मणिपुरी, मैथिली, मराठी, मलयालम, राजस्थानी, सिंधी, संस्कृत और हिंदी का इतिहास दिया गया है। ऐसी पुस्तक पहली बार हिंदी जगत में आ पाई है।

प्रायः लोग यह आम शिकायत करते हैं कि आजकल टी.वी. के कारण बच्चों में वाचनक्षमता का ह्रास उत्तरोत्तर हो रहा है। टी.वी. अभिमुख बालक अध्ययन परांगमुख बनते जा रहे हैं। इस प्रकार के बालमन को अचानक नहीं बदला जा सकता। कोई जादू की छड़ी कारगर नहीं हो सकती। आशा और अपेक्षा के विपरीत तैराक को प्रवाह के साथ चलना और धीरे–धीरे लक्ष्य दिशा की ओर मुड़ना पड़ता है। पुस्तकों की ओर बालकों का रुझान इसी प्रकार से बनाना होगा। जहाँ तक बाल साहित्य 2021 के प्रकाशनों का प्रश्न है, वह भी आशातीत है। अब बाल साहित्य की वह स्थिति नहीं है, जो एक दशक पहले थी। अब बाल साहित्य परिधि से धीरे–धीरे बढ़ते हुए क्रेंदोमुख हो चला है। इस दिशा में 'देवपुत्र,' 'बाल किरन' और 'बालबाटिका' जैसी पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है।

'बालबाटिका' के संपादक एवं वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. भेरूलाल गर्ग की दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली से प्रकाशित दो महत्वपूर्ण कृतियाँ उल्लेखनीय हैं। 'मेरा माटी मेरा देश' संस्मरण विधा की एक महत्वपूर्ण कृति है, जो संस्मरण विधा में बाल साहित्य की सशक्त उपस्थिति दर्ज कराता है। राजस्थान के एक छोटे से गाँव में जन्मे गर्ग जी ने अपने बाल्यावस्था से इस परिपक्व वय तक के विभिन्न अनुभवों को सरस एवं रोचक संस्मरणों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। डॉ. गर्ग की कृति 'मेरी प्रतिनिधि बाल कहानियाँ' में संकलित अनेक कहानियाँ अत्यंत हृदयस्पर्शी हैं। इस बाल

कहानी संग्रह में उनकी पैंतीस कहानियाँ हैं, जो न केवल मनोरंजन बल्कि संस्कार पोषण भी करती हैं। यह कृति सकारात्मक संप्रेषण की दृष्टि से सर्वोत्तम कही जा सकती है। प्रसिद्ध बाल साहित्य सर्जक एवं बाल साहित्य इतिहासकार डॉ. प्रकाश मनु की दो पुस्तकों में सात बाल उपन्यासों का प्रकाशन एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। एस. के. इंटर प्राइजेज, दिल्ली से प्रकाशित चार बाल उपन्यासों की पहली पुस्तक में एक रोचक एवं सुदीर्घ कथाक्रम मिलता है। इसमें अनेक पात्र, अनेक घटनाओं के साथ–साथ पाठकों को बाँधे रखने की अद्‌भुत सामर्थ्य है। डॉ. प्रकाश मनु ने इस पुस्तक में अपने चार–चार उपन्यास चिंकू, मिंकू और दो दोस्त, रथे और भोलू का बड़ा रोचक वर्णन किया है।

इसी प्रकार से अन्य पुस्तकें किस्सा 'दमनचापरी' और 'मुड़ियाघर' बहुत पठनीय है। 'भय का भूत' इन्हीं का कहानी संग्रह अवधि प्रकाशन, सुल्तानपुर से प्रकाशित हुआ है। जयश्री श्रीवास्तव 'जया मोहन' बाल साहित्य जगत में प्रयागराज की पावन धरती से एक सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। कहानी और कविता दोनों विधाओं में आपकी लेखनी निरंतर सुंदर–सुंदर रचनाओं से बाल साहित्य का भंड़ार भर रही हैं। रबीना प्रकाशन, गंगा विहार, दिल्ली से इनकी कई कृतियाँ प्रकाशित हैं। 'नाचे मोर' यह बीस सुमधुर रोचक बाल कविताओं का संग्रह है, जिसे रेखाचित्र और भी जीवंत बनाते हैं। 'महकते फूल' बाल कविता संग्रह में उन्नीस सुरुचिपूर्ण सरस एवं रेखाचित्रों से सज्जित बाल कविताएँ हैं। 'बिरजू की वंशी' एक हिम्मती लगनशील एवं बुद्‌धिमानी से समस्याओं का समाधान खोजने वाले बच्चे पर केंद्रित है। यह बाल मन की सूक्ष्म रेखाएँ उकेरता बाल उपन्यास है। 'उड़ी पतंग' यह अठारह रोचक बाल कहानियों का रेखाचित्रों से शृंगारित बाल काव्य संग्रह है। 'रिमझिम' उन्नीस मनोरंजन और बाल मनोविज्ञान से भरपूर बाल कविताओं का संकलन है। 'टिमटिम तारे' बाल कविताओं का सुरुचिपूर्ण संग्रह है। ऐसे ही इक्कीस बाल कविताओं से सुसज्जित यह महत्त्वपूर्ण कृति है।

'रोमांचक बाल विज्ञान कथाएँ' शीर्षक से कश्यप पब्लिकेशन, भावनगर, गुजरात से प्रकाशित बाल विज्ञान कथाओं का संग्रह हिंदी बाल साहित्य के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। डॉ. रबींद्र अंधारिया की यह एक महत्वपूर्ण कृति है। डॉ. अंधारिया गुजराती बाल साहित्य के सशक्त लेखक हैं। यह संकलन उनकी मूल गुजराती में लिखी रोचक विज्ञान कथाओं का हिंदी अनुवाद है। यह अनुवाद बाल साहित्यकार शिवचरण मंत्री ने किया है। अत्यंत रोचक तेरह विज्ञान कथाओं का संकलन विज्ञान बाल साहित्य के लिए एक उपलब्धि है। 'पेड़ चलने लगा' बाल कहानी संग्रह सरदार नगर, अहमदाबाद से प्रकाशित, डॉ. हुंदराज बलवाणी की बाल कहानियों का संग्रह है। डॉ. बलवाणी बाल साहित्य जगत का एक सुपरिचित नाम है। आपकी कहानियाँ कई भाषाओं में प्रकाशित हुई हैं।

'फूल और पत्ते' नमन प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित अश्विनी कुमार पाठक का बाल काव्य संग्रह है। पाठक बाल साहित्य के सिद्‌ध हस्ताक्षर हैं। उनकी लेखनी बच्चों के लिए निरंतर नया रचती रहती है। प्रस्तुत पुस्तक उनकी चालीस बाल एवं किशोरों के लिए लिखी सुमधुर एवं विचार प्रधान, प्रेरक कविताओं का संग्रह है। यह उनका उत्कृष्ट रचनाकर्म है।

'सुन लो दादू' डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव की अविचल प्रकाशन हल्दवानी से प्रकाशित चौबीस सरस कविताओं का संग्रह है। यह उनका नया बाल संग्रह है। 'छुआ छुअउरी' उत्कला ग्राफिक्स कन्नौज से प्रकाशित बाल साहित्य सर्जक अनिल द्विवेदी तपना का इक्यावन बाल कविताओं का संकलन है। वे बच्चों की सहज बाल प्रवृत्तियों के रंग से अपनी रचनाएँ रचते हैं। प्रस्तुत गीत खिलंदड़े बालपन की रोचक झाँकी एवं मस्ती का चित्र प्रस्तुत करते हैं।

'बालमुखी रामायण'– इंदिर पब्लिशिंग हाउस, भोपाल से मात्र ग्यारह वर्ष के बालक अवि शर्मा की 250 छंदों में संपूर्ण रामायण की प्रस्तुति है। वे एक कलाकार, अभिनेता, मंच संचालक एवं

प्रेरक वक्ता भी हैं। इस अनूठी बाल प्रतिभा की यह कृति सराहनीय है।

'बातों ही बातों में' यह बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित पद्मा चौगांवकर की बाल कविताओं का संग्रह है। यह बाल साहित्य का एक सुपरिचित नाम है। पाँच दशकों से अधिक का सतत लेखन आज भी निरंतर है। प्रस्तुत पुस्तक आपकी नवीनतम इक्कीस बाल कविताओं का संकलन है, जिसमें बदलते सामाजिक परिवेश और बच्चों के मनोवैज्ञानिक बदलावों को उकेरा गया है। अपने समान, प्रकृति एवं परिवेश पर महत्वपूर्ण समाधान प्रस्तुत करती ये कविताएँ सुंदर रेखाचित्रों से अलंकृत श्रेष्ठ रचनाएँ हैं।

'हो गया उजाला' डॉ. फकीरचंद्र शुक्ल बाल साहित्य के वयोवृद्ध रचनाकारों में से एक सुप्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। आपके लेखन में भाव, संस्कार एवं संवेदनाओं के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रमुखता से प्रकट होता है। प्रस्तुत पुस्तक में आपकी छह महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं, जो किशोरवय के बच्चों के मनोविज्ञान एवं चिंतन को लक्ष्य करके लिखी गई हैं।

'मेरी प्रिय बाल कविताएँ' रतनपुरा, जिलामऊ से प्रकाशित एक सौ बीस कविताओं का संग्रह है। इसके लेखक डॉ. राकेश चक्र बाल साहित्य की विविध विधाओं के सिद्ध रचनाकार हैं। आपकी लेखनी से निरंतर बाल साहित्य सृजन चलता रहता है। प्रस्तुत पुस्तक में मौसम, पशु–पक्षी, जीव–जंतु, पौधों एवं मनोरंजन के साथ प्रभातियों की 120 से अधिक कविताएँ संकलित हैं। बाल कविताओं का यह एक छोटा–सा खजाना है।

'दो बहादुर लड़के' अपोलो प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित हेमंत यादव 'शशि' की कहानियों का संग्रह है। यादव बिहार की भूमि से बाल साहित्य जगत का एक जाना माना नाम है। आपने बच्चों के लिए प्रचुर लेखन किया है। प्रस्तुत बाल कथा संग्रह आपकी सोलह मनोरंजन एवं ज्ञान से परिपूर्ण रोचक कहानियों का संग्रह है। सभी कहानियाँ प्रेरक एवं जीवन के प्रति सकारात्मक भाव जगाने वाली हैं।

डॉ. शशि गोयल बाल साहित्य जगत का सुपरिचित नाम है। जी.एस. पब्लिशर, शाहदरा दिल्ली द्वारा आपकी दो नवीन कृतियाँ एक कहानी संग्रह और एक कविता संग्रह प्रकाशित की गई हैं। कहानी संग्रह 'स्वच्छता सुंदरी' में सोलह पर्यावरण एवं अन्य विषयों पर सुंदर बाल कहानियाँ हैं। 'छोटा सा दाना' कविता संग्रह इकतालीस बाल मन भावन कविताओं का पिटारा है।

डॉ. बानो सरताज बाल साहित्य संसार की वर्तमान लेखावली में महत्वपूर्ण नाम है। अपोलो प्रकाशन, जयपुर ने रोचक बाल कथाओं पर दो महत्वपूर्ण प्रकाशन किए हैं। लोक कथाओं का साहित्य जगत एक अलग ही रंग, ढंग, रस और कौतूहल से भरपूर होता है। माटी से जुड़ी लोक जीवन की विभिन्न घटनाओं से पगी ये दोनों पुस्तकें निश्चय ही पठनीय हैं।

किसी साहित्यकार की रचनाएँ पढ़ने जैसा ही रोचक होता है, उसकी जीवनी या जीवन संस्मरण को पढ़ना। यदि लेखक डॉ. भेरूलाल गर्ग जैसे भारतीय ग्राम्य परिवेश से जुड़े हों तो उनके संस्मरणों में माटी की सोंधी सुगंध दमकती है। बोधि प्रकाशन, जयपुर द्वारा प्रकाशित उनकी पुस्तक 'यादों की धूप छाँह' में ऐसे ही अनुभव का कोश छुपा है।

वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. दिनेश पाठक शशि की कृति 'छुक छुक चलती अपनी रेल' कविताओं के लघु संस्करण में रसभरी बाल कविताएँ हैं। यह आपकी कविताओं की प्रथम कृति है। इसका प्रकाशन मानसी प्रकाशन, दिल्ली से हुआ है।

जयश्री श्रीवास्तव उपाख्य 'जया मोहन' बाल साहित्य जगत प्रयागराज की पावन धरती से एक सुपरिचित नाम है। उनकी बाल कहानियों में विविधता के रंग हैं, प्रस्तुति में रोचकता है, शैली में सहज सरलता है। उनकी कहानियाँ आपको लुभाते, गुदगुदाते, मनोरंजन के साथ–साथ सुंदर संदेश भी देती चलती हैं। यहाँ 'जया मोहन' जी के पाँच महत्वपूर्ण बाल कहानी संग्रहों का परिचय प्रस्तुत है। इन सभी पाँचों पुस्तकों को रबीना प्रकाशन,

दिल्ली से प्रकाशित किया गया है। 'पंखुड़ी' छह बाल कहानियों का संग्रह है। 'दाने अनार के' में दस बोधक और रोचक बाल कहानियाँ हैं। 'इक्कीस रोचक बाल कहानियाँ' बाल जीवन के महत्वपूर्ण रंगों को समेटे अद्‌भुत कहानियाँ हैं। 'खट्‌टे मीठे बेर' में ग्यारह मनोरंजक बाल कहानियाँ संगृहीत हैं। 'कंचे रंग बिरंगें' इसमें जिज्ञासा जगाती छह बाल–कहानियों को संयोजित किया गया। इन्हें पढ़ने के बाद बाल–मन के पूर्व संस्कार जागरित हो उठते हैं।

'कलख' गुदगुदाती कुछ सिखाती ग्यारह रोचक बाल कहानियाँ इसमें संगृहीत हैं। इनमें बालजीवन के अनेक अनुभव स्पंदित होते दिखाई पड़ते हैं।

बाल साहित्य जगत की सुप्रसिद्‌ध रचनाकार सौ. पद्‌मा चौगाँवकर ने बाल साहित्य के पाठकों को अनेक कृतियाँ दी हैं। 'अनदेखे रंग', बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित इस पुस्तक में चौदह रोचक और मनोवैज्ञानिक धरातल पर स्थित महत्वपूर्ण बाल कहानियाँ हैं। सरस, सुबोध, सरल भाषा और भावपूर्ण चित्रण के साथ यह कृति अत्यंत सुंदर बन पड़ी है। 'आरी चिड़िया', बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित पद्‌मा जी की छब्बीस मनोरम बाल कविताओं का संग्रह है। इसमें सरलता और गेयता का ऐसा मणिकांचन योग है कि ये कविताएँ न केवल आपका मनोरंजन करेंगी अपितु आपको आसानी से कंठस्थ भी हो जाएँगी। 'जंगल में मौजमस्ती', निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, शाहगंज आगरा से प्रकाशित, यह पद्‌मी चौगाँवकर की ग्यारह बाल कथाओं का संग्रह है। वन्यजीवन को माध्यम बनाकर बच्चों को रोचक शिक्षाएँ देती ये कहानियाँ बालमन को मूल्य बोध देने वाली हैं। आचार्य भगवत दुबे बाल साहित्य के सुप्रसिद्‌ध एवं अनुभवी रचनाकार हैं। उनकी दो कृतियाँ पाथेय प्रकाशन, जबलपुर से प्रकाश में आई हैं 'छुपन छुपाई' बालमन लुभाने वाली, उनके कंठ में बस जाने वाली और हृदय को सरसाने वाली सत्तावन बाल कविताओं का यह खजाना निश्चित रूप से अपने बच्चों को बहुत भाएगा। 'कोरोना विकराल' पाथेय प्रकाशन, जबलपुर से प्रकाशित इस कृति में कोरोना काल की कठिनाइयों का विवेचन है। कोरोना काल की कठिनाई से सारा विश्व परिचित है बच्चों ने यह दुष्काल बड़ी विपरीतता में पर धैर्य से काटा है। कोरोना विषयक वृहद दोहावली के रूप में आचार्य जी ने इन अनुभवों को अंकित किया है।

राष्ट्रीय बालगीत अंक 'देवपुत्र' द्‌वारा प्रकाशित इस अंक का विमोचन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ परम पूज्य सरसंघचालक डॉ. मोहन राव जी भागवत के कर कमलों से संपन्न हुआ। देवपुत्र का यह विशेषांक स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव वर्ष के अवसर पर पचहत्तर गीतकारों के पचहत्तर राष्ट्रीय बालगीतों को सजोकर प्रस्तुत किया है जिसमें लगभग एक शताब्दी के राष्ट्रीय बालगीतों की झलक प्राप्त होगी।

देवपुत्र के इस विशेषांक का विमोचन प्रधान संपादक कृष्ण कुमार आठाना, कार्यकारी संपादक गोपाल माहेश्वरी एवं देवपुत्र के संचालक न्यास सरस्वती बाल कल्याण न्यास के प्रबंध न्यासी राकेश जी भावसार ने करवाया।

'तुम्हें सुनाऊँ एक कहानी' इंडिया नेटबुक्स नोएडा से प्रकाशित डॉ. प्रभा पंत की बाल साहित्य की कृति 'तुम्हें सुनाऊँ' एक कहानी प्रकाशित हुई। डॉ. प्रभा पंत हिंदी बाल साहित्य की जानी मानी लेखिका हैं। प्रस्तुत कृति में आपकी दस बाल कहानियाँ है जो कहानी होते हुए भी कविता के रूप में हैं। यह एक मजेदार प्रयोग है। 'पूरी हंसावली' सूचना प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली से प्रकाशित हुई है। लोक कथाएँ सदा से मनुष्यों को रिझाती रही हैं ये हमें क्षेत्र विशेष की बोलचाल एवं संस्कृति से परिचय करवाती हैं। इस कृति में डॉ. प्रभा पंत ने कुमायुँनी लोक कथाएँ प्रस्तुत की हैं।

डॉ. राकेश चक्र बाल साहित्य जगत के सुपरिचित एवं स्थापित रचनाकार हैं। गाजियाबाद से इनकी 'प्रेरक बाल कहानियाँ' पुस्तक प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत पुस्तक में आपकी उनतालीस रोचक एवं प्रेरक बाल कहानियाँ संगृहीत हैं। राष्ट्रभारती प्रकाशन होशंगाबाद से प्रकाशित कृति 'किलकारियाँ' राम मीना की बाल साहित्य की काव्य कृति है।

इसी प्रकार प्रसिद्ध रचनाकार राम मीना द्वारा रचित 'कच्ची धूप : गुलाबी धूप' नामक खंडों में बच्चों एवं किशोरों के लिए सुरुचिपूर्ण बाल कविताएँ हैं।

विनायक प्रकाशन, इंदौर से प्रकाशित कृति 'युवान' साहित्यकर्मी डॉ. लीला मोटे की बाल काव्य कृति है। इसमें विविध विषयों पर बाल कवितात्मक सरस प्रस्तुति की गई है।

ईशिका बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा से प्रकाशित 'आओ सब स्कूल चले हम' साहित्यकर्मी टीकम चंदर ढोडरिया की लिखी बाल साहित्य की काव्य कृति है। प्रस्तुत संग्रह में लेखक ने अनेक बाल कविताओं को संजोया है।

पंकज चतुर्वेदी बाल साहित्य जगत में अपने विशिष्ट प्रकार के लेखन के लिए सुपरिचित नाम है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली से जुड़कर आपका दायित्वपूर्ण अवदान बाल साहित्य को अनेक पुस्तकों के रूप में प्राप्त हुआ। विभिन्न प्रकाशनों से प्रकाशित इनकी अनेक कृतियाँ है 'क्यों डूबी पनडुब्बी' बारह कहानियों के संग्रह के रूप में आपकी यह कृति सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन, दिल्ली से प्रकाशित है। 'बेलगाम घोड़ा' शरारे प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित इस संग्रह में आपकी कुल आठ कहानियाँ हैं, जो पाठकों का भरपूर मनोरंजन करती हैं।

'ढेर सारे दोस्त' आपका कहानी संग्रह है। 'महामना मदन मोहन मालवीय' के विराट व्यक्तित्व पर प्रकाश डालती, ज्ञानपीठ से प्रकाशित बाल साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली से बाल साहित्य पर अनेक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। यहाँ उनका उल्लेख किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। 'चुनमुन आजाद है' कमलेश मोहिंद्रा, 'गिरिगिट और मेंढक' डॉ. रूपेंद्र : 'हाथी और भवरे की दोस्ती' टी.आर. राजेश 'हिंदी बाल साहित्यः कुछ पड़ाव' दिविक रमेश की इस पुस्तक में बाल साहित्य के सरोकारों, परंपराओं, सृजन और चुनौतियों पर विस्तृत चर्चा की गई है। सभी अध्याओं में प्रख्यात बाल साहित्यकारों के बाल साहित्य पर टिप्पणियाँ, उसके सरोकार एवं चिंतन समाहित है। पुस्तक में बाल साहित्य की रचना, उसके उद्देश्य और बच्चों पर उनके प्रभाव के विविध आयामों के बारे में विस्तृत चर्चा है। बाल साहित्य के वरिष्ठ हस्ताक्षरों का यह अनुभव इस क्षेत्र में चिंतन एवं मनन के नए आयाम खोलेगा, नई दृष्टि देगा।

डॉ. दिविक रमेश प्रतिष्ठित कवि, शिक्षाविद, बाल साहित्यकार, अनुवादक एवं चिंतक हैं। बाल साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में इनका सुदीर्घ अनुभव है। अन्य पुस्तकें हैं– 'झाँसी की रानी की कहानी' संध्याराव, 'नन्हें सूरज' जसवंत सिंह विरदी, कुल मिलाकर हिंदी बाल साहित्य और साहित्यकार निरंतर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। बाल साहित्य बालकों में सभी प्रकार के संस्कारों का बीजवपन करता है। इस दिशा में इधर लगे रहने वाले विद्वान साहित्यकारों में डॉ. विकास दवे, डॉ. सुरेंद्र विक्रम, डॉ. गोपाल माहेश्वरी, डॉ. परशुराम शुक्ल, डॉ. मीनाक्षी स्वामी, प्रो. शंभुनाथ तिवारी, शकुंतला कालरा, प्रकाशमनु, सुकीर्ति भटनागर, क्षमा शर्मा, अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन', प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल, डॉ. उमेश चंद सिरसवारी, मंजरी शुक्ला। ये सभी रचनाकार आज बाल साहित्य की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपने साहित्य सृजन में लगे हुए हैं।

❑❑❑

संपर्क–सूत्र

1. डॉ. अनुशब्द, सी–93, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय कैंपस, तेजपुर, नापाम, असम–784028
   ईमेल – anushabda@gmail.com
   मो. – 8876049200
2. डॉ. अरुण होता, 2 एफ, धर्मतल्ला रोड कस्बा, कोलकाता–700042
   ईमेल – ahota5@gmail.com
   मो. – 9434884339
3. डॉ. जुबेदा एच. मुल्लाँ, 'बैतुल हाशमी', मकान नं.–152, ताजनगर, हुबली, धारवाड़, कर्नाटक–580031
   ईमेल – zubeda.h.mulla@gmail.com
   मो. – 9845231816
4. डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी', प्रभुप्रिया, 39, III लेन, III ब्लॉक, III स्टेज, बसेश्वर नगर, बेंगलूरू–560079
   ईमेल – tgprabhashankar@yahoo.com
   मो. – 9880781278
5. डॉ. महाराज कृष्ण भरत 'मुसा', शारदा कॉलोनी, विद्याधर निवास, पटोली ब्राह्मणा, मूठ्ठी, जम्मू–181205
   ईमेल – profmaharajkrishen@gmail.com
   मो. – 9419113462
6. डॉ. चंद्रलेखा डिसौज़ा, 4, शशिसदन, प्रथम तल, मंडवेल, वास्को–द–गामा, गोवा–403802
   ईमेल – chanda.dsouza575@gmail.com
7. डॉ. वर्षा सोलंकी, डी–7, इनकम टैक्स कॉलोनी, न्यू सिविल हॉस्पिटल के सामने, मजूरा गेट, सूरत, गुजरात–395001
   ईमेल – solankivarsha@gmail.com
8. श्री ओम गोस्वामी, 181 पहाड़िया स्ट्रीट, जम्मू तवी, जम्मू–180001
   ईमेल – om_goswami47@gmail.com
   मो. – 9419203453
9. डॉ. चिट्टि अन्नपूर्णा, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई–600005
   ईमेल – chittipoornima@gmail.com
   मो. – 9952952081

10. डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, सहायक संपादक 'स्रवंति' सहायक आचार्या उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद–500004
    ईमेल – neerajagkonda@gmail.com
    मो. – 9849986346
11. श्री ज्ञानबहादुर छेत्री, चानमारी, तेजपुर, गुवाहाटी, असम–784001
    ईमेल – gyanbahadurkdshetri@gmail.com
    मो. – 9435084499
12. प्रो. फूलचंद मानव, साहित्य संगम 239, दशमेश एन्क्लेव, ढकौली (जीरकपुर के समीप), चंडीगढ़–140603
    ईमेल – phulchandmanav@gmail.com
13. डॉ. सुव्रत लाहिड़ी, 63–ए, साउथ सिंथी रोड, कोलकाता–700030
    ईमेल – lahirisubrat98@gmail.com
    मो. – 9830391409
14. डॉ. बी. अशोक, 'साकेत' दर्शन नगर, 225, कुडप्पनक्कुन्नु पी. ओ., त्रिवेंद्रम, केरल–695043
    ईमेल – ashoksaketh16@gmail.com
    मो. – 9496253860
15. श्री वैद्यनाथ झा, मकान नं. – 405, बी ब्लाक (हुडा प्लॉट), सेक्टर–56, गुरुग्राम–122011
    ईमेल – vaidyanath1949@gmail.com
    मो. – 9582221968
16. डॉ. रेखा, मकान नं.–2340, हाउसिंग बोर्ड सेक्टर–3, रोहतक, हरियाणा–124001
    ईमेल – tamnna009@gmail.com
    मो. – 8199081504
17. डॉ. देवेश कुमार मिश्र, संस्कृत विभाग, मानविकी विद्यापीठ इग्नू, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068
    ईमेल – dkmishra@ignou.ac.in
    मो. – 9794265167
18. डॉ. आलोक रंजन पांडेय, डब्लू ज़ैड–250 बी, निकट इंद्रपुरी एम टी एन एल, नई दिल्ली–110019
    ईमेल – alok.pandey76@yahoo.com
    मो. – 9540572211
19. डॉ. तरसेम गुजराल, 444–ए, राजा गार्डन, पो. ओ. बस्ती बाबा खेल, जालंधर–144020
    ईमेल – gujraltarsem@gmail.com
20. प्रो. अवध किशोर प्रसाद, द्वारा कुमार राकेश, ग्रीन फील्ड स्कूल, ब्लॉक ए–2, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली–110029
    ईमेल– akpdkundhur1940@gmail.com
    मो. – 9599794129

21. श्री कृष्ण कुमार 'कनक', 'कनक–निकुँज', ठार मुरली नगर, गुँदाऊ लाइन पार, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश–283203

    ईमेल– kanakkavya@gmail.com

    मो. – 7017646795

22. श्री रोहिताश्व कुमार अस्थाना, निकट बावन चुंगी चौराहा, 802, आलू थोक उत्तरी हरदोई, उत्तर प्रदेश–241001

    ईमेल– asthanasandesh@gmail.com

    मो. – 7607983984

23. डॉ. विदुषी शर्मा, एल–108, ऋषि नगर, रानी बाग, दिल्ली–110034

    ईमेल– drvidushisharma9300@gmail.com

    मो. – 9811702001

24. डॉ. सुनील कुमार तिवारी, डी ए–291, एस एफ एस फ्लैट्स, शीशमहल अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली–110088

    ईमेल– drsunilktiwari@gmail.com

    मो. – 9810734820

25. प्रो./डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल, 56, अशोक नगर, आधार तल, जबलपुर, मध्य प्रदेश–482004

    ईमेल– tnshukla13@gmail.com

    मो. – 9425044685

❑❑❑

© Govt. of India
Controller of Publication

ISSN 0523-1418

पी. ई. डी. नं. 1029.
450 - 2022 (DSK-II)

वार्षिकी 2021

मूल्य :

देश में	Inland	₹ 190/-
विदेश में	Foreign	$ 2.32/-
		€ 2.25/-

उच्चतर शिक्षा विभाग
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
पश्चिमी खंड–7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–110066
www.chd.education.gov.in
www.chdpublication.education.gov.in
bhashaunit@gmail.com